

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठाच्या तात्त्विक व सामाजिक शास्त्र
विद्याशाखांतर्गत अर्थशास्त्र विषयातील विद्यावाचस्पती (पीएच्.डी.)
पदवीसाठी सादर करण्यात आलेला प्रबंध

शीर्षक

“रोजगार हमी योजनेअंतर्गत सिंधुदूर्ग जिल्ह्यात
राबविलेल्या फळझाड योजनेचा
आर्थिक पाहणी अभ्यास (१९९१ - २०००)”

संशोधक

श्री. बाजीराव ज्ञानू इंगवले
पी.आर.नं. ०२१०८०१८४७१

मार्गदर्शक

प्राचार्य डॉ. श्रीरंग मंडले

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
स. का. पाटील महाविद्यालय, मालवण
ता. मालवण, जि. सिंधुदूर्ग

संशोधन स्थळ

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे
डिसेंबर, २०१२

संशोधकाचे प्रतिज्ञापत्र

मी श्री. बाजीराव ज्ञानू इंगवले प्रतिज्ञापूर्वक निवेदन कतो की, विद्यावाचस्पती (अर्थशास्त्र) सन २०१२ या पदवीसाठी 'रोजगार हमी योजनेतर्गत सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात राबविलेल्या फळझाड योजनेचा आर्थिक पहाणी अभ्यास' (१९९१ ते २०००). टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठाच्या तात्त्विक व सामाजिक शास्त्र विषयातर्गत अर्थशास्त्र विषयातील विद्यावाचस्पती पदवीसाठी सादर करित आहे. या प्रबंधातील माहिती मूळ संदर्भातून संकलित केले असून त्याचा योग्य त्या ठिकाणी तसा उल्लेख केला आहे आणि सादर माहितीचा या प्रबंधाव्यतिरिक्त अन्यत्र संशोधकाने कोठेही उपयोग केलेला नाही.

ठिकाण : वैभववाडी

दिनांक :

संशोधक

श्री. बाजीराव ज्ञानू इंगवले

मार्गदर्शकाचे प्रतिज्ञापत्र

मी प्रमाणित करतो की, 'रोजगार हमी योजनेतर्गत सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात राबविलेल्या फळझाड योजनेचा आर्थिक पहाणी अभ्यास' (१९९१ ते २०००). या शीर्षकाचा मानस निती व समाजविज्ञान विद्याशाखांतर्गत अर्थशास्त्र विषयातील (पीएच.डी.) परीक्षेसाठी टिळक महाराष्ट्र, पुणे यांना सादर होत असलेला संशोधन प्रबंध श्री. बाजीराव ज्ञानू इंगवले यांनी माझ्या मार्गदर्शनाखाली केलेल्या प्रामाणिक कार्यातून साकार झालेला आहे. हा प्रबंध परीक्षकांकडे पाठविण्यास योग्य असा झाला आहे. प्रबंधाचा कोणताही अंश यापूर्वी कधीही, कुठेही व कोणत्याही परीक्षेसाठी सादर झालेला नाही.

ठिकाण : मालवण

दिनांक :

प्राचार्य डॉ. श्रीरंग मंडले
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
स. का. पाटील महाविद्यालय,
मालवण, ता. मालवण, जि. सिंधुदूर्ग

ऋणनिर्देश

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे अंतर्गत विद्यावाचस्पती (Ph.D.) पदवीसाठी "सिंधुदूर्ग जिल्हयातील रोजगार हमी योजनेअंतर्गत राबविलेल्या फळघाड योजनेचा आर्थिक पहाणी अभ्यास" (१९९१-२०००) या विषयावरील शोधप्रबंध सादर करण्याची संधी प्रस्तुत संशोधकाला मिळाली, त्याबद्दल संशोधकाला अत्यानंद होत आहे.

हा शोध निबंध सादर करताना खालील निर्दिष्ट केलेल्या व्यक्ती, संस्था यांनी मला अतिशय मोलाचे सहकार्य व मार्गदर्शन केले. त्यांच्या सहकार्याशिवाय हा शोधनिबंध पूर्ण होणे शक्य नव्हते. सर्वप्रथम माझे गुरुवर्य प्राचार्य डॉ. श्रीरंग मंडले (स. का. पाटील महाविद्यालय, मालवण, जि. सिंधुदूर्ग) यांचे मला अत्यंत मोलाचे व उत्स्फूर्त मार्गदर्शन लाभले. संशोधन पूर्ण होण्यासाठी सतत प्रेरणा दिली व माझ्या अभ्यासाला योग्य दिशा दिली. त्याबद्दल मला त्यांचे ऋण व्यक्त करताना मनापासून आनंद होत आहे. कॉलेजचे प्राचार्य डॉ. सी. एस्. काकडे यांनी मला वेळोवेळी प्रेरणा, सल्ला दिला त्याबद्दल मी त्यांचा ऋणी आहे.

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठाचे अर्थशास्त्राचे विभागप्रमुख डॉ. प्रविण जाधव, टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठाचे ग्रंथालयाचे ग्रंथपाल, शिवाजी विद्यापीठ ग्रंथालयाचे ग्रंथपाल, कृषी कॉलेज, कोल्हापूर ग्रंथालयाचे ग्रंथपाल, पुणे विद्यापीठाच्या जयकर ग्रंथालयाचे ग्रंथपाल, मुंबई विद्यापीठ ग्रंथालयाचे ग्रंथपाल, महावीर कॉलेजचे ग्रंथपाल, जिल्हा परिषद, कृषी कार्यालय, तालुका कृषी कार्यालये, आनंदीबाई रावराणे कॉलेजचे ग्रंथपाल वाघमारे सर यांनी आवश्यक ती माहिती उपलब्ध करून सहकार्य केले याबद्दल मी सर्वांचा आभारी आहे.

कोणतेही कार्य पूर्ण होण्यासाठी लागणारे अशीर्वादही तेवढेच पाठीशी असावे लागतात. ते माझे आई-वडिल (ज्ञानेश्वर माऊली) यांचा मी ऋणी आहे. माझी धर्मपत्नी सौ. जयश्री इंगवले, मुलगी प्रतिभा, मुलगा पंकज यांनी शोधनिबंध पुर्णत्वास नेण्यासाठी मला वेळोवेळी सहकार्य केले. त्यांचे ऋण मी शब्दात व्यक्त करू शकत नाही.

संशोधन कार्यात ज्यांनी मला मोलाचे सहकार्य केले ते सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील सर्वच लाभार्थी शेतकरी, सांख्यिकीय मदत करणारे, डॉ. अर्जुन लाखे, प्रा. आर. एस्. पाटील, प्रा. ए. एम्. कांबळे, प्रा. वायू. एम्. पेंढारकर, नयन यादव यांनी मला संशोधन कार्यात मोलाची साथ दिली, त्याबद्दल त्यांचेही मी ऋण व्यक्त करतो.

आमचे मित्र डॉ. आनंद लोखंडे, प्रा. पी. एन्. कांबळे, प्रा. एम्. बी. चौगुले, प्रा. टी. टी. कांबळे, डॉ. अडनाईक, डॉ. संभाजी मोरे, प्रा. बाजीराव पाटील, डॉ. अनिल सावंत, डॉ. नितिन मुटकुळे, डॉ. वाल्मिक परहर, डॉ. प्रा. सौ. शैलजा मंडले, प्रा. नामदेव गवळी, प्रा. सुरेश पाटील, प्राध्या. सौ. संजीवनी पाटील, श्री. संजय रावराणे, कु. निखिल गवळी, शिक्षकेतर कर्मचारी वर्ग, माझ्या कॉलेजचे सर्व प्राध्यापक मित्र या सर्वांचे बहुमोल सहकार्य मिळाले त्यांचाही मी आभारी आहे.

संशोधन कार्यासाठी सतत मार्गदर्शन, प्रेरणा देणारे आमच्या महाराणा प्रतापसिंह क्षिण संस्थेचे अध्यक्ष मा. आमदार विनोदजी तावडे साहेब आणि संस्थेचे इतर सर्व पदाधिकारी या सर्वांचा मी ऋणी आहे. ज्यांनी कमी कालावधीत चांगल्या पद्धतीने शोध प्रबंधाचे टंकलेखन करून दिल्याबद्दल कु. ज्योती अरुण काटवे यांचे मी आभार मानतो. याशिवाय सदर प्रबंधाच्या पूर्ततेसाठी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्षरित्या मला ज्यांनी मदत केली त्या सर्वांचा मी ऋणी आहे.

श्री. बाजीराव ज्ञानू इंगवले

संशोधक

अनुक्रमणिका

| |
|-----------------|
| प्रकरणांचे नांव |
| प्रमाणपत्र |
| ऋणनिर्देश |
| अनुक्रमणिका |
| तक्ता सूची |

अनुक्रमणिका

| प्रकरण क्रमांक | प्रकरणांचे नांव | पृष्ठ क्र. |
|----------------|---|------------|
| १ | प्रस्तावना व संशोधन पद्धती | १ - ४० |
| | १.१ प्रस्तावना | १ |
| | १.२ फलोत्पादन जागतिक पार्श्वभूमी | ७ |
| | १.३ भारतातीय फलोत्पादन शेतीची पार्श्वभूमी आणि विकास | ११ |
| | १.४ अभ्यास क्षेत्र | १५ |
| | १.५ संशोधनाचे महत्त्व | १६ |
| | १.६ संशोधन कालावधी | १७ |
| | १.७ समस्या विधान | १७ |
| | १.८ गृहितक | १७ |
| | १.९ संशोधनाची उद्दिष्टे | १७ |
| | १.१० संशोधन पद्धती व माहिती संकलन | १८ |
| | १.११ संशोधनाची व्याप्ती | १९ |
| | १.१२ संशोधन कार्याच्या पद्धती | २० |

| | | | |
|----------|--|---|--------------|
| | १.१३ | संशोधन साहित्याचा आढावा | २० |
| | १.१४ | प्रकरण योजना | ३४ |
| | | संदर्भ सूची | ३५ |
| २ | महाराष्ट्रातील फळझाड लागवड कार्यक्रम व रोजगार हमी योजना | | ४१-७० |
| | २.१ | प्रस्तावना | ४१ |
| | २.२ | राष्ट्रीय फलोत्पादन अभियान | ४१ |
| | २.३ | महाराष्ट्रातील भूमी उपयोजन | ४२ |
| | २.४ | महाराष्ट्राची रोजगार हमी योजना | ४५ |
| | २.५ | महाराष्ट्रातील रोजगार हमी योजनांतर्गत फळझाड लागवडीची स्थिती | ५५ |
| | २.६ | सारांश | ६७ |
| | | संदर्भ सूची | ६८ |
| ३ | सिंधुदूर्ग जिल्हा भौगोलिक व आर्थिक स्थिती | | ७१-९४ |
| | ३.१ | प्रस्तावना | ७१ |
| | ३.२ | इतिहास आणि संस्कृती | ७१ |
| | ३.३ | भौगोलिक रचना | ७३ |
| | ३.४ | मातीचा प्रकार | ७४ |
| | ३.५ | नद्या | ७५ |
| | ३.६ | हवामान व पर्जन्यमान | ७६ |
| | ३.७ | लोकसंख्या (२००१) | ७६ |
| | ३.८ | आरोग्य सेवा | ८० |
| | ३.९ | जिल्हा नियोजन | ८१ |
| | ३.१० | रोजगार व स्वयंरोजगार केंद्र | ८२ |
| | ३.११ | खनिजे व उद्योग | ८३ |

| | | | |
|----------|---|---|----------------|
| | ३.१२ | वीज | ८४ |
| | ३.१३ | वाहतुक व दळणवळण | ८४ |
| | ३.१४ | कृषी गणना | ८४ |
| | ३.१५ | वनसंपत्ती | ८५ |
| | ३.१६ | मत्स्य व्यवसाय | ८६ |
| | ३.१७ | पशु संवर्धन, पशु वैद्यकिय सेवा व दुग्धोत्पादन | ८६ |
| | ३.१८ | पतसुविधा | ८६ |
| | ३.१९ | सहकार | ८७ |
| | ३.२० | वार्षिक योजना | ८७ |
| | ३.२१ | कोकण रेल्वे | ८९ |
| | ३.२२ | सामाजिक स्थिती | ८९ |
| | ३.२३ | महान व्यक्ती | ९० |
| | ३.२४ | पर्यटन | ९० |
| | ३.२५ | सारांश | ९१ |
| | | संदर्भ सूची | ९२ |
| ४ | सिंधुदूर्ग जिल्हा भूमि उपयोजन व पीक रचना | | ९५-११२ |
| | ४.१ | प्रस्तावना | ९५ |
| | ४.२ | सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील पीक आकृतीबंध | ९५ |
| | ४.३ | जमीन सुधारणा | ९९ |
| | ४.४ | सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील पीक रचना | ९९ |
| | ४.५ | जलसिंचन सुविधा | १०६ |
| | ४.६ | सारांश | १११ |
| | | संदर्भ सूची | ११२ |
| ५ | सिंधुदूर्ग जिल्ह्यात राबविलेली फळझाड योजना | | ११३-१४६ |

| | | | |
|----------|---|--|----------------|
| | ५.१ | प्रस्तावना | ११३ |
| | ५.२ | रोजगार हमी योजनेअंतर्गत लागवड करण्यात आलेल्या फळांविषयी माहिती | ११४ |
| | ५.३ | सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील किफायतशीर फळझाड लागवडीचे नियोजन | ११८ |
| | ५.४ | सिंधुदूर्ग जिल्ह्यात रोजगार हमी योजनेअंतर्गत राबविलेली तालुकानिहाय फळझाड योजना | १२१ |
| | ५.५ | सारांश | १४५ |
| | | संदर्भ सूची | १४५ |
| ६ | सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड योजनेचे सांख्यिकिय विश्लेषण | | १४७-२८२ |
| | ६.१ | प्रस्तावना | १४७ |
| | ६.२ | संकलित माहितीचे विश्लेषण व सादरीकरण | १४७-२८२ |
| ७ | निष्कर्ष आणि शिफारशी | | २८३-३१६ |
| | ७.१ | प्रस्तावना | २८३ |
| | ७.२ | गृहित कृत्यांची पडताळणी | २८३ |
| | ७.३ | संशोधनाचे निष्कर्ष | २८४ |
| | ७.४ | शिफारशी | २९८ |

| परिशिष्ट क्रमांक | परिशिष्टाचे नांव | |
|------------------|------------------|---------|
| १ | संदर्भ सूची | ३०२-३०७ |
| २ | प्रश्नावली | ३०८-३१६ |
| ३ | छायाचित्रे | ३१७-३२२ |

तक्ता सूची

| अ.क्र. | तक्त्याचे नाव | तक्ता क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक |
|--------|---|---------------|---------------|
| १ | भारतातील आंबा निर्यात | १.१ | ८ |
| २ | देशनिहाय आंबा निर्यात (२००७ - ०८) | १.२ | ९ |
| ३ | भारतातील राज्यनिहाय फळझाड लागवड आणि उत्पादकता | १.३ | १३ |
| ४ | महाराष्ट्रातील जमिनीचा वापर | २.१ | ४३ |
| ५ | महाराष्ट्रात फळझाड लागवड क्षेत्रात झालेली प्रगती (सन १९९०-९१ पूर्वी) | २.२ | ४४ |
| ६ | रोजगार हमी योजनेशी निगडित फळझाड लागवडीसाठीचा मंजूर मापदंड | २.३ | ५३ |
| ७ | महाराष्ट्रातील रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवडीची स्थिती | २.४ | ५५ |
| ८ | महाराष्ट्रातील फळबाग लागवडीची प्रादेशिक स्थिती | २.५ | ५६ |
| ९ | महाराष्ट्रातील प्रमुख फळ पिकांखालील क्षेत्र व उत्पादन | २.६ | ५८ |
| १० | रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फलोत्पादन लागवड केलेल्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या | २.७ | ६१ |
| ११ | रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फलोत्पादनावर करण्यात आलेल्या विविध विभागातील एकूण खर्च | २.८ | ६२ |
| १२ | विविध विभागामध्ये रोजगार हमी योजनेअंतर्गत झालेली फळझाड लागवड | २.९ | ६३ |
| १३ | विविध विभागामध्ये रोजगार हमी योजनेअंतर्गत करण्यात आलेल्या फळझाड लागवडीचा हिस्सा | २.१० | ६५ |
| १४ | महाराष्ट्रातील फळांची निर्यात | २.११ | ६६ |
| १५ | अनुसूचित जाती व जमाती लोकसंख्या (२००१) | ३.१ | ७७ |

| | | | |
|----|--|------|-----|
| १६ | सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील धर्मनिहाय लोकसंख्या | ३.२ | ७८ |
| १७ | लोकसंख्येचे वयोगटानुसार वर्गीकरण | ३.३ | ७९ |
| १८ | शहरांचे वर्गीकरण आणि लोकसंख्या | ३.४ | ८० |
| १९ | रोजगार हमी योजना | ३.५ | ८१ |
| २० | सहकारी संस्था | ३.६ | ८७ |
| २१ | सिंधुदूर्ग जिल्हा आणि भूमि उपयोजन | ४.१ | ९७ |
| २२ | सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील जमिनीचे वर्गीकरण | ४.२ | ९८ |
| २३ | विविध पिकांचा पेरणी अहवाल (२००९-२०१०) | ४.३ | १०२ |
| २४ | कडधान्ये | ४.४ | १०३ |
| २५ | तेलबिया | ४.५ | १०४ |
| २६ | सर्व पिके व भाजीपाला वर्गीकरण | ४.६ | १०५ |
| २७ | मोठे व मध्यम पाठबंधारे प्रकल्प | ४.७ | १०८ |
| २८ | विविध साधनाखाली क्षेत्रिय क्षेत्र | ४.८ | ११० |
| २९ | आंबे - जात व उत्पन्न | ५.१ | ११४ |
| ३० | काजू - जात व उत्पन्न | ५.२ | ११५ |
| ३१ | नारळ - जात व उत्पन्न | ५.३ | ११६ |
| ३२ | वेंगुर्ला तालुका - फळझाड लागवड | ५.४ | १२१ |
| ३३ | कणकवली तालुका - फळझाड लागवड | ५.५ | १२३ |
| ३४ | कुडाळ तालुका - फळझाड लागवड | ५.६ | १२६ |
| ३५ | मालवण तालुका - फळझाड लागवड | ५.७ | १२९ |
| ३६ | वैभववाडी तालुका - फळझाड लागवड | ५.८ | १३१ |
| ३७ | देवगड तालुका - फळझाड लागवड | ५.९ | १३४ |
| ३८ | सावंतवाडी तालुका - फळझाड लागवड | ५.१० | १३७ |
| ३९ | दोडामार्ग तालुका - फळझाड लागवड | ५.११ | १३९ |

| | | | |
|----|--|------|-----|
| ४० | सिंधुदूर्ग जिल्हा एकूण फळझाड लागवड | ५.१२ | १४१ |
| ४१ | सिंधुदूर्ग जिल्हा फळझाड लागवड एकूण लाभांश व साध्य - खर्च | ५.१३ | १४३ |
| ४२ | निवडलेल्या लाभार्थी शेतकऱ्यांचे तालुकानिहाय वर्गीकरण | ६.१ | १४७ |
| ४३ | लाभार्थी स्त्री-पुरुष वर्गीकरण | ६.२ | १४८ |
| ४४ | लाभार्थी शेतकऱ्यांचा वयोगट | ६.३ | १४९ |
| ४५ | लाभार्थींची शैक्षणिक स्थिती | ६.४ | १५२ |
| ४६ | लाभार्थी शेतकऱ्यांचा प्रवर्ग | ६.५ | १५४ |
| ४७ | शेतकऱ्यांच्या एकूण मालकीची जमीन | ६.६ | १५६ |
| ४८ | फळझाड लागवडीखालील जमीन | ६.७ | १५८ |
| ४९ | लागवडीयोग्य पडीक जमीन | ६.८ | १६० |
| ५० | कायमस्वरूपी पडीक जमीन | ६.९ | १६२ |
| ५१ | लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या उत्पन्नाची साधने | ६.१० | १६४ |
| ५२ | लाभार्थींचे एकूण उत्पन्नाची स्थिती | ६.११ | १६६ |
| ५३ | फळबागेसाठी आवश्यक सिंचन व्यवस्था | ६.१२ | १६८ |
| ५४ | आधुनिक जलसिंचन सुविधा | ६.१३ | १७० |
| ५५ | फळबागेसाठी जलसिंचन उपलब्धता | ६.१४ | १७२ |
| ५६ | फळबागेसाठी उपलब्ध साधने | ६.१५ | १७४ |
| ५७ | लागवडीसाठी कलमे पुरविणाऱ्या रोपवाटीका | ६.१६ | १७६ |
| ५८ | आंबा लागवडीचे विविध कालखंडातील वर्गीकरण | ६.१७ | १७७ |
| ५९ | आंबा लागवडीखालील क्षेत्र | ६.१८ | १७९ |
| ६० | उत्पादक आंबा कलमांचे वर्गीकरण | ६.१९ | १८१ |
| ६१ | काजू लागवडीचे विविध कालखंडातील वर्गीकरण | ६.२० | १८२ |
| ६२ | काजू लागवडीखालील क्षेत्र | ६.२१ | १८४ |
| ६३ | उत्पादक काजू कलमांचे वर्गीकरण | ६.२२ | १८६ |

| | | | |
|----|--|------|-----|
| ६४ | नारळ लागवडीचे विविध कालखंडातील वर्गीकरण | ६.२३ | १८७ |
| ६५ | नारळ लागवडीखालील क्षेत्र | ६.२४ | १८८ |
| ६६ | उत्पादक नारळ कलमांचे वर्गीकरण | ६.२५ | १८९ |
| ६७ | सुपारी लागवडीचे विविध कालखंडातील वर्गीकरण | ६.२६ | १९० |
| ६८ | सुपारी लागवडीखालील क्षेत्र | ६.२७ | १९१ |
| ६९ | उत्पादक सुपारी कलमांचे वर्गीकरण | ६.२८ | १९२ |
| ७० | कोकम लागवडीचे विविध कालखंडातील वर्गीकरण | ६.२९ | १९३ |
| ७१ | कोकम लागवडीखालील क्षेत्र | ६.३० | १९४ |
| ७२ | उत्पादक कोकम कलमांचे वर्गीकरण | ६.३१ | १९५ |
| ७३ | चिकू लागवडीचे विविध कालखंडातील वर्गीकरण | ६.३२ | १९६ |
| ७४ | चिकू लागवडीखालील क्षेत्र | ६.३३ | १९७ |
| ७५ | उत्पादक चिकू कलमांचे वर्गीकरण | ६.३४ | १९८ |
| ७६ | लागवडीसाठी उपलब्ध घरातील मजूर | ६.३५ | २०० |
| ७७ | लागवडीसाठी उपलब्ध बाहेरील मजूर | ६.३६ | २०२ |
| ७८ | स्त्री-पुरुषांची दैनंदिन मजूरी | ६.३७ | २०४ |
| ७९ | फळबाग हंगामातील स्त्री-पुरुषांची मजूरी | ६.३८ | २०६ |
| ८० | फळबाग लागवडीसाठी खतांचा वापर | ६.३९ | २०८ |
| ८१ | फळबागेवर वापरावयांची औषधे | ६.४० | २१० |
| ८२ | आंबा लागवडीचे एकूण दर हेक्टराी चालू खर्च (२०१०) | ६.४१ | २१३ |
| ८३ | आंबा लागवडीच्या जिल्ह्याचा एकूण दर हेक्टराी चालू खर्च (२०१०) | ६.४२ | २१९ |
| ८४ | काजू लागवडीचा एकूण दर हेक्टराी चालू खर्च (२०१०) | ६.४३ | २२१ |
| ८५ | काजू लागवडीच्या जिल्ह्याचा एकूण दर हेक्टराी चालू खर्च-२०१० | ६.४४ | २२६ |
| ८६ | नारळ लागवडीच्या जिल्ह्याचा एकूण दर हेक्टराी चालू खर्च-२०१० | ६.४५ | २२८ |

| | | | |
|-----|---|------|-----|
| ८७ | सुपारी लागवडीच्या जिल्ह्याचा एकूण दर हेक्टरी चालू खर्च-२०१० | ६.४६ | २३० |
| ८८ | फळझाड लागवडीसाठी घेतलेल्या कर्जाचे वर्गीकरण | ६.४७ | २३२ |
| ८९ | शेतकऱ्यांना कर्ज देणारी माध्यमे | ६.४८ | २३४ |
| ९० | फळबागेतील अंतर्गत पिके | ६.४९ | २३६ |
| ९१ | योजना आणि लाभार्थीच्या भौतिक सुखसोई | ६.५० | २३८ |
| ९२ | उत्पादित फळांच्या विक्री पद्धती | ६.५१ | २४० |
| ९३ | स्थानिक बाजारपेठेत फळांच्या विक्रीच्या समस्या | ६.५२ | २४२ |
| ९४ | प्रशासकीय अधिकारी आणि लाभार्थी हितसंबंध | ६.५३ | २४५ |
| ९५ | योजनेबद्दल लाभार्थी शेतकऱ्यांचे अनुभव | ६.५४ | २४७ |
| ९६ | आंबा लाभार्थीचे उत्पादन उत्पन्न खर्च (२०११) | ६.५५ | २५० |
| ९७ | जिल्ह्यातील एकूण आंबा उत्पादन उत्पन्न खर्च | ६.५६ | २५४ |
| ९८ | नफा-तोट्यातील आंबा उत्पादक लाभार्थी | ६.५७ | २५६ |
| ९९ | काजू लाभार्थीचे उत्पादन उत्पन्न खर्च (२०११) | ६.५८ | २५७ |
| १०० | जिल्ह्यातील एकूण काजू उत्पादन उत्पन्न खर्च | ६.५९ | २६१ |
| १०१ | नफा-तोट्यातील काजू उत्पादक लाभार्थी | ६.६० | २६३ |
| १०२ | नारळ लाभार्थीचे दर हेक्टरी उत्पन्न खर्च (२०११) | ६.६१ | २६५ |
| १०३ | जिल्ह्यातील एकूण नारळ उत्पादन उत्पन्न खर्च (२०११) | ६.६२ | २६७ |
| १०४ | सुपारी लाभार्थीचे दर हेक्टरी उत्पन्न खर्च (२०११) | ६.६३ | २६९ |
| १०५ | जिल्ह्यातील एकूण सुपारी उत्पादन उत्पन्न खर्च (२०११) | ६.६४ | २७२ |
| १०६ | जिल्ह्यातील एकूण कोकम उत्पादन उत्पन्न खर्च | ६.६५ | २७३ |
| १०७ | फळ लागवडीवर परिणाम करणाऱ्या नैसर्गिक आपत्ती | ६.६६ | २७५ |
| १०८ | फळझाड लागवडीच्या समस्या | ६.६७ | २७८ |

प्रकरण योजना

प्रकरण पहिले

प्रस्तावना व संशोधन पद्धती

१.१ प्रस्तावना

फळे ही मानव प्राण्यांचे अन्न म्हणून प्राचीन काळापासून ज्ञात आहेत आपल्या वेदपुराणात व धार्मिक ग्रंथात फळांचा उल्लेख आहे. पूर्वीच्या काळी फळ देवाला वाहण्यासाठी व उच्चभ्रु लोकांच्या आहारातील महत्त्वाचा आहार म्हणून गणला जात होता. आंबा हे फळ भारतात चार हजार वर्षांपासून अस्तित्वात असल्याचा संदर्भ मिळतो. मोठमोठ्या फळबागाची मोगल राजांना आवड होती. येन-ए-अकबरीत सिताफळाचा उल्लेख आढळतो. मोगल राज्यकर्त्यांनी आंब्याची लागवड या देशात मोठ्या प्रमाणात केली होती. ब्रिटीश राजवटीत कालव्याच्या व दळणवळणाच्या सोयी वाढल्यामुळे भारतात फळबागायत खूप वाढली. इ. स. १९३० नंतर अनेक राज्यात फळसंशोधन केंद्रे स्थापन झाल्यानंतर फळझाडांच्या शास्त्रशुद्ध लागवडीला गती मिळाली आहे.

१.१.१ फळबाग : (फलसंवर्धन)

प्राचीन काळापासून मनुष्याच्या आहारात फळांचा समावेश असल्याचे आढळून येते. मनुष्य भटक्या स्थितीत फिरत असताना तो प्राण्यांची शिकार व जंगलातील लहान मोठी फळे यावरून उदरनिर्वाह करीत होता. कालांतराने तो शेती करू लागल्यावर फळझाडांची लागवड निवास स्थानाभोवती लहान प्रमाणावर होऊ लागली. फळझाडांपैकी मनुष्याने सर्व प्रथम खजुरांच्या झाडाची इ.स.पू. ७००० वर्षे या काळात लागवड सुरु केली. डाळिंबाची लागवड, इ.स.पू. ३५०० वर्षे काळात होत होती. भारतातही इ.स.पूर्व चौथ्या शतकात लिहिलेल्या 'कौटिलिय' अर्थशास्त्रात द्राक्षांच्या लागवडीसंबंधी उल्लेख आहे. केळी, नारळ व आंबा ही फळे देवाला अर्पण करण्याची पद्धत आणि घरांचे दरवाजे व रस्त्यावरील कमानी सुशोभित करण्यासाठी या झाडांच्या पानांचा उपयोग हे पूर्वापार चालत आलेले दिसते. हे फळ लागवडीसंबंधी पृष्ठी देणारे पुरावे आहेत. फणस, आवळा, चिंच आणि बेल ही फळझाडेही सामान्यपणे शेताच्या बांधावर लावण्याची पद्धत होती.

त्यापासून कौटुंबिक गरजा पूर्ण केल्या जात होत्या. व्यापारी तत्त्वावर फळबाग लावण्याची पद्धत २० व्या शतकाच्या पूर्वार्धात सुरु झाली. याचे कारण म्हणजे फळांचे आहारातील महत्त्व लोकांना समजले त्यामुळे फळांची मागणी वाढली.^१

१.१.२ फलोत्पादनाचा अर्थ

फलोत्पादन ही संकल्पना लॅटिन भाषेतील आहे. त्यातील (Hortur) हॉर्टर्स या शब्दाचा अर्थ बाग असा होतो. तर कल्चर (culture) या शब्दाचा अर्थ मशागत असा होतो. म्हणजेच "फळांच्या बागेमध्ये केलेली मशागत म्हणजे फलोत्पादन (उद्यान शेती) होय" फलोत्पादन ही एक अशी कला आहे की, ज्यामध्ये मशागत, उत्पादन, प्रक्रिया, विपणन इ. विविध प्रक्रिया पिकांच्या संदर्भात केल्या जातात आणि त्यात विज्ञानही आहे.

फलोत्पादन शेती ही एक फक्त देशांतर्गत गरज नसून पडीक कोरडवाहू जमिनीतून परकीय चलन मिळवून देणारा एक आर्थिक विकासाचा मार्ग आहे. त्यामुळे जगातील अनेक देश या दृष्टीने प्रयत्नशील आहेत. फलोत्पादन शेतीची मशागत आणि समृद्धी ही लोकांच्या आरोग्य आणि सुखाशी संबंधित आहे. अशा प्रकारच्या पिकांची मशागत जैव-विविधता आणि विविधपूर्ण पर्यावरण यामध्ये समतोल राखण्यास मदत करते.^२

१.१.३ फलोत्पादनाचे महत्त्व

कृषी क्षेत्रामध्ये जैव तंत्रज्ञान (Biotechnology) प्रगती करीत असताना केवळ अन्नधान्याचे उत्पादन वाढून चालणार नाही. देश अन्नधान्यात स्वयंपूर्ण झाला पाहिजे. परंतु त्याचबरोबर परंपरागत पीक आकृतीबंधात बदल घडवून आणणेही गरजेचे आहे. त्या दृष्टीने त्या हवामानाला अनुकूल असणाऱ्या फळांचे क्षेत्र वाढविणेही आवश्यक आहे. भारतीय आहारामध्ये अन्नधान्याबरोबरच फळे व भाजीपाला यांनाही अनन्य साधारण महत्त्व आहे. आहारात फळांचे प्रमाण वाढल्याने अन्नधान्यावरील लोक संख्येचा भार कमी होईल. फळ उत्पादनमुळे प्रक्रिया करणारे छोटे उद्योग वाढीस लागतील, भारत हा ५.५ लाख खेड्यांचा देश असल्याने असे उद्योग फळ उत्पादक प्रदेशात स्थापन झाल्याने ग्रामीण अर्थकारणात आमुलाग्र बदल होऊन तेथील लोकांचे राहणीमान वाढण्यास मदत होईल. म्हणजे भारतासारख्या विकसनशील देशाने आंतरराष्ट्रीय देण्याघेण्याचा ताळेबंद

अनुकूल करण्यासाठी शेती क्षेत्रात विविधता आणावयाला हवी. देशात फळबाग क्षेत्र वाढवून आणि फळांचे उत्पादन वाढवून आपली अर्थव्यवस्था निर्यातभिमुख करण्याला चांगला हातभार लावता येतो. देशात आज दरडोई १२० ग्रॅम फळांची आवश्यकता असताना प्रत्यक्षात मात्र फक्त ४० ग्रॅम फळे वाट्याला येतात हे प्रमाण वाढविणे गरजेचे आहे. फळ शेतीचे महत्त्व ओळखून त्याचे क्षेत्र वाढविणे आवश्यक आहे. आजही आपल्याकडे बहुसंख्य शेतकऱ्यांच्या शेती करण्याच्या पद्धतीमध्ये पुरेसे नाविन्य आलेले नाही. गेल्या ६० वर्षांच्या कालावधीत पीक आकृतीबंधात फारसा फरक जाणवत नाही. गरीब, दारिद्र्यरेषेखाली जगणाऱ्या आणि अल्प भूधारक शेतकऱ्यांचे उत्पन्न वाढावे. त्यांना शेतीच्या नवीन व्युत्पन्नानेचा फायदा मिळावा. पीक पद्धतीत कोरडवाहू आणि बागायत अशा दोन्ही प्रकारच्या फळबाग लागवड करणे गरजेचे आहे. त्यामुळे शेतकऱ्यांची आर्थिक उन्नती होऊन विकासाच्या प्रवाहात तेही सामील होतील. अलीकडे निर्यातक्षम शेतमाल म्हणून फळे, भाजीपाला फुले यांना आंतरराष्ट्रीय बाजारात मोठी मागणी आहे. जर आपल्याकडे फळबाग क्षेत्राचा विकास घडवून आणला तर निर्यात वाढून आर्थिक फायदा होईल. त्यासाठी फळबागाचा विकास करणे आणि नवीन फळांचे वाण शोधणे गरजेचे आहे.^३

१.१.४ फळांचे महत्त्व -

१) फळांचे आहारात महत्त्व :

भारतासारख्या विकसनशील राष्ट्रातील लोकांच्या आहारात लोह व जीवनसत्वे यांची फार कमतरता आहे. आपला दरमानसी दरदिवशी सरासरी फळांचा आहार ४६ ग्रॅम एवढा आहे. शास्त्रशुद्ध आहारात दरमानसी दरदिवशी फळांचा आहार ८५ ग्रॅम एवढा हवा. फळांच्या आहारामुळे मानवी शरीरात नैसर्गिक रोग प्रतिबंधक शक्ती निर्माण होते. केळासारख्या फळांच्या सेवनाने मानवी शरीराला आवश्यक अशी भरपूर ऊर्जा मिळते.

मानवी आहारात खनिजे अत्यंत महत्त्वाची आहेत. कॅल्शियम, मॅग्नेशियम स्फुरद, पालाश, लोह, गंधक, तांबे इ. खनिजे फळापासून मानवी शरीराला मिळतात, करवंदात सर्वात जास्त लोह असतो. आंबा व पेरु या फळात शुद्ध लोह असतो. लिची, काजू आणि कवठापासून चूना, स्फुरद ही खनिजे मिळतात. फळात सिट्रस आम्लाचे प्रमाण

असल्यामुळे शरिराला भूक लागून अन्न पोषणाला त्याची मदत होते. सर्व लिंबू वर्गीय फळांत सायट्रिक आम्ल आणि द्राक्षात टार्टरिक आम्ल असते. पपईमध्ये असणारी प्रथिने पचनास मदत करतात. फळात तंतूमय पदार्थ असल्यामुळे बद्ध कोष्ठता विकाराला पायबंद बसतो. निरनिराळी अन्न घटके, जीवनसत्त्वे ही शरीराला अतिशय महत्त्वाची असून त्यांचे आरोग्यावर चांगले परिणाम होतात.

२) फळांचे औषधीद्रव्य म्हणून महत्त्व :

आंबा, पेरू, केळी, बेल, जांभूळ, पपई व आवळा या फळात मानवी शरिराला आवश्यक असे अन्न घटक व खनिजे, जीवनसत्त्वे आहेत पण त्याबरोबर औषधी गुणधर्म देखिल आहे. फळे व फळांचा रस बालकाच्या शारीरिक वाढीला अत्यंत आवश्यक आहे. रातांधळेपणा, दमा, छातीचे विकार, अल्सर इ. विकारावर फळांचे सेवन हा महत्त्वाचा उपाय आहे. काही फळात पेक्ट्रीक असल्यामुळे आंतड्यांच्या विकारावर ते गुणकारी ठरतात. फळांच्या साली, पाने, मुळ्या यापासून आर्युवेदिक औषधे तयार करतात. उदा. त्रिफळा, हिरडा, बेहडा व आवळा इ. टॉनिक च्यवनप्राश हे आवळाच्या फळापासून बनवितात, क्षय, अस्थमा, सर्दी इ. श्वास रोगात संत्र्याच्या रसाने आराम वाटतो. अल्सर, मुळव्याधी केळी खाल्याने आराम पडतो.^४

३) फळ लागवडीचे आर्थिकदृष्ट्या महत्त्व :

फळ झाडांच्या लागवडीत भांडवल गुंतवणूक व्यवस्थापन, मजूरी, बाजारपेठांचा खर्च, जास्त असला तरी दर एकरी उत्पन्न इतर पिकापेक्षा जास्त मिळते. फळ झाडांची लागवड आणि उत्पादनाला सुरुवात होण्यापूर्वीच्या काळात आंतरपिके घेवून लागवडीचा जास्तीचा येणारा खर्च त्यामधून भागविता येतो. द्राक्षे, केळी यासारख्या फळांपासून दर एकरी जास्त आर्थिक लाभ होतो. एवढेच नव्हे तर बोर, सीताफळ, डाळिंबे या सारखी कमी पाण्यावर येणारी व कमी भांडवल खर्चाच्या फळापासून देखील चांगले आर्थिक लाभ मिळतात. फळे खाणे, लावणे ही श्रीमंत लोकांची चैन आहे अशी चुकीची धारणा दुर्दैवाने आपल्याकडे झाली आहे. अन्नधान्याला पूरक म्हणून फळे व भाजीपाला यांचा वापर आवश्यक आहे. म्हणून त्यांची लागवड करणे हे सुखी मानवी जीवनाला आवश्यक मानले गेले पाहिजे. आपण अन्नधान्यात स्वावलंबी झालो. परंतु, मानवी आहारात फळे व भाजीपाला वापराबद्दल आपण जागृत दिसत नाही.

फळबागा लागवडीमुळे शेतकऱ्यांचे शेतीव्यवसायामधील शास्त्रीय ज्ञान आणि व्यावसायिक प्रतिष्ठा वाढते. शेतकऱ्यांना अनेक प्रकारचे तंत्रज्ञान आत्मसात करून घ्यावे लागते. बहार धरणे, गर्डलिंग करणे, सजीवकांचा वापर करणे, फळे टिकविणे, फळांवर प्रक्रिया करणे इत्यादींसाठी वाचन, चर्चा तसेच तज्ञांचे मार्गदर्शन घ्यावे लागते. याचा परिणाम म्हणून शेतकऱ्यांच्या तांत्रिक आणि सामान्य ज्ञानात भर पडते. फळबागांचे उत्पादन घेताना आणि उत्पादनाचे वितरण करताना सहकारी संस्था, पतपेढ्या यांचे सहकार्य घ्यावे लागते. आर्थिक उलाढाल वाढते. त्यामुळे शेतकऱ्यांना समाजात आणि बाजारपेठांत पत आणि प्रतिष्ठा प्राप्त होते.

४) फळझाड लागवडीचे औद्योगिक दृष्ट्या महत्त्व :

फलोत्पादन हा अनेक उद्योगधंद्याचा आणि जोडधंद्याचा पाया आहे. उदा. अत्तर व सुगंधी तेल काढणे, जाम, जेली, सरबत, सिरप, लोणची, हवा बंद फळे, पेपेन, रसायन द्रव्ये उत्पादन, मसाला पिके इ. फळे ही अनेक उद्योगधंद्यात कच्चा माल म्हणून वापरतात. फळाचे टिकाऊ पदार्थ, फळे वाळवणे, काजू तेल, नारळापासून तेल द्राक्षापासून मनुका, रस, दारु, मधाचा व्यवसाय, केळी, पपई यांचा वापर करता येतो. लाकडाचा उपयोग फर्निचर, बांधकाम व इतर कामासाठी होतो. महाराष्ट्र शासनाने १९९०-९१ पासून रोजगार हमी फलोत्पादन विकास योजना अंमलात आणली. या योजनेतर्गत महाराष्ट्रात होणाऱ्या २२ फळझाडांच्या लागवडीचा अत्यंत महत्त्वकांक्षी प्रकल्प हाती घेतला आहे.^५

५) फळे आणि फळ उत्पादनापासून करता येणारे प्रक्रियायुक्त पदार्थ :

राज्यातले अनेक जिल्हे हे रोजगार हमी योजनेतून फळबाग लागवडीचे जिल्हे बनले आहेत. उदा. सिंधुदुर्ग, रत्नागिरी, तर पुणे, नाशिक, जळगाव हे भाजीपाला जिल्हे बनले आहेत. शेतमालाचा १००% वापर होण्यासाठी, शेतकऱ्यांचे अर्थार्जन सुधारण्यासाठी, फळांची प्रक्रिया करून त्यांची टिकवण क्षमता वाढविणे हा एकमेव पर्याय आपणापुढे आहे. जगातील फळे पिकविणाऱ्या इतर देशांनी प्रक्रिया उद्योग काढून प्रगती केली आहे. चिलीत ७२% फलोत्पादनावर प्रक्रिया होते. कॅलिफोर्निया, ब्राझिल हे फळ बागात आघाडीवर असणारे देश आहेत. अलीकडे इस्राईलने फळ प्रक्रिया उद्योगात मोठी प्रगती केली आहे. भारतात प्रक्रिया गेल्या दशकात २% होती अलीकडे ती वाढून ६%

झाली आहे. ती किमान १५ ते १६% होणे आवश्यक आहे. त्यामुळे रोजगार संधी, आर्थिक विकास हे आपण साखर उद्योगातून अनुभवले आहे.^६

६) फळ प्रक्रियायुक्त पदार्थ :

| अ.क्र. | फळे | करता येणारे प्रक्रियायुक्त पदार्थ |
|--------|---------|--|
| १ | आंबा | लोणचे, मुरांबा, पोळी, रस, जॅम, चटणी, पन्हे, सरबत इ. |
| २ | केळी | वेफर्स, पावडर, वाळलेले चिप्स, जॅम इ. |
| ३ | पपई | पेपेन, दुटी फ्रुटी, मार्मालेड, जॅम, कॅन्डी इ. |
| ४ | बोर | सुकामेवा, चिवडा, चिप्स इ. |
| ५ | डाळींब | अनारदाना, कार्बोनेटेड शीतपेय, सरबत, सिरप, वाईन, अनार इ. |
| ६ | संत्रा | सरबत, सिरप, स्कॅश, मार्यालेड इ. |
| ७ | आवळा | सरबत, रस, लोणचे, च्यवनप्राश, कॅन्डी, जॅम, पावडर, सुपारी इ. |
| ८ | जांभूळ | सरबत, रस, स्कॅश, जेली, जॅम, बर्फी, बियांची पावडर इ. |
| ९ | अंजीर | सुकविलेले अंजीर, जॅम, बर्फी इ. |
| १० | सीताफळ | कस्टर्ड पावडर, मिल्क शेक, फळांचा गर इ. |
| ११ | पेरु | सरबत, पेरुखंड, टॉफी, जेली इ. |
| १२ | चिकू | सरबत, कॅन्डी, बर्फी, पावडर इ. |
| १३ | फणस | चिलडा, फणस पोळी, जॅम, सरबत इ. |
| १४ | काजू | सरबत, स्कॅश, सिरप, बर्फी, काजू बर्फी इ. |
| १५ | द्राक्ष | सरबत, रस, स्कॅश, जॅम, बेदाणा, शम्पेन इ. |
| १६ | टरबुज | सरबत, कॅन्डी, इ. |
| १७ | कलिंगड | सरबत, लोणचे |
| १८ | नारळ | डिंकलाडू, चुनकापे, खोबरे तेल इ. |

७) सौंदर्यदृष्ट्या फळझाडांचे महत्त्व:

आजच्या हवेच्या प्रदूषणामध्ये फळबागा हवा प्रदूषण विरहीत ठेवण्यास मदत करतील. फळबाग डोळ्यांना आल्हादकारक वाटतात. वातावरणात सौंदर्य निर्माण करतात. फुलांमुळे सुगंधमय वातावरण निर्माण होते. उदा. आंबा, काजू, या फळांचा मोहर.^७

८) फळबाग लागवडीतून रोजगार निर्मिती :

विविध प्रकारच्या फळबाग लागवडीमुळे पूरक असे उद्योग निर्माण होऊन स्थानिक भागात आणि घरातील कुटुंबाना वर्षभर रोजगार उपलब्ध होतो. उदा. फळे

ठेवण्यासाठी किंवा पाठविण्यासाठी करंड्या अथवा खोकी बनविणे, वारंवार लागणारी अवजारे बनविणे, त्यांची दुरुस्ती करणे, खते, औषधे तयार करणे, वाहतुक साधने इत्यादीतून रोजगार निर्मितीला चालना मिळते.

९) पर्यावरणाचा समतोल :

बहुतेक फळझाडे बहुवर्षीय आहेत. सदाहरित झाडांची वाढ झाल्यामुळे त्या ठिकाणचे वातावरण सुधारते. हवेतील प्राणवायूचे प्रमाण वाढून प्रदुषण कमी करते. तापमानात घट होते. फळबाग लागवडीचा हा अप्रत्यक्ष परंतु चांगला फायदा आहे. ज्या जमिनीत फळबागांची लागवड केली जाते. त्या जमिनीत झाडांची मुळे खोलवर पसरतात, जमिनीची धूप कमी होते. पावसाचे पाणी खोलवर मुरते, त्यामुळे जमिनीतील पाण्याची पातळी वाढते. जमीन-पाणी-वातावरण यामुळे नैसर्गिक समतोल साधला जातो आणि नैसर्गिक आपत्तीचे प्रमाण कमी होण्यास मदत होते. ^८

१०) धार्मिकदृष्ट्या फळझाडांचे महत्त्व :

हिंदू धर्मात विविध फळांना शुभ कार्यात, देवपूजेत, धार्मिक विधीत महत्त्व आहे. उदा. नारळ, बेलफळ, बेलपाने, वड, आंबा, औदुंबर इ. ^९

१.२ फलोत्पादन जागतिक पार्श्वभूमी :

फळांच्या निर्यातीतून राष्ट्राला बहुमोल असे परकीय चलन मिळते. परंतु जागतिक बाजारपेठेत फळांची व टिकावू पदार्थांची आपली निर्यात नगण्यच आहे. फळे निर्यातीची आपली बाजारपेठ युरोप असून त्यामध्ये फ्रान्स, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम, डेन्मार्क, स्वीडन, नार्वे, जर्मनी, इंग्लंड या देशांचा समावेश होतो. या सर्व देशात दरसाल ताजी फळे व भाजीपाला यांचा व्यापार वाढत आहे. भारतीय फळे व भाजीपाला यांना युरोपियन आहारात महत्त्वाचे स्थान आहे.

भारताला मॉरिशसला फळनिर्यातीसाठी खूप मोठी संधी उपलब्ध आहे. आज मॉरिशस हा देश, युरोपियन देश, आस्ट्रेलिया, न्युझीलँड व द. आफ्रिकेतून फळांची आयात करतो. ही फळे आयात करायला त्या देशाला फार मोठी किंमत द्यावी लागते. मॉरिशस भारतातून सफरचंद, लिंबू, द्राक्षे, आंबे आणि इतर काही फळे मोठ्या प्रमाणात आयात करायला उत्सुक आहे. ^{१०} जगात ब्राझिल, चीन, इंडोनिशिया, ऑस्ट्रेलिया, भारत

इ. देश फलोत्पादनात प्रमुख आहेत. जगामध्ये फलोत्पादनामध्ये ब्राझील, चीन नंतर भारताचा दुसरा क्रमांक लागतो. फळे व भाजीपाला यांचे एकूण निर्यात मूल्य २००४ मध्ये २,४०० कोटी रुपये होते. आंबा, काजू उत्पादनामध्ये भारताचा जगामध्ये प्रथम क्रमांक लागतो. भारतामध्ये दरवर्षी सुमारे १२६ लाख मे. टन आंब्याचे उत्पादन होते. जगातील फळ उत्पादनात भारताचा वाटा १०.४ टक्के इतका आहे. फळामध्ये केळी, आंबा, पेरू, सफरचंद, द्राक्ष, डाळिंब, अननस, पपई इ. फळ उत्पादनामध्ये भारत आघाडीवर आहे.^{११}

तक्ता क्र. १.१
भारतातील आंबा निर्यात

| वर्षे | वजन (मे.टन) | वजनाची एकूण टक्केवारी | वजनातील वाढ/घट (संख्येत) | निर्यात मूल्य (रु.कोटी) | निर्यातीची एकूणाशी टक्केवारी | निर्यातीतील वाढ/घट (संख्येत) |
|-------|-------------|-----------------------|--------------------------|-------------------------|------------------------------|------------------------------|
| १९९९ | ४५४०७.५९ | ८.९ | -- | ७९.१४ | ८.० | -- |
| २००० | ३४६३१.४८ | ६.८ | -१०७७६ | ७१.५५ | ७.३ | -७.५९ |
| २००१ | २७१६९.६७ | ५.४ | -७४६१.८१ | ६८.६१ | ७.० | -२.९४ |
| २००२ | ४४४२९.३३ | ८.८ | १७२५९.६६ | ८०.९९ | ८.२ | १२.३८ |
| २००३ | ३८००३.४३ | ७.५ | -६४२५.९ | ८४.१९ | ८.५ | ३.२ |
| २००४ | ६०५५१.३२ | ११.९ | २२५४७.८९ | ११०.५२ | ११.२ | २६.३३ |
| २००५ | ५३४८०.०२ | १०.५ | -७०७१.३ | ८९.६१ | ९.१ | -२०.९१ |
| २००६ | ६९६०६.६० | १३.९ | १६१२५.२८ | १२८.११ | १३.० | ३८.५ |
| २००७ | ७९०६०.८८ | १५.६ | ९४५४.२८ | १४१.९४ | १४.४ | १३.८३ |
| २००८ | ५४३५०.८० | १०.७ | - २४७१०.०८ | १२७.४२ | १३.३ | -१४.५२ |
| एकूण | ५०६६९१.१२ | १००.०० | ८९४३.२१ | ९८२.०८ | १००. | ४८.२८ |

स्त्रोत : National Agricultural Co-operative marketing Federation of India- 2009.

तक्ता क्र. १.१ मध्ये भारतातील आंबा निर्यात दर्शवली आहे. १९९९ ते २००८ या अभ्यासकाळात एकूण ५०६६९१.१२ मे. टन आंबा निर्यात झाली असून सर्वाधिक आंब्याची निर्यात २००७ मध्ये ७९०६०.८८ (१५.६%) करण्यात आली. याच काळात आंब्यापासून मिळालेले एकूण निर्यात मूल्य ९८२.०८ कोटी रु. असून निर्यातीपासूनचे सर्वात जास्त मूल्य २००७ मध्ये १४१.९४ लाख रु. (१४.४%) इतके मिळाले.

अभ्यास काळात आंब्याची एकूण निर्यात ८९४३.२१ मे. टन इतकी वाढली असून या निर्यातीपासून ४८.२८ कोटी रु. मूल्य (परकीय चलन) मिळाल्याचे आढळून येते. भारतातून चीन, ऑस्ट्रेलिया, जपान, कुवेत, सौदी अरेबिया, यु.ए.ई. इंग्लंड हे देश, प्रमुख आयातदार देश आहेत. जपान सरकारकडून सन २००६ साली आंबा आयातीस परवानगी प्राप्त झाल्यानंतर महाराष्ट्र राज्य कृषी पणन मंडळाने नवी मुंबई (वाशी) येथे उभारलेल्या आधुनिक सुविधेवरून प्रायोगिक तत्त्वावर केशर आंब्याची यशस्वी निर्यात केली. त्यानंतर २००७ साली २६ मे. टन हापूस व केशर आंब्याची ११ निर्यातदारामार्फत व्यापारी तत्त्वावर निर्यात केली. महाराष्ट्रातून औरंगाबाद, लातूर, जालना, नाशिक, अहमदनगर या भागातील केशर आंबा व रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, रायगड या भागातील हापूस आंब्याची निर्यात केली.

तक्ता क्र. १.२

देशनिहाय आंबा निर्यात (२००७-०८)

| देश | परिणाम (लाख किलो) | एकूणाशी टक्केवारी | मूल्य (रु. लाखात) | मूल्याची एकूणाशी टक्केवारी (रु. लाखात) | प्रति किलो दर | एकूण निर्यातील वाटा (टक्के) |
|------------------------|-------------------------|----------------------|-------------------------|--|---------------------|-----------------------------------|
| यी.ए.ई. | २२४.६९ | १०.८ | ९३२०.९३ | ५९.२ | २८.१३ | ४९.६ |
| यु.के. | २५.७५ | १.२ | १९८१.६६ | १२.६ | ७६.९५ | १५.६ |
| बांगलादेश | १७०६.६३ | ८२.१ | १५९५.४५ | १०.२ | ९.३५ | १२.६ |
| नेपाळ | ७५.५० | ३.६ | ६३६.३० | ४.० | ८.४३ | ५.० |
| सौदी अरेबिया | १४.२८ | ०.७ | ४५९.७७ | ३.० | ३०.८८ | ३.६ |
| कुवेत | ४.६० | ०.२ | ३०६.१७ | २.० | ६६.४४ | २.४ |
| संयुक्त अरब अमिराती | १.४२ | ०.१ | १९५.७७ | १.२ | १३७.३९ | १.५ |
| बहरीन | ४.७४ | ०.२ | १७५.६९ | १.१ | ३७.०५ | १.४ |
| सिंगापूर | ३.४० | ०.१ | १९८.५७ | १.० | ४९.५३ | १.३ |
| जर्मनी | ३.४३ | ०.१ | १४४.०६ | १.० | ४१.९० | १.१ |
| इतर | १४.४० | ०.९ | ७५७.३५ | ४.७ | ५२.५७ | ५.९ |
| एकूण | २०७८.८४ | १००.०० | १५७४१.४२ | १००.० | ५३.८६ | १०० |

स्त्रोत : National Agricultural Co-operative marketing Federation of India-2009.

तक्ता क्र. १.२ मध्ये २००७-०८ मध्ये देशनिहाय आंबा निर्यात दर्शवली आहे. भारतातून एकूण २०७८.८४ लाख किलो एवढी आंब्याची एकूण निर्यात झाली असून सर्वाधिक निर्यात बांग्लादेशाला १७०६.६३ लाख किलो (८२.१७) झालेली आढळून आले. तसेच याच वर्षी आंब्याच्या निर्यातीपासून एकूण १५७४१.४२ लाख रु. परकीय चलन मिळाले आंबा निर्यातीसाठी प्रतिकिलो सरासरी दर ५३.८६ रु. इतका मिळाल्याचे आढळून आले.

आंब्याला प्रतिकिलो सर्वात जास्त दर १३७.३९ रुपये इतका संयुक्त अरब व अमिराती या देशाकडून मिळाला असून सर्वात कमी दर बांग्लादेशाकडून प्रति किलो ९.३५ रु. इतका मिळाल्याचे संशोधन कर्त्याला आढळून आले.^{१२}

भारतात काजूच्या लागवडीखाली ५ लाख ७० हजार हेक्टर क्षेत्र असून त्यापासून २ लाख ४६ हजार टन कच्च्या काजूबिया मिळतात. एकूण उत्पादन १,६६,००० टन काजू बियांचे उत्पादन होते. भारतात चिकू पिकाखाली २७,९०० हेक्टर क्षेत्र पिकाखाली असून दर हेक्टरी उत्पादकता १४ टन आहे. महाराष्ट्रात या पिकाखाली ५,००० हेक्टर क्षेत्र आहे.

भारतात नारळ पिकाखाली एकूण १.९० दशलक्ष हेक्टर क्षेत्र असून नारळ उत्पादन ११,९८९ दशलक्ष इतके आहे. त्यापासून रु. ७०० कोटी रुपयांचे उत्पन्न मिळाले. तसेच कात्या व्यवसायापासून भारताला ५०८ कोटी रुपयांचे परकीय चलन मिळाले. महाराष्ट्रात नारळाखाली एकूण ३२,००० हजार हेक्टर क्षेत्र आहे.

भारतात सुपारीखाली २.९० लाख हेक्टर क्षेत्र असून त्यापासून ३,३५,००० टन सुपारी उत्पादन मिळते. भारतामध्ये सुपारीची सरासरी उत्पादकता ११.५५२ कि.ग्रॅम प्रति हेक्टरी ओली सुपारी अशी आहे. भारत दरवर्षी ५९२.४ टन सुपारी २२ देशांना निर्यात करीत असून त्यापासून ३२ कोटी रुपयांचे परकीय चलन मिळवितो. भारतातून पाकिस्तान, मालदीव आणि अमेरिका या देशांना १७१ टन ताजी सुपारी निर्यात करून ७५ लाख रुपयांचे परकीय चलन मिळविले आहे.^{१३}

महाराष्ट्रात काजूखालील क्षेत्र १,९०,००० हेक्टर इतके झाले आहे. डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषी विद्यापीठाचे (दापोली) काजूवरील संशोधन व महाराष्ट्र शासनाची रोजगार हमी योजनाशी निगडीत फळबाग लागवड हे याचे प्रमुख कारण आहे.

सन १९९९-२००० मध्ये भारतातून सुमारे ९२.३१६ टन काजूगर निर्यात झाला तर २०००-२००१ साली सुमारे ८१.६५७ टन इतक्या काजूगराची निर्यात झाली आहे. या निर्यातीपासून सन १९९९-२००० साली २,४५६ कोटी रुपये भारताला मिळाले. प्रामुख्याने अमेरिका, नेदरलॅन्ड, इंग्लड, जपान, संयुक्त अरब अमिराती, सौदी अरेबिया, सिंगापूर इ. देशांना काजू गराची निर्यात होते.

आज भारताचा चीननंतर कृषी उत्पादनात जगामध्ये दुसरा क्रमांक लागतो. यामध्ये प्रामुख्याने द्राक्षे, आंबा, डालिंब, केळी या फळांच्या उत्पादनात भारत जगात आघाडीवर आहे. परंतु निर्यातीतील वाटा हा अगदी नगण्य म्हणजे १% इतकाच आहे. आंब्याच्या निर्यातीमध्ये वृद्धी व्हावी यासाठी राज्यातील कृषी पणन मंडळ प्रयत्नशील आहे.^{१४}

१.३ भारतातील फलोत्पादन शेतीची पार्श्वभूमी आणि विकास :

भारत सरकारने पहिल्या पंचवार्षिक योजनेपासून (१९५१-५६) शेती व्यवसायाचे महत्त्व जाणून त्यात सुधारणा करण्यावर भर दिला आहे. त्यामुळे देशाच्या अन्न धान्याच्या उत्पादनात भरीव वाढ होऊन, देश धान्योत्पादनात स्वावलंबी व्हावा, या उद्दिष्टासाठी प्रथमपासूनच वाढणाऱ्या लोकसंख्येची गरज भागविण्यासाठी, अन्नधान्य उत्पादनावर विशेष भर देण्यात आला. शेतीत तांत्रिक बदल म्हणून १९६५ मध्ये प्रारंभ झालेली हरित क्रांती होय. त्यामुळे भारताचे अन्नधान्याचे उत्पादन मोठ्या प्रमाणावर वाढले. त्यानंतर एका दशकाच्या कालावधीतच देश अन्न धान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण झाला. जरी अन्नधान्याचे उत्पादन २००८-०९ मध्ये २२४ दशलक्ष टन इतके वाढले असले तरी जलद वाढणाऱ्या लोकसंख्येचा विचार करता ही वाढ अपुरी पडणारी आहे. अन्न सेवनात विविधता येण्यासाठी फळांचे उत्पादन वाढविण्याकडे लक्ष देणे उचित ठरेल. त्यामुळे अन्न सेवनात गुणात्मक बदल घडून येण्यास मदत होईल.

भारतातील फलोत्पादन शेतीच्या पार्श्वभूमीचा विचार करता सन १९४८ ते १९८० च्या दरम्यान भारताने कडधान्य उत्पादनावर लक्ष केंद्रीत केलेले होते. त्यावेळी फलोत्पादन विकासासंदर्भात ठोस उपाय योजलेले दिसून येत नाहीत. १९८० ते १९९२ च्या दरम्यान नियोजित फलोत्पादन शेतीविषयक विकासाचे धोरण आपणास पहावयास मिळते. भारतात लागवडीयोग्य क्षेत्रापैकी फक्त १९९० मध्ये ५.९% भाग फलोत्पादना-

साठी वापरला होता. परंतु, १९९३ नंतर या शेतीच्या विकासाकडे लक्ष दिलेले दिसून येते. विकासात्मक धोरण राबविण्यासाठी विविध प्रकारचे तंत्रज्ञान आणि नियोजनाचा वापर यामुळे हा कालखंड फलोत्पादन शेतीचा 'सोनेरी क्रांती कालखंड' (Golden Period) म्हणून ओळखला जातो. राष्ट्रीय फलोत्पादन शेती आयोगाने सन २००५-०६ मध्ये एकात्मिक ग्रामीण विकास हा कार्यक्रम फलोत्पादन शेतीसाठी राबविला होता. याचा प्रमुख उद्देश फलोत्पादनाचा विकास घडवून आणणे हा होता. सन २००५ मध्ये देशाचे फलोत्पादनातील सरासरी वार्षिक उत्पादन १५०.७३ दशलक्ष टन एवढे असलेले दिसून येते. या अधिक उत्पादनामुळे भारत हा फळे उत्पादनामध्ये जगात एक प्रमुख देश ठरला आहे. परंतु, भारतीय फलोत्पादन क्षेत्रामध्ये अनेक समस्या पहावयास मिळतात. उदा. कमी उत्पादकता, जल सिंचनाच्या अपुऱ्या सुविधा, अविकसित पायाभूत सुविधा, शीतगृहांचा अभाव, वहातुक व दळणवळण साधनांचा अभाव, फळप्रक्रिया या उद्योगांचे अल्प प्रमाण इत्यादी. फळबागेतील आंतरपीक शेतीमुळे मिळणारे फायदे कृषीक्षेत्रापेक्षा अधिक आहेत. आजही २४० दशलक्ष हेक्टर जमीन फलोत्पादन शेतीसाठी योग्य आहे. भारतात भरपूर सूर्यप्रकाश, अतिरिक्त मनुष्यबळ फलोत्पादनासाठी देशांतर्गत जास्त मागणी इत्यादीमुळे भारतात फलोत्पादन शेतीचा विकास करणे शक्य आहे.^{१५}

तक्ता क्र. १.३

भारतातील राज्य निहाय फळझाड लागवड आणि उत्पादकता^{१६}

| राज्य | १९९१-९२ | | २००५-२००६ | | १९९१-९२ | | २००५-०६ | | १९९१-९२ | | २००५-०६ | |
|---------------|--------------------|-------------------------------|--------------------|----------------------------|-------------------|-------------------------------|-------------------|-------------------------------|-------------------|-------------------------------|-------------------|-------------------------------|
| | क्षेत्र ००० हे. | क्षे. एकूणाशी टक्केवारी | क्षेत्र ००० हे. | क्षे. एकूणाशी टक्केवारी | क्षेत्र ००० टन | क्षे. एकूणाशी टक्केवारी | क्षेत्र ००० टन | क्षे. एकूणाशी टक्केवारी | क्षेत्र ००० टन | क्षे. एकूणाशी टक्केवारी | क्षेत्र ००० टन | क्षे. एकूणाशी टक्केवारी |
| आंध्रप्रदेश | ३१३ | १०.९ | ७८३ | १४.८ | ४००८ | १४.० | ८६९६ | १५.८ | १३ | ६.३ | ११ | ४.६ |
| अरुणाचल | २० | ०.७ | ५२ | ०.९ | ४७ | ०.२ | १०५ | ०.२ | २ | १.० | २ | ०.८ |
| आसाम | ७२ | २.५ | ११३ | २.१ | ८८६ | ३.१ | १३५२ | २.४ | १२ | ५.८ | १२ | ५.० |
| बिहार | २६७ | ९.३ | ३१० | ५.८ | २७९९ | ९.४ | ३४७४ | ६.३ | १० | ४.८ | ११ | ४.६ |
| गोवा | ११ | ०.४ | १० | ०.२ | ८४ | ०.३ | १८४ | ०.३ | ०८ | ३.८ | १८ | ७.५ |
| गुजरात | ८५ | ३.० | २७० | ५.० | १८२९ | ६.४ | ४६७८ | ८.५ | २२ | १०.६ | १७ | ७.१ |
| हरियाणा | १४ | ०.५ | २७ | ०.५ | ११० | ०.४ | २१६ | ०.४ | ०८ | ३.८ | ०९ | ३.७ |
| हिमाचल | १५७ | ५.५ | १८३ | ३.४ | ३४० | १.२ | ६९२ | १.२ | ०२ | १.० | ०४ | १.६ |
| जम्मू/काश्मिर | ११९ | ४.२ | १६३ | ३.३ | ७०१ | २.४ | १२८९ | २.३ | ०६ | २.८ | ०८ | ३.३ |
| कर्नाटक | २०९ | ७.३ | २६३ | ४.९ | ३१५२ | ११.० | ४२४२ | ७.७ | १५ | २.४ | १६ | ६.७ |

| | | | | | | | | | | | | |
|--------------|-------------|-------------|-------------|-------------|--------------|---------------|--------------|------------|------------|------------|------------|------------|
| केरळ | २३६ | ८.२ | ३४२ | ६.४ | ११०१ | ३.९ | २७९३ | ५.० | ०५ | ६.३ | ०८ | ३.३ |
| मध्य प्रदेश | ६५ | २.२ | ११४ | २.१ | १२४५ | ४.४ | १७७५ | ३.२ | १९ | १०.५ | १६ | ६.७ |
| महाराष्ट्र | २५६ | ९.० | १३७० | २५.९ | ३५१८ | १२.३ | १०२५२ | १८.७ | १४ | ६.७ | ०७ | २.९ |
| मणिपूर | २० | ०.७ | ३१ | ०.६ | ४३ | ०.२ | १८९ | ०.३ | ०२ | १.० | ०६ | २.५ |
| मेघालय | २४ | ०.८ | २८ | ०.५ | २१८ | ०.७ | २३२ | ०.५ | ०९ | ४.३ | ०८ | ३.३ |
| ओरिसा | १३६ | ४.७ | २३८ | ४.४ | ९७८ | ३.४ | १४०२ | २.५ | ०७ | ३.४ | ०६ | २.५ |
| पंजाब | ७३ | २.५ | ५२ | ०.९ | ६६४ | २.३ | ७४६ | १.३ | ०९ | ४.३ | १४ | ५.८ |
| तामिळनाडू | १३६ | ४.७ | २५८ | ४.८ | २३१६ | ८.१ | ५७७९ | १०.५ | १७ | ८.२ | २२ | ९.२ |
| त्रिपूरा | ४५ | १.५ | ३३ | ०.६ | ३१९ | १.१ | ५२५ | ०.९ | ०७ | ३.४ | १६ | ६.७ |
| उत्तर प्रदेश | ४५३ | १५.८ | ४४५ | ८.९ | २८७९ | १०.१ | ३८१३ | ६.९ | ०६ | २.८ | ०९ | ३.७ |
| पं. बंगाल | १११ | ४.७ | १७३ | ३.२ | ११३२ | ४.३ | २३०२ | ४.८ | १० | ४.८ | १३ | ६.९ |
| इतर | २८ | ०.९ | ४३ | ०.८ | १०९ | ०.४ | १८० | ०.३ | ०४ | २.० | ०४ | १.६ |
| एकूण | २८५० | १००% | ५३०१ | १००% | २८४७८ | १००.०० | ५४९१६ | १०० | २०७ | १०० | २३७ | १०० |

स्रोत : Indian Horticulture database, National Horticulture Board Ministry of Agricultural New Delhi : Page No. 342

(http://nhb.gov.in/2005-06) 23 August 2008.

तक्ता १.३ मध्ये भारतातील राज्यनिहाय फळझाड लागवड आणि उत्पादकता दर्शवली आहे. १९९१-९२ मध्ये फळझाड लागवडीखाली सर्वात जास्त क्षेत्र उत्तरप्रदेश या राज्याचे ४,५३,००० हेक्टर (१५.८%) असून दुसऱ्या क्रमांकावर आंध्रप्रदेश आहे. तर २००५-०६ मध्ये लागवडीखालील क्षेत्राच्या बाबतीत महाराष्ट्र प्रथम क्रमांक असून १३७०००० हेक्टर (२५.९%) तर दुसरा क्रमांक आंध्रप्रदेश या राज्याचा असलेला संशोधनातून आढळून येते.

फळे उत्पादनाच्या बाबतीत याच काळात सर्वाधिक उत्पादनात (१९९१-९२) आंध्रप्रदेश प्रथम क्रमांकावर तर महाराष्ट्र दुसऱ्या क्रमांकावर होते. सन २००५-०६ चा विचार करता महाराष्ट्र प्रथम क्रमांक असून १०२५२००० टन इतके उत्पादन झाले. त्या खालोखाल आंध्रप्रदेश व तामिळनाडू यांचा क्रम असल्याचे स्पष्ट होते. १९९१-९२ मध्ये फळ लागवडीपासून सर्वाधिक उत्पन्न गुजरात २२ (१०.६%) हेक्टरी टन मिळाले असून २००५-०६ मध्ये तामिळनाडू २२ (९.२%) हेक्टरी टन असल्याचे स्पष्ट होते. १९९१-९२ मध्ये भारतात फळलागवडीखाली एकूण २८५० दशलक्ष हे. क्षेत्र असून २००५-०६ मध्ये ५,३०१ दशलक्ष हे. क्षेत्र फळलागवडी खाली होते. याच काळात उत्पादन २८४७८ दशलक्ष टनावरून ५४९१६ दशलक्ष टनापर्यंत वाढल्याचे आढळून येते.

१.४ अभ्यास क्षेत्र : (Study Area)

प्रस्तुत संशोधनासाठी सिंधुदुर्ग जिल्ह्याची निवड केली आहे. कोकण विभागातील दक्षिण भागाच्या औद्योगिक व कृषिक्षेत्रामध्ये जलद विकास साध्य व्हावा आणि विकास योजनांची अंमलबजावणी कार्यक्षमतेने व्हावी, या दृष्टीकोनातून स्थानिक लोकांच्या मागणीचा विचार करून १ मे १९८१ रोजी रत्नागिरी जिल्ह्याचे विभाजन होऊन सिंधुदुर्ग जिल्ह्याची निर्मिती करण्यात आली.

पश्चिमेला निळाशार अथांग सागर, पूर्वेस सह्याद्रीच्या उंच-उंच रांगा, विजयदुर्ग, सिंधुदुर्ग सारखे सागरी दुर्ग, मध्येच दिसणाऱ्या आमराई, काजूच्या बागा, नारळी पोफळीची झाडे, सागाची वने, गावो-गाव असलेली पुरातन मंदिरे या सर्वांनी हा भाग समृद्ध झाला आहे. राज्याच्या ७२० किलो मीटर किनारपट्टी पैकी १२१ किलोमीटर किनारपट्टी सिंधुदुर्ग जिल्ह्याला लाभली आहे.

१.५ संशोधनाचे महत्त्व :

प्रस्तुत संशोधन हे रोजगार हमी योजनेंतर्गत फळझाड लागवड करणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या दृष्टीने महत्त्वाचे आहे.

१) महाराष्ट्रासारख्या निम्न्याहून जास्त अवर्षण प्रदेश असणाऱ्या भागात तेथील हवामानात वाढणाऱ्या कमी पावसावर येणाऱ्या फळबागाची लागवड झाली तर शेतकऱ्यांना फळबाग लागवडीने मोठा फायदा होणार आहे. अशा शेतकऱ्यांचा आर्थिक पाया मजबूत होईल या दृष्टीने हे संशोधन महत्त्वाचे आहे.

२) देशात आणि महाराष्ट्रात लाखो हेक्टर पडीक जमीन अस्तित्वात आहे त्या जमिनीला पोषक अशी फळबाग लागवड केली गेली तर मोठ्या प्रमाणावर पडीक जमीन लागवडीखाली येऊन शेतीचा विकास होईल. शेतीला फळ बागेच्या स्वरूपात जोडधंदा तयार होईल.

३) आजही आपल्याकडे बहुसंख्य शेतकरी परंपरागत शेती पद्धतीमध्येच गुंतलेले आहेत. त्यांना नवीन व्यूहरचनेचा फायदा मिळावा म्हणून पीक पद्धतीत कोरडवाहू आणि बागायत अशा दोन्ही प्रकारच्या फळबागा लागवडी करून त्या शेतकऱ्यांची आर्थिक प्रगती होईल या दृष्टीने हे संशोधन महत्त्वाचे आहे.

४) निर्यात माल म्हणून फळे, भाजीपाला, फुले यांना आंतरराष्ट्रीय बाजारात फार मोठी मागणी आहे जर आपल्याकडे फळबागा क्षेत्राचा विकास करून निर्यात वाढून आर्थिक विकास होईल आणि पर्यायाने जागतिक बाजारपेठेमुळे परकीय चलन मिळेल या दृष्टीने हे संशोधन महत्त्वाचे आहे.

५) फळबागा विकासामुळे स्थानिक भागात फार मोठ्या प्रमाणात रोजगार निर्मिती होईल. त्यांना स्वतःलाही वर्षभर काम मिळेल. प्रक्रिया उद्योगांना चालना मिळेल, त्यातूनही रोजगार निर्मिती होईल. लोकांचे उत्पन्न वाढून बचत वाढेल. गुंतवणूक निर्माण होईल. या दृष्टीने हे या संशोधनाचे महत्त्व आहे.

६) सदर संशोधनाचा फायदा भविष्यकालीन शासकीय योजना तसेच नवीन संशोधनास चालना देण्याकरिता देखील हे संशोधन महत्त्वाचे आहे.

१.६ संशोधन कालावधी

प्रस्तुत संशोधनासाठी सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील सर्व तालुक्याचा “रोजगार हमी योजनेतर्गत सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात राबविलेल्या फळझाड लागवड योजनेचा आर्थिक पहाणी अभ्यास” हा विषय असून संशोधन कालखंड सन १९९१ ते २००० असा १० वर्षासाठी निश्चित केलेला आहे. कारण लाभार्थी शेतकऱ्यांना फळझाड लागवडीपासून मिळणारे उत्पन्न काही विशिष्ट कालखंडानंतर मिळते म्हणून अभ्यासासाठी मागील कालखंड निश्चित केलेला आहे.

१.७ समस्या विधान

प्रस्तुत संशोधनाचा विषय “रोजगार हमी योजनेतर्गत सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात राबविलेल्या फळझाड योजनेचा आर्थिक पहाणी अभ्यास” असा आहे. रोजगार हमी योजनेतर्गत सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील फळझाड लागवडी खालील क्षेत्र व रोजगार हमी योजनेमूधन शेतकऱ्यांना मिळणारे उत्पन्न, रोजगार निर्मिती यांचा अभ्यास करणे क्रमप्राप्त ठरते. त्या अनुषंगाने प्रस्तुत विषयाची निवड करण्यात आली आहे.

१.८ गृहितक :

सदर शोध प्रबंधासाठी खालील गृहितक निवडण्यात आलेले आहे.

“रोजगार हमी योजनेच्या अंतर्गत फळझाड लागवड योजनेमुळे सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या आर्थिक विकास आणि रोजगार संधीत वाढ झालेली आहे.”

१.९ संशोधनाची उद्दिष्ट्ये :

प्रस्तुत संशोधनासाठी खालील उद्दिष्ट्ये निश्चित करण्यात आलेली आहेत.

१. महाराष्ट्रातील फळझाड लागवड कार्यक्रमांच्या विकासाचा अभ्यास करणे.
२. सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील भूमिउपयोजन पीक रचनेचा अभ्यास करणे.
३. फळझाड योजनेमुळे सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील रोजगार निर्मितीवर झालेल्या परिणामांचा अभ्यास करणे.
४. फळझाड योजनेमुळे सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या बदललेल्या आर्थिक परिस्थितीचा अभ्यास करणे.

१.१० संशोधन पद्धती व माहिती संकलन :

१.१०.१ संशोधन पद्धती :

सदर संशोधन विषयाचे महत्त्व लक्षात घेता योग्य संशोधन पद्धती या अभ्यासासाठी स्विकारण्यात आली आहे. प्रस्तूत संशोधनाचा प्रकार वर्णनात्मक आणि विश्लेषणात्मक आहे. कारण जिल्ह्यातील फळबाग उत्पादकांच्या विविध वैशिष्ट्यांचे विश्लेषण करणे हा त्यामागचा उद्देश आहे. निर्धारित केलेल्या उद्दिष्टानुसार संशोधन आराखडा तयार करण्यात आला आहे.^{१७}

१.१०.२ तथ्य संकलन :

प्रस्तूत संशोधन प्राप्त तथ्यांच्या आधारे सखोल अध्ययनावर आधारीत आहे. तथ्य संकलनासाठी प्रामुख्याने प्राथमिक आणि दुय्यम स्रोतांचा वापर केला आहे. संशोधनात अधिकाधिक वस्तुनिष्ठता आणण्यासाठी प्रत्यक्ष फळबाग उत्पादक शेतकऱ्यांना भेटून प्राथमिक माहिती गोळा केली आहे. की ज्यांना आपल्या फळबागे विषयी ज्ञान व अनुभव आहे. तथ्य संकलनासाठी पुढील स्रोतांचा आधार घेतला आहे.^{१८}

१.१०.२.१ प्राथमिक स्रोत :

प्राथमिक तथ्ये ही स्वतः संशोधन कर्त्याने एकत्रित करण्याचा प्रयत्न केला आहे. त्याकरिता. प्रश्नावलीचा वापर केला आहे. प्रश्नावली मध्ये मुक्त आणि बंद प्रश्नाचा समावेश केला आहे. संशोधनासाठी तयार केलेली प्रश्नावली ही संमिश्र स्वरूपाची होती.^{१९}

प्रश्नावली मध्ये प्रामुख्याने रोजगार हमी योजनेतर्गत फळबाग लागवड केलेले शेतकरी (फळ उत्पादक) यांच्याकडून नांव, लिंग, शिक्षण, वयोगट, शेतीचे वर्गीकरण, उत्पन्नाची विविध साधने, पीक पद्धतीचा आकृतिबंध, जलसिंचन सुविधा, फळबाग लागवडीचा तपशील, फळबाग लागवडीची कारणे, फळांचे विविध प्रकार, फळबाग लागवडीचा खर्च, उत्पादन, विक्री, बाजारपेठेचे स्वरूप, प्रक्रिया सुविधा, फळांना मिळणारा बाजारभाव, रोजगार निर्मिती या स्वरूपाचे अनेक प्रश्न विचारण्यात आले होते. यातून वस्तुनिष्ठ माहिती गोळा केलेली आहे.

१.१०.२.२ दुय्यम स्रोत :

सदरच्या संशोधनाकरिता आवश्यक असणारी दुय्यम माहिती ही विविध प्रकारचे शासकीय अहवाल व विविध संशोधन संस्थांच्या अहवालातून गोळा करण्यात आली आहे. तसेच फळबागावर आधारित संशोधन प्रबंध, एम फील प्रबंधिका, संशोधन अहवाल, संदर्भ ग्रंथ, पुस्तके, मासिके, साप्ताहिके इ. चा वापर करण्यात आला आहे. याशिवाय सिंधुदुर्ग जिल्ह्याची सामाजिक, आर्थिक पाहणी, महाराष्ट्राची आर्थिक पाहणी यांच्या आधारे योग्य ती माहिती मिळवण्याचा प्रयत्न केला आहे.

१.१०.३ नमुना निवड :

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील रोजगार हमी योजनेतर्गत फळबाग योजनेचा आर्थिक अभ्यास करण्यासाठी सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील सर्वच तालुक्यांची निवड करण्यात आली. जिल्ह्यातील एकूण गावांची संख्या ७४० आहे. त्यापैकी ६४ (८.६५%) गावांची नमुना म्हणून निवड केली असून साधा यादृच्छिक नमुना (Random Sampling) पद्धतीचा वापर केला आहे.^{२०} या गावांमधून ५७२ लाभार्थी शेतकऱ्यांचे निवड देखिल यादृच्छिक पद्धतीनेच करण्यात आली आहे. यासाठी जिल्हा कृषी अधिक्षक कार्यालयामधील तालुका निहाय लाभार्थी यादीचा आधार घेण्यात आला होता.

१.१०.४ सांख्यिकीय निवड तंत्र :

सदर संशोधनाच्या अभ्यासासाठी ठरविण्यात आलेली विविध उद्दिष्टे व गृहितके यांचे परिक्षण करण्यासाठी संकलित करण्यात आलेल्या माहितीची प्रक्रिया एस्. पी. एस्. एस्. सॉफ्टवेअरच्या माध्यमातून करण्यात आली आहे. प्रस्तूत संशोधनासाठी प्राथमिक आणि दुय्यम स्रोताद्वारे मिळालेल्या माहितीचे विश्लेषण करण्यासाठी विविध सांख्यिकीय तंत्राचा वापर करण्यात आला आहे. यात प्रामुख्याने शतप्रमाण, वृद्धी दर, प्रमाण विचलन, माध्य, सहसंबंध इ. चा अवलंब केला आहे.

१.११ संशोधनाची व्याप्ती :

प्रस्तूत संशोधन हे रोजगार हमी योजनेतर्गत करण्यात आलेल्या फळझाड लागवडीच्या संदर्भात महाराष्ट्र राज्यातील सिंधुदुर्ग जिल्ह्यावर आधारित आहे. भौगोलिक

रचनेनुसार जिल्ह्याचे विभाजन आठ तालुक्यात झालेले असून या आठ ही तालुक्यात फळझाड योजनेच्या लाभार्थी शेतकऱ्यांचा अभ्यास करण्यात आलेला आहे.

१.१२ संशोधन कार्याच्या मर्यादा :

प्रस्तुत संशोधन करताना खालील मर्यादा आलेल्या आहेत.

१. प्रस्तुत संशोधन हे फक्त सिंधुदुर्ग जिल्ह्यापुरते मर्यादित असल्याने तेथील फळपिकांच्या संदर्भात काढण्यात आलेले निष्कर्ष इतर जिल्ह्यातील फळ पिकांना लागू पडणार नाहीत.
२. प्राथमिक तथ्य संकलन हे प्रामुख्याने लाभार्थी शेतकऱ्यांकडून केलेले आहे. नमुना लाभार्थी शेतकरी अशिक्षित, अर्धशिक्षित असल्याने त्यांना संशोधनाचा उद्देश, व्याप्ती, तथ्यांचे स्वरूप समजाणे बरेच कठीण गेले. अनेक लाभार्थी शेतकरी तटस्थ वृत्तीचे, पारंपारीक विचार सरणीचे असल्याने त्यांच्याकडून अपेक्षित प्रतिसाद मिळू शकला नाही.
३. पूर्व अभ्यासातील मागोवा घेण्यासाठी दुय्यम साधन सामुग्रीचा उपयोग करावा लागतो. परंतु जिल्ह्यातील प्रत्येक तालुका कृषी कार्यालयात लिखित स्वरूपात असलेली संकलित सामुग्री भिन्न पद्धतीने संकलित केली असल्याने तिच्या विश्वसनीयतेवर मर्यादा पडतात.
४. अनेक लाभार्थी शेतकरी अर्धशिक्षित असल्याने त्यांचे पूर्ण सहकार्य मिळवून आवश्यक तेवढे संकलन करता यावे म्हणून मुक्त आणि बंदिस्त प्रश्नावलीचा वापर करण्यात आलेला होता. या प्रश्नावलीचा वापर करताना चर्चा, निरीक्षण, मुलाखत याही पद्धतीचा वापर करण्यात आला आहे.

१.१३ संशोधन साहित्याचा आढावा :

- राजमाने के. डी. (१९८६) यांनी सांगली जिल्ह्यातील “द्राक्षे आणि ऊस शेतीचा तुलनात्मक आर्थिक विकास” हा पी.एच.डी.चा शोध निबंध शिवाजी विद्यापीठास सादर केला. या संशोधन ग्रंथामध्ये द्राक्षांची लागवड केल्यानंतर १८ महिन्यांनी उत्पादन मिळते. द्राक्ष उत्पादन घेण्यासाठी एकूण स्थीर खर्चाची विभागणी करावी लागते. फलोत्पादनाला लागणारा हा खर्च हा एकूण लागवड क्षेत्रावर अवलंबून

आहे. एकूण उत्पादन कालावधी, श्रमिक खर्च, छाटणी खर्च यावर करण्यात येणारा खर्च आणि घेतलेले कर्ज या संदर्भात मागील ३० वर्षांच्या खर्चाचा संदर्भात आढावा घेतला आहे. यातून द्राक्षे आणि ऊस शेतीच्या आर्थिकतेचा तुलनात्मक अभ्यास केला आहे. त्यातून निष्कर्ष काढले आहे.^{२१}

- पाटील एस. एल. (१९८८) - **“सांगोला जिल्ह्यातील लोकांच्या जीवनावर फलोत्पादन विकासामुळे झालेला सामाजिक आर्थिक परिणामाचा एक दृष्टीकोनात्मक अभ्यास”** सदर प्रबंधामध्ये फलोत्पादनामुळे लोकांच्या आर्थिक स्थितीमध्ये स्थिरता निर्माण होते. फलोत्पादनामुळे पारंपारिक उत्पादनापेक्षा अधिक नफा प्राप्त होतो. सदर संशोधनामध्ये ज्वारी, डाळिंब, बोर आणि द्राक्षे यांचे तुलनात्मक उत्पन्न आणि प्रति एकर येणारा खर्च यांचा अभ्यास केला आहे. ज्वारी पासून प्रति एकर रु. ३५०० नफा, डाळिंबापासून प्रति एकर रु. ३,००० नफा, बोरापासून प्रति एकर रु. २०,००० नफा आणि द्राक्षेपासून प्रति एकर रु. ५९,००० रु. नफा मिळतो. भविष्यकाळात पारंपारिक कृषी उत्पादनापेक्षा फलोत्पादन शेती केल्यास शेतकऱ्यांच्या आर्थिक स्थितीत सुधारणा होऊ शकते हे संशोधनातून दिसून आले आहे.^{२२}
- अहेर, बी. एम. (१९८९) यांच्या **शिवाजी विद्यापीठास सादर केलेल्या पी.एच.डी.** प्रबंधामध्ये नांफेड तालुक्यातील द्राक्षे लागवडीचा स्थिर खर्च, बदलता खर्च, एकूण खर्च आणि द्राक्ष लागवडी पासून मिळणारे उत्पन्न व उपभोग खर्च या सर्वांचा आढावा घेण्यात आलेला आहे. शेतकऱ्यांना द्राक्ष लागवडीपासून मिळणारे उत्पन्न आणि येणारा खर्च यांचे जमिनीच्या गुंठेवारीत केलेले विश्लेषण फार महत्त्वाचे आहे.^{२३}
- पुजारी, ए. जी. (१९८९) यांच्या पी.एच.डी. प्रबंधामध्ये **सोलापूर जिल्ह्यातील डाळिंब आणि इतर फळपिकांच्या प्रगतीच्या आढावा** घेतलेला आहे. त्यामध्ये फळ पिकांचा उत्पादन खर्च, कायम स्वरूपी चिरंतन विकास खर्च आणि पुन्हा पुन्हा उद्भवणारा खर्च, बाजारपेठ खर्च आणि किंमत त्यापासून मिळणारा नफा

इ. चा सोलापूर जिल्ह्यांचा आढावा घेतला आहे. सदर प्रबंध शिवाजी विद्यापीठास सादर केलेला आहे.^{२४}

- पाटील, जे. एस. (जून २००२) “**Economics of Grapes Farming in Tasgaon Taluka**” या Ph.D. प्रबंधामध्ये तासगाव तालुक्यातील द्राक्षे उत्पादकांच्या आर्थिक शेतीचा आपल्या संशोधनामध्ये सखोल अभ्यास केलेला आहे. द्राक्ष शेतीची लागवड, त्याची उत्पादकता, लागवडीचा खर्च, द्राक्षे उत्पादनापासून ते द्राक्ष विपणन प्रक्रिया, स्थानिक तसेच जागतिक बाजारपेठमध्ये विक्रीच्या समस्या, निर्यातीतील अडथळे या सर्वांचा आढावा आपल्या संशोधनामध्ये घेतलेला आहे. तसेच तासगाव तालुक्याची वैशिष्ट्ये, जमिनीची प्रतभिन्नता, द्राक्षे उत्पादनाचे अनुकूल घटक आणि हवामान, पर्जन्यमान तसेच येणाऱ्या समस्या इ. चा सविस्तर उहापोह केलेला आहे. त्यांनी आपल्या संशोधनात शासनाच्या धोरणाचा आढावा घेतलेला आहे. त्या संदर्भात उपाय सुचविलेले आहेत.^{२५}
- हजारें, आर. व्ही. (२००७) यांच्या “**A study of Fruit Farming in Maharashtra**” या पी.एच.डी. प्रबंधामध्ये फळझाड लागवडीविषयीचे निकष, महाराष्ट्रातील फळझाड लागवड कार्यक्रम यासंबंधी सखोल आढावा घेतला आहे. त्याचप्रमाणे महाराष्ट्रातील विविध विभागातील प्रदेशामध्ये येणारी पिके, त्यांची उत्पादकता, तसेच देशांतर्गत व आंतरराष्ट्रीय पातळीवर फळपिकांचे होणारे विपणन या संबंधी सविस्तर विवेचन केले आहे. पण सदर प्रबंधामध्ये कोकण झोनचा विभागाचा (सिंधुदुर्ग, रत्नागिरी, रायगड, ठाणे) या संशोधनासाठी विचार करण्यात आलेला नाही.^{२६}
- पाटील, एस. टी. (१९७५) – “**A study of cost & price of pomegranate in Rahuri region of Ahamadnagar district**” या एम.फिल. लघू शोध प्रबंधामध्ये महाराष्ट्रातील अहमदनगर जिल्ह्यातील राहुरी भागात डाळिंब उत्पादनाचा अभ्यास केला त्यामध्ये डाळिंबाचा उत्पादन खर्च आणि त्यावर आधारित किंमत यांचा सहसंबंध स्पष्ट केलेला आहे.^{२७}

- खंदारे, शोभा (१९९८) यांनी “**बार्शी तालुक्यातील फळबाग विकास कार्यक्रम**” हा एम.फिल. लघू शोधप्रबंध शिवाजी विद्यापीठास सादर केला. त्यामध्ये बार्शी तालुक्यातील पीक रचना, डाळिंब आणि बोर लागवड प्रक्रिया, त्यांचे विपणन तालुक्याची वैशिष्ट्ये आणि यातून झालेला विकास, याचा आढावा घेतला आहे. त्यामुळे कमी पावसाच्या प्रदेशात फळविकासामुळे तेथे आर्थिक विकास शक्य झाला आहे.^{२८}
- सरगर, बा. ब. (२००७) “**सांगोला तालुक्यातील रोजगार हमी योजनेचे टिकात्मक परीक्षण**” हा एम.फिल लघू शोध प्रबंध यांनी शिवाजी विद्यापीठास सादर केला. त्यामध्ये त्यांनी रोजगाराचा हक्क व त्याचे महत्त्व, महाराष्ट्रातील रोजगार हमी योजनेचा आढावा, सांगोला तालुक्याची वैशिष्ट्ये व तालुक्यातील रोजगार हमी योजनेचा आढावा घेतला असून या योजनेचे टिकात्मक परीक्षण केले आहे. त्यामुळे आर्थिक विकासासाठी ही योजना महत्त्वाची आहे. असा निष्कर्ष काढलेला आहे.^{२९}
- Barooch, S. (१९९५) **Modern Fruit Cultivation** हे पुस्तक कल्याणी प्रकाशन, नवी दिल्ली, या ग्रंथामध्ये फळपिकांच्या वाढीची पार्श्वभूमी विचारात घेऊन काही पायाभूत मुलभूत तत्त्वे फळपिकांच्या संवर्धनासाठी मांडलेली आहे. जागतिक फलोत्पादन विकासाचा सविस्तर आढावा घेतलेला आहे. त्यामध्ये नवीन फळ पीकांच्या तंत्रज्ञानाच्या प्रगती संदर्भात आधुनिक तंत्रे मांडलेली आहेत.^{३०}
- मीना, आर. के. व यादव, जे. एस. (२००९) “**Horticulture Marketing and Post Harvest Management**” या संदर्भ पुस्तकामध्ये भारतातील फलोत्पादन शेती आणि स्वरूप, फळे, भाजीपाला, बाजारपेठ आणि आयतीचे धोरण, विपणन व्यवस्थापन व त्याचे कायदे या संदर्भात आढावा घेण्यात आला आहे. तसेच दक्षिण आणि पूर्व आशियाई राष्ट्रांसंबंधी फलोत्पादन संदर्भात अभ्यास केला आहे.^{३१}

- जॉर्ज, अँक्वाह (२००३) “**Horticulture Principles and Practices**” या यांच्या संदर्भ ग्रंथामध्ये फलोत्पादन शेतीचे वर्गीकरण आणि स्वरूप रचना, गुणसुत्रे यांचा अभ्यास केला आहे. फलोत्पादन शेतीचे संरक्षण, संकरीकरण तसेच सुशोभित वनस्पतीच्या जपानी कलम पद्धतीबाबत माहिती सांगितलेली आहे. तसेच रोपवाटिकांची कार्ये, सेंद्रिय शेती, भाजीपाला यांचा सर्वांगीण विकासाचा शास्त्रीय पद्धतीने आढावा घेतला आहे. विकासांच्या संदर्भात येणाऱ्या समस्यांचा शास्त्रीय पद्धतीने उहापोह केलेला आहे.^{३२}
- शर्मा, अवंतिका (२००६) “**Textbook of Food Science and Techonology**” हे संदर्भ पुस्तक International Book Distribution co यांनी प्रकाशित केले आहे. यामध्ये अन्न शास्त्र आणि तंत्रज्ञान यांचे महत्त्व स्पष्ट करण्यात आले आहे. यामध्ये फळे, भाजीपाला, अंडी, मांस, मांसे इ. तसेच अन्न शास्त्रामध्ये कडधान्य, तेलबिया, दुध, फळे, भाजीपाला यांचे उत्पादन आणि प्रक्रिया तंत्रज्ञान या विषयी शास्त्रयुक्त विश्लेषण केले आहे. शुगर उत्पादन Fats & Oils, Nuts & oilseeds, Beverages and Appetizers, Spices, Salt या संदर्भात शास्त्रयुक्त आढावा घेण्यात आला आहे. त्यामुळे हे पुस्तक बी.एस.सी. आणि एम.एस.सी., गृहशास्त्र, अन्नशास्त्र आणि तंत्रज्ञान, फलोत्पादन, कृषी, नेट आणि स्पर्धा परिक्षा यासाठी फारच उपयुक्त आहेत.^{३३}
- “**Handbook of Agricultrue**” (२००८) या संदर्भ ग्रंथ **Directorate of information and Publications of Agricultrue Indian Council of Agricultural Research New Delhi** यांनी प्रकाशित केले आहे. यामध्ये भारतीय कृषी क्षेत्रात विज्ञानाचा वापर, राष्ट्रीय पातळीवरील संशोधन, कृषी क्षेत्रातील नवनविन कल्पना या संदर्भात शास्त्रायुक्त मांडणी केलेली आहे. काही प्रकरणामध्ये शेतजमिनीचा वापर, माती आणि जल व्यवस्थापन संदर्भात माहिती दिलेली आहे. बि-बियाणे, कृषी उत्पादकता आणि तंत्रज्ञान कृषी तंत्रज्ञानाचा वापर, उर्जेचा वापर, माहिती तंत्रज्ञान, जैवतंत्रज्ञान, संपत्तीचा मालकी हक्क, कृषी बाजारपेठ या संदर्भात संशोधक शेतकरी, विद्यार्थी या सर्वांना भविष्यात उपयोगी पडेल अशा प्रकारची शास्त्रशुद्ध माहिती दिलेली आहे.

अनेक तज्ञानी सुचविलेल्या उपयुक्त सुचनांचा विचार करुन नवनिर्वित आवृत्ती प्रकाशित केली जात आहे.^{३४}

- **Singh Ranjit (१९२९)** – यांच्या संदर्भ ग्रंथामध्ये त्यांनी भारतातील विविध फळपिकांच्या वाढीच्या संदर्भात सविस्तर चर्चा केलेली आहे. भारतातील विविध प्रदेशामध्ये फळपिकांच्या लागवड व संवर्धन यासाठी विविध घटकांच्या सहसंबंधावर प्रकाश टाकला आहे. त्यातून भारतात कोणत्या राज्यात कोणत्या फळपिक लागवडीला अनुकूलता आहे या संदर्भात सविस्तर माहिती दिलेली आहे.^{३५}
- महाराष्ट्र शासनाच्या माहिती व जनसंपर्क महासंचालयाने (१९९३) **“रोजगार हमी योजनेतून फलोत्पादन विकासाची महत्वाकांक्षी योजना”** या संदर्भ ग्रंथामध्ये फळझाडाबाबत शासन निर्णय, महाराष्ट्रातील कोरडवाहू शेतीचा विकास या संदर्भात मार्गदर्शन केले आहे. या योजनेची वैशिष्ट्ये, जिल्ह्याची रचना, अनुदान, लाभार्थी, फळ कलम बांधणी आणि लागवड या संदर्भात दर हेक्टरी खर्चाचा आढावा घेतलेला आहे.^{३६}
- देशमुख, प्रकाश पुंडलिक (१९८६) **“भारतातील फळझाडांची लागवड”** यांच्या ग्रंथामध्ये तीन खंडामध्ये फळझाडाची लागवडीची वर्गीकरण करुन शास्त्रीय माहिती दिली आहे. खंड १ : फळबागायतीची तत्त्वे, फळाचे महत्त्व, लागवडीस आवश्यक परिस्थिती, नैसर्गिक आपत्ती यांचे फळझाडावर होणारे परिणाम तसेच फलधारणा व फलोत्पादन पद्धती, संरक्षण इ. मुलभूत गोष्टीवर साकल्याने विचार केला आहे. खंड २ : मध्ये आंबा, केळी, द्राक्षे, पपई, पेरु, चिकू, डाळिंब, अंजीर, सीताफळ, नारळ व सुपारी, फणस, बोर, जांभूळ, आवळा, करवंद इ. फळझाडांची प्रत्यक्ष लागवडी संदर्भात शास्त्रीय पद्धतीने सविस्तर माहिती दिलेली आहे. खंड ३ : मध्ये फळातील पोषक मुल्ये, दर हेक्टरी लागवड खते, संशोधन केंद्र सुची, इ. संदर्भात उपयुक्त माहिती दिलेली आहे. सदर ग्रंथ संशोधनासाठी फारच उपयुक्त आहे.^{३७}

- तावडे, मोहन (१९८०) **Geography of fruit farming** हा संदर्भ ग्रंथ राणे प्रकाशन, सदाशिव पेठ, पुणे यांनी प्रकाशित केलेला आहे. यांच्या संदर्भ ग्रंथामध्ये काही फळपिकांच्या मध्ये तुलना केलेली आहे. यामध्ये आंबा, काजू, नारळ आणि त्यांना समान कठीण फळपिके यामध्ये कोकम, अननस यांचा उत्पादन खर्च, किंमत आणि मिळणारे उत्पन्न या संदर्भात सविस्तर अभ्यास केलेला आहे. एक फळपिक प्रकार त्यांचा सहभाग आणि फळपिकांचे आधुनिक तंत्रज्ञान व्यवस्थापन यांचा आढावा सदर ग्रंथामध्ये घेतलेला आहे.^{३८}
- पाटील, महादेव श्यामकांत **“महाराष्ट्रातील फलोत्पादन”** (कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे २०००) यांच्या संदर्भ ग्रंथामध्ये महाराष्ट्रातील जमीन, पाऊस, हवामान, पाणी व्यवस्थापन, विज्ञान तंत्रज्ञान आणि युरोपीयन देश, इस्त्रालय फळबागांची वैशिष्ट्ये यांचा अभ्यास केला आहे. त्याचबरोबर फलोत्पादक प्रगतीशील शेतकऱ्यांचे अनुभव, फळातील अन्नघटक, फळांचे संरक्षण विषयक, सर्वाना उपयोगी पडेल अशा उपयोगी माहितीची चर्चा या पुस्तकामध्ये केली आहे. याशिवाय फळबागा उत्पादन खर्च, उत्पन्न, पारंपारिक व सुक्ष्म सिंचनावरील फलोत्पादनाची तुलनात्मक आकडेवारी, अर्थशास्त्र, बागायतदारांचे निरनिराळ्या फळझाडाबद्दलचे अनुभव, निवडक फळझाडे, भाजीपाला इ. तसेच फलोत्पादनाचे तंत्रज्ञान व अर्थशास्त्र इत्यादीची प्रस्तुत ग्रंथातून ही उणीव काहीशी दूर करण्याचा प्रयत्न केला आहे. महाराष्ट्राच्या फळभाग विकास कार्यक्रमास फलोत्पादन कृषी विद्यापीठे, कृषी महाविद्यालये, जिल्हा परिषद, पंचायत समिती, कृषी सेवा केंद्रे, प्रगतशिल केंद्रे, संशोधक, जिज्ञासू, विद्यार्थी इ. ना. या ग्रंथामध्ये डाळींब, पपई, चिकू, नारळ, द्राक्षे, काजू, पेरु, सुपारी, केळी, संत्री व मोसंबी इ. फळपिकांच्या लागवड व उत्पादन या विषयी सविस्तर शास्त्रीय माहिती या ग्रंथामध्ये दिली आहे.^{३९}
- Bhat, Komal (२०००) **“A study different Horticultural corps and their produce in uttarkannada district in**

Karnataka State” या संशोधन निबंधामध्ये यांनी यामध्ये विविध फळपिके लागवड आणि त्यांचे उत्पादन यांचा आढावा घेतला आहे. तसेच सहकारी तत्वावरील बाजारपेठ आणि त्यामधून फळपिके शेतीला होणारा नफा या संदर्भात या जिल्ह्याचा अभ्यास केला आहे. जिल्ह्यातील आजचे वातावरण, तापमान, माती आणि पडणारा पाऊस यांच्याशी संबंधीत संशोधन करण्यात आलेले आहे. त्यामध्ये आंबा, काजू, या फळपिकांच्या लागवडीला हा जिल्हा अतिशय अनुकूल आहे.^{४०}

- गुंजाळ, सुर्या (एप्रिल २००७) **“फळांची काढणी, हाताळणी आणि विक्री व्यवस्था”** या ग्रंथात फळ प्रक्रिया आणि फळांची निर्यात याबाबती असे मत मांडले की, फळांवर प्रक्रिया करून विविध पदार्थ बनविता येतील. यातून वाया जाणाऱ्या भागावर प्रक्रिया करून उपपदार्थ तयार करता येतील. ताजी फळे आणि त्याच्यापासून प्रक्रिया केलेल्या पदार्थांच्या निर्यातीला कर प्राधान्य देवून, केंद्र सरकारने त्यासाठी अनेक सवलती दिल्या आहेत. या संधीचा फायदा घेऊन फळ उत्पादकांनी फळांच्या निर्यातीकडे अधिक लक्ष देणे आवश्यक आहे. महाराष्ट्र सरकारच्या रोजगार हमी योजनेशी निगडित फळबाग विकास योजनेमुळे आपल्या राज्यातील फळांचे उत्पादनड प्रचंड प्रमाणात वाढत आहे. म्हणूनच प्रथम आपल्या देशातील सर्व प्रमुख बाजारपेठांमध्ये फळे पाठवून देशांतर्गत विक्री व्यवस्थेकडे लक्ष देवून नंतर परदेशी बाजारपेठाचा विचार करावा. भारतात शीतपेयांना जवळ-जवळ वर्षभर मागणी असते. म्हणून निरनिराळ्या फळांपासून रस काढून त्याच्यापासून शीतपेये, सरबते, सिरप तयार करण्याच्या उद्योगाला भविष्यात संधी राहणार आहे. अशा प्रकारे संशोधन क्षेत्रातील लाभार्थी शेतकऱ्यांचा आर्थिक विकास, यातून रोजगार निर्मितीला फार मोठी संधी आहे. या संदर्भात उहापोह केलेला आहे.^{४१}
- सुर्या, गुंजाळ (एप्रिल २००७) **“फळबागा लागवडीची मूलतत्त्वे आणि कार्यपद्धती”** या ग्रंथात फळबाग लागवडीचे महत्त्व आणि महाराष्ट्रातील फळबाग लागवडीसाठी असलेली संधी या बाबतीत असे मत मांडले की

शेती व्यवसायाला जोडधंदा म्हणून दुग्ध व्यवसाय, शेळी पालन, कुक्कूट पालन यांचाही समावेश करतात. फळबाग लागवडीने चांगली कमाई होऊ शकते. कोकणात आंबा आणि काजू लागवड, पश्चिम महाराष्ट्रात द्राक्षे, पेरु आणि डाळिंब लागवड, उत्तर महाराष्ट्रात केळी लागवड, नागपूर-अमरावती भागात संत्रालागवड, ही सर्व फळ-पिके इतर पिकांच्या तुलनेने अधिक अधिक उत्पन्न देणारी ठरतात. ज्या-ज्या शेतकऱ्यांकडे इतर पिकाबरोबरच फळबाग असते. त्यांना इतर पिकांच्या तुलनेने दर हेक्टरी अधिक उत्पन्न मिळते. फळबागा लागवडीसाठी महाराष्ट्र शासनाकडून १९९० पासून रोजगार हमी योजना ही महत्त्वाकांक्षी योजना राबविली जात असून, ३ वर्षांपर्यंत जोपासना करण्यासाठीचा येणाऱ्या खर्चासाठी १००% अनुदान दिले जाते. तसेच तांत्रिक माहिती, कलमे, रोपे यांचा पुरवठाही फळबागा विकास योजने मार्फत केला जातो. या योजनेमुळे मोठ्या प्रमाणात फळबागांची लागवड झाली आहे आणि होत आहे. अभ्यास क्षेत्राचा विचार करता दक्षिण कोकण किनार पट्टीतील देवगड, रत्नागिरी भागातील हापूस आंबा जगप्रसिद्ध आहे. महाराष्ट्रातील फळबाग लागवड पिके आणि त्याचा विकास या संदर्भात येथे विवेचन केलेले आहे.^{४२}

- पाटील, एस. एल. (२००३) "महाराष्ट्रातील फलोत्पादन निर्यात" (Horticatures Export of Maharashtra) सांगोला महाविद्यालय, सांगोला, जि. सांगोला यांचा शिवाजी विद्यापीठात आयोजित केलेल्या, अखिल भारतीय अर्थशास्त्र परिषदेच्या ८६ व्या वार्षिक परिषदेच्या निमित्ताने प्रकाशित करण्यात आलेल्या अंकात यासंदर्भात चर्चा केलेली आहे. त्यांच्यामते फलोत्पादनात महाराष्ट्र राज्य हे भारतातील एक अग्रेसर राज्य असून भाजीपाला देखील मोठ्या प्रमाणावर जातो. तसेच भौगोलिक वैविध्यतेमुळे महाराष्ट्रात विविध प्रकारच्या फळांचे, तेथील भौगोलिक अनुकूलतेनुसार उत्पादन घेता येते. तसेच त्यांनी आपल्या शोधनिबंधात असे म्हंटले की, महाराष्ट्र हे ताज्या दर्जेदार फलोत्पादनाच्या निर्यातीत अग्रेसर असलेले राज्य आहे. आंब्याच्या एकूण भारतीय निर्यातीपैकी जवळ

जवळ ८५% आंबा सन १९९५-९६ या वर्षात फक्त महाराष्ट्रातून निर्यात करण्यात आला असल्याचे यात नमूद करणेत आले आहे. यावरून फलोत्पादनाच्या निर्यातीत महाराष्ट्राचे स्थान अनन्य आहे. फलोत्पादनातील अधिक वरची पातळी गाठण्याकरिता नियंत्रित बाजारपेठा पायाभूत सुविधा मधील पुरोगामी व प्रतिगामी दोष दूर करणे, आंतरराष्ट्रीय ग्राहक वर्तनाचा अभ्यास यांचा विचार केल्यास फलोत्पादनाचा इच्छित इष्टांक साध्य करणे शक्य होईल असे त्यांनी या लेखात प्रतिपादन केले आहे.^{४३}

- जुगळे, व्ही. बी. (डिसेंबर २००३) **Leading issue of "Horticulture Economy in Maharashtra"** या लेखात महाराष्ट्रातील फलोत्पादन अर्थव्यवस्थेतील महत्त्वपूर्ण बाबीवर चर्चा केलेली आहे. कोल्हे समितीने केलेल्या पाहणीनुसार महाराष्ट्रातील जमीन ही भौगोलिकदृष्ट्या फलोत्पादनाकरिता पोषक आहे. येथे मोठ्या प्रमाणात भाजीपाला व फलोत्पादनाचे उत्पादन करून पडिक व कोरडवाहू जमीन लागवडीखाली आणणे शक्य आहे. व त्यातून मोठ्या प्रमाणात रोजगाराच्या संधी उपलब्ध करून देणे शक्य आहे. फलोत्पादनाचा महत्त्वाचा विचार करता एकूण लागवडीखालील क्षेत्रापैकी ३% क्षेत्र फळझाड लागवडीखाली आहे. जागतिक स्तरावरील आंबा या फळाचे उत्पादन मेक्सिको, ऑस्ट्रेलिया, फिलीपाईन्स आणि संयुक्त अरब राज्य संघटन आणि भारत या देशांमध्ये अनन्यसाधारण आहे. याचबरोबर सफरचंद, केळी, द्राक्षे, अननस, स्ट्रॉबेरी, चेरी इ. उत्पादन देखील १९९१ नंतर मोठ्या प्रमाणात घेतले जात आहे. श्री. जुगळे यांच्यामते महाराष्ट्रातील फलोत्पादन अर्थव्यवस्थेतील महत्त्वपूर्ण स्थान लक्षात घेता, त्यातील उत्पादन क्षमता वाढवण्याकरिता फळ प्रक्रिया उद्योगांना चालना देणे, नवीन सुधारीत तंत्रज्ञानाचा, रासायनिक खतांचा, नवीन रोपवाटीकेंचा, नियंत्रित बाजार यंत्रणा, बाजार हमीभाव, पडिक व कोरडवाहू जमीन या क्षेत्राची व्याप्ती लागवडीखाली आणण्याकरिता विशेष प्रयत्न राज्य सरकारने करणे महत्त्वाचे आहे.^{४४}

- राणे, ए. ए. आणि बगाडे एस. आर. (जाने.-एप्रिल २००६)

Economics of Production and Marketing of Banana In Sindhudurg District, Maharashtra चा शोध निबंधामध्ये सिंधुदुर्ग

जिल्ह्यातील सावंतवाडी, दोडामार्ग तालुक्याचा केळी लागवडीच्या संदर्भात अभ्यास केलेला आहे. त्यामध्ये केळी लागवडीचा खर्च, त्याची उत्पादकता बाजारपेठ साखळी आणि त्यांच्या असणाऱ्या समस्या या संदर्भात विवेचन केलेले आहे. दोडामार्ग तालुक्यातील ११.७२% उत्पादक किरकोळ विक्री आणि ८८.२८% उत्पादन शहरामध्ये घाऊक विक्री करतात तर सावंतवाडी तालुक्यातील ६०% उत्पादक खेड्यात किरकोळ विक्री तर ४०% उत्पादक शहरात घाऊक विक्री करतात. त्यामुळे सावंतवाडी तालुक्यातील उत्पादकांचा नफा होतो. खर्चाचा विचार केला तर दोडामार्ग तालुक्यातील बाजारपेठ खर्च ५९.७९% येतो तर ४०.३३% खर्च सावंतवाडी तालुक्याचा आहे. खर्चाचा विचार केला तर सावंतवाडी तालुक्यात बाजारपेठ विक्रीचा खर्च कमी येतो. अशा प्रकारे सिंधुदुर्ग जिल्हा फलोत्पादनाबाबत अभ्यास करित असताना वरील तंत्राचा, विक्री आणि उत्पादना संदर्भात अभ्यास करता येईल.^{४५}

- शेतकरी मासिक, जाने.-फेब्रुवारी (२००२) चा विशेषांक “शेतीमाल प्रक्रिया व निर्यात विशेषांक” संपादक शेतकरी मासिक कृषी आयुक्तालय महाराष्ट्र राज्य, कृषी भवन पुणे यांनी प्रकाशित केला. सदर अंकामध्ये महाराष्ट्रात फळे, भाजीपाल व फुले निर्यातीस चालना देण्याची आवश्यकता, शेती विषयक आयात निर्यात धोरण, कोकणातील शेती माल प्रक्रिया व निर्यात, द्राक्षे, केळी, संत्रा, आंबा, काजू, लिंब, डाळिंब इ. फळाची लागवड, उत्पादन क्षमता काढणी नंतरचे तंत्रज्ञान, व्यवस्थापन आणि निर्यात प्रक्रिया, मसाला पिकांची निर्यात, काजूगर निर्यात आणि निर्यातिची सद्यस्थिती इत्यादी विषयीचे विविध लेख शेतकरी मासिकात प्रकाशित करण्यात आलेत. त्यातून त्यावर प्रकाश टाकण्याचा प्रयत्न करण्यात आला.^{४६}

- खराट, स. शि. (जुलै २००६) शेती प्रगती या मासिकात “**नारळ मसाला आंतरपिकासाठी लाखी बागेची पूर्व तयारी**” या लेखात कोकणातील रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड नारळ आणि मसाला पिके यासाठी लाख बागेची पूर्व तयारी आवश्यक बाब बनली आहे. कोकणची भूमी, पडणारा प्रचंड पाऊस अशा पार्श्वभूमीवर कोकणात जैविक विविधता विपूल प्रमाणात असून त्यामध्ये फळझाडे, वने, औषधी व सुगंधी वनस्पती आहेत. या जैविक विविधतेमध्ये फळपिकांचा मोठा वाटा आहे. आंबा, काजू यासारख्या पिकांच्या लागवडीकडे सामान्य शेतकरी आकृष्ट झाला आहे. लाख बागेमध्ये नारळाच्या पिकाचा मुख्य पीक म्हणून अंतर्भाव असून, त्याची लागवड ८ बाय ८ मीटर अंतरावर करण्याची शिफारस केली आहे. या चार नारळांच्या मध्यबिंदूवर जायफळ, नारळ लागवडीच्या रेषेतील दोन नारळांच्या मध्य अंतरावर दालचिनी कलम आणि नारळाच्या बुंध्याजवळ प्रत्येकी दोन मिरीवेल अशा ६४ चौरस मीटर क्षेत्रामध्ये सरासरी ६ झाडाची आखणी केली आहे. त्यांची उत्पादकता सुमारे ३० रुपये प्रतिचौरस मीटर प्रमाणे अपेक्षित आहे. त्यामुळे एक हेक्टर क्षेत्रातून सुमारे २.५० लाख रुपये म्हणजेच एक एकर क्षेत्रातून एक लाख रुपयापर्यंत उत्पन्न मिळू शकते. म्हणून या बागेस लाखीबाग असे म्हणतात. रोजगार हमी योजनेची फळझाड लागवड विकसित करताना कोकणात नारळ लागवडीमध्ये शेतकऱ्यांच्या आर्थिक प्रगतीसाठी या लाखीबागेची संकल्पना उपयुक्त ठरेल.^{४७}
- पवार, पोपटसो (सप्टेंबर २०१०) महाराष्ट्र राज्य, कृषीपणन मंडळ, पुणे या मासिकात “**मोसंबी लागवड सुधारीत तंत्रज्ञान**” या लेखात असे मत मांडले की, ‘लिंबुवर्गीय फळझाडांच्या लागवडीत महाराष्ट्राचा भारतात प्रथम क्रमांक लागतो. महाराष्ट्रातील हवामान मोसंबी फळझाडांच्या लागवडीस पोषक असल्यामुळे, मोसंबी लागवडीखालील क्षेत्र १,२८,०५४ हेक्टर आहे.’ मोसंबीची लागवड प्रामुख्याने अहमदनगर, जालना, औरंगाबाद, जळगाव, बीड, नांदेड, बुलढाणा, पुणे अमरावती व नागपूर या जिल्ह्यामध्ये

केली जाते. महाराष्ट्रातील अनुकूल जमीन, हवामान, आर्थिकदृष्ट्या फायदेशीरपणा, कृषि विद्यापीठांनी केलेल्या शिफारशी आणि शासनामार्फत राबविल्या जाणाऱ्या रोजगार हमी योजनेशी निगडित फळबाग लागवड योजनेमुळे शेतकऱ्यांचा मोठ्या प्रमाणावर कल वाढत आहेत. या फळ लागवडीमध्ये भुईमूग, मूग, उडीद, सोयाबीन, गवार, चवळी, हरभरा, कांदा, लसूण, कोबी इ. आंतरपिके घेण्यास काहीच हरकत नाही. याच पद्धतीत कोकणातील रोजगार हमी योजनेनंतर्गत फळझाड लागवडीमध्ये आंतरपिके होऊन फळझाड लागवडीचा खर्च कमी करता येईल. शेतकऱ्यांच्या आर्थिक स्थितीत सुधारणा होईल.^{४८}

- गांगुर्डे, किशोर (२००८) “हमी रोजगाराची साथ केंद्राची” हा लेख ‘लोकराज्य’ या मासिक अंकात प्रकाशित झाला आहे. रोजगार हमी योजना व राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार हमी योजनेचा तुलनात्मक अभ्यास केला असून त्यामध्ये या योजनेची ठळक वैशिष्ट्ये, महाराष्ट्रातील स्थिती, या योजनेतून करता येणारी कामे, हर्षवर्धन पाटील (रो. ह. यो. मंत्री) यांचे याबद्दलचे विचार तसेच या योजनेअंतर्गत फळझाड लागवड योजना इत्यादीबाबत विवेचन केले आहे.^{४९}
- खर्डे, पंडीत (सप्टेंबर २०१०) यांनी महाराष्ट्र राज्य कृषी पणन मंडळ पुणे या मासिकात “महाराष्ट्रातील फलोत्पादन क्रांती” या लेखात असे मत मांडले की, फलोत्पादन क्षेत्रात महाराष्ट्र राज्याने क्रांतीच केली आहे. फलोत्पादनातील ही क्रांती संशोधन, विस्तार यंत्रणा आणि शेतकऱ्यांच्या समन्वयातून खऱ्या अर्थाने आपण आज अनुभवतो आहे. महाराष्ट्र राज्य हे प्रामुख्याने हापूस आंबा, नागपूर संत्रा, वसईची केळी, द्राक्ष, डालिंब आणि पुणे अंजिरासाठी प्रसिद्ध आहे. याशिवाय राज्यात मोसंबी, चिकू, सीताफळ, लिंबू, पेरू इ. पीके प्रामुख्याने घेतली जातात. देशाच्या एकूण फळांच्या उत्पादनामध्ये राज्याचा १८% वाटा आहे. महाराष्ट्र राज्याचा द्राक्ष निर्यातीमध्ये ९८%, आंबा निर्यातीमध्ये ६५%, कांदा निर्यातीमध्ये ९०%

आणि भाजीपाला निर्यातीमध्ये ६८% वाटा आहे. यावरून आपल्याला आपल्या राज्याचे फलोत्पादन क्षेत्रातील स्थान लक्षात येते. महाराष्ट्रात केळी लागवड जळगाव, अहमदनगर, नांदेड व परभणी जिल्ह्यांमध्ये होते. सांगली, नाशिक, सोलापूर, पुणे आणि अहमदनगर जिल्ह्यांमध्ये द्राक्ष लागवड मोठ्या प्रमाणात होते. डाळिंबसाठी सोलापूर, नाशिक, अहमदनगर, पुणे, उस्मानाबाद, लातूर इ. जिल्हे प्रसिद्ध आहेत. कोकणातील रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, रायगड त्याचप्रमाणे औरंगाबाद, जालना, परभणी या जिल्ह्यात आंबा मोठ्या प्रमाणावर घेतला जातो. सन १९९०-९१ मध्ये महाराष्ट्र शासनाने १००% अनुदानावर फलोत्पादन विकास अंतर्गत रोजगार हमी योजनेची सुरुवात केल्यामुळे खऱ्या अर्थाने फलोत्पादन विकासाला गती मिळाली. यामुळे सुमारे १७ लक्ष हेक्टर जमीन फलोत्पादन लागवडीखाली आली. त्यांचे उत्पादन १०३ लक्ष टनापर्यंत गेले आहे. याच पद्धतीने सिंधुदुर्ग जिल्ह्यामध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवडीमुळे फार मोठ्या प्रमाणात पडीक जमीन लागवडीखाली आलेली आहे. यातूनच जिल्ह्यातील फलोत्पादनाच्या विकास पर्यायाने शेतकऱ्यांचा विकास होईल.^{५०}

- कोटेचा, पी. एम. (एप्रिल २०१२) महाराष्ट्र राज्य कृषी पणन मंडळ पुणे या मासिकात “कोरडवाहू फळावर प्रक्रिया” या लेखात असे मत मांडले आहे की, महाराष्ट्रात १९९० मध्ये फळबाग लागवडीखाली असलेले क्षेत्र २.५ लाख हेक्टर वरून १५ लाख हेक्टरपर्यंत पोहचले आहेत. १९९० ते १९९५ या काळात लागवड झालेल्या बागांपासून मोठ्या प्रमाणात फळे बाजारात येऊ लागली असून, फळे उत्पादनातही १५० ते २००% वाढ झालेली आहे. या फळांमध्ये प्रामुख्याने चिंच, डाळिंब, बोर, सीताफळ, आवळा या फळांचा समावेश आहे. फळांची काढणी, प्रतवारी, साठवण, पॅकेजिंग, वाहतुक प्रक्रिया या बाबी शास्त्रीय पद्धतीने न केल्यामुळे या एकूण उत्पादित फळांपैकी २० ते २५% फळे या कारणास्तव खराब होतात. फळे मोठ्या प्रमाणावर बाजारात येतात तेव्हा बाजारभाव कोसळतात. परिणामी

शेतमालाचे आर्थिक नुकसान होते. म्हणून अशा फळावर प्रक्रिया करून मुल्यवर्धित पदार्थ केले, तर मालाच्या किंमतीत वाढ होऊन शेतकरी व उद्योजक या दोघांनाही यामध्ये आर्थिक लाभ होतो. आज आपल्या देशात एकूण उत्पादित फळांपैकी फक्त २% फळांवरच प्रक्रिया केली जाते. तिही प्रामुख्याने लघु उद्योगाद्वारे होत आहे. आज देशात जवळपास २५ लक्ष फळ प्रक्रिया युनिट असून, त्याद्वारे सुमारे २४ दशलक्ष माणसांना रोजगार मिळतो. याच पद्धतीने अभ्यास क्षेत्रात सिंधुदुर्ग जिल्ह्यामध्ये फळ प्रक्रिया करून शेतकऱ्यांचे आर्थिक नुकसान टाळता येईल. रोजगार निर्मिती होईल कारण या क्षेत्राला भविष्यात भरपूर संधी आहे.^{५१}

१.१४ प्रकरण योजना :

प्रस्तुत संशोधन कार्याची विभागणी खालील प्रमुख सात (७) प्रकरणात करण्यात आलेली आहे. **प्रकरण क्रमांक १** प्रस्तावना व संशोधन पद्धतीचे विश्लेषण केले आहे. सदर प्रकरणामध्ये संपूर्ण संशोधनाची ओळख मांडलेली आहे. फलोत्पादनाची पार्श्वभूमी त्याचा अर्थ, महत्त्व, भारतातील फलोत्पादन शेतीचा विकास, अभ्यास क्षेत्र, गृहिते, उद्दिष्टे, संशोधन पद्धती व माहिती संकलन, प्राथमिक व दुय्यम स्रोत आणि संशोधन साहित्याचा आढावा घेण्यात आला आहे. या संदर्भात विविध पी.एच.डी., एम.फील. प्रबंध, विविध संदर्भ ग्रंथ आणि फलोत्पादन संदर्भात विविध मासिके यांचा आधार घेण्यात आलेला आहे.

प्रकरण क्रमांक २ हे महाराष्ट्रातील फळझाड कार्यक्रम व रोजगार हमी योजनेशी निगडित आहे. यामध्ये महाराष्ट्रातील फलोत्पादनाचा संपूर्ण आढावा घेण्यात आलेला आहे. महाराष्ट्रामध्ये या योजनेतर्गत झालेल्या फळझाड लागवडीचा विकास आकृतीबंध आणि योजनेचे उद्देश, लाभार्थी निकष आणि त्यांच्या तरतुदी अनुदानाचे निकष, विविध फळांचे वर्गीकरण या संदर्भात सविस्तर उहापोह करण्यात आलेला आहे.

प्रकरण क्रमांक ३ मध्ये सिंधुदुर्ग जिल्ह्याचा भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, सहकार क्षेत्र, उद्योगधंदे सेवा क्षेत्र इ. चा अभ्यास करण्यात आलेला आहे.

यामध्ये लोकसंख्येचे वर्गीकरण, कृषी गणना, मत्स्यव्यवसाय, विविध विकास कार्यक्रम आणि जिल्ह्याचे पर्यटन या संदर्भात सविस्तर आढावा घेण्यात आलेला आहे.

प्रकरण क्रमांक ४ मध्ये सिंधुदुर्गचा कृषी विकास, भूमि उपयोजन आणि जमिनीचे वाटप यामधून निर्माण झालेल्या पीक पद्धतीचा अभ्यास करण्यात आला आहे. सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील पीक आकृतीबंध, भूमिउपयोजन, जिल्ह्यातील विविध पीकांचा पेरणी अहवाल आणि लागवडीखालील क्षेत्र, उत्पादकता, जलसिंचन साधने आणि नियोजित प्रकल्प यांचा सविस्तर आढावा घेतलेला आहे.

प्रकरण क्रमांक ५ मध्ये रोजगार हमी योजनेअंतर्गत सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात राबविलेल्या फळझाड योजनेचा सर्वांगीण अभ्यास करण्यात आला आहे. यामध्ये किफायतशीर फळ लागवडीचे नियोजन आणि तालुकानिहाय फळपीक क्षेत्राची व्याप्ती, करण्यात आलेल्या विविध पिकाखाली लागवडीचे वर्षनिहाय व सांख्यिकीय विश्लेषण केलेले आहे.

प्रकरण क्रमांक ६ सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील फळझाड योजना सांख्यिकीय विश्लेषणाशी निगडीत आहे. हे संशोधन अभ्यासातील सर्वात महत्त्वाचे प्रकरण आहे. फळझाड लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांकडून प्रश्नावलीच्या सहाय्याने जी माहिती गोळा करण्यात आली, यामध्ये जिल्ह्यातील ८ तालुक्यातून ६४ गावामधून ५७२ लाभार्थी शेतकऱ्यांकडून प्रश्नावलीद्वारे माहिती भरून घेण्यात आली आहे. सदर प्रकरणामध्ये विविध प्राथमिक स्रोतांद्वारे संकलित केलेल्या माहितीचे सादरीकरण, विविध सांख्यिकीय तंत्राद्वारे केलेले आहे. आवश्यक तेथे विविध आलेखांचा वापर करण्यात आलेला आहे.

प्रकरण क्रमांक ७ यामध्ये निष्कर्ष व उपाययोजना यांचा समावेश होतो. यामध्ये प्राथमिक, द्वितीय तक्त्यांच्या आधारे संकलित केलेल्या माहितीच्या आधारे सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील फळझाड लागवड योजनेसमोरील विविध समस्या व सद्यस्थिती मांडली आहे. या समस्या कमी करण्यासाठी विविध उपायही सुचविले आहेत.

संदर्भसूची :

- १) मराठी विश्वकोष (१९८१) संपादक तर्कतीर्थ श्री. लक्ष्मण शास्त्री जोशी, महाराष्ट्र राज्य साहित्य, संस्कृती मंडळ मुंबई, खंड-१०, पान नं. ८१६, ८१७, ८१८.

- २) Meena R. K. & Yadav J. S. (2001) "Horticulture Marketing & Post Harvest Management" Pointing Publisher Jaipur - Page No.1, 2.
- ३) शोभा, खंदारे.(१९९८) "बार्शी तालुक्यातील फळबाग विकास कार्यक्रम एम. फील शोध प्रबंध अर्थशास्त्र विभाग शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर पान नं. १ ते २०.
- ४) पाटील, अ. व्य. (२०००) "फळबाग तत्त्वे आणि पद्धती" कॉन्टिनेटल प्रकाशन विजयनगर पुणे पान नं. १ ते २२.
- ५) देशमुख, प्रकाश पु. (१९८६) भारतातील फळझाड लागवड कॉन्टिनेटल प्रकाशन पुणे पान नं. १, ५, ६, ७.
- ६) राऊळ, वि. ग. (मार्च २०११) "विविध फळ उत्पादनापासून करता येणारे प्रक्रियायुक्त पदार्थ", मासिक कृषीपणन मित्र, प्रकाशन, महाराष्ट्र राज्य, कृषीपणन मंडळ, गुलटेकडी पुणे पान नं. १३ व १४.
- ७) देशमुख, प्रकाश पु. (१९८६) भारतातील फळझाड लागवड कॉन्टिनेटल प्रकाशन पुणे पान नं. १, ५, ६, ७.
- ८) संपादक सुर्या गुंजाळ.(एप्रिल २००७) "फळबागा लागवडीची मुलतत्त्वे आणि कार्यपद्धती" प्रकाशन यशवंतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ, नाशिक पान नं. ४, ५.
- ९) देशमुख प्रकाश पु. (१९८६) भारतातील फळझाड लागवड कॉन्टिनेटल प्रकाशन पुणे पान नं. ७.
- १०) Meena R. K. & Yadav J. S. (2001) "Horticulture Marketing & Post Harvest Management" Pointing Publisher Jaipur - Page No.4, 8
- ११) पाटक, अनधा. (२००७) "भारतातील शेतमाल निर्यातील कल" योजना मासिक प्रकाशन भारत सरकार माहिती व प्रसारण मंत्रालयाचा प्रशासन विभाग पान नं. ८, ३२
- १२) चौधरी, स्वामी. (मार्च २०११) "निर्यातक्षम आंबा फळांचा आढावा" मासिक अंक ४, कृषीपणन मित्र प्रकाशन, महाराष्ट्र राज्य, कृषीपणन मंडळ, पुणे पान नं. १५, १६, १७.
- १३) बळीराजा मासिक अंक (ऑगस्ट २००७) कृषीविज्ञान प्रकाशन शुक्रवार पेठ, पुणे पान नं. ८९, ९९.

१४) कोकाटे, किरण. (जाने, फेब्रु. २००२) "काजूगर निर्यात शेतकरी मासिक अंक" प्रकाशन कृषी आयुक्तालय महाराष्ट्र राज्य पुणे पान नं. ९५.

<http://agri.mah.nic.in>.

१५) बाबर, सामेश्वर. (२००७) "जागतिकीकरणाचा भारतातील कृषीमालाच्या व्यापारावरील परिणाम त्रैमासिक अर्थसंवाद, मराठी अर्थशास्त्र परिषद खंड नं. ३१, अंक २, पान नं. १५०, १५१.

१६) Indian Horticulture Database, National Horticulture Board Ministry of Agricultural New Delhi - Page No. 342.

१७) आगलावे, प्रदीप. (जानेवारी २०००) 'संशोधन पद्धतीशास्त्र व तंत्रे, विद्या प्रकाशन, नागपूर. पान नं. १५८

१८) उपरोक्त पान नं. १५९.

१९) उपरोक्त पान नं. २६५ ते २६७

२०) उपरोक्त पान नं. १७१

२१) राजमाने, के. डी. (१९८६) "द्राक्षे आणि ऊस शेती यांचा तुलनात्मक आर्थिक अभ्यास" पीएच.डी. प्रबंध

२२) पाटील, एस. एल. (१९८८) "सांगोला जिल्ह्यातील लोकांच्या जीवनावर फलोत्पादन विकासामुळे झालेला आर्थिक परिणामाचा एक दृष्टीकोनात्मक अभ्यास" पीएच.डी. प्रबंध

२३) अहेर, बी. एम. (१९८९) "नाफेड तालुक्यातील द्राक्ष लागवड" पीएच.डी. प्रबंध

२४) पुजारी, ए. जी. (१९८९) "सोलापूर जिल्ह्यातील डाळींब उत्पादकांचा अभ्यास" पीएच.डी. प्रबंध

२५) पाटील, जे. एस. (जून २००२) "Economics of Grapes Farming in Tasgaon Taluka" पीएच.डी. प्रबंध

२६) हजारे, आर. व्ही. (२००७) "A Study of fruit farming in Maharashtra Plateau" पीएच.डी. प्रबंध

- २७) पाटील, एस. टी. (१९७५) "A Study of cost & Price of promegrante in Rahuri region of Ahamadnagar District" पीएच.डी. प्रबंध
- २८) खंदारे, शोभा (१९९८) "बार्शी तालुक्यातील फळबाग विकास कार्यक्रम" एम.फील, लघु शोध प्रबंध
- २९) सरगर, बा. ब. (२००७) "सांगोला तालुक्यातील रोजगार हमी योजनेचे टिकात्मक परीक्षण" एम.फील. लघु शोध प्रबंध
- ३०) Barroch S. (1995) "Modern Fruit cultivation" कल्याणी प्रकाशन नवी दिल्ली, संदर्भ ग्रंथ
- ३१) मीना, आर. के. आणि यादव, जे. एस. (२००१) "Horticulture Marketing & Post Harvest management Pointing Pubsher Jaipur" संदर्भ ग्रंथ
- ३२) जॉर्ज, अँक्वाह. (२००३) "Horticulture Principles & Practices" संदर्भ ग्रंथ
- ३३) शर्मा, अवांतिका. (२००६) "Textbook of Food Science and Technology" संदर्भ ग्रंथ
- ३४) Agricultural Research New Delhi प्रकाशित (२००८) "Handbook of Agricultural" संदर्भ ग्रंथ
- ३५) Singh, Ranjit. (1929) "फलोत्पादन" संदर्भ ग्रंथ
- ३६) महाराष्ट्र शासनाच्या माहिती व जनसंपर्क महासंचालयाने (१९९३) "रोजगार हमी योजनेतून फलोत्पादन विकासाची महत्त्वाकांशी योजना" संदर्भ ग्रंथ
- ३७) देशमुख, पुंडलिक प्रकाश. (१९८६) "भारताली फळझाड लागवड" संदर्भ ग्रंथ
- ३८) तावडे, मोहन. (१९८०) "Geography of fruit farming" राणे प्रकाशन, सदाशिव पेठ, पुणे संदर्भ ग्रंथ
- ३९) पाटील, शामकांत महादेव. (२०००) "महाराष्ट्रातील फलोत्पादन" कॉन्टिन्टेल प्रकाशन पुणे - संदर्भ ग्रंथ

४०) Bhat, Komal. (2000) "A study different Horticultural crops and their produce in uttarkannada district in Karnataka state" संशोधन निबंध

४१) सुर्या, गुंजाळ. (संपादक) (एप्रिल २००७) "फळांची काढणी हाताळणी आणि विक्री व्यवस्था" प्रकाशन यशवंतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ नाशिक पान नं. ५० ते ५६.

४२) सुर्या, गुंजाळ. (संपादक एप्रिल २००७) "फळबाग लागवडीची मुलतत्त्वे आणि कार्यपद्धती" प्रकाशन यशवंतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ नाशिक पान नं. १ ते २४

४३) पाटील, एस. एल. (डिसेंबर २००३) "महाराष्ट्रातील फलोत्पादन निर्यात" अखिल भारतीय अर्थशास्त्र परिषदेच्या ८६ व्या वार्षिक परिषद प्रकाशित अंकात शोध निबंध पान नं. ५९ ते ६२.

४४) जुगळे, व्ही. बी. (डिसेंबर २००३) "Leading issue of Horticulture Economy in Maharashtra" अखिल भारतीय अर्थशास्त्र परिषदेच्या ८६ व्या वार्षिक परिषदेच्या प्रकाशित अंकात शोध निबंध पान नं. ५१ ते ८५

४५) राणे, ए. ए. आणि बगाडे, एस. आर. (जाने-एप्रिल २००६) "Economics of production & marketing of Banana in sindhudurg District" Inidan Journal of Agricultural Marketing Vol. 20 No.1, Page no. 39 to 44.

४६) शेतकरी मासिक (जाने-फेब्रुवारी २०१२ विशेषांक) "शेती माल प्रक्रिया व निर्यात विशेषांक" कृषी आयुक्तालय महाराष्ट्र राज्य कृषी भवन पुणे.

४७) कराट, स. शि. (जुलै २००६) "नारळ मसाला आंतर पिकासाठी लाखीबागेची पूर्व तयारी" शेती प्रगती मासिक, संपादक, प्रकाशक श्री. रावसाहेब पुजारी कोल्हापूर पान. नं. ४८

४८) छ्वार, पोपटसो. (सप्टेंबर २०१०) "मोसंबी लागवड सुधारित तंत्रज्ञान" मासिक कृषीपणन मित्र-प्रकाशन, महाराष्ट्र राज्य, कृषीपणन मंडळ, पुणे पान नं. ३९ ते ४१.

४९) गागुर्डे, कलशोर. (२००ॢ) "हमी रोजगाराकी साथ केंद्राकी" लोकराज्य मासिक प्रकाशन माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय महाराष्ट्र शासन पुणे. पान नं. १९ ते २३, २४, २५.

५०) खर्डे, पंडित. (सप्टेंबर २०१०) 'महाराष्ट्रातील फलोत्पादन क्रांती' मासिक कृषीपणन मित्र प्रकाशन महाराष्ट्र राज्य कृषी पणन मंडळ पुणे पान नं. १३ ते १४

५१) कोटेचा, पी. एम. (एप्रिल २०१२) "कोरडवाहू फळावर प्रक्रिया" मासिक कृषी पणन मित्र, महाराष्ट्र राज्य, कृषीपणन मंडळ, पुणे पान नं. १३ ते १७

प्रकरण दुसरे

महाराष्ट्रातील फळझाड लागवड कार्यक्रम व रोजगार हमी योजना

२.१ प्रस्तावना

भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. २००१ च्या जणगणनेनुसार भारताची ७२.१९% लोकसंख्या ग्रामीण आहे यापैकी ९०% लोकसंख्या उदरनिर्वाह व रोजगार यासाठी शेतीवर अवलंबून आहे. ६४% रोजगार शेतीपासून मिळतो. भारताच्या राष्ट्रीय उत्पन्नात १८.५०% प्राथमिक क्षेत्राचा वाटा आहे. निर्यातीत कृषी क्षेत्राचा हिस्सा सुमारे १२ ते १४ टक्के आहे. काजू, चहा, कॉफी, तांदूळ, कापूस, फुले, फळे, मासे, पशु उत्पादने या बाबींचे निर्यातीत महत्त्व आहे. महाराष्ट्रातील जवळपास ५५% लोक उदरनिर्वाहासाठी शेतीवर अवलंबून आहे. अन्न धान्यांचे एकूण उत्पादन २००८-०९ मध्ये १५२.८५ लाख मेट्रीक टन झाले. राज्याच्या ३०७.६ लाख हेक्टर क्षेत्रापैकी पिकाखालील एकूण क्षेत्र २२५.६ लाख हेक्टर आहे.^१ महाराष्ट्राने कृषी क्षेत्रात आघाडी घेतली असली तरी त्यामानाने कृषीमालाच्या निर्यातीचे प्रमाण कमी आहे ही वस्तुस्थिती आहे. जागतिक बाजार पेठेतील स्पर्धाना समर्थपणे तोंड देऊन विविध प्रकारच्या कृषी मालाची निर्यात वाढवणे हे आपणासमोर एक मोठे आव्हान आहे.^२

२.२ राष्ट्रीय फलोत्पादन अभियान :

भारतात राष्ट्रीय फलोत्पादन कार्यक्रम केंद्र शासनाच्या माध्यमातून सन २००५-०६ मध्ये अभियानाच्या प्रभावी अंमलबजावणीसाठी महाराष्ट्र राज्य फलोत्पादन आणि औषधी वनस्पती राज्यात सुरु करण्यात आली. राष्ट्रीय फलोत्पादन अभियानांतर्गत फळपीकांच्या लागवडीचा कार्यक्रम विहित जिल्ह्यामध्ये राबवायचा आहे. राष्ट्रीय फलोत्पादन अभियानांतर्गत निवडलेल्या जिल्ह्याशिवाय इतर जिल्ह्यामध्ये रोजगार हमी योजनेशी निगडित फळबाग लागवड कार्यक्रम राबविण्यात येत आहे. या अभियानाची मुदत २०११-१२ पर्यंत असून तो पर्यंत फलोत्पादनाचे उत्पादन दुप्पट करण्याचे उद्दिष्ट आहे.

या कार्यक्रमासाठी निवडलेल्या जिल्ह्यात अभियानाशी निगडीतच फळांची लागवड यामध्ये करता येते आणि इतर फळपीकांची लागवड रोजगार हमी योजनेशी निगडीत करता येते. महाराष्ट्रात ही योजना २९ जिल्ह्यामध्ये व समुहानुसार घेण्यात येणाऱ्या आंबा, काजू, चिकू, डाळींब, संत्रा, मोसंबी, लिंबू, पेरु, आवळा, सीताफळ या प्रमुख फळपीकाबाबतच आहे.^३

रोजगार हमी योजनेशी निगडीत राष्ट्रीय फलोत्पादन हा कार्यक्रम राबवयाचा असल्यामुळे रोजगार हमी योजनेतर्गत अंमलबजावणीच्या मार्गदर्शक सुचना अटी व शर्तीनुसार अभियानांतर्गत क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम राबविण्यात येत आहे. हे महाराष्ट्रातील रोजगार हमी योजनेचे यश म्हणावे लागेल.^४

आपल्या देशातील आंबे उत्तम प्रतीचे असून उत्पादन वाढीमुळे त्यांची निर्यात अमेरिका व जपान या मोठ्या बाजारपेठात होऊ शकत नाही. याचे कारण वातानुकूलित यंत्रे करणाऱ्या संयंत्राचा अभाव हे आहे. ही संयंत्रे जपानमध्ये तयार केली जातात व तेथून ती आयात करावी लागतात. आंब्याच्या उत्पादन क्षेत्रात जर ही संयंत्रे बसविली तर आपली आंबा निर्यात जपान व अमेरिकेस करता येईल.

रत्नागिरी व सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात अशी संयंत्रे बसविली तर तेथून हापूस आंब्यांच्या निर्यातीला चालना मिळेल. भारतातून आग्नेय आशिया, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अमेरिका, यु.के, बांगलादेश, नेपाळ, कुवैत, जर्मनी, सिंगापूर, बहरीन, सौदी अरेबिया या देशात निर्यात वाढवलेली आहे.^५

२.३ महाराष्ट्रातील भूमि उपयोजन :

महाराष्ट्राचे भौगोलिक क्षेत्रफळ ३०७.५८ लाख हेक्टर आहे. त्यापैकी कोणत्या क्षेत्रात किती जमीन उपयोजनात आहे. तसेच शेती क्षेत्रास किती जमीन वापरली जाते हे महत्त्वाचे आहे. ते खालील तक्त्यावरून स्पष्ट होते.

तक्ता क्र. २.१

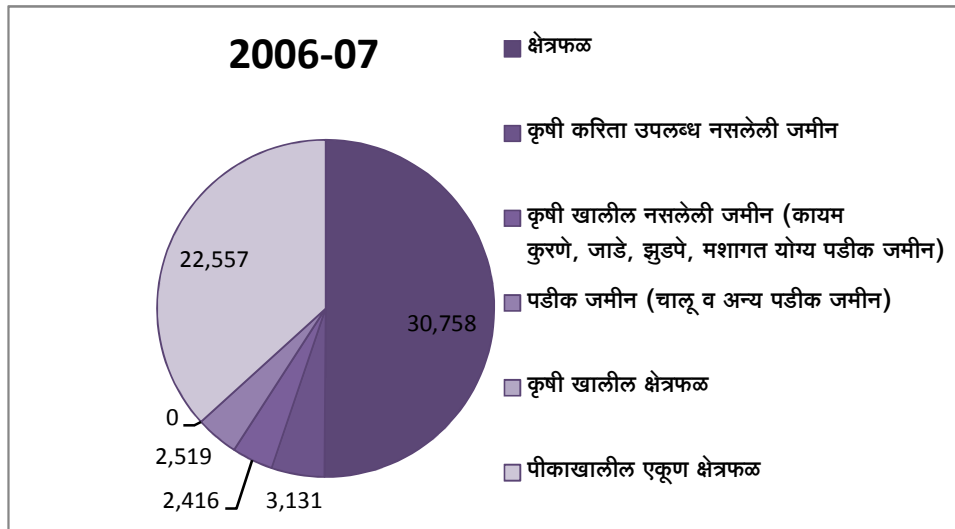
महाराष्ट्रातील जमीनीचा वापर (हजार हेक्टर)^६

| तपशिल | १९६०-६१ | १९९०-९१ | २०००-०१ | २००६-०७ |
|--|---------|---------|---------|---------|
| १) क्षेत्रफळ | ३०,७५८ | ३०,७५८ | ३०,७५८ | ३०,७५८ |
| २) कृषी करिता उपलब्ध नसलेली जमीन | २,४९५ | २,७१३ | २,९९७ | ३,१३१ |
| ३) कृषी खालील नसलेली जमीन (कायम कुरणे, जाडे, झुडपे, मशागत योग्य पडीक जमीन) | २,५५९ | २,३९२ | २,४७० | २,४९६ |
| ४) पडीक जमीन (चालू व अन्य पडीक जमीन) | २,४१४ | १,९६१ | २,३६० | २,५१९ |
| ५) कृषी खालील क्षेत्रफळ | १,८८० | १,९५० | २,१७० | उ.ना. |
| ६) पीकाखालील एकूण क्षेत्रफळ | उ.ना. | २१,८५९ | २२,२५६ | २२,५५७ |

स्त्रोत : महाराष्ट्र शासन सामाजिक, आर्थिक सर्व्हे २०१०.

आलेख क्र. २.१

महाराष्ट्रातील जमीनीचा वापर (हजार हेक्टर)



तक्ता क्र. २.१ मध्ये महाराष्ट्रातील जमिनीचा वापर अध्ययनामध्ये महाराष्ट्राच्या एकूण ३०७५८ हजार हेक्टर क्षेत्रफळापैकी १९६०-६१ पासून २००६-०७ या कालावधीपर्यंत कृषीकरिता उपलब्ध नसलेल्या जमीनचे क्षेत्र २४९५ हजार हेक्टरवरून ३१६१ हजार हेक्टरपर्यंत वाढ झालेली आहे. कायम कुरणे, झाडे, झुडपे, मशागत यागेय पडीक जमीनीच्या क्षेत्रामध्ये घट होत असल्याचे आकडेवारीवरून आढळून येते. चालू व अन्य पडीक जमीन क्षेत्रामध्ये मात्र सन १९६०-६१ ते २००६-०७ या कालावधीमध्ये चढ-उतार दिसून येतात. महाराष्ट्रात पिकाखालील एकूण क्षेत्रफळात सन १९९०-९१ पासून २००६-०७ या कालावधीपर्यंत २७,८५९ हजार हेक्टर क्षेत्रावरून २२,५५७ हजार हेक्टर इतके क्षेत्र वाढलेले दिसून आले. म्हणजेच महाराष्ट्रात पिकाखालील एकूण क्षेत्रफळात वाढ झालेली आहे.

१९९०-९१ पूर्वीची महाराष्ट्रातील फळझाड लागवडीची प्रगती^९

महाराष्ट्रात सन १९६०-६१ पासून ते १९९०-९१ पर्यंतचे फळझाड योजनेअंतर्गत फळझाडांच्या क्षेत्रफळात झालेली प्रगती पुढील तक्त्यात दर्शविली आहे.

तक्ता क्र. २.२

फळझाड लागवड क्षेत्रात झालेली प्रगती (हेक्टर हजार) (सन १९९०-९१ पूर्वी)

| फळझाड पिके | तपशिल | १९६०-६१ | १९७०-७१ | १९९०-९१ | एकूण |
|------------|-------------|---------|---------|---------|--------|
| द्राक्षे | क्षेत्र हे. | ०१ | ०२ | २० | २३ |
| | टक्केवारी | (४.३%) | (८.६%) | (८७.१%) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | ०१ | १८ | १९ |
| केळी | क्षेत्र हे. | २३ | ३७ | ७२ | १३२ |
| | टक्केवारी | (१७.४%) | (२८.०%) | (५६.६%) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | १४ | ३५ | ४९ |
| आंबा | क्षेत्र हे. | १२ | ११ | ३६ | ५९ |
| | टक्केवारी | (२०.३%) | (१८.६%) | (६१.१%) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | -०१ | २५ | २४ |
| मोसंबी | क्षेत्र हे. | १२ | ०८ | ०७ | ३७ |
| | टक्केवारी | (३२.४%) | (२१.६%) | (४६.०%) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | ०४ | -०१ | ०५ |
| संत्रा | क्षेत्र हे. | ०६ | १७ | ४६ | ६९ |
| | टक्केवारी | (८.७%) | (२४.६%) | (६६.७%) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | ११ | २९ | ४० |

| | | | | | |
|---------|-------------|---------|---------|---------|--------|
| लिंबू | क्षेत्र हे. | ०१ | ०२ | ०६ | ०९ |
| | टक्केवारी | (११.१%) | (२२.२%) | (६६.७%) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | ०१ | ०४ | ०५ |
| पेरू | क्षेत्र हे. | ०४ | ०५ | ०६ | १५ |
| | टक्केवारी | (२६.६%) | (३३.३%) | (४०.१%) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | ०१ | ०१ | ०२ |
| चिक्कू | क्षेत्र हे. | ०१ | ०१ | ०३ | ०५ |
| | टक्केवारी | (२०.०%) | (२०.०%) | (६०.०%) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | - | ०२ | ०२ |
| काजू | क्षेत्र हे. | ०४ | ११ | २७ | ४२ |
| | टक्केवारी | (९.५%) | (२६.१%) | (६४.४%) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | ०७ | १६ | २३ |
| इतर फळे | क्षेत्र हे. | ०६ | ०२ | २१ | २९ |
| | टक्केवारी | (२०.६%) | (६८%) | (७२.६%) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | -०४ | १९ | १५ |
| एकूण | क्षेत्र हे. | ६९ | ९६ | २२४ | ३८९ |
| | टक्केवारी | (१७.७) | (२४.६) | (५७.७) | (१००%) |
| | वाढ/घट | - | २७ | १२८ | १५५ |

स्रोत : महाराष्ट्र शासन कृषी आयुक्तालय (फलोत्पादन विभाग पुणे)

टीप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील एकूणाशी टक्केवारी दर्शवतात.

तक्ता क्र. २.२ मध्ये महाराष्ट्रातील १९९०-९१ पूर्वीची फळझाड लागवडीची प्रगती दर्शवण्यात आली आहे. १९६०-६१ मध्ये द्राक्षे, केळी, आंबा, मोसंबी, संत्रा, लिंबू, पेरू, चिक्कू, काजू आणि इतर फळांचे एकूण ६९ (१७.७%) हेक्टर हजार इतके क्षेत्र असून १९९०-९१ मध्ये २२४ (५७.७%) इतके असल्याचे आढळून येते. याच काळात महाराष्ट्रातील फळझाड लागवडीखालील एकूण १५५ हजार हेक्टर क्षेत्र वाढल्याचे संशोधनातून आढळून आले. म्हणजेच १९६०-६१ ते १९९०-९१ या काळात महाराष्ट्रात विविध फळपीकाखाली क्षेत्र वाढल्याचे स्पष्ट होते. चिक्कू या पिकाखालील क्षेत्र १९६०-६१ ते १९७०-७१ या काळात वाढल्याचे आढळत नाही.

२.४ महाराष्ट्राची रोजगार हमी योजना :

ग्रामीण भागातील बेकारी, दारिद्र्य यावर उपाय म्हणून राज्य शासनाने १५ कलमी कार्यक्रमाचा भाग म्हणून राज्यस्तरावर रोजगार हमी योजना एक खास कार्यक्रम म्हणून १९६५ पासून, काही मर्यादित भागात राबविण्यात आला. ही वैशिष्ट्यपूर्ण योजना राबविणारे महाराष्ट्र हे देशातील पहिलेच राज्य होते. २६ जानेवारी १९७८ ला अधिनियम अंमलात येवून रोजगार हमी योजनेचा कायदा संमत करण्यात आला व योजनेस

कायद्याचे स्वरूप प्राप्त झाले. १९७७ ला महाराष्ट्र रोजगार हमी योजनेचा अधिनियम करण्यात येऊन २६ जानेवारी १९७९ ला हा अधिनियम अंमलात आला. मोठ्या प्रमाणात ग्रामीण भागाच्या विकासाचा पल्ला गाठण्याच्या दृष्टीने लोकोपयोगी आणि विकासाच्या पायाभूत सुविधांची कामे रोजगार हमी योजनेच्या माध्यमातून करण्यात आली आहेत. ही योजना जरी दुष्काळी परिस्थितीवर मात करण्यासाठी म्हणून निर्माण केली गेली असली तरी काळाच्या ओघात ही योजना बारमाही विकासाची योजना म्हणून स्वीकारली गेली आहे.

२० डिसेंबर १९७४ रोजी राज्य विधीमंडळाने रोजगार हमी योजनेचा प्रस्ताव एकमताने सादर केला. त्या वेळेचे सदनातील हे विवेचन, 'ही योजना पूर्णतः राबविली जाईल आणि कुठल्याही परिस्थितीत प्रशासकीय अकार्यक्षमतेमुळे, निधी अभावी आणि राजकीय मतभेद अथवा समाज कार्यकर्त्यांनी दुर्लक्ष केल्यामुळे या योजनेची अंमलबजावणी स्थगित होणार नाही. असा विश्वास यावेळी व्यक्त करणाऱ्यात आला होता. १९७४ मध्ये सादर झालेल्या रोजगार हमी योजनेच्या प्रस्तावानंतर या योजनेच्या अंमलबजावणीसाठी विविध क्रांतीकारी निर्णय सरकारने घेतले. त्यातूनच महाराष्ट्रात आज लोकविकासाची चळवळ या रोजगार हमी योजनेने उभी केली आहे.'^६

राज्यातील कोरडवाहू शेतीचे प्रमाण जवळपास ८५% असल्याने या शेतीवर अवलंबून राहणाऱ्या लहान, अल्प आणि अत्यल्प भू-धारकांच्या शेती पद्धतीत परिवर्तन घडवून आणून, पावसाच्या लहरीपणामुळे या शेतकऱ्यांच्या वाटेला सदैव येणारी आर्थिक दुर्बलता घालविण्यासाठी महाराष्ट्र शासनाने आठव्या पंच वार्षिक योजनेच्या काळात संपूर्ण राज्यात फळझाड लागवडीचा महत्वाकांक्षी कार्यक्रम राबविण्याचे ठरविले आहे. विशेष म्हणजे या कार्यक्रमांची रोजगार हमी योजनेशी सांगड घालण्यात आली आहे.'^९

राज्यात फलोत्पादनाखाली जवळपास केवळ ५ लक्ष ८५ हजार हेक्टर क्षेत्र असून राज्यातील एकूण १८२ लाख हेक्टर कृषी लागवडीखाली असलेल्या क्षेत्राच्या तुलनेने हे प्रमाण फारच कमी आहे. या ५ लक्ष ८५ हजार हेक्टर क्षेत्रापैकी निव्वळ फळपीकाखालील क्षेत्र अवघे २ लक्ष ४२ हजार हेक्टर इतके आहे. तर भाजीपाल्याखाली १ लक्ष ५५ हजार हेक्टर क्षेत्र आहे. उर्वरित क्षेत्र मसाल्याची पीके आणि फुलझाडे यांच्या लागवडीखाली आहे. असे पाहता राज्यात असलेल्या २९ लाख हेक्टर लागवडी योग्य पडीक जमीनीवर

फळ पीकांच्या उत्पादनाला फार मोठा वाव आहे. गावाचा विकास हे सूत्र मानून सन १९९०-९१ वर्षापासून रोजगार हमी योजनेशी फळझाड लागवड कार्यक्रमांची सांगड घालण्यात आली आहे. ग्रामीण भागातील बेरोजगारी आणि उत्पादकतेचा व्यापक विचार हा बदल घडवून आणताना केला आहे. वार्षिक सुमारे अडीजशे कोटीच्या जवळपास इतकी रक्कम रोजगार हमी योजनेवर खर्च केली जात असताना, ही एवढी मोठी रक्कम ग्रामीण भागातील शेतकरी आणि शेतमजूर यांच्या उन्नतीसाठी खर्च व्हावी व त्यासाठी गाव आणि गावातील परिसर सुधारावा, शेती आणि ओलीत व्यवस्था सुधारावी व त्यातूनच शेतकऱ्यांची आर्थिक स्थिती सुधारावी ही जी अपेक्षा आहे ती अतिशय रास्त होती.^{१०}

२.४.१ लाभधारक पात्रता :

१. गावात ज्याच्या नावावर जमीन आहे, असे सर्व शेतकरी, विश्वस्त कायद्याखालील संस्था, सहकारी कायद्याखालील प्रमाणित झालेल्या मान्यताप्राप्त संस्था (सहकारी साखर कारखाने व सूत गिरण्या वगळून) या योजनेत भाग घेऊ शकतात.
२. या योजनेचा लाभ मात्र सर्व वर्गातील शेतकऱ्यांना होणार आहे. (अनुसुचित जाती-जमाती, नवबौद्ध, भटक्या जमाती/विमुक्त जाती)
३. राज्यातील कृषी विद्यापीठे (क वर्ग नगरपालिका व ग्रामीण भागातील क्षेत्रावर) या योजनेत भाग घेऊ शकतात.
४. रोजगार हमी योजनेशी निगडित फळबाग लागवड कार्यक्रमाचा ज्यांनी लाभ घेतलेला आहे परंतु ज्यांनी ही योजना यशस्वीपणे राबविली नाही, त्यांचा लाभार्थी म्हणून विचार करण्यात येऊ नये.^{११}

२.४.२ क्षेत्र मर्यादा :

- १) ठाणे, रायगड, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, चंद्रपूर व गडचिरोली या जिल्ह्यातील सर्व तालुके आणि पश्चिम घाट क्षेत्रातील काही तालुक्यामध्ये प्रती लाभार्थी कमीत कमी क्षेत्र मर्यादा ०.१० हेक्टर राहिल.
- २) कोकण विभागाकरिता प्रती लाभार्थी लागवडीची जास्तीत जास्त क्षेत्र मर्यादा १० हेक्टर राहिल. कोकण विभाग वगळता राज्यातील इतर भागात प्रती लाभार्थी लागवडीची क्षेत्र मर्यादा जास्तीत जास्त हेक्टर राहिल.

३) लाभ धारकांचे ७/१२ उताराच्या नोंदणीनुसार जर तो संयुक्त खातेदार असेल तर त्याच्या हिश्याच्या क्षेत्राच्या प्रमाणानुसार लाभ देण्यात येईल.^{१२}

२.४.३ योजनेत सहभागी होण्याची पद्धती :

रोजगार हमी योजनेतर्गत फळबाग योजनेमध्ये सहभागी होण्यासाठी संबंधीत गावाचे कृषी सहाय्यक मंडळ, कृषी अधिकारी तालुका, कृषी अधिकारी यांचेशी संपर्क साधणे. नमुन्यातील विहित अर्जासोबत जमीनीचे ७/१२ व ८-अ चे उतारे यांची पूर्तता करून योजनेत सहभागी होता येते.^{१३}

२.४.४ लाभार्थीच्या जबाबदाऱ्या :

योजनेत भाग घेणारा लाभार्थी हा गावातील त्याच्या स्वतःच्या जमीनीवर काम करण्यासाठी स्वतःच व आपल्या कुटुंबातील कार्यक्षम व्यक्तीस रोजगार हमी योजने अंतर्गत प्रमाणित मजूर म्हणून घोषित करित असतो.

लाभार्थीस अनुदान मंजूर करण्यात येतात व निश्चित केलेल्या खर्च प्रमाणपेक्षा जास्त होणाऱ्या खर्चाची जबाबदारी स्वतः घेण्याबाबत त्याची लेखी संमती घेण्यात येते.

लाभार्थ्यांना देय अनुदान प्राप्त करून घेण्यासाठी त्यांनी राष्ट्रीयकृत बँक अथवा सहकारी बँकेत खाते उघडावे व खाते क्रमांक तालुका कृषी अधिकारी यांना कळविणे आवश्यक आहे.

संपूर्ण लागवड कार्यक्रमासाठी पूर्व हंगामी मशागत कामे, खड्डे खोदणे, झाडांची लागवड, पाणी देणे, किटकनाशके, औषधे फवारणी करणे व झाडांचे संरक्षण करणे या गोष्टी लाभधारक शेतकऱ्याने स्वतः करणे आवश्यक आहेत.^{१४}

२.४.५ फळझाड लागवडीसाठी मुदत :

फळझाड लागवड योजना योग्य रितीने राबविण्यासाठी, कालबद्ध कार्यक्रमाचे वेळापत्रक संचालक फलोत्पादन यांचे मार्फत सर्व संबंधीत कृषी अधिकाऱ्यांना वितरीत करण्यात येते. कोकण विभागासाठी प्रत्येक वर्षाचा सप्टेंबर महिना व उर्वरित विभागासाठी ३० नोव्हेंबर पर्यंत लागवड करण्यात यावी.^{१५}

२.४.६ अनुदानाचा दर :

योजनेतर्गत समाविष्ट झालेल्या सर्व लाभार्थींना त्यांनी केलेल्या कामानुसार मंजूरीसाठी देय असलेले अनुदान १००% देण्यात येईल. तथापि सामग्रीसाठी देय असलेले १००% अनुदान हे अनुसूचित जाती/जमाती, नवबौद्ध, भटक्या जमाती विमुक्त जमाती तसेच नार्बाडच्या व्याख्येनुसार असलेले अल्प व अत्यल्प भू-धारक शेतकऱ्यांना देण्यात येईल तर उर्वरित शेतकऱ्यांना सामग्रीसाठी देय असलेल्या अनुदानाच्या ७५% अनुदान देण्यात येईल. शासन निर्णय क्रमांक रो.ह.यो./२००७ प्र. क्र. १२३ दिनांक २४ जानेवारी २००८ अन्वये या योजने अंतर्गत विविध फळ पिकासाठी बाबनिहाय देय अनुदान निश्चित केले आहे.^{१६}

२.४.७ अनुदान वितरीत करण्याचे निकष :

पहिल्या वर्षी लाभार्थ्यांने केलेल्या कामाच्या प्रमाणानुसार मापनपुस्तिकेत नोंद घेऊन मापदंडानुसार तपासणीनंतर देय असलेल्या ५०% अनुदान देण्यात यावे. यामध्ये ५०% अनुदेय अनुदानापेक्षा मापदंडाप्रमाणे फरकाची रक्कम दुसऱ्या व तिसऱ्या वर्षी तपासणीनंतर, कामाच्या प्रमाणानुसार मापन पुस्तिकेत नोंद घेवून देय अनुदान अधिक पहिल्या व दुसऱ्या वर्षीचे उर्वरित देय अनुदान प्रमाणानुसार अनुदेय असेल त्याप्रमाणे देण्यात यावे.

सादर योजनेतर्गत लाभार्थ्यांला दुसऱ्या किंवा तिसऱ्या वर्षाच्या अनुदानासाठी पात्र ठरविण्याकरिता उपरोक्त परिच्छेदामध्ये दर्शविलेली जीवंत झाडांच्या टक्केवारीच्या प्रमाणापेक्षा जास्त असलेल्या झाडांना, व प्रती जीवंत झाडाचे संख्येवर अनुदान देय राहिल.^{१७}

२.४.८ लाभार्थी प्रस्तावास प्रशासकीय व तांत्रिक मान्यता :

लाभार्थ्यांने कृषी सहाय्यक व कृषी पर्यवेक्षक यांचे शिफारशीसह विनंती अर्ज सर्व कागद पत्रासह मंडळ कृषी अधिकारी यांना सादर केल्यानंतर तालुका कृषी अधिकारी लाभार्थी प्रस्ताव तपासून आवश्यकतेनुसार प्रकल्प तयार करतील.

१) पाच लाखापर्यंत - उपविभागीय कृषी अधिकारी

२) पाच ते आठ लाखापर्यंत - जिल्हा अधिक्षक कृषीअधिकारी

३) आठ ते १६ लाखापर्यंत - विभागीय कृषि सह संचालक हे सर्व प्रस्तावास तांत्रिक मान्यता देतात.^{१८}

२.४.९ नारळ बागेतील मसाला आंतर पिके :

कोकण विभागातील सर्व जिल्ह्यात रोजगार हमी योजने अंतर्गत नारळ बागेत आंतर पीक म्हणून मसाला पीकांची लागवड सन २००७-०८ पासून राबविण्यात येत आहे. या संबंधी मार्गदर्शक सूचना प्रती लाभार्थ्यांस नारळ बागेत मसाला आंतर पिकाचा कमीत कमी ०.१० हेक्टर व जास्तीत जास्त २ हेक्टर इतक्या क्षेत्रावर लाभ देण्यात यावा. नारळ बागेत मिरी, लवंग, जायफळ व दालचिनी या मसाला पीकाची स्वतंत्र लागवड न करता मिरी + लवंग अथवा मिरी + जायफळ अथवा मिरी + दालचिनी अशा प्रकारे लागवड करण्यात यावी.^{१९}

२.४.१० कातळ जमिनीत आंबा लागवड :

सन २००७-०८ मध्ये कोकण विभागातील रायगड, रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात कातळ जमिनीवर आंबा लागवडीची योजना, रोजगार हमी योजनेशी निगडीत फळ विकास कार्यक्रमांतर्गत राबविण्या संबंधी मार्गदर्शक सुचना देण्यात आल्या.^{२०}

२.४.११ समिती :

रोजगार हमी योजने अंतर्गत फळबाग लागवडीच्या कामाचा वेळोवेळी आढावा घेण्यासाठी तसेच सनियंत्रण करण्यासाठी ग्रामपातळी व जिल्हा पातळीवर समित्यांचे गठन करण्यात येत आहे. सदर समितीची सभा महिन्यातून एकदा घ्यावी या समितीचे अध्यक्षपद जिल्ह्याचे मा. ना. पालकमंत्री असतात.

आज द्राक्षे, केळी, आंबा, संत्री इ. महाराष्ट्रात मिळणारी फळे आंतरराष्ट्रीय बाजारपेठेत अतिशय चांगला दर्जा राखून आहेत. यावरून एक गोष्ट निश्चितपणे सिद्ध होते की, महाराष्ट्रातील शेतकरी हा अतिशय चांगल्या दर्जाच्या फळांची शेती करू शकतो. दुसरे म्हणजे राज्यातील शेतीसाठी पावसाच्या दृष्टीने प्रतिकूल परिस्थिती असली तरीही फळशेतीसाठी मात्र अनुकूल असे हवामान, अनुकूल भौगोलिक परिस्थिती आणि वेगवेगळ्या जातींची बी-बियाणे व कलमे-रोपे उपलब्ध आहेत.

या सर्व पार्श्वभूमीचा विचार करून महाराष्ट्रात कोरडवाहू जमिनीवर फळ शेतीला प्रोत्साहन देण्याचा निर्णय शासनाने घेतला असून राज्यातील जमिनीची गुण वैशिष्ट्ये

पावसाचे प्रमाण, हवामान आणि कमी भांडवली खर्चात उपलब्ध होणारी किफायतशिरता याबद्दलचा अभ्यास करून आंबा, फणस, काजू, सीताफळ, संत्री, मौसंबी, चिकू, पेरु, बोर आदी फळांची शेती करण्यासाठी एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम १९९०-९१ वर्षाच्या शेती हंगामापासून संपूर्ण राज्यात राबविण्याचा निर्णय शासनाने घेतला आहे. या कार्यक्रमांमुळे ग्रामीण भागातील कोरड वाहू शेतकऱ्यांची आर्थिक स्थिती सुधारेल आणि त्याचबरोबर गावांचा विकास होऊन पर्यावरणाचा समतोलही साध्य होईल.^{२१}

२.४.१२ योजनेचे उद्देश :

फळ झाडांच्या लागवडीमुळे ग्रामीण भागातील शेतीच्या कामात अर्धवेळ गुंतलेल्या शेतकऱ्यांना विशेषतः

- १) तरुण बेरोजगार शेतकऱ्यांना स्वयंरोजगार उपलब्ध करून देणे हा या फलोत्पादन विकासाच्या कार्यक्रमांचा एक मुख्य उद्देश असल्याने या योजनेशी सांगड रोजगार हमी योजनेशी घालण्यात आली आहे.
- २) पडीक जमीन लागवडीखाली आणणे.
- ३) कोरडवाहू भागात फळपीके शेतीचा विकास करणे.^{२२}

२.४.१३ रोजगार हमी योजने अंतर्गत लावावयाची फळझाडे :

- १) सलग लागवड अ) कोरडवाहू पीके : १) आंबा, २) काजू, ३) बोर,
४) सीताफळ, ५) आवळा, ६) चिंच, ७) फणस, ८) कोकम, ९) जांभूळ,
१०) कवठ, ११) चारोळी, १२) जोजोबा, १३) बांबू, १४) जट्टोफा (मोगली एरंड)

- ब) बागायती पीके : १५) नारळ, १६) संत्री, १७) मोसंबी, १८) चिकू,
१९) डाळिंब, २०) पेरु, २१) अंजीर, २२) कागदी लिंबू, २३) सुपारी (सलग पीक), २४) तेलताड, २५) खैर

२) नारळ बागेत आंतर पीके :

- १) मिरी, २) लवंग, ३) जायफळ, ४) दालचिनी, ५) सुपारी

३) भात खाचराचे बांधावरील लागवड :

- १) आंबा, २) काजू, ३) पेरु, ४) नारळ,
५) आवळा, ६) बांबू

४) औषधी व सुगंधी वनस्पती : १) आईरन २) अर्जुना ३) असन ४) अशोका
५) बेल ६) गुग्गुळ ७) लोध्रा ८) रक्त चंदन ९) शिवण १०) टेटू
११) बेहडा १२) बिब्बा १३) डिकेमाली १४) हिरडा १५) रिठा १६) वावडींग
१७) करंज १८) पानर्पिपरी

कोकण विभागामध्ये आंब्यांच्या हापूस जातीची सलग लागवड करताना २०%
आंब्यांच्या इतर जातीची लागवड करणे आवश्यक राहिल.^{२३}

तक्ता क्र. २.३

रोजगार हमी योजनेशी निगडीत फळझाडे लागवडीसाठी मंजूर मापदंड^{२४}

| अ.नं. | फळ पिकांचे नांव | लागवड अंतर (मि.) | प्रति हे. झाडे संख्या | खड्डे आकार मि. | कलमे रोपे दर | हे. मिळणारे अनुदान |
|-------|-------------------------|------------------|-----------------------|--------------------|--------------|--------------------|
| | कोरडवाहू फळ पिके | | | | | |
| १ | आंबा कलमे | १० × १० मि. | १०० | १×१×१ मी. | ३० | ४६९४० |
| २ | आंबा (कातळ) | १० × १० मि. | १०० | १×१×१ मी. | ३० | ६६६०० |
| ३ | काजू | ७ × ७ मि. | २०० | १×१×१ मी. | २० | ३०४२० |
| ४ | कोकम रोपे | ७ × ७ मि. | २०० | ०.६०×०.६०×०.६० मी. | ७ | २६६७० |
| ५ | कोकम कलमे | ७ × ७ मि. | २०० | ०.६०×०.६०×०.६० मी. | १५ | २९०७० |
| ६ | आवळा कलमे | ७ × ७ मि. | २०० | ०.६०×०.६०×०.६० मी. | २५ | ३१२०० |
| ७ | फणस कलमे | १० × १० मि. | १०० | १×१×१ मी. | १५ | २५३७० |
| ८ | फणस रोपे | १० × १० मि. | १०० | १×१×१ मी. | ७ | २४१७० |
| ९ | बांबू | ५ × ५ मि. | ४०० | ०.४५×०.४५×०.४५ मी. | ७ | २५०२० |
| १० | जट्रोफा रोपे | ३ × ३ मि. | ११११ | ०.६०×०.६०×०.६० मी. | २ | २४९४० |
| | बागायती फळ पिके | | | | | |
| १ | नारळ रोपे बाणावली | ८ × ८ मि. | १५० | १×१×१ मी. | २५ | ३७६१० |
| २ | नारळ रोपे टी × डी | ८ × ८ मि. | १५० | १×१×१ मी. | ३० | ३८५१० |
| ३ | चिकू कलमे | १० × १० मि. | १०० | १×१×१ मी. | ३५ | ४६१३० |
| ४ | पेरू कलमे | ६ × ६ मि. | २७७ | ०.६०×०.६०×०.६० मी. | २० | २६९४१ |
| ५ | सुपारी (सलग) | २.७०×२.७० मि. | १३७० | १×१×१ मी. | १२ | ६९००० |

| | | | | | | |
|---|---------------------|-------------|-------|--------------------|------|-------|
| ६ | खबर | ८ × ८ मि. | ५०० | ०.६०×०.६०×०.६० मी. | ८ | ३७७१० |
| | आंतरपिके | | | | | |
| १ | सुपारी | आंतरपीक | ४७५ | ०.६०×०.६०×०.६० मी. | १२ | ४०२८० |
| २ | मिरी | आंतरपीक | ३०० | ०.५०×०.५०×०.५० मी. | ५ | १२५१० |
| ३ | जायफळ कलमे | आंतरपीक | २५० | ०.९०×०.९०×०.९० मी. | ४० | ३३६०० |
| ४ | जायफळ रोपे | आंतरपीक | २५० | ०.९०×०.९०×०.९० मी. | १२ | २५२०० |
| ५ | लवंग | आंतरपीक | १२० | ०.६०×०.६०×०.६० मी. | १५ | १७१४० |
| ६ | दालचिनी | आंतरपीक | ३०० | ०.६०×०.६०×०.६० मी. | २० | ३३९०० |
| | औषधी वनस्पती | | | | | |
| १ | पान पिंपरी | १४ मि. वाफे | ९०००० | १४ मि. चे. २५०० | ०.१० | २४६४० |
| २ | आईरन | ८ × ८ मि. | १५० | १×१×१ मी. | ३.५० | २४४६० |
| ३ | शिवण | ८ × ८ मि. | १५० | १×१×१ मी. | ३.५० | २४४६० |

स्त्रोत : महाराष्ट्र शासन कृषीआयुक्तालय (फलेत्पादन विभाग पुणे)

- * अर्जुन, असन, अशोक, बेहडा, हिरडा, बेल, टेटू, डिकेमाली, करंज, रक्तचंदन, रिटा व लोधा या औषधी वनस्पतींची लागवड १० × १० मी. वर करावयाची असून या सर्वासाठी रु. २०१७०/- प्रति हेक्टर अनुदान मंजूर आहे.

तक्ता क्र. २.३ मध्ये रो. ह. योजना निगडीत फळझाड लागवडीसाठी मंजूर मापदंड दर्शविला आहे. यामध्ये महाराष्ट्र शासनाने रोजगार हमी योजने अंतर्गत फळझाड लागवडीमध्ये कोरडवाहू फळपिके, बागायती फळपिके आणि औषधी वनस्पती यांचा समावेश केलेला आहे. या सर्व फळपीकांच्या उत्पादन खर्चाचा विचार करून शासनाने अगदी शास्त्रीय पद्धतीने लागवडीसाठी योग्य असे अनुदान दिलेले आहे. या पद्धतीने लागवड केल्यास फळे उत्पादन मोठ्या प्रमाणात होवू शकेल असे संशोधकाला आढळून आले.

तक्ता क्र. २.४

महाराष्ट्रातील रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवडीची स्थिती^{२५}

| अ.क्र. | तपशील | क्षेत्र (हे.) |
|--------|--|--------------------------------|
| १ | १९८१ पूर्वी महाराष्ट्रातील फलोत्पादन खालील क्षेत्र | १,४२,०० हेक्टर |
| २ | १९९० पर्यंतचे राज्यातील फलोत्पादन खालील क्षेत्र | २,४२,००० हेक्टर |
| ३ | रोजगार हमी योजने अंतर्गत २००८ पर्यंतची लागवड | १३,३१,४४७ हेक्टर |
| ४ | फळ झाडाखालील एकूण क्षेत्र (२००८) पर्यंत | १५,७३,४४७ हेक्टर |
| ५ | उत्पादनक्षम क्षेत्र | ९,१४,३१७ हेक्टर |
| ६ | एकूण उत्पादन | १,०३,००,००० रु. (२५ लाख टन) |
| ७ | योजनेच्या लाभ घेतलेले एकूण लाभार्थी | १७,५०,४८४ |
| ८ | एकूण अंदाजित उलाढाल | ६,३०० को. रु. |
| ९ | निर्माण झालेले एकूण मनुष्य दिवस | ३३ को. रु. |

स्रोत : महाराष्ट्र शासन कृषीआयुक्तालय (फलेत्पादन विभाग पुणे) २००९-१०.

तक्ता क्र. २.४ मध्ये असे दर्शविण्यात आले आहे की, १९८१ पूर्वी महाराष्ट्रात फलोत्पादनातील क्षेत्र १,४२,००० हजार हेक्टर इतके होते. परंतु १९९०-९१ च्या रोजगार हमी योजनेमुळे फळझाड लागवड कार्यक्रमात आमूलाग्र बदल झाला. त्यामुळे २००८ पर्यंत फळझाड लागवड क्षेत्र १५,७३,४४७ हजार हेक्टर इतके झाले. या एकूण

लागवड क्षेत्रापैकी ९,१४,३१७ हजार हेक्टर क्षेत्र उत्पादनक्षम असून त्यामधून २५ लाख टन इतके उत्पादन मिळाले. महाराष्ट्रात या फळझाड लागवड कार्यक्रमांमुळे एकूण अंदाजीत उलाढाल ६.३०० को. इ. इतकी आहे. या योजनेमुळे महाराष्ट्रात ग्रामीण भागात रोजगार निर्मिती झाली. अशा प्रकारे संशोधन क्षेत्रात आर्थिक विकासाच्या दृष्टीने ही योजना संशोधकाला अतिशय महत्त्वाची वाटते आहे.

तक्ता क्र. २.५

महाराष्ट्रातील फळबाग लागवडीची प्रादेशिक स्थिती^{२६}

| अ.क्र. | विभाग | कोणत्या पिकांचा जादा विकास करावा | इतर कोणती फळ पिके घेता येतील |
|--------|---|---|---|
| १ | कोकण | आंबा, काजू, नारळ, सुपारी, अननस, चिकू, फणस | दालचिनी, लवंग, मिरी, कोकम, वेलदोडे, जायफळ, कॉफी, भोकर, फळ |
| २ | मध्य महाराष्ट्र (नाशिक ते सोलापूर) | द्राक्षे, मोसंबी, लिंबू, अंजिर, पेरु, डाळिंब, पपई, चिकू | काजू (कोल्हापूर), फालसा |
| ३ | मराठवाडा (औरंगाबाद विभाग) | संत्री, केळी, द्राक्षे, अंजिर, आंबा | फालसा, पेरु, सीताफळ |
| ४ | धुळे व जळगाव | केळी, आंबा, बोर, लिंबू | पानवेल, पालसा, पेरु |
| ५ | विदर्भ (नागपूर विभाग) | संत्रा, लिंबू, बोर, काही द्राक्षे जाती, काही भागात पपई | काही भागात केळी, पनवेल, बोर, फालसा, आंबा |
| ६ | थंड हवेची डोंगराळ ठिकाणे (चिखलदरा, महाबळेश्वर, माथेरान) | मलबेरी, स्ट्रॉबेरी, डाळिंब, अंजिर, काही गुलाब जाती | विशिष्ट जातीची सफरचंद, नासपती व स्वप्नाळू |

स्रोत : महाराष्ट्र शासन कृषीआयुक्तालय (फलेत्पादन विभाग पुणे)

तक्ता क्र. २.५ मध्ये फळबाग लागवडीची प्रादेशिक स्थिती दर्शविली आहे.

महाराष्ट्रात फळबाग लागवडीसंदर्भात एकूण सहा विभाग करण्यात आलेले आहेत. सर्व विभागातील हवामान, जमीनीची सुपिकता, जलसिंचन सुविधा यांचा शास्त्रीय अभ्यास करून कोणत्या प्रदेशात कोणत्या फळ पीकांचा जादा विकास करता येईल, कोणती मसाला अंतर पीके घेता येतील याबाबत शास्त्रीय संशोधन निकष निश्चित करून त्या-त्या विभागातील फळबाग लागवडीचा संदर्भ दिलेला आहे.

तक्ता क्र. २.६

**महाराष्ट्रातील फलोत्पादनांची स्थिती
राज्यातील प्रमुख फळ पिकांखालील क्षेत्र व उत्पादन^{२७}**

(क्षेत्र ०० हेक्टर, उत्पादन ०० मेट्रीक टन)

| फळ पिकाचे नांव | बाब | १९९०-९१ | १९९५-९६ | १९००-२००० | २०००-०१ | २००१-०२ | २००२-०३ | २००३-०४ | २००४-०५ | २००५-०६ | एकूण |
|----------------|---------|---------|---------|-----------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|--------|
| केळी | क्षेत्र | २९० | ३८५ | ६१३ | ७२१ | ७२१ | ५७४ | ५७४ | ७२२ | ७३२ | ५३३२ |
| | टक्के | (५.४) | (७.२) | (११.४) | (१३.५) | (१३.५) | (१०.७) | (१०.७) | (१३.४) | (१४.२) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | ९५ | २२८ | १०८ | ०० | -१४७ | - | १४८ | १० | ४४२ |
| | उत्पादन | १६०४० | २२१६८ | ३६७८० | ४३३०५ | ४३३१३ | ३६०७५ | ३५५८८ | ४५३४६ | ४६०८४ | ३२४६९९ |
| | टक्के | (४.९) | (६.८) | (११.३) | (१३.३) | (१३.२) | (११.१) | (१०.९) | (१३.९) | (१४.६) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | ६१२८ | १४६१२ | ६५२५ | ०८ | -७२३८ | -४८७ | ९७५८ | ७३८ | ३००४४ |
| संत्री | क्षेत्र | ३०० | ५३४ | १४११ | १३२२ | १४८४ | १५०८ | १३०३ | ११८५ | १२१५ | १०२६२ |
| | टक्के | (२.९) | (५.२) | (१३.७) | (१२.८) | (१४.४) | (१५.०) | (१२.७) | (११.५) | (११.८) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | २३४ | ८७७ | ८९ | १६२ | २४ | -२०५ | -११८ | -३० | ९१५ |
| | उत्पादन | २२९० | ५५७८ | १३३३३ | १०७७६ | ८३३१ | ८८१५ | ८७१४ | ७१८४ | ७२१२ | ७२२३३ |
| | टक्के | (३.२) | (७.७) | (१८.४) | (१४.९) | (११.५) | (१२.२) | (१२.२) | (९.९) | (१०.०) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | ३२८८ | ७७५५ | -२५५७ | -२४४५ | ४८४ | -१०१ | -१५३० | २८ | ६९९४३ |

| | | | | | | | | | | | |
|----------|---------|-------|-------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|-------|
| द्राक्षे | क्षेत्र | १५.० | २७५ | २९८ | २९८ | २९८ | ३५२ | ३९० | ४३८ | ४५० | २९४९ |
| | टक्के | (५.०) | (९.३) | (१०.१) | (१०.१) | (१०.१) | (११.९) | (१३.२) | (१४.८) | (१५.५) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | १२५ | २३ | - | - | ५४ | ३८ | ४८ | ०२ | ३०० |
| | उत्पादन | २५५० | ६७८४ | ७७९२ | ७७९० | ७७९० | ९८८७ | ८९६० | १२३३९ | १२७५० | ७६२४२ |
| | टक्के | (३.३) | (८.८) | (१०.२) | (१०.२) | (१०.२) | (१२.९) | (११.७) | (१६.१) | (१६.६) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | ४२३२ | १००८ | -०२ | -- | २०९७ | -९२७ | ३३७९ | ४११ | १०२०० |
| आंबा | क्षेत्र | ७७६ | २६५९ | ३७६४ | ४०३५ | ४०९५ | ४१९८ | ४२५४ | ४३२७ | ४४४५ | ३२५५१ |
| | टक्के | (२.९) | (८.१) | (११.५) | (१२.४) | (१२.५) | (१२.८) | (१३.०) | (१३.२) | (१३.६) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | १८८३ | ११०५ | २७१ | ६० | १०३ | ५६ | ७३ | ११८ | ३६६९ |
| | उत्पादन | २४४४ | ३५१० | ५००५ | ५००५ | ५५९० | ६१५९ | ६८४७ | ४३४३ | ६३८६ | ४५२८९ |
| | टक्के | (५.४) | (७.७) | (११.०) | (११.०) | (१२.३) | (१३.६) | (१५.१) | (९.५) | (१४.४) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | १०६६ | १४९५ | - | ५८५ | ५६९ | ६८८ | -२५०४ | २०४३ | ३९४२ |
| काजू | क्षेत्र | १५० | १९९ | १३०५ | १३८४ | १५३३ | १५९१ | १६१५ | १६३८ | १६४३ | ११०५८ |
| | टक्के | (१.३) | (१.८) | (१.८) | (१२.५) | (१३.८) | (१४.३) | (१४.६) | (१४.८) | (१५.१) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | ४९ | ११०६ | ७९ | १४९ | ५८ | ७४ | २३ | ०५ | १४९३ |
| | उत्पादन | १२२ | १६१ | ९५५ | १०१५ | १२५२ | १३४५ | १५७६६ | १५९८ | १६०३ | २३८१७ |
| | टक्के | (०.५) | (०.७) | (४.०) | (४.२) | (५.२) | (५.६) | (६.३) | (६.७) | (६.८) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | ३९ | ७९४ | ६० | २३७ | ९३ | १४४२१ | -१४१६८ | ०५ | १४८१ |

| | | | | | | | | | | | |
|--------|---------|-------|-------|-------|-------|-------|--------|--------|--------|--------|-------|
| डाळींब | क्षेत्र | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | ८१४ | ८४३ | ८८५ | ९१० | ३४५२ |
| | टक्के | - | - | - | - | - | (२३.५) | (२४.६) | (२५.६) | (२६.३) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | - | - | - | - | - | २९ | ४२ | २५ | ९६ |
| | उत्पादन | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | ५०९५ | ५३३० | ५६८२ | ५९३६ | २२०४३ |
| | टक्के | - | - | - | - | - | (२३.१) | (२४.१) | (२५.७) | (२७.१) | (१००) |
| | वाढ/घट | - | - | - | - | - | - | २३५ | ३५२ | २५४ | ८४१ |
| मोसंबी | क्षेत्र | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | ८०१ | ८१४ | ८४६ | ९१६ | ३३७७ |
| | टक्के | - | - | - | - | - | २३.७ | २४.१ | २५.० | २७.० | १०० |
| | वाढ/घट | - | - | - | - | - | - | १३ | ३२ | ७० | ११५ |
| | उत्पादन | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | उ.ना. | ५५४१ | ५६३७ | ५८७० | ६११६ | २२२६४ |
| | टक्के | - | - | - | - | - | २४.८ | २५.३ | २६.३ | २३.६ | १०० |
| | वाढ/घट | - | - | - | - | - | - | ९६ | २३३ | २४६ | ७५७ |

स्त्रोत : महाराष्ट्र शासन कृषीआयुक्तालय (फलेत्पादन विभाग पुणे)

तक्ता क्र. २.६ मध्ये महाराष्ट्रातील फलोत्पादन स्थिती बाबत राज्यातील प्रमुख फळपिकाखालील क्षेत्र व उत्पादन दर्शविले आहे. केळी या पीकाखाली १९९०-९१ मध्ये २९० (५.४%) क्षेत्र असून २००५-०६ सर्वाधिक ७३२ (१४.२%) हेक्टर क्षेत्र आहे केळी पिकाखालील क्षेत्रास अभ्यासकाळात ४४२ हे इतकी वाढ झाल्याचे आढळून येते. याचकाळात केळीचे उत्पादन १६,०४० मेट्रीक टना (४.९%) वरून ४६,०८४ मेट्रीक टन (१४.६%) वाढले असून उत्पादनातील निव्वळ वाढ ३०,०४४ इतकी आहे.

महाराष्ट्र राज्यात आंब्याखालील क्षेत्र १९९०-९१ मध्ये ७७६ (२.९%) हेक्टर असून २००५-०६ पर्यंत ४४४५ हे. (१३.६%) इतके झाले. अभ्यासकाळात ३,६६९ हेक्टर क्षेत्रात वाढ झाली. तर उत्पादनाच्या बाबतीत याच काळात २,४४४ (५.४%) मेट्रीक टनावरून ६,४८६ (१४.४%) पर्यंत वाढ झाली. आंब्याचे सर्वात जास्त उत्पादन २००३-०४ यावर्षी ६,८४७ (१५.१%) मेट्रीक टन इतके झाले असून अभ्यास काळात ३,९४२ मेट्रीक टन वाढ झाल्याचे संशोधकाला आढळून आले.

काजू या पीकाखालील एकूण ११,०५८ हे. क्षेत्रापैकी १९९०-९१ मध्ये १५० (१.३%) तर २००५-०६ मध्ये १,६४३ (१५.१%) क्षेत्र असून एकूण उत्पादन २३,८१७ मेट्रीक टन इतके असल्याने आढळून येते. यावरून असे स्पष्ट होते महाराष्ट्रात फळपीकांच्या बाबतीत आंब्याचे सर्वाधिक क्षेत्र असून त्या खालोखाल काजूचा क्रम आहे आणि फळपीकांच्या उत्पादनाच्या बाबतीत द्राक्षे, संत्री, आंबा यांचा क्रमांक असल्याचे संशोधनात आढळून आले आहे.

तक्ता क्र. २.७

रोजगार हमी योजने अंतर्गत फलोत्पादन लागवड केलेल्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या^{१८}

(आकडे लाखात)

| विभाग | १९९०-९१ ते १९९९-०० | | २०००-०१ | | २००७-०८ | | एकूण | |
|----------------------|-----------------------|-----------|----------|-----------|----------|-----------|----------|-------|
| | लाभार्थी | टक्केवारी | लाभार्थी | टक्केवारी | लाभार्थी | टक्केवारी | लाभार्थी | टक्के |
| कोकण | २.९० | २३.९ | ०.३२ | ४२.६ | ०.१५ | १३.५ | ३.३७ | २४.० |
| नाशिक | १.०५ | ३.७ | ०.०६ | ८.० | ०.११ | ९.९ | १.२२ | ८.७ |
| पुणे | २.४५ | २०.१ | ०.०९ | १२.० | ०.१४ | १२.६ | २.६८ | १९.१ |
| कोल्हापूर | १.३८ | ११.३ | ०.०५ | ६.७ | ०.०८ | ७.२ | १.५१ | १०.७ |
| औरंगाबाद | १.०७ | ८.८ | ०.०६ | ८.० | ०.२२ | १९.८ | १.३५ | १०.१ |
| लातूर | १.१७ | ९.६ | ०.०६ | ८.० | ०.१९ | १७.१ | १.४२ | १०.६ |
| अमरावती | १.१५ | ९.५ | ०.०६ | ८.० | ०.१६ | १४.५ | १.३७ | १०.१ |
| नागपूर | ०.९७ | ८.१ | ०.०५ | ६.७ | ०.०६ | ५.४ | १.०८ | ६.७ |
| एकूण (महाराष्ट्र) | १२.१४ | १०० | ०.७५ | १०० | १.११ | १०० | १४.०० | १०० |

स्त्रोत : फलोत्पादन विभाग महाराष्ट्र शासन, पुणे

तक्ता क्र. २.७ फलोत्पादन लागवड केलेल्या लाभार्थी शेतकऱ्यांचे अध्ययन करण्यात आले आहे. १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात महाराष्ट्राच्या विविध विभागातील एकूण १२.१४ लाख शेतकऱ्यांपैकी कोकण विभागात २.९० लाख (२३.९%) शेतकरी आहेत. २०००-०१ मध्ये हेच प्रमाण ४२% पेक्षा अधिक असल्याचे स्पष्ट झाले असून २००७-०८ मध्ये ०.१५ लाख (१३.५%) लाभार्थी कोकणातील आहेत.

१९९०-९१ ते २००७-०८ या काळाचा विचार करता एकूण १४.००% लाख लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी कोकण विभागातील ३.३७ लाख (२४.००%) इतके लाभार्थी आहेत. त्या खालोखाल पुणे विभागातील २.६८ लाख (१९.१%) लाभार्थी असल्याचे आढळून येते. याच काळात सर्वात कमी लाभार्थी नागपूर विभागातील १.०८ लाख (६.७%) लाभार्थी शेतकरी असल्याचे संशोधनातून आढळून येते.

तक्ता क्र. २.८

रोजगार हमी योजनेतर्गत फलोत्पादनावर करण्यात आलेल्या विविध विभागातील एकूण खर्च^{१९}

(आकडे लाख रुपयात)

| अ. नं. | विभाग | १९९०-९१ ते ९९-०० | | २०००-०१ | | २००७-०८ | | एकूण | |
|--------|------------|------------------|-------|---------|-------|---------|-------|----------|-------|
| | | खर्च | टक्के | खर्च | टक्के | खर्च | टक्के | खर्च | टक्के |
| १ | कोकण | ४२५.८९ | १५.६ | २०७०.३० | ३१.४ | १२९३.७४ | १४.५ | ३७८९.९३ | २०.८ |
| २ | नाशिक | १८६.३८ | ६.८ | ४२४.१८ | ६.४ | १३४५.०८ | १५.१ | १९५५.६४ | १०.७ |
| ३ | पुणे | ४६३.५३ | १६.९ | १०४२.३४ | १५.८ | १५९६.८५ | १७.९ | ३१०२.७२ | १७.० |
| ४ | कोल्हापूर | १६७.२८ | ६.१ | ५०३.७७ | ७.६ | ७६३.७२ | ८.६ | १४३४.७७ | ७.८ |
| ५ | औरंगाबाद | ४४१.५१ | १६.१ | ४४३.२९ | ६.७ | १२२९.५७ | १३.८ | २११४.३७ | ११.६ |
| ६ | लातूर | ५१९.०५ | १९.० | ७२२.८१ | १०.९ | १५३७.८४ | १७.३ | २७७९.७० | १५.२ |
| ७ | अमरावती | ३२०.८९ | ११.७ | ६९५.४२ | १०.८ | ७३०.७१ | ८.२ | १७४७.०२ | ९.४ |
| ८ | नागपूर | २०६.०६ | ७.८ | ६८८.११ | १०.४ | ४७७.६७ | ४.६ | १३७१.८४ | ७.५ |
| | महाराष्ट्र | २७३०.५९ | १०० | ६५९०.२२ | १०० | ८५७५.१८ | १०० | १८१९५.९९ | १०० |

स्त्रोत : फलोत्पादन विभाग महाराष्ट्र शासन, पुणे

तक्ता क्र. २.८ मध्ये फलोत्पादनावर करण्यात आलेला विविध विभागातील एकूण खर्च दर्शविण्यात आला आहे. १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात एकूण २,७३०.५९ लाख रु. खर्चापैकी कोकण विभागासाठी ४२५.८९ लाख (१५.६%) खर्च करण्यात आला. २०००-०१ मध्ये एकूण ६,५९०.२२ खर्चापैकी कोकण विभागासाठी सर्वाधिक २,०७०.३० लाख (३१.४%) खर्च करण्यात आला. २००७-०८ या वर्षी १,२९३.७४ लाख (१४.५%) खर्च करण्यात आला आहे.

१९९०-९१ ते २००७-०८ या काळात रो. ह. यो. अंतर्गत फलोत्पादनावर एकूण १८,१९५.९९ लाख रुपये खर्चापैकी कोकण विभागासाठी याच काळात एकूण ३,७८९.९३ लाख रु. (२०.८%) खर्च करण्यात आला. हा खर्च कोकण विभागासाठी सर्वाधिक खर्च असल्याचे संशोधनातून आढळून आले.

तक्ता क्र. २.९

महाराष्ट्रातील विविध विभागामध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत झालेली फळझाड लागवड^{३०}

(क्षेत्र हेक्टरमध्ये)

| विभाग | रोजगार हमी योजना पूर्वीचे क्षेत्र | रो.ह.यो. पूर्वीची टक्केवारी | १९९०-९१ ते १९९९-०० टक्केवारी | २०००-०१ टक्केवारी | २००६-०७ टक्केवारी | २००९ टक्केवारी | एकूण रो.ह.यो. क्षेत्र टक्केवारी | एकूण क्षेत्र टक्केवारी | | | | |
|-----------------|-----------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------|-------------------|----------------|---------------------------------|------------------------|---------|------|---------|------|
| कोकण | ५६६०० | २३.४ | २१७६२२ | १७.९ | २६११६ | ४६.९ | ८४५३ | १२.१ | ३१००९४ | २४.७ | ३६६६९४ | २४.५ |
| नाशिक | ६१६०० | २५.४ | ८३३८८ | ६.७ | ३७५८ | ६.९ | ७४१२ | १०.६ | १२२९३६ | ९.८ | १८४५३४ | १२.३ |
| पुणे | २४००० | ९.९ | ४५५०५६ | ३७.४ | ५८५० | १०.५ | ९००१ | १२.८ | २०१२७६ | १६.० | २२५२७६ | १५.० |
| कोल्हापूर | १०६०० | ४.४ | ८००४२ | ६.६ | २६०३ | ४.६ | ५१३५ | ७.३ | ९८९७२ | ७.८ | १०९५७२ | ७.३ |
| औरंगाबाद | ११७०० | ४.८ | ८८३५५ | ७.३ | ३९३७ | ७.० | ११६६० | १६.७ | १३०९२९ | १०.४ | १४२६२९ | ९.५ |
| लातूर | १५३०० | ६.३ | १०२१४४ | ८.४ | ४७२६ | ८.४ | १५४९८ | २२.५ | १४९९९२ | ११.९ | १६५२९२ | ११.४ |
| अमरावती | ३७५०० | १५.६ | १०८२०१ | ८.९ | ५२२१ | ९.३ | ८७४५ | १२.५ | १४१०४२ | ११.२ | १७८५४२ | ११.९ |
| नागपूर | २४७०० | १०.२ | ८००९२ | ६.८ | ३५०९ | ६.४ | ३८७६ | ५.५ | ९९५८१ | ८.२ | १२४२८१ | ८.१ |
| एकूण महाराष्ट्र | २४२००० | १००% | १२१४९०० | १००% | ५५७२० | १००% | ६९७८१ | १००% | १२५४०२२ | १००% | १४९६८२२ | १००% |

स्त्रोत : फलोत्पादन विभाग महाराष्ट्र शासन, पुणे

तक्ता क्र. २.९ मध्ये महाराष्ट्रातील विविध विभागात रोजगार हमी योजनेतर्गत झालेली फळझाड लागवड दर्शवली आहे. फळझाडांच्या बाबतीत ही योजना राबवण्यापूर्वी महाराष्ट्रात एकूण २,४२,००० हे क्षेत्र फळ लागवडीखाली असून कोकणात (२३.४%) क्षेत्रफळ लागवडीखाली असल्याचे दिसून आले. या योजनेनंतर १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात एकूण १२,१४,९०० हे क्षेत्रापैकी सर्वात जास्त क्षेत्र पुणे विभागाचे ४,५५,०५६ (३७.४%) असून दुसरा क्रमांक कोकण विभागाचा असून या विभागात २,१७,६२२ (१७.९%) फळझाड लागवड झालेली असल्याचे संशोधनात आढळते. २०००-०१ मध्ये फळझाड लागवडीच्या बाबतीत कोकण विभागाने २६११६ (४६.९%) सर्वाधिक प्रगती केली. याच २००६-०७ मध्ये लातूर विभागाचे सर्वाधिक क्षेत्र असून कोकणातील फळझाड लागवड (१२.१%) पर्यंत कमी झाली.

एकूण रोजगार हमी योजनेतर्गत १२,५४०,२२ हे इतके क्षेत्र असून त्यापैकी कोकणात ३,१०,०९४ (२४.७%) नाशिक १,२२,९३६ (९.८%) पुणे २,०१,२७६ (१६.०%), कोल्हापूर ९८,९७२ (७.८%), औरंगाबाद १,३०,९२९ (१०.४%), लातूर १,४९,९९२ (११.९%), अमरावती १,४१,०४२ (११.२%) तर नागपूर विभागात ९९५८१ (८.२%) इतकी फळझाड लागवड झालेली आढळून येते. यावरून, महाराष्ट्रातील विविध विभागांचा विचार करता रोजगार हमी योजनेपूर्वी असलेल्या क्षेत्रात वाढ झाली असून कोकणात ३,६६,६९४ (२४.५%) सर्वाधिक क्षेत्र आहे ही नक्कीच उल्लेखनीय बाब आहे.

तक्ता क्र. २.१०

महाराष्ट्रातील विविध विभागामध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत करण्यात आलेल्या फळझाड लागवडीचा हिस्सा ^{३९}

(टक्केवारी)

| अ. नं. | विभाग | रो.ह.यो. पूर्वीचे क्षेत्र | १९९०-९१ ते १९९९-०० | २०००-०१ | २००६-०७ | एकूण रो.ह.यो. क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
|--------|-------|---------------------------|--------------------|---------|---------|-----------------------|--------------|
| १ | कोकण | २३.३९ | २३.७९ | ४६.८७ | १२.११ | २४.७१ | २४.५० |
| २ | नाशिक | २५.४५ | ९.११ | ६.७४ | १०.६२ | ९.८० | १२.३३ |

| | | | | | | | |
|------------|-----------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| ३ | पुणे | ९.९२ | १६.९५ | १०.५० | १२.९० | १६.०४ | १५.०५ |
| ४ | कोल्हापूर | ४.३८ | ८.७५ | ४.६७ | ७.३६ | ७.८९ | ७.३२ |
| ५ | औसंगाबाद | ४.८३ | ९.६६ | ७.०७ | १६.७१ | १०.४३ | ९.५३ |
| ६ | लातूर | ६.३२ | ११.१६ | ८.४८ | २२.२१ | ११.९५ | ११.०४ |
| ७ | अमरावती | १५.५० | ११.८३ | ९.३७ | १२.५३ | ११.२४ | ११.९३ |
| ८ | नागपूर | १०.२१ | ८.७५ | ६.३० | ५.५५ | ७.९४ | ८.३० |
| महाराष्ट्र | | १००.०० | १००.०० | १००.०० | १००.०० | १००.०० | १००.०० |

स्त्रोत : फलोत्पादन विभाग महाराष्ट्र शासन, पुणे

तक्ता क्र. २.१० मध्ये महाराष्ट्रातील विविध विभागात रोजगार हमी योजनेअंतर्गत करण्यात आलेल्या फळझाड लागवडीचा हिस्सा दर्शविला आहे. १९९०-९१ ते २००६-०७ पर्यंत कोकण विभागात रो.ह.यो. अंतर्गत क्षेत्राचा महाराष्ट्राच्या एकूण लागवडीच्या २४.७१% हिस्सा इतका आहे. तो महाराष्ट्रात सर्वात जास्त आहे. महाराष्ट्रात झालेल्या एकूण फळझाड लागवडीच्या क्षेत्राचा विचार करता म्हणजे १२% हिस्सा नाशिक, लातूर, अमरावती या विभागात सरासरी सारख्याच प्रमाणात लागवड झालेली आहे. महाराष्ट्र कोकण विभागात एकूण टक्केवारीच्या २४.५०% क्षेत्रावर फळझाड लागवड करण्यात आली आहे. ती महाराष्ट्रात सर्वात जास्त आहे.

तक्ता क्र. २.११

महाराष्ट्रातील फळांची निर्यात^{३२} (१९९१ ते २००१)

| अ.नं. | फळे | १९९०-९१ | | १९९५-९६ | | २०००-०१ | |
|-------|----------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| | | संख्या (मे टन.) | किंमत (लाख रु.) | संख्या (मे टन.) | किंमत (लाख रु.) | संख्या (मे टन.) | किंमत (लाख रु.) |
| १ | द्राक्षे | १११४७.१५ | १८६२.२८ | १८८१३.४ | ४०८०.९८ | २७७७६.९५ | ७५३८.८९ |
| २ | केळी | ६५५.६९ | २६.९३ | ९८८.०८ | ८९.५६ | १४१४.६७ | १३०.५६ |
| ३ | आंबे | २३१०४.५८ | ३५४६ | २५४१४.३६ | ४५०२.७३ | २९९६०.५७ | ५३६३.२४ |
| ४ | संत्री | ८२६६.४१ | ४०५.०९ | १२०६.६२ | ६९६.७७ | १०२३४.५८ | ६१२२.४७ |
| एकूण | | ४३१७३.८३ | ५८४०.३ | ४६४२२.४६ | ९३७०.०४ | ६७३८६.६७ | १९१५५.१६ |

Source : National Horticultural Data Book – 2001

Export Statistics for agro & food products India, 1999-2000
APEDA – New Delhi – 110016.

Directorate General of Commercial intelligence & statistics
(DECIS), Kolakatta.

वरील तक्ता क्र. २.११ मध्ये असे आढळून येते की, सन १९९०-९१ मध्ये महाराष्ट्रातून १११४७.१५ हजार मेट्रीक टन द्राक्षांची निर्यात करून रु. १८.६२ कोटी रुपये परकिय चलन प्राप्त केले. या काळातील महाराष्ट्रातील ही सर्वात जास्त अशी कामगिरी फळे निर्यातीची होती. यावेळी संत्राची निर्यात ८२६६.४१ मेट्रीक टन असून रु. ४.०५ कोटी परकिय चलन महाराष्ट्राला प्राप्त झाले.

सन १९९५-९६ मध्ये महाराष्ट्राच्या अर्थव्यवस्थेमध्ये फळे निर्यातीची भूमिका अतिशय महत्त्वाची होती. त्यावेळी महाराष्ट्रातून आंबे आणि द्राक्षेची २५४१४.३६ मेट्रीक टन निर्यात करून रु. ४६.०२ कोटी रु. आंब्यापासून आणि १८८१३.४० मेट्रीक टन द्राक्षे निर्यात करून रु. ४०.८० कोटी रु. महाराष्ट्राला प्राप्त झाले.

आंबे, द्राक्षे यानंतर संत्र्यांच्या तिसरा क्रमांक लागतो. १२०६.६२ मेट्रीक टन संत्री निर्यात करून रु. ६.९६ कोटी उत्पन्न मिळाले. महाराष्ट्रातून २०००-०१ मध्ये आंबे आणि द्राक्षे यांची निर्यात जवळपास सारखीच होती. सन १९९१ -१९९५ ची फळ पिकांची निर्यातीची तुलना करता या कालावधीत आंब्याची निर्यात २७९६०.७६ मे. टन असून रु. ७५.३८ कोटी परकिय चलन प्राप्त झाले. केळांची १४१४.६७ मेट्रीक टन निर्यातीपासून रु. १.३० कोटी, संत्र्याची १०२३४.५८ मेट्रीक टनाच्या निर्यातीपासून रु. १६.२२ कोटी परकिय चलन महाराष्ट्राला प्राप्त झाले.

२.६ सारांश :

महाराष्ट्रातील फळझाड लागवड कार्यक्रम व रोजगार हमी योजनेचे उद्देश कार्ये आणि अंमलबजावणी यांची सविस्तर चर्चा करण्यात आली आहे. महाराष्ट्रात ५०% जास्त अवर्षण प्रवण प्रदेश असणाऱ्या भागातील शेतीच्या विकासासाठी ही योजना फायदेशीर आहे. महाराष्ट्रातील फलोत्पादन करणाऱ्या आठ विभागाचा संपूर्ण आढावा

घेतला असता महाराष्ट्रात कोकण विभाग फलोत्पादनाच्या सर्वच क्षेत्रात आघाडीवर आहे. यामध्ये १९९०-९१ पासून आजपर्यंत फळझाड लागवडीची निश्चित केलेली उद्दिष्ट्ये, योजनेवर करण्यात आलेला खर्च, लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या, लागवडीची टक्केवारी इत्यादी क्षेत्रात महाराष्ट्रात या योजनेमध्ये कोकण विभागाची सर्व क्षेत्रातील आकडेवारी ही इतर सात विभागापेक्षा निश्चित सरस असल्याचे आढळते. आजही महाराष्ट्रात जिथे अन्न धान्य किंवा इतर पिके घेणे शक्य होत नाही, अशा हजारो हेक्टर पडीक जमीन महाराष्ट्रात उपलब्ध आहे. अशा जमिनीवर फळबाग लागवड केल्यास त्या-त्या भागाचा विकास होईल. शेतकऱ्यांना स्वतःच्याच शेतात कायमस्वरूपी रोजगार प्राप्त होईल. म्हणून ज्या उद्देशाने हा कार्यक्रम हाती घेण्यात आला होता, या कार्यक्रमाच्या दीड दशकाच्या वाटचालीवर नजर टाकल्यास हे उद्देश निश्चित साध्य झाल्याचे दिसून येते.

संदर्भ :

१. मुल्लाणी, एम. मु./लोहकरे रोहिदास ऑक्टोबर (२००९-१०) 'महाराष्ट्रातील शेती' डायमंड प्रकाशन पुणे पान नं. ९.१०
२. प्रा. काटे/भोसले, (सप्टेंबर २००५) "भारतीय अर्थव्यवस्था" फडके प्रकाशन संदर्भ पुस्तक पान नं. १६६, १६७
३. राष्ट्रीय फलोत्पादन - अभियान संदर्भ कार्यालयाचे पत्र जा.क्र./मराफ औवम/सप्रव्य/उत्पादकता/४१४/०८ पुणे दिनांक ३१/१/२००८
मोरे जगदिश (फलोत्पादन मंत्री मा. श्री. विनयजी कोरे यांची मुलाखत ऑक्टोबर २००८) "फलोत्पादनातून समृद्धीकडे" लोकराज्य मासिक पान नं. ३,४
४. मोरे, जगदिश (मे. २००९) "फलोत्पादनात महाराष्ट्र अव्वल" शेती प्रगती मासिक प्रकाशन संपादक रावसाहेब पाटील पान नं. ३३.
५. पाटील, जयवंतराव (जाने.-फेब्रु. २००२) "महाराष्ट्रात फळे, भाजीपाला व फुले यांच्या निर्यातीस चालना देण्याची आवश्यकता" शेतकरी मासिक महाराष्ट्र राज्य पुणे पान नं. २८.
६. मुल्लाणी, एम. यु./लोहकरे, रोहिदास (ऑक्टोबर २००९-१०) "महाराष्ट्रातील शेती" डायमंड प्रकाशन पुणे पान नं. ९, १० (महाराष्ट्र शासन सामाजिक आर्थिक सर्वे २०१०)

७. उपरोक्त पान नं. २३

८. कृषी, पशुसंवर्धन, दुग्ध व्यवसाय विकास व मत्स्य व्यवसाय विभाग
दिनांक ७ ऑगस्ट २००७ महाराष्ट्र शासन निर्णय क्रमांक रो. ह. यो. ४००७/प्र. क्र.
११२/९ अ मंत्रालय मुंबई ३२.

गागुर्डे, किशोर (२००८) "हमी रोजगाराची साथ केंद्राची" लोकराज्य मासिक
प्रकाशन माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय महाराष्ट्र शासन पान नं. २३, २४, २५.

९. उपरोक्त पान नं. २४

Government of Maharashtra (1994) Economics survey of
Maharashtra Page No. 34)

१०. महाराष्ट्र शासनाच्या माहिती व जनसंपर्क महासंचालयाने (१९९३)
"रोजगार हमी योजनेतून फलोत्पादन विकासाची महत्वाकांक्षी योजना" संदर्भ ग्रंथ पान
नं. १,२

११. उपरोक्त पान नं. १, २

१२. उपरोक्त पान नं. २, ३

१३. उपरोक्त पान नं. ३, ४

१४. उपरोक्त पान नं. ३०

१५. आवळे मनोज (२००८) "रोजगार हमी योजनेशी निगडीत फळबाग
लागवड कार्यक्रम" चौधरी लॉ पब्लिशर्स"

१६. उपरोक्त पान नं. ३१

१७. उपरोक्त पान नं. ३२

१८. उपरोक्त पान नं. ३१

१९. उपरोक्त पान नं. १४४

२०. उपरोक्त पान नं. १४२

२१. उपरोक्त पान नं. १४३

२२. उपरोक्त पान नं. १४३

२३. उपरोक्त पान नं. २९

२४. आवळे, मनोज संकलन व संपादन (२००८) "रोजगार हमी योजनेशी निगडीत फळबाग लागवड कार्यक्रम" चौधरी लॉ पब्लिशर्स जळगाव-पुणे पान नं. २९
२५. गागुर्डे, किशोर (२००८) "हमी रोजगाराची साथ केंद्राची" लोकराज्य मासिक प्रकाशन माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय महाराष्ट्र शासन पान नं. २३, २४
२६. उपरोक्त पान नं. ३७
२७. हजारे आर. डी. (२००७) "A study of fruit farming in Maharashtra plateau" पीएच.डी. प्रबंध पान नं. २८७
२८. Shrott sangeeta & Jayanti Kajale (July-Sept 2008) Government intervention in Horticulture Development. The case of Maharashtra - Indian Journal of Agricultural economy vol. 63 No. 3 Page No. 326
२९. उपरोक्त पान नं. ३२७
३०. उपरोक्त पान नं. ३२५
३१. उपरोक्त पान नं. ३२५
३२. हजारे आर. व्ही. (२००७) "A study of fruit farming in Maharashtra plateau" पी.एच.डी. प्रबंध पान नं. २८० ते २८६

प्रकरण तिसरे

सिंधुदुर्ग जिल्हा भौगोलिक व आर्थिक स्थिती

३.१ प्रस्तावना

सह्याद्रीच्या पश्चिमेला उत्तरेकडील दमणगंगा नदीपासून ते दक्षिणेकडील तेरेखोल नदीपर्यंत जो चिचोळा सपाट भूप्रदेश आहे त्याला कोकणची किनारपट्टी असे म्हणतात. कोकण किनारपट्टीची लांबी ७२० की.मी. आणि रुंदी ४० ते ८० की.मी. आहे. कोकणच्या पश्चिमेला अरबी समुद्र आणि पूर्वेला सह्याद्री पर्वत उत्तर-दक्षिण असा आहे. कोकणचे उत्तर कोकण व दक्षिण कोकण असे दोन भाग आहेत. उत्तर कोकणात वसई, डहाणू, घोलवड असा सपाट भूप्रदेश येतो. या भागात बृहद मुंबई, मुंबई उपनगर, ठाणे व रायगड हे जिल्हे येतात. दक्षिण कोकणात खडकाळ डोंगराळ जमीन असून या भागात रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग हे जिल्हे येतात. संपूर्ण कोकणात भात शेती, नारळ, काजू बागा, मिठागरे आणि मासेमारी असे उद्योगधंदे आहेत.

कोकणची किनारपट्टी अरुंद असल्याने तेथील नद्यांची लांबी फारच कमी आहे. वेगाने वाहणाऱ्या उथळ नद्या कोकणात आहेत. दमणगंगा, वैतरणा, तानसा, भातसाई, उल्लास, पाताळगंगा, अंबा, सावित्री, वाशिष्ठी, काजवी, तेरेखोल इ. नद्या समुद्राला मिळतात. या नद्यांच्या मुखाजवळ खाड्या निर्माण झाल्या आहेत.^१

३.२ इतिहास आणि संस्कृती

इतिहास

कोकण विभागातील दक्षिण भागाचा औद्योगिक व कृषी क्षेत्रामध्ये जलद विकास साध्य व्हावा आणि विकास योजनांची अंमलबजावणी कार्यक्षमतेने व्हावी या दृष्टीकोनातून स्थानिक लोकांच्या मागणीचा विचार करून १ मे १९८१ रोजी रत्नागिरी जिल्ह्याचे विभाजन करण्यात येऊन, सिंधुदुर्ग जिल्हा अस्तित्वात आला. कणकवली, सावंतवाडी, दोडामार्ग, वेंगुर्ला, कुडाळ, मालवण आणि देवगड हे रत्नागिरी जिल्ह्यातील तालुके व कोल्हापूराती जिल्ह्यातील वैभववाडी हा तालुका एकत्र आणून सध्याच्या सिंधुदुर्ग

जिल्ह्याची निर्मिती झाली आहे. त्यामुळे रत्नागिरी जिल्ह्याचा इतिहास व संस्कृती आणि सिंधुदुर्ग जिल्ह्याचा इतिहास संस्कृतीत फारसा काही फरक नाही.

सिंधुदुर्ग जिल्हा गोव्याला लागून आहे. सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या दक्षिणेकडील गोव्यात व उत्तरेकडील रत्नागिरी जिल्ह्यात आणि रायगड जिल्ह्यातही डॉ. श. आ. साळी यांनी अश्मयुगीन वसाहती शोधून काढलेल्या आहेत. त्यामुळे सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातही अशा वसाहतींचे अवशेष मिळण्याची दाट शक्यता आहे. ताम्रपाषाणयुगीन अवशेष या भागात प्राप्त झालेले नाही. पण मसुरे गावाजवळ डॉ. शं. आ. साळी यांना नवाश्मयुगीन ताम्रपाषाणयुगीन वसाहतीचे काही अवशेष प्राप्त झाले आहेत. अर्थात हे अवशेष पुरेसे नसल्याने सध्याच्या स्थितीत फारसे काही सांगता येत नाही.

अशोक मौर्याच्या काळात संपूर्ण कोकण त्याच्या ताब्यात होते. कारण दक्षिणेकडे कर्नाटकातही त्यांची सत्ता होती. या काळातील स्थानिक सत्ताधिकांची फारशी माहिती उपलब्ध नाही. रत्नागिरी जिल्ह्यातील दाभोळचा प्राचीन उल्लेख दाभिल्य (दाभिल्य - जंगलात राहणारे) असा येतो. हे जंगल गावापर्यंत पसरलेले आहे.

सात वाहन व नंतर येणारे कोकण मौर्य यांचा कोकणावर रत्नागिरी जिल्ह्यासह ताबा होता. चालुक्य घराण्यातील तैल दुसरा याने राष्ट्रकुट सत्ता संपविली मात्र चालुक्य सत्ता तैला नंतर टिकली नाही. शिलाहार या काळात प्रबळ झाले होते. यांच्या अनेक घराण्यांपैकी एक घराणे दक्षिण कोकणात म्हणजे रत्नागिरी जिल्ह्यासह गोवा पर्यंतच्या प्रदेशात राज्य करीत होते. यावेळेस देशावर यादव प्रबळ झालेले होते. यादवांचे साम्राज्य वाढत गेले व १३ व्या शतकाच्या उत्तरार्धात त्यांनी शिलाहारांचे संपूर्ण उच्चाटन केले. दक्षिण कोकणात काही काळ करंबांचे राज्य होते. (इ.स. १३४०) खिलजींनी यादव सत्ता संपवली व महाराष्ट्रात कोकणासह मुस्लीम सत्ता सुरु झाली. कोकणात बराच काळ छोटे-छोटे राज्यकर्ते होते. मात्र १५ व्या शतकात ते ही नेस्तनाबूत झाले. शिर्के, संगमेश्वरांच्या राज्यांनी बराच वेळ तग धरला होता. मात्र १५ व्या शतकात शेवटी अदिलशहाने हा भाग जिंकला. पुढील शतकात पोर्तुगीज प्रबळ झाले. १६ व्या शतकाच्या शेवटी डचही राजकारणात शिरले. वेंगुर्ला येथे त्यांची वखार होती. १८ व्या शतकात मराठ्यांनी या भागात आपले वर्चस्व स्थापले. १८१८ मध्ये ते संपृष्टात आले व इंग्रज राज्य करू लागले.^३

संस्कृती

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील संस्कृती कोकणापेक्षा काही वेगळी नाही. वेगवेगळ्या जातीधर्माचे व जातीचे लोक परंपरेप्रमाणे आपली संस्कृती पाळतात. यात हिंदूंची सत्ता जास्त असून इथले मुसमानही मुळचे हिंदूच होते. महाराष्ट्रात कोकण हा भाग पूर्वीपासून आर्थिकदृष्ट्या गरीब व दुर्बल होता. मुंबईहून अनेक वस्तू लोक कोकणात घेऊन जात होते. शेती खऱ्या अर्थाने उदरनिर्वाहापुरतीच होती. शेतीला जल सिंचनाच्या सोयी नसल्याने तिचे स्वरूपही हंगामी होते. उद्योगासाठी अनुकूल वातावरण नसल्याने मुंबई सारख्या मोठ्या शहरात लोक रोजगारासाठी स्थलांतरीत झाले आहेत. एवढे असूनही परंपरा मात्र टिकलेल्या आहेत.

मासेमारी हा आणखी एक महत्त्वाचा पारंपारीक व्यवसाय. त्याबरोबर आंबे, काजू, सुपारी, नारळ आणि काही प्रमाणात मसाल्याचे पदार्थ यांची लागवड होऊ लागल्याने आर्थिक परिस्थितीत सुधारणा होत आहे. त्यात रेल्वे मार्ग झाल्याने विकासास चालना मिळत आहे.^३

सिंधुदुर्ग जिल्हा

३.३ भौगोलिक स्थान

जुन्या रत्नागिरी जिल्ह्याचे विभाजन होऊन १ मे १९८१ रोजी सिंधुदुर्ग जिल्हा अस्तित्वात आला. जिल्ह्याचा अक्षवृत्तीय विस्तार १५ अंश २७ उत्तर ते २५ अंश ४० उत्तर असून रेखावृत्तीय विस्तार ७३ अंश १९ पूर्व ते ७४ अंश १३ पूर्व असा आहे. जिल्ह्यास १२१ कि.मी. चा सागरी किनारा लाभला असून पश्चिमेस अरबी समुद्र, पुर्वेस सह्याद्रीच्या पर्वत रांगा, उत्तरेस रत्नागिरी जिल्हा तर दक्षिणेस गोवा राज्य आहे. काही भागात कर्नाटकची हद्द आहे.^४

३.३.१ क्षेत्रफळ व प्रशासकीय विभाग :

२.१ या जिल्ह्याचे क्षेत्रफळ ५२०७ चौ.कि.मी. असून ते महाराष्ट्र राज्याच्या एकूण क्षेत्रफळाच्या फक्त १.७% आहे.

३.३.२ प्रशासकीय विभाग :

दैनंदिन कारभाराच्या सोयीसाठी जिल्ह्यामध्ये सावंतवाडी व कणकवली असे दोन प्रशासकीय उपविभाग पाडले आहेत. सावंतवाडी उपविभागामध्ये सावंतवाडी, वेंगुर्ला, कुडाळ व दोडामार्ग या चार तालुक्याचा तर कणकवली उपविभागामध्ये कणकवली, मालवण, देवगड व वैभववाडी या चार तालुक्यांचा समावेश आहे. १ नोव्हेंबर १९९४ पासून जिल्हा प्रशासन सिंधुनगरी या जिल्हा केंद्राच्या ठिकाणी कार्यरत आहे.^५

३.३.३ तालुके-खेडी

जिल्ह्यात आठ तालुके असून ७४० खेडी, १ गणना शहर १ नगर पंचायत व ३ नगरपरिषदा आहेत. सर्व खेडी वस्ती असलेली असून एकही खेडे ओसाड नाही. कुडाळ १२४ खेडी, मालवण १३५ खेडी, देवगड ९७ खेडी, वैभववाडी ५९ खेडी, कणकवली १०४ खेडी, सावंतवाडी ८५ खेडी, वेंगुर्ला ८३ खेडी आणि दोडामार्ग ५६ खेडी या प्रमाणे तालुका निहाय खेड्यांची संख्या आहे. जिल्ह्यात सन २००९-१० मध्ये एकूण ४३० ग्रामपंचायती असून त्या सर्व ग्रामपंचायतीमधील एकूण सदस्यांची संख्या ३,५९५ इतकी आहे.^६

३.३.४ नगर परिषदा :

जिल्ह्यामध्ये सावंतवाडी, वेंगुर्ला व मालवण या तीन नगरपरिषदा आहेत तर कणकवली ही नगरपंचायत आहे. तसेच २००१ च्या जनगणनेप्रमाणे कुडाळ हे शहर म्हणून गणले जाते.^७

३.३.५ स्वाभाविक रचना :

स्वाभाविक रचनेच्या दृष्टीने हा जिल्हा तीन विभागात विभागता येईल.

- १) सह्याद्रीचा डोंगर भाग
- २) डोंगर उतारावरील पट्टा ज्याला स्थानिक भाषेत वलाटी (वरचा पट्टा) असे म्हणतात.
- ३) समुद्र सपाटीला लागून असलेला सागरी पट्टा ज्याला स्थानिक भाषेत खलाटी म्हणतात.^८

३.४ मातीचा प्रकार :

जिल्ह्यातील माती लालसर रंगाची असून यामध्ये प्रामुख्याने बेसॉल्ट, ग्रेनाईट व ग्रेईस आढळून येतात. विशिष्ट हवामान व भूरचना यामुळे बेसॉल्ट दगडाचे रूपांतर जांभ्या

दगडात होते व त्यापासून लॅटरायटिक जमीन तयार होते. समुद्र कीनाऱ्यावरील भू-प्रदेशात क्षारयुक्त व पोयटाची जमीन आढळून येते.^९

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात जमीनीचे मुख्यता पुढील तीन प्रकारात वर्गीकरण :

३.४.१ जांभ्या दगडापासून तयार झालेली लॅटरायटीक जमिन :

अत्याधिक पाऊस, उतार आणि हवेतील आद्रता यामुळे बेसॉल्ट दगडातील शिलिका वाहून जाते. तसेच कॅल्शियम, मॅग्नेशियम वाहून जातात. अशा प्रकारे जांभ्या दगडापासून तयार झालेल्या जमीनीत लोह आणि अॅल्युमिनियम ऑक्साइडचे प्रमाण जास्त असते. त्यामुळे जमीन आम्ल धर्मिय होते. या जमीनीत पालांशाचे प्रमाण जास्त असते.^{१०}

३.४.२ समुद्र कीनाऱ्यावरील खारट व पोयटायुक्त जमीन :

या प्रकाराची जमीन समुद्र कीनाऱ्यालगतच्या भागात आढळून येते. पोयटायुक्त जमीन डोंगराच्या उतारावरील भागात झालेल्या धुपीबरोबर असलेल्या माती व गाळ या पासून तयार झालेली आहे. खारट जमीनीत अति पर्जन्य मान्य असून देखील क्षारांचे प्रमाण जास्त आहे. या क्षारयुक्त जमीनीत मिठाचे (सोडीयम क्लोराईट) सेंद्रीय कर्बाचे प्रमाण ०.५ ते २.३ टक्के असून ते हवामान उंची आणि झाडे झुडपावर अवलंबून असते. उपलब्ध स्फुरदाचे प्रमाण ४.३६ ते १४.४ भाग प्रति दशलक्ष इतके असते. पीके नत्राच्या वापराला प्रतिसाद देतात. जमीनीत पालांशाचे प्रमाण जास्त असते.^{११}

३.४.३ हलकी व उथळ जमीन :

ही जमीन बेसॉल्ट पासून तयार झालेली असून ती या डोंगराळ भागात आढळून येते. अधिक उतारावर या जमीनीची खोली काही से.मी. पासून १ मीटर पर्यंत असू शकते. ही जमीन पोयटायुक्त व वालुकामय असून कॅल्शियम व कार्बोरेट विरहीत असते. सेंद्रीय कार्बाचे प्रमाण ०.९४ ते ३.५२% असून उपलब्ध स्फुरदाचे प्रमाण कमी असते. या जमीनीमध्ये उपलब्ध पालाशाचे प्रमाण १८२ ते ५३८ किलो प्रति हेक्टर असते.^{१२}

३.५ नद्या :

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यामध्ये वाघोटन, देवगड, कर्ली, गडनदी, तिलारी व तेरेखोल या सहा मोठ्या नद्या आहेत. या सर्व नद्या सह्याद्रीच्या डोंगर कपाऱ्यामध्ये उगम पाहून अरबी

समुद्राला मिळतात. त्याची लांबी ५० ते ६० की. मी. आहे. पावसाळ्यामध्ये या नद्या रुद्र रुप धारण करून वाहतात. विशेषतः उन्हाळ्यात या कोरड्या असतात. तेथील सर्व नद्यांच्या पात्रांची रुंदी कमी आहे. जिल्ह्यातील नद्यांचा जलवाहतुकीसाठी मर्यादित उपयोग होतो. समुद्रकीनाच्या जवळ कालावल, आचरा, मोचेमाड, देवगड या खाड्या असून त्यांचा उपयोग जहाजे नांगरण्यासाठी होतो. या खाड्यातून लहान होड्यांची वाहतुक होते व मोठ्या प्रमाणावर मासेमारी केली जाते.^{१३}

३.६ हवामान व पर्जन्यमान :

३.६.१ हवामान :

आर्द्रता हे कोकणातील सर्व जिल्ह्यांचे वैशिष्ट्ये आहे. त्यामुळे सिंधुदुर्ग जिल्ह्याचे हवामान दमट आहे. हवेतील आर्द्रता ही सर्वसाधारणपणे ५५ सेल्सीअंश पेक्षा कमी असते. त्यामध्ये जानेवारी, फेब्रुवारी महिन्यात ती कमी होते. साधारणतः ३८ डिग्री सेल्सीअस एवढे कमाल तापमान असेल तर १९ हे किमान असून तापमान फेब्रुवारी पासून तापमान वाढत जाते.^{१४}

३.६.२ पर्जन्यमान

सरासरी १०१ दिवसांचा पावसाळा त्यात जुलै महिना हा अती पावसाचा असतो. २६०० ते ३८०० मी.मी. इतकी पावसाची सरासरी असते. जिल्ह्यातील सावंतवाडी तालुक्यातील आंबोली या घाट माथ्यावर पावसाचे प्रमाण जास्त आहे.^{१५}

३.७ लोकसंख्या : * स्त्री-पुरुष प्रमाण :

२००१ च्या जनगणनेनुसार जिल्ह्यात दर हजार पुरुषामागे १०७९ स्त्रिया आहेत. जिल्ह्यातील नागरी व ग्रामीण भागामध्ये दर हजार पुरुषामागे स्त्रियांचे प्रमाण अनुक्रमे ९७८ व १०९० आहे.^{१६}

३.७.१ लोकसंख्येची घनता :

राज्यामध्ये सर्वात कमी आकारमान असलेल्या या जिल्ह्यांच्या लोकसंख्येची घनता २००१ च्या गणनेनुसार दर चौ.कि.मी. ला १६७ आहे. महाराष्ट्र राज्यासाठी हेच प्रमाण ३१५ आहे. जिल्ह्यातील निरनिराळ्या तालुक्यांच्या लोकसंख्येच्या घनतेचा विचार

करता वेंगुर्ला तालुक्याची घनता ३०५ ही सर्वात जास्त आहे. तर दोडामार्ग तालुक्याची घनता सर्वात कमी म्हणजे १०१ आहे.^{१७}

३.७.२ ग्रामीण व नागरी लोकसंख्या :

२००१ च्या जनगणनेनुसार जिल्ह्याच्या एकूण लोकसंख्येपैकी ९०.५३ टक्के लोकसंख्या ग्रामीण भागात तर ९.४७ टक्के लोक नागरी भागात राहतात. देवगड, वैभववाडी, दोडामार्ग हे तालुके पूर्णतः ग्रामीण असून कुडाळ, कणकवली, मालवण, सावंतवाडी, वेंगुर्ला या तालुक्याची अनुक्रमे ९१.०८ टक्के, ८९.४१ टक्के, ८३.९९ टक्के, ८४.६३ टक्के व ८५.८९ टक्के लोकसंख्या ग्रामीण आहे.

३.७.३ २००१ जनगणना व दशवार्षिक वाढ :

२००१ च्या जनगणनेनुसार जिल्ह्याची लोकसंख्या ८६८८२५ इतकी आहे. त्यापैकी पुरुष ४१७८९० व स्त्रिया ४५०९३५ आहेत. १९९१ च्या तुलनेत २००१ च्या लोकसंख्येमध्ये ४.४१ टक्यांनी वाढ झाली. २००१ च्या जनगणनेनुसार कुडाळ ६.५९%, देवगड ४.८०%, कणकवली ६.१३%, सावंतवाडी ३.३४% वेंगुर्ला १.८१% व दोडामार्ग ३.४६% वाढ झाली होती. मात्र १९९१ च्या तुलनेत २००१ मध्ये लोकसंख्येमध्ये मालवण व वैभववाडी तालुक्यात अनुक्रमे १.१५% व ०.६२% घट झालेली आहे.^{१९}

३.७.४ अनुसुचित जाती व जमाती :

२००१ च्या जनगणनेनुसार जिल्ह्यातील अनुसुचित जाती व जमातीचे प्रमाण अनुक्रमे ४.४% व ०.६% असून संपूर्ण राज्यातील हेच प्रमाण अनुक्रमे १०.२० व ८.८५% आहे.^{१८}

तक्ता क्र. ३.१

लोकसंख्या (संख्या हजारात)^{१९}

| | अनुसुचित जाती | | | अनुसुचित जमाती | | |
|-----------|---------------|---------|----------|----------------|---------|--------|
| | पुरुष | स्त्री | एकूण | पुरुष | स्त्री | एकूण |
| ग्रामिण | १९ | २१ | ४० | २ | २ | ०४ |
| टक्केवारी | (४७.५%) | (५२.५%) | (१००.०%) | (५०.०%) | (५०.०%) | (१००%) |
| शहरी | २ | १ | ०३ | - | - | - |
| टक्केवारी | (६६.७) | (३३.३) | (१००.०) | - | - | - |

स्रोत : भारताची जनगणना २००१

तक्ता क्र. ३.१ मध्ये लोकसंख्येची विभागणी करण्यात आली आहे. २००१ च्या जनगणनेनुसार ग्रामीण भागातील अनुसुचित जातीतील एकूण ४० हजार व्यक्ती पैकी १९ (४७.५%) पुरुष असून स्त्रिया २१ (५२.५%) आहेत. अनुसुचित जातीत ग्रामीण भागात स्त्रियांचे प्रमाण अधिक असून शहरी भागात तुलनेने कमी असून स्त्रिया ०१ (३३.३%) तर पुरुष ०२ (६६.७%) असल्याचे स्पष्ट होते.

अनुसुचित जमातीचा विचार करता एकूण ४ हजार व्यक्ती पैकी पुरुष ०२ (५०.०%) तर स्त्रिया ०२ (५०.०%) ग्रामीण भागात आहेत.

तक्ता क्र. ३.२

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील धर्मनिहाय लोकसंख्येचे वर्गीकरण^{१०}

| तपशील/धर्म | ग्रामीण | ग्रामीण टक्के | नागरी/शहरी | नागरी टक्के | एकूण | टक्के |
|-------------------------|---------------|---------------|--------------|-------------|---------------|------------|
| बौद्ध | २२६९० | २.८ | १६३० | २.० | २४३२० | २.८ |
| ख्रिश्चन | १२२४८ | १.५ | ३७५३ | ४.५ | १६००१ | १.८ |
| हिंदू | ७३२१३४ | ९३.० | ७०३६४ | ८५.४ | ८०२४९८ | ९१.७ |
| जैन | ११२३ | ०.१ | ३१४ | ०.३ | १२३७ | ०.४ |
| मुस्लिम | १७५२८ | २.२ | ६१४० | ७.४ | २३६६८ | ०.७ |
| शीख | २२४ | ०.१ | ६० | ०.२ | २८४ | ०.२ |
| धर्म न दर्शविलेले | ५१६ | ०.२ | ४४ | ०.१ | ५६० | ०.३ |
| इतर | ४३ | ०.१ | १४ | ०.१ | ५७ | ०.१ |
| सर्व धर्म (एकूण) | ७८६५०६ | १०० | ८२३१९ | १०० | ८६८८२५ | १०० |

स्रोत : भारताची जनगणना २००१

तक्ता क्र. ३.२ मध्ये, २००१ च्या जनगणनेनुसार जिल्ह्यातील एकूण ८६८८२५ लोकसंख्येपैकी ग्रामीण लोकसंख्या ७८६५०६ आहे. जिल्ह्याच्या लोकसंख्येत ग्रामीण लोकांचे प्रमाण अधिक आहे. एकूण ग्रामीण लोकसंख्येत बौद्ध धर्मियांचे प्रमाण २.८%, ख्रिश्चन १.५%, हिंदूचे प्रमाण ९३.०% सर्वाधिक असून जैन ०.१%, मुस्लिम २.२%, शीख ०.१%, धर्म न दर्शविलेले ०.२% इतर धर्मिय ०.१% आहेत.

शहरी लोकसंख्येच्या बाबतीत सर्वाधिक प्रमाण हिंदूंचे असून ते ८५.४% इतके आहेत. त्या खालोखाल मुस्लीम ७.४%, ख्रिश्चन ४.५% आणि बौद्ध धर्मिय २.०% आहे. एकूण लोकसंख्येमध्ये हिंदू धर्मिय अधिक असल्याचे संशोधन कर्त्याला आढळून आले.

तक्ता क्र. ३.३

लोकसंख्येचे वयोगटानुसार वर्गीकरण^{२१}

| वयोगट | ग्रामीण लोकसंख्या | | शहरी लोकसंख्या | | एकूण लोकसंख्या | |
|-------------------------|-------------------|------------|----------------|------------|----------------|------------|
| | लोकसंख्या | टक्केवारी | लोकसंख्या | टक्केवारी | लोकसंख्या | टक्केवारी |
| ०-६ | ९६३६२ | १२.२ | ९१५६ | ११.१ | १०५५१८ | १२.१ |
| ०७-१४ | १२१२५८ | १५.४ | ११९०१ | १४.४ | १३३१५९ | १५.३ |
| १५-५९ | ४३१७१६ | ५८.१ | ५३५२६ | ६४.६ | ५१५५४२ | ५८.९ |
| ६० वर्षावरील | १०६३२० | १३.५ | ७६७४ | ९.३ | ११३९९४ | १३.१ |
| वय अनिर्देशित | ५५० | ०.८ | ६२ | ०.४ | ६१२ | ०.६ |
| सर्व धर्म (एकूण) | ७८६५०६ | १०० | ८२३१९ | १०० | ८६८८२५ | १०० |

स्त्रोत : भारताची जनगणना २००१

तक्ता क्र. ३.३ मध्ये लोकसंख्येचे वयोगटानुसार वर्गीकरण दर्शवण्यात आले आहे. ० ते ६ आणि ७ ते १४ या वयोगटात ग्रामीण भागात एकूण २७.६% व्यक्ती असून याच वयोगटात शहरी भागात २५.५% व्यक्ती आहेत. एकूण लोकसंख्येत या वयोगटातील २७.४% व्यक्ती आहेत.

१५ ते ५९ या वयोगटात कर्ती लोकसंख्या ग्रामीण भागात ५८.१% व्यक्ती असून शहरी भागात ६४.६% व्यक्ती आहेत. एकूण लोकसंख्येत या वयोगटातील कर्ती लोकसंख्येचे प्रमाण ७२.०% इतके आहे. ६० व त्यापेक्षा अधिक वय असणारे आणि वय अनिर्देशित असणारे या गटातील लोकसंख्या ग्रामीण भागात १४.३% तर शहरी भागात ९.७% असून एकूण लोकसंख्येत त्यांचे प्रमाण १३.७% इतके आहे.

तक्ता क्र. ३.४

शहरांचे वर्गीकरण आणि लोकसंख्या^{२२}

| शहराचे नांव | शहराचे वर्गीकरण | पुरुष | टक्के | स्त्रिया | टक्के | एकूण | टक्के | लो. वाढीचा दश वार्षिक वृद्धीदर |
|-------------|-----------------|-------|-------|----------|-------|-------|-------|--------------------------------|
| मालवण | क वर्ग न. पा. | ९४९६ | ५०.८ | ९१८४ | ४९.२ | १८६८० | १०० | ३.८६ |
| वेंगुर्ला | क वर्ग न. पा. | ६१६१ | ४८.३ | ६११० | ५१.७ | १२४७१ | १०० | १.७५ |
| सावंतवाडी | क वर्ग न. पा. | ११५४० | ५०.३ | ११३६१ | ४९.७ | २२९०१ | १०० | ७.४९ |
| कणकवली | नगरपंचायत | ७५०३ | ५१.३ | ७१२२ | ४८.७ | १४६२५ | १०० | २३.९७ |
| कुडाळ | गणना शहर | ६९१८ | ५०.७ | ६७२४ | ४९.३ | १३६४२ | १०० | १७.५८ |
| सर्व नागरी | | ४१६१८ | ५०.५ | ४०७०१ | ४९.५ | ८२३१९ | १०० | ९.८४ |

स्रोत : भारताची जनगणना २००१

तक्ता क्र. ३.४ मध्ये शहरांचे वर्गीकरण आणि लोकसंख्येचे प्रमाण दर्शविले आहे. जिल्ह्यातील मालवण, वेंगुर्ला, सावंतवाडी या तीन 'क' वर्ग महानरपालिका असून कणकवली नगरपंचायत व कुडाळ गणना शहर आहे. सर्व शहरे नागरी लोकवस्तीची म्हणून ओळखली जातात.

मालवण, वेंगुर्ला, सावंतवाडी, कणकवली, कुडाळ या शहरांची एकूण लोकसंख्या ८२३१९ इतकी असून त्यापैकी पुरुष ४१६१८ (५०.५%) तर स्त्रिया ४०७०१ (४९.५%) आहेत. स्त्री-पुरुष प्रमाणाचा विचार करता पुरुषांचे प्रमाण तुलनेने अधिक आहे. मात्र त्यात फारशी तफावत नाही.

लोकसंख्या वाढीचा दशवार्षिक वृद्धीदर हा सावंतवाडी ७.४९, कणकवली २३.९७% आणि कुडाळ १७.५८% या शहरांचा लोकसंख्या वाढीचा वृद्धीदर अधिक आहे. त्या तुलनेत मालवण, वेंगुर्ला या शहरांचा मात्र कमी असल्याचे स्पष्ट चित्र संशोधनातून दिसते.

३.८ आरोग्य सेवा :

जिल्ह्यामध्ये राज्य सरकार, जिल्हा परिषदा, नगर परिषदा यांच्या मार्फत आरोग्य सेवा पुरविल्या जात आहेत. राज्य सरकार, जिल्हा परिषदा व नगरपरिषदा यांच्यामार्फत

२००८ अखेर ११ रुग्णालये, १२ दवाखाने, ८ प्रसुतिगृहे आणि ३८ प्राथमिक आरोग्य केंद्रे चालविली जात आहेत. यामध्ये १२५ डॉक्टर, ४६९ परिचारिका या प्रमाणे अधिकारी, कर्मचारी काम करतात. जिल्ह्यामध्ये नगरपरिषदेच्या अखत्यारीत भाग वगळता उर्वरित भागामध्ये जिल्हा परिषद मार्फत आरोग्य सेवा पुरविल्या जातात. याशिवाय जिल्ह्यात खाजगी डॉक्टर व संस्थेमध्ये आरोग्य सेवा पुरविल्या जातात.^{२३}

३.९ जिल्हा नियोजन :

उपलब्ध उत्पन्न, नैसर्गिक साधन संपत्ती, शासनाकडून प्राप्त होणारी अनुदाने यांच्या आधारावर शासन संस्कृत विविध योजना प्रत्येक जिल्ह्यात राबविल्या जातात. प्रत्येक जिल्ह्यातील गरजांचे स्वरूप वेगवेगळे असू शकते. त्यानुसार नियोजन केले जाते. यात महसूल विभागाशिवाय इतर विभाग स्थानिक संस्था यांचा सहभाग असतो. कल्याणकारी योजनांची आखणी आर्थिक उपलब्धी जनसंख्या व त्यांच्या गरजा यावर आधारित असते.^{२४}

तक्ता क्र. ३.५

रोजगार हमी योजना (संदर्भ वर्ष - २००८-०९)^{२५}

| अ. नं. | तपशिल | कामाचा प्रकार | | | | एकूण |
|--------|-------------------------------------|---------------|----------------|---------|------------------|--------|
| | | सिंचन | सार्वजनिक कामे | वनी करण | इतर (खार बंधारे) | |
| १ | नियोजीत कामे | ५३४९ | ८८ | २२ | ४ | ५४६३ |
| | टक्के | ९७.९ | १.६ | ०.४ | ०.१ | १०० |
| २ | मंजूर केलेली कामे | २९१० | ४१ | ४ | २ | २९५७ |
| | टक्के | ९८.४ | १.३ | ०.२ | ०.१ | १०० |
| ३ | सुरु केलेली कामे | १४०२ | २१ | - | २ | १४२५ |
| | टक्के | ९८.३ | १.४ | - | ०.३ | १०० |
| ४ | पूर्ण केलेली | १२६५ | २ | - | २ | १२६९ |
| | टक्के | ९९.६ | ०.२ | - | ०.२ | १०० |
| ५ | मध्येच बंद केलेली क | १३७ | १९ | - | - | १५६ |
| | टक्के | ८७.८ | १२.२ | - | ६.८५ | १०० |
| ६ | कामासाठी केलेली तरतूद रु. लाखात | २२८.७२ | ६९.०२ | - | २२ | ३०४.५९ |
| | टक्के | ७५.० | २२.८ | - | २.० | १०० |
| ७ | कामावर झालेला एकूण (रु. लाखात) | २३.१० | ६८.४६ | - | ६.८५ | २९४.४१ |
| | टक्के | ७५.७ | २३.२ | - | १.१ | १०० |
| ८ | रोजगार निर्मिती (मनुष्य दिवस लाखात) | ३.१८ | ०.९८ | - | ०.१० | ४.२६ |
| | टक्के | ७४.६ | २३.१ | - | २.३ | १०० |

स्रोत : जिल्हाधिकारी कार्यालय रोजगार हमी योजना सिंधुदुर्ग.

तक्ता क्र. ३.५ मध्ये रोजगार हमी योजनेनंतर्गत कामांच्या प्रकाराचे वर्गीकरण करण्यात आले आहे. सिंचन, सार्वजनिक कामे, वनीकरण आणि इतर (खार, बंधारे) या प्रकारात ५४६३ नियोजित कामे असून मंजूर केलेली कामे २९५७ आहेत. त्यापैकी १४२५ कामे सुरु असून १२६९ कामे पूर्ण केलेली आहेत. या सर्व कामांसाठी एकूण ३०४.५९ लाख रुपये तरतुद केली असून सिंचनासाठी ७५% सर्वाधिक आहे. तरतुदीपेक्षा सिंचनावर खर्च कमी झालेला आहे. सिंचन, सार्वजनिक कामे, वनीकरण इतर क्षेत्रातून एकूण ४.२६ लाख मनुष्य दिवस रोजगार प्राप्त झाला आहे. सिंचन क्षेत्रातून सर्वाधिक रोजगार आढळतो.

३.१० रोजगार व स्वयंरोजगार केंद्र :

२००९-१० मध्ये खाजगी व सार्वजनिक क्षेत्रामध्ये रोजगार पुरविलेल्या उमेदवारांची संख्या १७६ होती. या उमेदवारांपैकी खाजगी व सार्वजनिक क्षेत्रात रोजगार पुरविलेल्या उमेदवारांची टक्केवारी अनुक्रमे १८.७५% होती. व्यावसायिक तांत्रिक आणि संबंधित क्षेत्रातील रोजगार पुरविलेल्या कामगारांची टक्केवारी अशी होती. लेखनिक व तत्संबंधिचे २४.१२%, शेतकरी, मत्स्यव्यवसाय शिकारी वा संबंधित कामगार २.१९%. आर्थिक गणनेत बिगर शेती व निवडक उद्योगाची माहिती गोळा करण्यात आली. जिल्ह्यामध्ये बिगर शेती उद्योगाची संख्या ३२,५७२ होती. त्यापैकी ८१.४ टक्के आस्थापना ग्रामीण भागात व केवळ १८.६% आस्थापना नागरी भागात होत्या.

सहकारी क्षेत्रात असलेल्या एकूण ३०८ आस्थापनांपैकी २३५ (७६.३०%) आस्थापना ग्रामीण भागात तर ७३ (२३.७०%) आस्थापना शहरी भागात होत्या. कृषी सहकारी क्षेत्रात असणाऱ्या चारही आस्थापना ग्रामीण भागात आहेत.

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात सर्व गट मिळून एकत्र या गटातील स्वकार्यरत उद्योगांची एकूण संख्या २६,९२६ आहे. या पैकी ग्रामीण भागात २३,१३६ (८५.९२) व नागरी भागात ३,७९० (१४.०८%) उद्योग आहेत. स्वकार्यरत उद्योगातील व्यक्तीची संख्या ३९,४७७ असून त्यापैकी ग्रामीण भागात ३४,३५० (८७.०९%) व नागरी भागात ५,१२७ (१२.९९%) व्यक्ती आहेत.^{२६}

३.११ खनिजे व उद्योग :

जिल्ह्यातील दक्षिण पट्टीतील सागरी किनाऱ्यावर तसेच कुडाळ, कणकवली येथे खनिज साठ्यांचे क्षेत्र भरपूर आहे. रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग प्रादेशिक नियोजन मंडळाने तयार केलेल्या या अहवालामध्ये जिल्ह्यातील उपलब्ध खनिज व त्याची उपलब्धता यांची माहिती दिलेली आहे. जिल्ह्यामध्ये रेड्डी, तालुका वेंगुर्ला येथे लोह खनिजाचा साठा मुबलक प्रमाणात आहे. राज्यात कोणत्याही भागापेक्षा या परिसरातील जमीनीमध्ये लोखंडाचा अंश ६०% पेक्षा जास्त आहे. खनिजाची निर्यात रुमानिया, जर्मनी, जपान, मलेशिया, चीन या देशात केली जाते. रेड्डी येथे अंदाजे ४८ दशलक्ष टन उपयोगी लोखंड मिळू शकेल असा अंदाज वरील अहवालात संशोधकांनी वर्तविला आहे.

तसेच कणकवली तालुक्यामध्ये क्रोमाई धातूचे प्रमाण मुबलक आहे. समुद्र किनाऱ्यावर आढळणारे वाळू व सिलिकाचे साठे या जिल्ह्यात मोठ्या प्रमाणावर आढळतात. जिल्ह्यामध्ये इमारतींना उपयोगी जांभ्या दगडाच्या खाणी भरपूर आहेत. सावंतवाडी तालुक्यातील आंबोली येथे बॉक्साईटचा साठा मुबलक आहे. यातील अॅल्युमिनीअमचे प्रमाण ४० ते ६० टक्यापर्यंत आहे. जिल्ह्यामध्ये मॅंगनिज खनिजाचे साठे फोंडा, सासोली, नेतर्डे, डिंगणे या ठिकाणी आढळतात. कणकवली तालुक्यामध्ये नाटळ ते भिरवंडे परिसरातील व कुडाळ तालुक्यातील कडावल जवळ अर्भ्रकाचे साठे आहेत. त्याचप्रमाणे मालवण तालुक्यामध्ये कुंभारभाट जवळ चिकन मातीचे साठे आढळतात. विविध घटकांचा पिवळा गेरु किनाऱ्यावरील डोंगरात बऱ्याच ठिकाणी आढळतो.^{२७}

३.११.१ उद्योग व औद्योगिक वसाहती :

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यामध्ये कुडाळ, कणकवली व माजगांव (ता. सावंतवाडी) येथे औद्योगिक वसाहती आहेत. कुडाळ येथे महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाने १२७ हेक्टर जमीन लघु व मोठ्या उद्योग समुहासाठी संपादित केलेली आहे. कुडाळ येथील औद्योगिक वसाहतीमधील अनेक कारखाने बंद आहेत. गोपुरी आश्रम तालुका कणकवली येथे या ग्रामीण उद्योग केंद्रात साबण, कागद व जनावरांची कातडी कमावणे, कोकम सरबत, काजू बोंडू सरबत, आंबापोळी, फणसपोळी, पैसे कमविण्याचे कुटीर उद्योग चालू आहेत.

जिल्ह्यामध्ये वेंगुर्ला, मालवण, कुडाळ तालुक्यात काजूचे कारखाने आहेत. येथील काजूला राष्ट्रीय आणि आंतरराष्ट्रीय बाजारपेठेत चांगली मागणी आहे. लाकडाची खेळणी, नारळ झाडापासून केरसुण्या काथ्याच्या वस्तू व इतर आकर्षक वस्तू तयार करण्याचे कुटीर उद्योग आहेत.^{३८}

१.१२ वीज :

२००९-१० अखेर जिल्ह्यातील ७४० गावापैकी ७३३ गावांचे (७ गावे धरणग्रस्त आहेत) व पाचही विभागाचे विद्युतीकरण झालेले आहे. २००९-१० मध्ये जिल्ह्यातील एकूण विजेचा वापर १,६३,६१८ हजार किलोवॉट तास होता. त्यापैकी घरगुती वापरासाठी ११.२० टक्के व्यापारी कामासाठी १०.२७ टक्के, उद्योगाकरिता १५.४९ टक्के, शेतीसाठी ६.७४ टक्के, सार्वजनिक दिवाबत्ती व इतर यासाठी ८.७१ या प्रमाणे वीज वापर झाला.^{३९}

३.१३ वाहतुक व दळणवळण :

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात रस्ते व समुद्र मार्ग दळणवळणासाठी उपयोगात आणले जातात. पूर्वी विजयदुर्ग, देवगड, मालवण व वेंगुर्ला या बंदरामध्ये बोट वाहतुक चालू होती. तसेच मुंबई, पणजी मार्गानेही वाहतुक चालू होती. जिल्ह्यातील रस्त्यांची देखभाल महाराष्ट्र शासन व जिल्हा परिषद, यांच्या बांधकाम खात्यामार्फत केली जाते. २००९-१० या वर्षी जिल्ह्यात ४७६५ कि.मी. लांबीचे रस्ते आहेत. त्यापैकी महाराष्ट्र शासनाच्या सार्वजनिक बांधकाम खात्याच्या अखत्यारित ११२६ कि.मी. व जिल्हा परिषदेच्या अखत्यारित ३५१६ कि.मी. व नगरपालिकेच्या अखत्यारित १२३ कि.मी. लांबीचे रस्ते होते. जिल्ह्यातील रस्त्याचे पृष्ठ भागांनुसार वर्गीकरण केले असता सिमेंट काँक्रीट ११ कि.मी. डांबरी ३३९९ कि.मी. खडीचे परंतु पक्के रस्ते ९४१ कि.मी. व इतर ४१४ कि.मी. आहेत.^{३०}

३.१४ कृषी गणना :

जमिनीचा वापर २००९-१० नुसार जिल्ह्यात एकूण २,६६,६८२ जमीन धारक असून त्यांनी धारण केलेले एकूण क्षेत्र ३,७३,५११ हेक्टर आहे. दोन हेक्टर पर्यंत क्षेत्र धारण केलेले ६५.२९५ धारक असून त्यांनी १४.८९ टक्के जमीन धारण केलेली आहे. २

ते ५ हेक्टर पर्यंत जमीन धारण केलेले १३.६६ टक्के धारक असून त्यांनी धारण केलेली जमीन ३०.४० टक्के आहे. ५ ते १० हेक्टर जमीन धारण केलेले धारक ४.५४ टक्के असून त्यांनी धारण केलेली जमीन २२.३९% आहे. १० हेक्टर व त्याहून अधिक जमीन धारण केलेले १.६% धारक असून त्यांनी धारण केलेली जमीन मात्र १८.२२% आहे.^{३१}

३.१४.१ रासायनिक खतांचा वापर :

जिल्ह्यामध्ये सन २००९-१० मध्ये १८,९३४ ने टन रासायनिक खतांचे वाटप झालेले आहे.^{३२}

३.१५ वनसंपत्ती :

सह्याद्रीचे जंगल प्रसिद्ध असून समुद्र सपाटी कडे ते कमी कमी होत जाते. अंजनी, हिरडा, अंबेरी, आंबा, शेंद्री, आसन, जांभूळ, भोमा, दिंडा, पांढरी, कुटकुटा, भंदिरा, डिकमली, त्रिफळा, कापशी, कुंभय, वाकेरी, कार्बी, घरकी, निरगुड, ऐन, जांभ, कोशिंब, साग, किजळ, शिरस अशा अनेक जाती या जिल्ह्यात आढळतात. २०० पेक्षा जास्त वृक्ष झुडपे व गवताच्या जाती या जिल्ह्यात नोंदवल्या गेल्या आहेत.^{३३}

३.१५.१ वने :

२००७-०८ च्या उपलब्ध आकडेवारीनुसार जिल्ह्यातील जंगलव्याप्त क्षेत्र ३८६४३ हेक्टर आहे. हे जिल्ह्याच्या एकूण भौगोलिक क्षेत्राच्या ७.६७% आहे. कणकवली ११.६३%, कुडाळ १२.२%, सावंतवाडी १२.४०%, वेंगुर्ला ३.०१%, मालवण ०.४८%, देवगड ३.८५%, वैभववाडी ६.५९% आणि दोडामार्ग ४.३४% याप्रमाणे तालुकानिहाय जंगलव्याप्त क्षेत्र आहे. या जिल्ह्यातील जंगल वन खात्याच्या अखत्यारित आहे.^{३४}

३.१५.२ वनोत्पादन :

वनोत्पादनापासून मिळालेल्या मुल्यांमध्ये २००९-१० मध्ये वाढ झाली असून वनोत्पादनाचे मुल्य २,६६८ हजार रुपये झाले आहे. वनखात्यामार्फत आता खूप काम होत नसल्याने इमारती लाकूड व जळावू लाकूड यांचे उत्पन्न दर्शविण्यात आलेले आहे.^{३५}

३.१५.३ वन्यप्राणी :

जंगली डुक्कर, वाघ, बिबट्या, ससा, हरिण, काळवीट, भेकर, माकडे इ. विविध प्राणी आणि पक्षी या भागात आढळतात.^{३६}

३.१६ मत्स्य व्यवसाय :

मुशी, सोन मुशी, रांजा, वाघळी, बिजली, मरळ, भिंग, कर्ली, काटी, मांदेली, टोकी, तारली, बोंबील, शिंगाडा, वाम, घोडा, बोथ, रावस, कोंबडा, बांगडा, धोग, काळुंदर, सुरमाई, पापलेट, खर्बी, आहिर, गुई हे मासे या भागात मिळतात. जिल्ह्यांची सागरी किनारपट्टी सरासरी लांबी अंदाजे १२१ कि.मी. आहे. जिल्ह्यातील वेंगुर्ला, मालवण, देवगड या तालुक्यांना सागरी किनारा असून २००८-०९ मध्ये १८,६७५ मे. टन मत्स्योत्पादन झाली असून त्यापासून ६२०४.०५ लाख उत्पन्न मिळाले. गोड्या पाण्यातून ११.२५ टन मासे पकडण्यात आले. त्यापासून उत्पादकांना २.०३ लाख रुपये उत्पन्न मिळाले.^{३७}

३.१७ पशु संवर्धन, पशु वैद्यकीय सेवा व दुग्धोत्पादन :

२००८ च्या जणगणनेनुसार जिल्ह्यातील पशुची संख्या ३,६२,१४६ आहे. त्यापैकी गाई व बैल १,९९,४७४ म्हणजेच पशुच्या ५५.०८% टक्के आहे. म्हैशी व रेड्यांची संख्या २३.८१ टक्के आहे. म्हैशी व रेड्याची संख्या २३.८१ टक्के तर मोठ्या व शेळ्यांची संख्या १९.०२ टक्के आहे.

जिल्ह्यामध्ये सावंतवाडी व मालवण नगर परिषदेच्या हद्दीमध्ये अधिकृत कत्तलखाने आहेत. २००९-१० मध्ये अधिकृत कत्तलखान्यात कापलेल्या जनावरांची संख्या ५१४० होती. या कालावधीत सावंतवाडी व मालवण तालुक्यामध्ये कापलेल्या जनावरांची संख्या अनुक्रमे ४५८३ व ५५७ आहे. जिल्ह्यामध्ये १ पशुवैद्यकीय चिकित्सालय ९० पशु वैद्यकीय दवाखाने, ४ पशु वैद्यकीय प्रथमोपचार केंद्रे आहेत. शासकीय दुग्ध योजना कणकवली येथे २० हजार लिटर क्षमतेची दुग्धगाळा एकात्मिक विकास प्रकल्पांतर्गत असून कोलगाव तालुका सावंतवाडी येथे ५ हजार लिटर शितकरण केंद्र आहे.^{३८}

३.१८ पत सुविधा :

आर्थिकदृष्ट्या जिल्हा तसा मागासलेला असून ही परिस्थिती कोकणात सर्वत्र आजही आहे. जमीनीचा कस व भरपूर पाऊस यामुळे पावसाळ्यानंतरची जमीनीची अवस्था वाईट होते. याचा शेतीवर झालेला परिणाम व उद्योगाची वानवा व यामुळे मोठ्या

प्रमाणावर लोकांचे स्थलांतर ही सर्व परिस्थिती लक्षात घेतल्यावर स्थानिक परिस्थितीचा अंदाज येतो.

या परिस्थितीत निर्माण होतात ते सावकार व शोषित जनता. कोकणातील शेती व्यवसायाच्या दृष्टीने फार नव्हे पण इतरांपेक्षा हे श्रीमंत. यांनी सावकारी केली. ब्रिटीशांनी कायदे केले पण त्याचा सामान्य जनतेला फायदा झाला नाही. रिझर्व्ह बँकेने १९५१-५४ या दरम्यान केलेल्या सर्वेक्षणातून असे लक्षात आले की ७०% लोक सावकारी करतात व ९३% लोक कर्जाखाली भरडलेले आहेत. याच काळात सहकारी संस्था, बँका अशा संस्था उदयास आल्या. त्याचा परिणाम सर्वत्र चांगलाच झालेला आहे.^{३९}

३.१९ सहकार :

ग्रामीण भागात आवश्यक तेवढा पतपुरवठा करण्यासाठी पीकाशी संबंधित हंगामीही व्यवस्था सहकारी क्षेत्रामार्फत करण्यात आली. सहकार व पतपुरवठा यात अनेक बाबींचा समावेश होता त्याच्या संबंधित घडामोडी, कुटीरोद्योग व ग्रामीण स्तरावरील इतर प्रश्न सोडविण्यावर जास्त भर देण्यात आलेला आहे.^{४०}

तक्ता क्र. ३.६

| सहकारी संस्था | संख्या | सहकारी संस्था | संख्या |
|-----------------------------|--------|-----------------------|--------|
| जिल्हा मध्यवर्ती बँक | ०१ | सार्वजनिक पतपेढी | ९३ |
| प्राथमिक शेती सहकारी संस्था | २२४ | प्राथमिक बाजार संस्था | ३४ |
| बिन शेती सहकारी संस्था | १३६ | सामाजिक सेवा संस्था | १६० |
| नागरी बँक | ०२ | पगारी नोकरांची पतपेढी | ४१ |
| सार्वजनिक पतपेढी | ९३ | बाजार संस्था | ०१ |
| | | उत्पादकांची संस्था | २६६ |

स्त्रोत : जिल्हा उपनिबंधक, सहकारी संस्था सिंधुदुर्ग

३.२० वार्षिक योजना :

३.२०.१ जिल्हा योजनेअंतर्गत विविध विकास कार्यक्रम :

जिल्ह्यात २००९-१० साली राबविण्यात आलेल्या विविध विकास योजनांलर ४८२१.६१ लाख करण्यात आलेला आहे. झालेल्या खर्चापैकी अधिक खर्च रु. १,३८२.४८ लक्ष ग्रामीण विकासावर झालेला आहे. याशिवाय प्रामुख्याने वाहतुक व

दळण-वळण सामाजिक व सामुहिक सेवा (१०८३.४८ लक्ष) कृषि व संलग्न सेवा (३२०.३१) लक्ष खर्च झालेला आहे. याशिवाय इतर विकास

यामध्ये मागास वर्गीयांच्या कल्याणांच्या योजना व ग्रामीण विकासाच्या योजना यांना प्राधान्य देण्यात आलेले आहे.^{४१}

३.२०.२ २० कलमी कार्यक्रम :

२००९-१० मध्ये २० कलमी कार्यक्रमांतर्गत स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजनेअंतर्गत २४१८ कुटुंबांना लाभ देण्यात आलेला आहे. २४ खेड्यांना पिण्याचे स्वच्छ पाणी, अनुसूचित जातीच्या ५७५ कुटुंबांना विविध योजनांतर्गत लाभ, इंदिरा आवास योजनेअंतर्गत ११९४ लाभार्थींना घर बांधणीसाठी अर्थसहाय्य तसेच जिल्ह्यात नवीन ६ रास्त धान्य दराची दुकाने उघडण्यात आलेली आहेत. ५६६ पंप संचाचे विद्युतीकरण करण्यात आलेले असून ३९८ बायोगॅस सयंत्रे बसविण्यात आलेली आहेत.^{४२}

३.२०.३ एकात्मिक बाल विकास योजना :

या जिल्ह्यात एकात्मिक बाल विकास योजनेची अंमलबजावणी सुरु आहे. सन २००९-१० अखेर संपूर्ण जिल्ह्यात ११२३ अंगणवाड्या कार्यरत आहेत. या योजनेअंतर्गत अंगणवाड्या, माता संगोपन, सकस आहार, लहान मुलांना रोगप्रतिबंधक लस टोचणे, आरोग्य सेवा-सुविधा, शालाबाह्य शिक्षण व पूर्व शालेय शिक्षण देणे इ. योजना राबविल्या जातात.^{४३}

३.२०.४ एकात्मिक ग्रामीण विकास योजना :

केंद्र पुरस्कृत एकात्मिक ग्रामिण विकास कार्यक्रमांतर्गत विविध स्वरूपाच्या योजना जिल्हा ग्रामीण विकास योजनेतर्गत (D.R.D.A.) राबविल्या जात आहेत. २००९-१० या वर्षात स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजनेअंतर्गत २४१८ नविन दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांनी लाभ, संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजनेतर्गत ११.४ लाख मनुष्य दिन रोजगारनिर्मिती, इंदिरा आवास योजनेतर्गत ८९० लाभार्थ्यांना अर्थसहाय्य, पडीक जमीन विकास कार्यक्रमांतर्गत जिल्ह्यात ३ प्रकल्प मंजूर करण्यात आलेले आहेत. तसेच केंद्र शासन पुरस्कृत कोकम लागवडीचा विशेष प्रकल्प जिल्ह्यात राबविण्यात येत आहे.^{४४}

३.२१ कोकण रेल्वे :

कोकण रेल्वे या महत्वाकांक्षी रेल्वे प्रकल्पाला जुलै १९९१ पासून प्रारंभ झाला. रोहा ते मंगलोर असा एकूण ७६३ कि.मी. लांबीचा असून त्यापैकी सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात १०३ कि.मी. मार्ग आहे. या रेल्वे प्रकल्पासाठी सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील ८०० हेक्टर जमीन संपादित करण्यात आलेली होती. या रेल्वे मार्गावर सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात २० मोठे पूल व २१० लहान पूल आहेत. तसेच वैभववाडी व खारेपाटण येथे दोन बोगदे आहेत. कोकण रेल्वे अंतर्गत सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात एकूण सात रेल्वे स्थानक बांधण्यात आली आहेत. या मार्गावरून दिनांक २०।१।१९९७ पासून रेल्वे धावू लागली आहे. रेल्वेचे काम पूर्ण झाल्याने काजू, आंबा यासारखा माल मुंबईला नेणे सोईचे झालेले आहे. तसेच सिंधुदुर्ग ते मुंबई या मार्गावरील प्रवासही कमी वेळेचा झाला आहे.^{४५}

३.२२ सामाजिक स्थिती :

कोकणातही इतर जिल्ह्यांप्रमाणेच सामाजिक स्थिती आहे. हिंदू धर्मातील ब्राह्मणामध्ये ८ प्रकार असून कोकणस्थांचा अनेक शतकापासून वरचष्मा आहे. शेणवी व कायस्थ या ब्राह्मणांची स्थिती तशी बऱ्यापैकी आहे. इतर जातीत वाणी, लिंगायत, गुजर, भाटीया, मारवाडी, कुणबी, मराठा, भंडारी, शिंदे, माळी, फर्जन, घाडी, मिटगावडा, तेली, कोष्टी, गावडा, साळी, सनगर ही मंडळी उत्पादक असून व्यापार क्षेत्रातील तर सुतार, सोनार, लोहार, गुरव, देवळी, भावित, कलावतीण, भोर, न्हावी, परिट, गवळी, धनगर, कातकरी, ढाकर, डोंगरी, कोळी, लमाण, भिल अशा विविध जाती या भागात आहेत. मुसलमान शेख, पठाण, सैय्यद इ. भागात आढळतात. ख्रिश्चनांची संख्याही बरीच आहे.

हिंदू लोक इतर मुख्य देवताबरोबरच ग्रामदेवतांची पुजा करतात. त्यात पांढर, वेताळ, भूत, चेटकी याची पुजा करतात. त्यांना कोंबड्यांचा बळी देवून नैवेद्य दाखवितात. अशा प्रकारच्या पूजेचे अथवा श्रद्धेचे प्रमाण फार मोठे आहे. कोकणाबाहेर ही परिस्थिती एवढ्या तिव्रतेने कोठेच पहावयास मिळत नाही.

सण उत्सवात गणेशोत्सव सगळ्यात लोकप्रिय आहे. अर्थात संपूर्ण महाराष्ट्रात हा सण मोठ्या प्रमाणावर साजरा होतो. देशापेक्षा कोकणात गणेश-गौरी पूजन मोठ्या

प्रमाणावर होते. कोकणी बोली ही इथली प्रमुख भाषा असून त्यांच्यातही काही थोडा फार आढळतो. त्याचबरोबर कोकणी बरोबर 'मराठी' ही बोलली जाते.^{४६}

३.२३ महान व्यक्ती :

१९८१ साली सिंधुदुर्ग जिल्ह्याची निर्मिती झाली. तत्पूर्वी हा रत्नागिरी जिल्ह्याचा एक भाग होता. त्यामुळे रत्नागिरी जिल्ह्यातील विभूतीनी जे महान कार्य केले त्याचाच प्रभाव आजच्या सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या प्रदेशात दिसून येतो. जिल्हा अनेक महान व्यक्तींची जन्मभूमी आहे. या विभूतींच्या कार्यामुळे जिल्ह्यातच नव्हे तर राज्यात व काही प्रमाणात देशातही सामाजिक चळवळी उभ्या राहून प्रबोधन झाले आहे. बाळ गंगाधर टिळक, आगरकर हे याच जिल्ह्यात जन्मले. आज आपण त्यांना राष्ट्र पुरुष म्हणून ओळखतात.

१९९२ साली पटवर्धन हायस्कूल, १९२८ साली दापोली शिक्षण संस्था, १९२१ साली महाराष्ट्रीय शिक्षण प्रसारक मंडळ, १९११ साली मालवण शिक्षण संस्थेची स्थापना अशी त्यांची शैक्षणिक कारकीर्द आहे. समाज सुधारणेत त्यांचा सिंहाचा वाटा आहे. कृष्णाराव अर्जुन केळुसरकर, बाळ गंगाधर खेर, गोपाळ गणेश गोखले, गोविंद सदाशिव गुरये, देवनारायण वामन टिळक, राजाराम शास्त्री, रामकृष्ण भागवत, रामकृष्ण गोपाळ भांडारकर, लोकमान्य बाळ गंगाधर टिळक मच्छिंद्र कांबळे, मामा वरेकर, जयंत साळगांवकर आणि इतर अनेक प्रदेशातील समाज सुधारकांनी समाजाला सुधारण्याचे व शिक्षित करण्यासाठी प्रयत्न केले.^{४७}

३.२४ पर्यटन :

महाराष्ट्र शासनाने १९९७ सिंधुदुर्ग जिल्हा पर्यटन जिल्हा म्हणून घोषित केलेला आहे. सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात पर्यटकांना आकर्षित करू शकतील अशी अनेक रम्य ठिकाणे आहेत. मालवण येथील समुद्रातील शिवाजी महाराजांनी बांधलेला प्रसिद्ध सिंधुदुर्ग किल्ला पर्यटकांचे मोठे आकर्षण आहे. या किल्ल्यावरूनच जिल्ह्याला सिंधुदुर्ग हे सार्थ नाव देण्यात आले. याशिवाय विजयदुर्ग सारखा सागर किनाऱ्यावर बांधलेला किल्ला पर्यटकाचे लक्ष वेधून घेतो. सावंतवाडी तालुक्यात सह्याद्रीच्या पर्वत रांगेत समुद्र सपाटीपासून २,३६८ फूट उंचीवर आंबोली हे थंड हवेचे ठिकाण आहे. आंबोली येथे पर्यटन विकास महामंडळाने सर्वसामान्यांना परवडतील अशी निवासस्थाने बांधलेली आहेत. मुंबई व गोवा

या राष्ट्रीय महामार्गावर सावंतवाडी येथे नरेंद्र डोंगराचा वनोद्यान म्हणून विकास करण्यात येत आहे. मालवण व वेंगुर्ला तालुक्यात पर्यटकांना आकर्षित करणारा सुंदर समुद्र किनारा या जिल्ह्यात आहे. आरवली, शिरोडा, उभादांडा (सागरेश्वर), निवती, कोयरा, तारकली देवबाग, मालवणचा घामापूर तलाव, फोंडा घाट येथील उगवाई मंदीर आदी निसर्गरम्य ठिकाणे पर्यटन विकासाला पोषक आहेत.

श्री क्षेत्र कुणकेश्वर हे देवगड तालुक्यातील मंदिर सागर सानिध्यात असल्याने याचा परिसर नितांत सुंदर आहे. इ.स. ११०० च्या दरम्यान यादवांनी हे मंदिर बांधले असावे असे इतिहासकरांचे मत आहे. या मंदिरावर दाक्षिणात्य स्थापत्य शास्त्राचा प्रभाव आहे. या शिवाय सावंतवाडी तालुक्यातील दाणोली येथील साटम स्वामीचे भक्तीस्थान, पिंगुळी येथील राऊळ महाराजांचा मठ, कणकवली येथील भालचंद्र महाराजांचा मठ, सावंतवाडी तळवणे येथील भारती महाराजांचा मठ त्याचप्रमाणे सोनुर्ली, आंगणेवाडी, हिरण्यकेशी, वेतोरे ही जिल्ह्यातील इतर जागृत देवस्थाने असून या ठिकाणी यात्रा भरतात. मालवण तालुक्यातील भराडी देवीची आंगणेवाडी जत्रा प्रसिद्ध असून यावेळी राज्यभरातून मोठ्या प्रमाणात भक्तगण देवीच्या दर्शनासाठी येतात.

सावंतवाडी हे महाराष्ट्रातले नावाजलेले हस्तकला उद्योग केंद्रे आहे. या परिसरात तयार होणारी खेळणी, लाकडाच्या वस्तू संपूर्ण देशात व परदेशात प्रसिद्ध आहेत. लाकडी रंगीत खेळणी, रंगीत फळे, लाकडाच्या केलेल्या वस्तू आदी उद्योगासाठी सावंतवाडी प्रसिद्ध आहे. यावरून असे म्हणता येईल की, फलोद्यान, मच्छिमारी, वन व खनिज हे व्यवसाय सध्या जिल्ह्यात चालू आहेत. त्यावर आधारित प्रक्रिया करणाऱ्या उद्योगाचा विचार केला तर पर्यटन व्यवसायाला शासनाने अलिकडे पर्यटन विकासासाठी खास पॅकेज जाहिर केलेले असून जिल्ह्यातील मुलभूत सुविधांचा नजिकच्या काळात सिंधुदुर्ग जिल्हा पर्यटकांच्या दृष्टीने देशात/परदेशात प्रमुख आकर्षण ठरेल.^{४८}

३.२५ सारांश :

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात वैशिष्ट्यपूर्ण संस्कृती आणि इतिहास आहे. येथील भौगोलिक स्थिती रायगड रत्नागिरी जिल्ह्यासारखी असून हवामान दमट व आद्रतायुक्त आहे. पर्जन्यमानाचा विचार करता सरासरी २६०० ते ३८०० मि. मीटर इतका दरवर्षी पाऊस पडतो. त्यामुळे जलसिंचन सुविधा निर्माण करण्यास फार मोठी संधी उपलब्ध आहे.

जिल्ह्यामध्ये भात हे मुख्य पिक आहे. जिल्ह्यातील हवामान हे फलोत्पादनास अनुकूल आहे. अजूनही कृषि क्षेत्रात परिवर्तन घडवून आणता येईल. जिल्ह्यास १२१ कि.मी. लांबीची किनारपट्टीमुळे सागरी मासेमारीची मोठ्या प्रमाणात संधी आहे. सहकाराच्या विकासाला संधी आहे. पोष्ट, तार, दळण वळण सेवा जिल्ह्यात चांगली आहे. त्यात परिवर्तन होत आहे. गोवा राज्यासारखी निसर्गरम्यता भौगोलिक रचना असल्याने जिल्ह्यास भविष्यात पर्यटन विकासात मोठी संधी असून शासनाच्या मदतीने जिल्हा पर्यटन म्हणून विकसित करता येऊ शकतो. शिक्षण आरोग्य सेवा क्षेत्रात प्रगती होत आहे. लोकसंख्या वाढ नियंत्रित असून स्त्री-पुरुष लिंग रचनेमध्ये समतोलपणा आहे. अशा प्रकारे जिल्ह्यातील सर्वच क्षेत्रात विकास घडवून आणल्यास भविष्यात जिल्ह्याचा आर्थिक कायापालट होऊ शकतो असे संशोधकाला वाटते.

संदर्भसूची :

१. सिंधुदुर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन (मार्च २०१०) पान नं. १
२. Maharashtra Rajya Gazatter (2002) Itihas Pracheen (Vol. 1) पान नं. ३
- ऋळी, चेतन शंकर/साळी, गिता (२००६) "एका दृष्टीक्षेपात जिल्हा : सिंधुदुर्ग-पुणे पान नं. १६०२ ते १६०४
३. उपरोक्त पान नं. १६०४
४. सिंधुदुर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन (मार्च २०१०) पान नं. २
५. उपरोक्त पान नं. २
६. उपरोक्त पान नं. २
७. उपरोक्त पान नं. २
८. उपरोक्त पान नं. २
९. उपरोक्त पान नं. ३
१०. उपरोक्त पान नं. ३
११. उपरोक्त पान नं. ३
१२. उपरोक्त पान नं. ३
१३. उपरोक्त पान नं. ३
१४. जिल्हा परिषद ओरोस जल संधारण विभाग सिंधुदुर्ग (संकलित माहिती)
१५. सिंधुदुर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन (मार्च २०१०) पान नं. ४
१६. उपरोक्त पान नं. ४

१७. उपरोक्त पान नं. ४
१८. उपरोक्त पान नं. ४
१९. सिंधुदुर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन (मार्च २०१०) भाग २
सांख्यिकीय तक्ते पान नं. १०
२०. उपरोक्त पान नं. क्र. १०
२१. उपरोक्त पान नं. क्र. १०
२२. उपरोक्त पान नं. ९
२३. सिंधुदुर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन (मार्च २०१०) पान नं. ११
२४. उपरोक्त पान नं. ५
२५. उपरोक्त पान नं. १२१ (तक्ता)
२६. उपरोक्त पान नं. ९, १०
२७. उपरोक्त पान नं. ८
२८. उपरोक्त पान नं. ९
२९. उपरोक्त पान नं. ८
३०. उपरोक्त पान नं. ९
३१. उपरोक्त पान नं. ५, ६
३२. उपरोक्त पान नं. ३२
३३. उपरोक्त पान नं. पान नं. ५
३४. उपरोक्त पान नं. ५
३५. उपरोक्त पान नं. ५
३६. उपरोक्त पान नं. ५
३७. उपरोक्त पान नं. ७
३८. उपरोक्त पान नं. ७
३९. उपरोक्त पान नं. ७, ८
४०. साळी, चेतन शंकर/साळी, गिता (२००६) "एका दृष्टीक्षेपात जिल्हा :
सिंधुदुर्ग-पुणे पान नं. १६३३, १६३४
४१. उपरोक्त पान नं. १६१६
४२. सिंधुदुर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन मार्च २०१०) पान नं.
११,१२
४३. उपरोक्त पान नं. ११, १२
४४. उपरोक्त पान नं. ११, १२

४५. उपरोक्त पान नं. ११, १२
४६. उपरोक्त पान नं. १२
४७. साळी, चेतन शंकर/साळी, गिता (२००६) "एका दृष्टीक्षेपात जिल्हा :
- सिंधुदुर्ग-पुणे पान नं. १६०४, १६०५
४८. उपरोक्त पान नं. १६३१, १६३२
४९. सिंधुदुर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन मार्च २०१० पान नं. १३

प्रकरण चौथे

सिंधुदुर्ग जिल्हा भूमि उपयोजन व पीक रचना

४.१ प्रस्तावना

भारत हा जगातील सर्वात जुनी संस्कृती असलेला आणि सांस्कृतिक मुल्यांचा वारसा लाभलेला देश आहे. स्वातंत्र्योत्तर काळात भारताने कृषी उत्पादनाच्या बाबतीत स्वयंपूर्णतः साध्य केली आहे. नियोजन काळात देशात शेती क्षेत्राच्या विकासासाठी विविध उपाय योजना करण्यात आल्या. उदा. आधुनिकीकरणाचा स्वीकार करण्यात आला. त्यामुळे शेती क्षेत्राची प्रगती घडून आली. उदा. लागवडीखालील क्षेत्र, प्रति हेक्टरी उत्पादन, शेतमाल उत्पादन यात मोठ्या प्रमाणात वाढ घडून आली. महाराष्ट्रातील भौगोलिक स्थितीत विविधता आढळते. त्याचप्रमाणे हवामानात भिन्नता असून जमिनीचा प्रकार, गुणवत्ता यात फरक आढळून येतो. त्यामुळे एकाच प्रकारची शेती करणे अशक्य होते.

पश्चिम महाराष्ट्रातील प्रदेश पर्जन्य छायेत आहे. त्यामुळे ज्वारी, बाजरी, कडधान्ये आणि पाण्याचा प्रदेश असल्यामुळे ऊस, कापूस, भुईमुग अशी नगदी पिके घेतात.

मराठवाड्यात कोरडे हवामान व मध्यम पाऊस यामुळे ज्वारी, बाजरी, कडधान्य व तेलबिया, विदर्भामध्ये जमिन उच्च प्रतीची असल्यामुळे तेथे कापसाचे पीक घेतात.^१

४.२ सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील पीक आकृतिबंध :

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात उपलब्ध असलेली जमीन त्याची प्रत, तापमान, आर्द्रता, पाऊस यांच्या विविधतेमुळे पीक पद्धतीत विविधता आढळून येते. त्याच प्रमाणे जिल्हा नियोजन आराखड्यामध्ये पीक पद्धत बदलते. तसेच प्रत्येक जिल्ह्याच्या मध्यवर्ती सहकारी बँकेचा शेती पिकांबाबत पत आराखडा यानुसार पीक पद्धत असते.

जिल्ह्यामध्ये पावसाचे प्रमाण जास्त असल्यामुळे व जमीन भात पिकाला चांगली असल्यामुळे ८०% भात पिकाचे उत्पादन केले जाते. शिवाय आर्द्र हवामानामुळे फलोत्पादन चांगल्या प्रकारे येते.

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यामध्ये भात, रागी, कोद्रा, नाचणी व कुळीथ ही मुख्य धान्य पीके तर आंबा, काजू, नारळ, कोकम, सुपारी, आवळा ही फळपीके घेतले जातात. या फळपिकांमध्ये अंतर पीके म्हणून लवंग, मिरी, दालचिन, वायडिंग, जायफळ इ. अनेक मसाला पीके घेतली जातात. जिल्ह्यामध्ये भात हे प्रमुख पीक आहे. २००९-१० साली एकूण १,४८,३६६ हेक्टर क्षेत्र लागवडी खाली आणले गेले. त्यापैकी भाताखाली ५३.८३ टक्के व इतर पीके ४६.१७% या प्रमाणे पीकवार विभागणी आहे.

२००९-१० च्या कृषि गणनेप्रमाणे भाताचे क्षेत्र ७९,८६५ हेक्टर आहे. भात पीकाखाली तालुका निहाय क्षेत्राची टक्केवारी कणकवली १७.२२%, कुडाळ २४.५३%, सावंतवाडी १६.९७%, वेंगुर्ला ३.४२%, मालवण ११.६५%, देवगड १४.५८%, दोडामार्ग ५.४६% आणि वैभववाडी ६.१८% याप्रमाणे आहे. याशिवाय रागी, वरी व कुळीथ ही पीके जिल्ह्यात घेतली जातात. रागीचा अपवाद वगळता इतर पिकाखालील क्षेत्र फारच कमी आहे. जिल्ह्यामध्ये क्षेत्रवरी ३८२ हेक्टर, भुईमूग ४७७९ हेक्टर, तीळ १८३ हेक्टर, ऊस ४० हेक्टर याप्रमाणे आहे.

फळभाजीमध्ये एकूण आंबा व काजू या पिकाखालील क्षेत्र ३८,६५३ हेक्टर आहे. त्यापैकी आंबा या पीकाखालील क्षेत्र ३९.७३% व काजू या पिकाखालील क्षेत्र ६०.२७% क्षेत्र वापरात आणले आहे.

सिंधुदुर्ग जिल्ह्याचे हवामान मुख्यत्वेकरून फळ बागायतीसाठी पोषक आहे. धान्य पिकाखाली भात व नाचणी तर कडधान्यामध्ये उडीद, चवळी व कुळीथ ही येथील महत्त्वाची पीके आहेत. जिल्ह्यामध्ये सन २००९-१० मध्ये १८७५० मे. टन रासायनिक खतांचे वाटप झालेले असून खताच्या वापरामुळे या पिकांच्या उत्पादनात वाढ झालेली आहे. २००९-१० च्या माहितीच्या आधारे भाताचे, उत्पादन २.१५ लाख टन आहे. दर हेक्टरी उत्पादन २८९२ किलो आहे. नाचणीचे उत्पादन ३१०० मे. टन असून दर हेक्टरी उत्पादन १०३३ किलो आहे.

जिल्ह्यामध्ये वाढता रासायनिक खतांचा वापर, जलसिंचन सुविधांची प्रगती आणि जमीन सुधारणा पीक संरक्षणाचे उपाय यामुळे सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या कृषी उत्पादन आणि उत्पादकता यामध्ये आमुलाग्र परिवर्तन झालेले आहे.^३

४.२.१ सिंधुदुर्ग जिल्हा आणि भूमि आयोजन :

सिंधुदुर्ग जिल्ह्याचे एकूण भौगोलिक क्षेत्र ५ लाख ४८ हजार हेक्टर एवढे असून त्यापैकी विविध पिकाखालील क्षेत्र तसेच जमिनीची बिगतवारी पुढीलप्रमाणे.^४

तक्ता क्र. ४.१

| अ.नं. | बाब | क्षेत्र (हेक्टर मध्ये) |
|-------|---|--|
| १ | जंगलव्याप्त क्षेत्र | ३६,३१५ हेक्टर (७.१८%) |
| २ | शेतीला उपलब्ध नसलेली जमीन अ) बिगर शेती वापराखालील जमीन ब) पडीक व लागवड लायक नसलेली जमीन क) अ + ब | ६,७७८ हेक्टर (१.३४%) १,०४,८६७ हेक्टर (२०.७७%) १,११६४५ हेक्टर (२२.११%) |
| ३ | पडीक जमीनी व्यतिरिक्त लागवड न केलेली इतर जमीन अ) कायम गुरे चरणे व इतर जमीन ब) झाडे झुडपाखालील जमीन क) लागवडी योग्य परंतु पड जमीन ड) अ + ब + क | ११,०३१ हेक्टर (२.१९%) ८२,२११ हेक्टर (१६.२९%) ३८,२६४ हेक्टर (७.५८%) १,३१,५०६ हेक्टर (२२.०७%) |
| ४ | पडीक जमीन अ) चालू पड जमीन ब) इतर पड जमीन क) एकूण पड | ०९,२३३ हेक्टर (१.८३%) ६८,५२२ हेक्टर (१३.५७%) ७७,७५५ हेक्टर (१५.३०%) |
| ५ | पिकाखालील क्षेत्र - निव्वळ क्षेत्र फळ झाडेसह | १,४७,५०० हेक्टर (२९.२२%) |

तक्ता क्र. ४.१ मध्ये वरून असे आढळून येते की, जिल्ह्यातील एकूण भौगोलिक क्षेत्राचा विचार करता जंगलव्याप्त क्षेत्र ३६,११५ हेक्टर (७.१९%) इतके असून ते सर्वात कमी आहे. यामध्ये वाढ करता येऊ शकते. पडीक जमीनी व्यतिरिक्त लागवड न केलेली जमीन ३८,३६४ हेक्टर (७.१९%) क्षेत्र, पडीक जमीन क्षेत्र ७७,७५५ (१५.३०%) क्षेत्र आहे. शेतीस उपलब्ध नसलेल्या जमिनीचे प्रमाण २२.११% आहे. या सर्व क्षेत्राचा भविष्यात फळझाड लागवडीच्या विकासासाठी उपयोग होऊ शकतो असे संशोधनात वरिल आकडेवाडीवरून आढळून येते.

तक्ता क्र. ४.२

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील जमिनीचे तालुका निहाय वर्गीकरण*

| तालुके | | एकूण भौगोलिक क्षेत्र | जंगल व्याप्त | शेती उपलब्ध नसलेले | पडीक जमिनीशिवाय लागवड न झालेले | एकूण पड | लागवडीखाली एकूण | लागवडी लायक |
|-----------|--------|----------------------|--------------|--------------------|--------------------------------|---------|-----------------|-------------|
| देवगड | हेक्टर | ७८,१२७ | ३,००४ | ३३,१४५ | ३,०४३ | १४,८२२ | २२,५२७ | ४०,०६८ |
| | टक्के | १५.५ | ७.७ | २३.१ | ३.० | १९.४ | १५.१ | १२.४ |
| वैभववाडी | हेक्टर | ४१,६१२ | २,७४४ | ५,९४० | ४,५४८ | ९९७ | ११,९६१ | १७,३७८ |
| | टक्के | ८.२ | ७.१ | ४.१ | ४.५ | १.३ | ८.० | ५.४ |
| कणकवली | हेक्टर | ७७,३३९ | ८,९९७ | ९,९५७ | २६,६१३ | ३,७९५ | २५,२६५ | ५५,५२५ |
| | टक्के | १५.३ | २३.३ | ६.९ | २६.२ | ४.९ | १७.० | १७.२ |
| मालवण | हेक्टर | ६१,८२९ | २९८ | १९,३३६ | १२,४६७ | १०,८६४ | १६,५१० | ३९,१९६ |
| | टक्के | १२.२ | ०.७ | १३.५ | १२.२ | १४.२ | ११.१ | १२.१ |
| वैगुर्ला | हेक्टर | २९,०३३ | ८७३ | ६,२३६ | ७,०४८ | ५६१ | १२,८८८ | २०,३५४ |
| | टक्के | ५.७ | २.२ | ४.३ | ६.९ | ०.७ | ८.७ | १५.९ |
| कुडाळ | हेक्टर | ८१,८९७ | ९,८४३ | २०,५३४ | १५,७३६ | ६,००१ | ३०,११८ | ५१,५२० |
| | टक्के | १६.२ | २५.४ | १४.३ | २५.६ | ७.८ | २०.२ | १५.९ |
| सावंतवाडी | हेक्टर | ८४,५४० | १०,४८५ | १७,३८४ | १२,९३४ | १४,९६४ | २०,७५१ | ५६,६७१ |
| | टक्के | १६.७ | २७.४ | १२.१ | १२.७ | ३६.६ | १४.० | २१.८ |
| दोडामार्ग | हेक्टर | ४९,५७३ | २,३९९ | १८,३५९ | ९,०२३ | ११,५५१ | ८,३४६ | २८,८१५ |
| | टक्के | १०.२ | ६.२ | २१.७ | ८.९ | १५.१ | ५.९ | ८.९ |
| | एकूण | ५,०३,९५० | ३८,६४३ | १४,३१६ | १,०१,४१२ | ७६,२१९ | १,४८,३६६ | ३,२२,१९१ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |

स्रोत : महाराष्ट्र शासन कृषी आयुक्तालय (फलोत्पादन विभाग पुणे)

तक्ता क्र. ४.२ मध्ये जिल्ह्याच्या एकूण ३८६४३ हेक्टर जंगलव्याप्त क्षेत्रापैकी सर्वाधिक क्षेत्र सावंतवाडी तालुक्याचे असून १०४८५ (२७.४%) आहे. देवगड तालुक्यात सर्वाधिक ३३१४५ (२३.१%) शेती उपलब्ध नाही, असे आढळून आले आहे. पडीक जमीनी शिवाय लागवड न झालेले क्षेत्र सर्वात जास्त कणकवली तालुक्यात (२६.२%) आहे एकूण पड जमीनीच्या बाबतीत असे चित्र दिसते की, या प्रकारची जमीन सावंतवाडी तालुक्यात ३६.६% म्हणजेच सर्वाधिक आहे.

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात लागवडीखालील एकूण १४८३६६ इतके क्षेत्र असून यापैकी सर्वाधिक क्षेत्र कुडाळ २०.२% आहे. तर लागवडीलायक असणाऱ्या एकूण ३२२१९१ हे. क्षेत्रापैकी सावंतवाडी तालुक्याची आघाडी असून ते ५६६७१ (२१.८%) इतके आहे. यावरून जिल्ह्याच्या शेतीच्या विकासाच्या दृष्टीने अधिकाधिक क्षेत्र लागवडीखाली आणणे अत्यंत आवश्यक आहे. असे संशोधनात आढळून आले.

४.३ जमीन सुधारणा :

जिल्ह्यात कृषी उत्पादकता वाढविण्यासाठी मृदसंधारण, बांध घालणे, उतारावर समतोल चर घालणे इत्यादी उपायाद्वारे जमिनीचा विकास करणे, ही कामे जिल्ह्यातील जिल्हा अधिक्षक कृषी अधिकारी यांचे कार्यालयामार्फत केली जातात. जिल्ह्यातील तीन उपविभागीय कृषी कार्यालयाच्या अधिपत्याखाली येणाऱ्या तालुक्यातील जमीनीची सुधारणा करण्यात येते. ज्या जमीनी सुधारित केलेल्या आहेत त्यामध्ये प्रामुख्याने आंबा, काजू व भात लागवड करण्यात आलेली आहेत. तसेच खारभूमी विकास मंडळामार्फत खार बंधान्याची कामे जिल्ह्यात घेण्यात येतात. समुद्राचे खारे पाणी बंधान्यांनी अडवून भात शेतीच्या जमिनीला संरक्षण देण्यात येते. या यंत्रणेचे विभागीय कार्यालय जिल्हा मुख्यालयाच्या ठिकाणी आहे.^५

४.४ सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील पीक रचना :

कोकणातील इतर जिल्ह्यांच्या तुलनेत सिंधुदुर्ग जिल्ह्याचा बराचसा भू-भाग सपाट असून येथे प्रामुख्याने भात शेती केली जाते. काही तालुक्यात खरिप व रब्बी हंगामात भाताचे पीक घेतले जाते. तसेच चढ उताराच्या जमिनीमध्ये नागली व कडधान्ये

ही पीके घेतली जातात. जिल्ह्यामध्ये कुडाळ, कणकवली, मालवण, सावंतवाडी या तालुक्यांमध्ये कडधान्ये पीकाखालील क्षेत्र फार मोठ्या प्रमाणात दिसून येते.^६

निसर्ग सौंदर्य भरभरून दिलेल्या सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात कृषी विकासाला फार मोठा वाव आहे. गेल्या २१ वर्षात फळझाड लागवड योजनेच्या माध्यमातून सिंधुदुर्गात ७० हजार ४७७ हेक्टर क्षेत्रावर लागवड करण्यात आली असून रोहयो पूर्वीचे आणि नंतरचे मिळून १ लाख ५ हजार ४८० हेक्टर क्षेत्रावर फळबाग लागवड झाली आहे. त्यामुळे पडीक असलेल्या हजारो हेक्टर जमिनीवर आता फळबाग लागवड झालेली दिसून येते. आधुनिक शेती तंत्रज्ञान आणि सुधारित बियाणांच्या माध्यमातून कृषी क्षेत्राकडे शेतकऱ्यांचा कल वाढल्याने जिल्ह्याच्या कृषी उत्पादनाचा आलेखही उंचावत आहे. गेल्या पाच वर्षांपासून जिल्ह्यात ऊस लागवडीच्या क्षेत्रातही वाढ झाली आहे. जलसंधारण, पाटबंधारे प्रकल्प, मृदसंधारण, पाणलोट विकास कार्यक्रम अशा विविध प्रकल्पांच्या माध्यमातून जिल्ह्यांचे सिंचनाखालील क्षेत्रही वाढत असल्याने कृषी क्षेत्रात सिंधुदुर्ग जिल्ह्याची प्रगती सुरु झाली आहे.^७

सिंधुदुर्ग जिल्ह्याचे भौगोलिक क्षेत्र ५.०४ लाख हेक्टर असून एकूण लागवडी योग्य क्षेत्र १.८४ लाख हेक्टर आहे. त्यापैकी खरीप हंगामातील क्षेत्र ०.८२ लाख हेक्टर आहे. जिल्ह्यात दरवर्षी सुमारे ७५ ते ८० हजार हेक्टर क्षेत्रात भात लागवड केली जाते. भात शेतीमध्ये अलिकडे आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर वाढला असून सुधारित व संकरीत बियाणे वापरण्याची मानसिकता शेतकऱ्यांमध्ये निर्माण झाली आहे. जिल्ह्यात बियाणे बदलाचे प्रमाण १९% असून, या खरीप हंगामात ७,३८८.२० क्विंटल बियाणे वितरीत करण्यात आले. आधुनिक तंत्रज्ञान, खते, आणि संकरीत बियाणांच्या वापरामुळे जिल्ह्याचा भात उत्पादनात भरीव वाढ झाली आहे. कमी झालेले मनुष्यबळ, न परवडणारे औत यामुळे मध्यंतरीच्या काळात शेती करणे परवडत नाही, असा काहीसा सूर होता. मात्र आधुनिक तंत्रज्ञान आणि सुधारित बियाणांमुळे शेतीकडे वळणाऱ्यांची संख्या आता वाढली आहे.^८

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात एकेकाळी मोठ्या प्रमाणात पडीक जमीन होती मात्र रोजगार हमी योजनेअंतर्गत १००% अनुदानावरील फळबाग लागवड योजनेमुळे खऱ्या अर्थाने पडीक जमिनीचा कायापालट झाला. सिंधुदुर्ग जिल्हा फलोत्पादनाच्या दृष्टीने महत्त्वाचा

असून जिल्ह्यात आंबा, काजू, नारळ व चिकू ही मुख्य फळपिके आहेत. फळपिके, भाजीपाला पीके, पुष्पोत्पादन व मसाला पीकांचे एकूण क्षेत्र १ लाख ६८६६ हेक्टर आहे. त्यापैकी आंबा पिकाखाली २७९५५ हेक्टर, काजू पिकाखाली ५७ हजार ९५९ हेक्टर, नारळ पीकाखाली १६६५१ हेक्टर, चिकू पिकाखाली १९८ हेक्टर, सुपारी पीकाखाली १०२० हेक्टर, मसाला पिकाखाली ९९९ हेक्टर तर इतर पीकाखाली ७० हेक्टर क्षेत्र आहे. एकूण फलोत्पादन पिकाखालील क्षेत्रापैकी १०५४८६ हेक्टर फळपिकाखाली ११३७ हेक्टर क्षेत्र भाजीपाला तर २४३ हेक्टर क्षेत्र पुष्पोत्पादन पिकाखाली आहे. कृषी, हवामान, रोजगार निर्मिती व उच्च मुल्यांकन पीक रचना या सर्व बाबींचा विचार करून तसेच शेतकऱ्यांची आर्थिक प्रगती घडविणे व पडीक जमिनीचा विकास करण्याच्या हेतूने १९९०-९१ पासून रोजगार हमी योजनेशी निगडित फळबाग लागवड योजना राबविली जात आहे.

१९९० पूर्वी जिल्ह्यात फळबाग लागवडी खालील क्षेत्र ३५,००९ हेक्टर होते. 'रोहयो' अंतर्गत फळबाग लागवडीच्या माध्यमातून २०१०-११ अखेर पर्यंत जिल्ह्यात ७०४७७ हेक्टर क्षेत्रावर फळबाग लागवड करण्यात आली. गेल्या २१ वर्षांत ९८०४९ लाभार्थी शेतकऱ्यांना लाभ देण्यात आला असून या योजनेवर ७१८७.७७ लाख एवढा खर्च झाला आहे.^९

सिंधुदुर्गात उन्हाळी हंगामात भात, उन्हाळी भुईमूग, कडधान्य आणि भाजीपाल्याची पीके मोठ्या प्रमाणात घेतली जातात. रब्बी हंगामात ४,७०५ हेक्टर क्षेत्रावर कडधान्य, ३,९५६ हेक्टर क्षेत्रावर उन्हाळी भात, तर ७६ हेक्टर क्षेत्रावर इतर रब्बी तृणधान्ये पीक या वर्षीच्या हंगामात घेण्यात आले होते. भुईमूग आणि गळीत धान्याचे क्षेत्रही जिल्ह्यात वाढले आहे. त्यामुळे भात कापणीनंतरही शेतीचे अनेक हिरवेगार मळे दिसतात. पूर्वी मोठ्या प्रमाणावर उन्हाळ्यात घाटमाथ्यावरून भाजीपाला यायचा. मात्र आता उन्हाळ्यातील भाजीपाल्याची गरज जिल्ह्यातील शेतकरी भागवू लागले आहेत. जिल्ह्यात सर्व सिंचन प्रकल्पाद्वारे ८,०२४ हेक्टर क्षेत्र व विहिरी खालील ओलितांचे क्षेत्र १,५४५ हेक्टर मिळून ९,५६९ हेक्टर क्षेत्र रब्बी व उन्हाळी हंगामात ओलिताखाली आणले जाते.^{१०}

महापीक अभियानाअंतर्गतही पीकांचे उत्पादन व उत्पादकता वाढविण्यासाठी विविध उपक्रम राबविले जातात. त्यामध्ये जमीनीची आरोग्य पत्रिका काढणे, बीज प्रक्रिया, सुधारित व संकरीत वाणांचा वापर, रासायनिक खतांचा समतोल वापर, शेती शाळा, शेतकऱ्यांना सुधारित अवजारे वाटप, गांडूळ खत व कंपोस्ट खत युनिट उभारणी, कृषीदिंडी अशा विविध उपक्रमांचा यामध्ये समावेश आहे. शेतीमध्ये दिवसेंदिवस सेंद्रीय खतांचा वापर कमी होत असल्याने जमीनीच्या सुपीकतेवर त्याचा परिणाम होत आहे. त्यासाठी सेंद्रीय शेती योजनेद्वारे शेतकऱ्यांना गांडूळ खत युनिट दिले जातात. या योजनेत सन २०११-१२ मध्ये ७० गांडूळ खत युनिट तर सुमारे अडीच हजार बायोडायनॅटिक कंपोस्ट खत युनिट उभारणी करण्याचे नियोजन करण्यात आले आहे.^{११}

राष्ट्रीय कृषी धोरणामध्ये कृषी विस्तारामधील गरज विचारात घेऊन कृषी धोरणातील शिफारशी नुसार जिल्हास्तरावर कृषी तंत्रज्ञान व्यवस्थापन यंत्रणा स्थापन करण्यात आली आहे. या माध्यमातून पीक प्रात्यक्षिके, शेतकरी प्रशिक्षण, शेतकरी गटस्थापना, शेतकरी शास्त्रज्ञ संवाद, शेतकरी अभ्यास दौरा, शेती शाळा असे अनेक उपक्रम राबविले जात आहेत. त्यामुळे जिल्ह्याच्या कृषी क्षेत्रात काही सकारात्मक बदल दिसू लागले आहेत.^{१२}

तक्ता क्र. ४.३

विविध पीकांचा पेरणी अहवाल (हेक्टर मध्ये) सन २००९-१०^{१३}

| तालुके | | भात | नांगली | मक्का | इतर कडधान्ये | एकूण |
|-----------|--------|-------|--------|-------|--------------|-------|
| देवगड | हेक्टर | ६५९० | ४९० | ०५ | ४० | ७१२५ |
| | टक्के | ८.८ | १५.२ | ६७.५ | ११.३ | ९.१ |
| वैभववाडी | हेक्टर | ४१३६ | ८१२ | - | १०४ | ५०५२ |
| | टक्के | ५.३ | २५.३ | - | २९.५ | ६.४ |
| कुडाळ | हेक्टर | १८२३६ | १०७ | - | - | १८३४३ |
| | टक्के | २४.३ | ३.३ | - | - | २३.४ |
| मालवण | हेक्टर | १२६७५ | २८९ | २.४ | १६५ | १३०३१ |
| | टक्के | १६.९ | ९.० | ३२.५ | ४६.८ | १६.६ |
| कणकवली | हेक्टर | १४५३० | १९९ | - | ११ | १४७४० |
| | टक्के | १९.५ | ६.२ | - | ३.१ | १८.८ |
| सावंतवाडी | हेक्टर | ९७२७ | ८९४ | - | ३.२ | १०३५३ |
| | टक्के | १३.० | २८.२ | - | ९.० | १३.२ |

| | | | | | | |
|-----------|--------|-------|------|-----|-----|---------|
| वेंगुर्ला | हेक्टर | ६१०८ | १०२ | - | - | ६२१० |
| | टक्के | ८.१ | ३.२ | - | - | ७.९ |
| दोडामार्ग | हेक्टर | ३०६९ | ३१० | - | - | ३३७९ |
| | टक्के | ४.१ | ९.६ | - | - | ४.६ |
| | एकूण | ७४७७१ | ३२०३ | ७.४ | ३५२ | ७८२३३.४ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |

स्त्रोत : कृषि कार्यालय जिल्हा परिषद ओरोस, सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ४.३ मध्ये विविध पिकांच्या पेरणी अहवालाचे अध्ययन करण्यात आले आहे. सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात एकूण क्षेत्रापैकी ७४७७१ हे. क्षेत्र भात पिकाखाली असून या क्षेत्रापैकी कुडाळ तालुक्यात सर्वात जास्त क्षेत्र १८२३६ (२४.३%) भात पिकाखाली आहे. त्यानंतर कणकवली, मालवण, सावंतवाडी या तालुक्यात मोठ्या प्रमाणावर भाताचे उत्पादन होत असल्याचे दिसते. मका व तृणधान्याखाली अतिशय कमी क्षेत्र आहे. नांगली पिकाखाली एकूण ३२०३ हे. क्षेत्र असून त्यापैकी सावंतवाडी, वैभववाडी आणि देवगड ही तालुके अग्रेसर असून अनुक्रमे २८.२%, २५.३% आणि १५.२% हे क्षेत्र नांगली पिकाखाली असल्याचे आढळते.

यावरून, जिल्ह्यात भाताचे मुख्य पीक घेतले जाते व त्यानंतर नांगली या पीकाचा नंबर लागतो ही उल्लेखनीय बाब आहे.

तक्ता क्र. ४.४

कडधान्ये^{१४}

| तालुके | | मूग | उडीद | कुळीथ | चवळी | वाल | पावटा | तूर |
|-----------|--------|------|------|-------|------|------|-------|-------|
| देवगड | हेक्टर | १८ | ३० | ५० | २५ | १० | २० | १५ |
| | टक्के | २७.७ | ९.२ | ८.२ | ११.७ | ६.९ | ७७.० | ८७.८५ |
| वैभववाडी | हेक्टर | २६ | ३१ | ५५ | ४७ | - | - | - |
| | टक्के | ४०.० | ९.४ | ९.० | २२.० | - | - | - |
| कुडाळ | हेक्टर | - | ९७ | ०७ | - | - | - | - |
| | टक्के | - | ३०० | १.१ | - | - | - | - |
| मालवण | हेक्टर | १० | ११ | २६४ | ४५ | ४२ | ६ | २.१ |
| | टक्के | १५.४ | ३.३ | ४२.३ | २१.१ | २९.४ | २३.० | १२.२ |
| कणकवली | हेक्टर | ११ | १९ | १०४ | - | १६ | - | - |
| | टक्के | १६.९ | ५.८ | १७.१ | - | ११.१ | - | - |
| सावंतवाडी | हेक्टर | - | ७९ | ८४ | २८ | ४० | - | - |
| | टक्के | - | २४.१ | १३.८ | १३.१ | २७.७ | - | - |
| वेंगुर्ला | हेक्टर | - | २७ | ५२ | ५० | ३० | - | - |
| | टक्के | - | ८.२ | ८.५ | २३.७ | २०.८ | - | - |
| दोडामार्ग | हेक्टर | - | ३३ | - | १८ | ६ | - | - |

| | | | | | | | | |
|--|-------|-----|------|-----|-----|-----|-----|------|
| | टक्के | - | १०.० | - | ८.४ | ४.१ | - | - |
| | एकूण | ६५ | ३२७ | ६०६ | २१३ | १४४ | २६ | १७.१ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |

स्त्रोत : कृषी कार्यालय जिल्हा परिषद ओरोस, सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ४.४ मध्ये सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील कडधान्याखालील क्षेत्राचे अध्ययन करण्यात आले आहे. या तक्त्याच्या आधारे असे चित्र दिसते की, जिल्ह्यात उडीद, कुळीथ, चवळी, वाल, पावटा या पिकांचे उत्पादन अधिक प्रमाणात घेतले जाते. मूग आणि तुर या पिकांचे काही प्रमाणात उत्पादन घेतले जाते.

कुडाळ तालुक्यात उडीद ९७ (३०.०%), वैभववाडी तालुक्यात २६ (४०%), कुळीथ मालवण तालुक्यात २६४ (४२.३%) चवळी वेंगुर्ला तालुक्यात ५० (२९.४%), वालाचे मालवण तालुक्यात ४२ (२९.४%) पावटा देवगडमध्ये २० (७७.०%) आणि तूर १५ (८७.८%) क्षेत्र देवगड तालुक्यातील सर्वाधिक क्षेत्र या पीकाखाली असल्याचे संशोधन कर्त्याला आढळून येते.

तक्ता क्र. ४.५

तेल बिया^{१५}

| तालुके | | खरीप भुईमूग | मोहरी | सुर्यफूल | कारळा | तीळ | एकूण |
|-----------|--------|----------------|-------|----------|-------|------|--------|
| देवगड | हेक्टर | ३६७ | - | - | ०६ | ८ | ३८१ |
| | टक्के | १८.० | - | - | ४.१ | ६.१ | १६.४ |
| वैभववाडी | हेक्टर | २१३ | - | - | - | ४२ | २५५ |
| | टक्के | १०.४ | - | - | - | ३२.५ | १०.९ |
| कुडाळ | हेक्टर | २१४ | - | - | - | - | २१४ |
| | टक्के | १०.५ | - | - | - | - | ९.२ |
| मालवण | हेक्टर | ६६९ | ४ | २.५ | २३ | ३० | ७२८.५ |
| | टक्के | ३३.० | १०० | १०० | १५.८ | २३.० | ३१.६ |
| कणकवली | हेक्टर | १७१ | - | - | - | - | १७१ |
| | टक्के | ८.३ | - | - | - | - | ७.३ |
| सावंतवाडी | हेक्टर | २३८ | - | - | ३६ | २६ | ३०० |
| | टक्के | ११.६ | - | - | २४.८ | २०.० | १२.९ |
| वेंगुर्ला | हेक्टर | १२० | - | - | ८० | - | २०० |
| | टक्के | ५.९ | - | - | ५५.३ | - | ८.६ |
| दोडामार्ग | हेक्टर | ४८ | - | - | - | २४ | ७२ |
| | टक्के | २.३ | - | - | - | १८.४ | ३.१ |
| | एकूण | २०४० | ४ | २.५ | १४५ | १३० | २३२१.५ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |

स्त्रोत : कृषि कार्यालय जिल्हा परिषद ओरोस, सिंधुदुर्ग

कोष्टक क्र. ४.५ मध्ये जिल्ह्यातील तेलबिया पिकाखालील क्षेत्राचे अध्ययन करण्यात आले आहे. जिल्ह्यात तेलबिया पिकाखाली एकूण २३२१.५ हे. क्षेत्र असून त्यापैकी खरीप भुईमूगासाठी एकूण २०४० हे. क्षेत्र आहे. खरीप भुईमूगा खालील एकूण क्षेत्रापैकी सर्वाधिक मालवण तालुक्यातील ६६९ (३३.०%) हे. क्षेत्र या पीकाखाली आहे. जिल्ह्यातील कारळा या पीकाखाली एकूण १४५ हे क्षेत्रापैकी वेंगुर्ला तालुक्यात ८० (५५.३%) हे. क्षेत्र असल्याचे आढळते. मोहरी, सूर्यफूल, तीळ या पीकांचे क्षेत्र खरीप भुईमूग आणि कारळा या पिकांच्या तुलनेत फारच अल्प असल्याचे आढळून येते. यावरून, जिल्ह्यात अजूनही मोहरी, सूर्यफूल, तीळ या पिकांच्या उत्पादनासाठी मोठ्या प्रमाणात क्षेत्र लागवडीखाली आणणे गरजेचे आहे.

तक्ता क्र. ४.६

सर्व पिके व भाजीपाला यांच्या लागवडीखालील क्षेत्राचे वर्गीकरण^{१६}

| पिकाचे नांव | देवगड | वैभववाडी | कुडाळ | मालवण | कणकवली | सावंतवाडी | वेंगुर्ला | दौडामार्ग | एकूण |
|-----------------------|-------|----------|-------|-------|--------|-----------|-----------|-----------|-------|
| सर्व पिके क्षेत्र हे. | ७६७४ | ५४७८ | १८६८० | १४१४३ | १५०६५ | १०८९० | ६५७१ | ३५१० | ८२०११ |
| टक्के | ९.३ | ६.६ | २२.७ | १७.२ | १८.३ | १३.२ | ८.५ | ४.२ | १०० |
| भाजीपाला क्षेत्र हे. | - | २२ | १९ | ०३ | ०४ | ०६ | ०२ | ०२ | ५८ |
| टक्के | - | ३८.४ | ३२.७ | ५.१ | ६.८ | १०.२ | ३.४ | ३.४ | १०० |

स्त्रोत : कृषी कार्यालय, जिल्हा परिषद ओरोस, सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ४.६ मध्ये सर्व पीके व भाजीपाल्याचे लागवडीखालील क्षेत्राचे वर्गीकरण करण्यात आले आहे. जिल्ह्यात सर्व पिकाखाली एकूण ८२०११ हे. क्षेत्र असून कुडाळ तालुक्यातील सर्वाधिक क्षेत्र २२.७% लागवडी खाली आहेत. तर भाजीपाल्याखाली २२ हे. (३८.४%) क्षेत्र आहे. जिल्ह्यात अजूनही ज्या ठिकाणी १२ महिने पाण्याची सुविधा उपलब्ध आहे त्या ठिकाणी भाजीपाल्याची लागवड केल्यास निश्चितच चांगले उत्पन्न मिळेल असे संशोधनात आढळून येते.

४.५ जलसिंचन सुविधा :

जिल्ह्याचे हवामान दमट आहे. हवेतील आर्द्रताही सर्वसाधारणपणे ५५ सेल्सीअसपेक्षा कमी असते. पावसाळ्यात जिल्ह्यात फार मोठ्या प्रमाणात पर्जन्य वृष्टी होते. वाघोटन, देवगड, कर्ली, गडनदी इ. मोठ्या नद्या आहेत. या सर्व नद्या सह्याद्रीच्या डोंगरकपाच्यामध्ये उगम पाहून अरबी समुद्राला मिळतात. त्यांची लांबी साधारण ५० ते ६० की.मी. आहे. पावसाळ्यामध्ये या नद्या रौद्र रुप धारण करून वाहत असतात. इतर वेळी विशेषतः उन्हाळ्यात त्या कोरड्या असतात. येथील नद्यांना बारमाही पाणी नसल्यामुळे उन्हाळ्यामध्ये बहुतेक सर्व तालुक्यामध्ये पाणी टंचाई जाणवते.^{१७}

४.६ जलसिंचनाची साधने :

जिल्ह्यामध्ये सर्वाधिक पाऊस पडतो परंतु उन्हाळ्यात पाणी टंचाईबरोबर शेतीच्या पाण्याचा प्रश्न निर्माण होतो. हा प्रश्न सोडविण्यासाठी पाटबंधारे प्रकल्प हाच त्यावरचा रामबाण उपाय आहे. पाटबंधारे महामंडळ व जिल्हा परिषदेकडील लघू पाटबंधारे विभागाकडील प्रकल्पाद्वारे जिल्ह्यात एकूण ७६ हजार ९७४ हेक्टर क्षेत्र सिंचनाखाली आणण्याचे नियोजन आहे. १ मोठा प्रकल्प, ४ मध्यम पाटबंधारे प्रकल्प, ११ लघुपाटबंधारे प्रकल्प अशा एकूण १६ पाटबंधारे प्रकल्पाची कामे आहेत. या प्रकल्पामुळे २९७.१५ द.ल.घ.मी. पाणी साठी होणार असून कुडाळ व सावंतवाडी तालुक्यातील ६३ गावातील १७ हजार हेक्टर क्षेत्र सिंचनाखाली येणार आहे.

सन २००९-१० प्रमाणे सिंचनाच्या प्रकारानुसार सिंचन क्षेत्राची विभागणी पुढीलप्रमाणे आहे. पृष्ठविभागीय सिंचनामुळे ७६७४ हेक्टर निव्वळ क्षेत्र भिजले आहे. विहिरीमुळे ९,२०२ हेक्टर क्षेत्र ओलिताखाली आले आहे. एकूण ओलिताखालील २०,१५७ हेक्टर स्थूल क्षेत्रापैकी मालवण तालुक्यामध्ये सर्वात जास्त म्हणजे ४,७५० हेक्टर क्षेत्र ओलिताखाली आहे. इतर तालुक्यांमध्ये ओलिताखाली क्षेत्र कणकवली १,७०२, कुडाळ ३,२८९, वेंगुर्ला २,४२६, देवगड १,८२१, वैभववाडी ६८०, सावंतवाडी ४,२५८, दोडामार्ग १,२३१, मालवण ४,७५० याप्रमाणे आहे.^{१८}

४.५.२ सिंचन क्षमता :

२००९-१० यावर्षी एकूण स्थूल लागवडी खालील क्षेत्राच्या १३.५९% क्षेत्र ओलिताखाली होते. कृषी विभागाच्या अहवालाप्रमाणे जिल्ह्यातील ओलिताखालील एकूण क्षेत्र २०,१५७ हेक्टर असून काही प्रमुख पिकांची ओलिताखाली असलेल्या क्षेत्राची, एकूण ओलिताखालील क्षेत्राशी टक्केवारी तांदूळ २१.७५, भुईमूग १७.४२, फळे व भाजीपाला ११.७८ याप्रमाणे आहे.^{१९}

तक्ता क्र. ४.७

मोठे व मध्यम पाठबंधारे प्रकल्प (संदर्भ वर्ष : २००९-१०)^{२०}

| बाब | प्रकल्प तालुक्याचे नांव (मोठे प्रकल्प) | | | | प्रकल्प तालुक्याचे नांव (मध्यम प्रकल्प) | | | |
|--|--|-----------|--------|-----------|---|----------|---------|-----------|
| | टाळंबा | तिलारी | तरंदळे | शिरशिंगे | महम्मदवाडी | अरुणा | देवधर | सरंबळा |
| तालुक्याचे नांव | कुडाळ | दौडामार्ग | कणकवली | सावंतवाडी | कणकवली | वैभववाडी | कणकवली | सावंतवाडी |
| कमाल क्षमता (द.ल.घ.मी.) | २९७.१५ | ४६२.१५ | १०.०८ | ४६.९२ | ९३.३७४ | ९३.३७ | १००.४२८ | ९६.२५८ |
| एकूण लाभक्षेत्र (हेक्टर) | २६,२८५ | २३.६५४ | ७९८ | ४,७६४ | १२४०९ | ७१८१ | ५९३७ | ७४६४ |
| लाभक्षेत्राखालील लागवडी लायक क्षेत्र (हेक्टर) | २०,००० | २३.६५४ | ७४४ | ३,८१० | ८,६८६ | ६,९७९ | ४,७५० | ६,७५५ |
| प्रकल्प पूर्ण झाल्यावर ओलिताखाली येणारे क्षेत्र (हेक्टर) | १७,००० | २३,६५४ | ५५० | ३,०४९ | ६,१०७ | ५,३१० | ४,५१२ | ६,१९० |

स्रोत : १) कार्यकारी अभियंता तळंबा प्रकल्प विभाग आंबडपाल-कुडाळ.

२) कार्यकारी अभियंता तिलारी कालवा विभाग चराठा-सावंतवाडी.

३) उपकार्यकारी अभियंता, मध्यम प्रकल्प विभाग आंबडपाल-कुडाळ.

तक्ता क्र. ४.७ मध्ये जिल्ह्यामध्ये टाळंबा व तिलारी हे मोठे पाटबंधारे प्रकल्प आहेत. प्रकल्प पूर्ण झाल्यावर टाळंबा व तिलारी प्रकल्पाखाली अनुक्रमे १७,००० हे व २३,६५४ हेक्टर क्षेत्र ओलिताखाली येईल. तिलारी प्रकल्प हा महाराष्ट्र, गोवा या राज्याचा संयुक्त प्रकल्प आहे. कणकवली घोणसरी येथे होणारा देवधर प्रकल्प, मध्यम पाटबंधारे प्रकल्प पूर्ण झाल्यावर ४,५१२ हेक्टर क्षेत्र ओलिताखाली येईल. तसेच नरडवे (महमदवाडी) मध्यम पाटबंधारे प्रकल्पामुळे ६,१०७ हेक्टर क्षेत्र ओलिताखाली येईल. तसेच वैभववाडी या तालुक्यात होणाऱ्या अरुणा या मध्यम पाटबंधारे प्रकल्पामुळे ५,३१० हेक्टर क्षेत्र व सावंतवाडी तालुक्यातील शिरशिंगे या गावी होणाऱ्या प्रकल्पामुळे ३,०४९ हेक्टर क्षेत्र ओलिताखाली क्षेईल. तसेच सावंतवाडी तालुक्यामध्ये सरंबळे हा नवीन प्रकल्प चालू वर्षी सुरु झालेला असून त्यामुळे ६,१९० हेक्टर क्षेत्र ओलिताखाली येईल.

जिल्ह्यामध्ये कृषी विकासासाठी पाटबंधारे विभागांतर्गत मोठे आणि मध्यम प्रकल्प राबविण्यात येत आहेत. मध्यम प्रकल्पापासून जिल्ह्याचे एकूण लाभ क्षेत्र ७८,४९२ हेक्टर असून प्रकल्प पूर्ण झाल्यानंतर जिल्ह्याचे एकूण क्षेत्र ३२,७२८ हेक्टर प्रत्यक्ष ओलिताखाली येणार आहे.

तक्ता क्र. ४.८
विविध साधनाखालील ओलिताखालील क्षेत्र^१

क्षेत्र - हेक्टर

| तालुके | ओलिताखालील क्षेत्र | | | | ओलिताखालील निव्वळ | | ओलिताखालील स्थूल क्षेत्र | | एकूण लागवडीखालील | | ओलिताखालील स्थूल क्षेत्राची लागवडीखालील स्थूल क्षेत्राशी % |
|-----------|--------------------|-----------|-------|-----------|-------------------|-------|--------------------------|-------|------------------|-------|--|
| | पृष्ठभागीय | टक्केवारी | विहीर | टक्केवारी | क्षेत्र | टक्के | क्षेत्र | टक्के | स्थूल क्षेत्र | टक्के | |
| देवगड | ४९७ | ६.४ | ७७५ | ८.४ | १२७२ | ७.५ | १८२१ | ९.० | १२५२७ | ८.४ | १४.५ |
| वैभववाडी | २४१ | ३.१ | ३९३ | ४.२ | ६३४ | ३.७ | ६८० | ३.३ | ११९६१ | ८.० | ५.७ |
| कणकवली | ६१८ | ८.० | ८४१ | ९.१ | १४५९ | ८.६ | १७०२ | ८.४ | २५२६५ | १७.० | ६.७ |
| मालवण | १८२७ | २३.८ | २००१ | २१.७ | ३८२८ | २२.८ | ४७५० | २३.५ | २६५१० | १७.६ | १३.० |
| वैगुर्ला | ९७८ | १२.७ | १०१६ | ११.० | १९९४ | ११.८ | २४२६ | १२.० | १५८१३ | १०.६ | १५.३ |
| कुडाळ | १३४२ | १७.४ | १६१५ | १७.५ | २९५७ | १७.५ | ३२८९ | १६.३ | २७१९७ | १८.८ | १२.१ |
| सावंतवाडी | १७४२ | २३.० | २०२१ | २२.३ | ३७६३ | २२.४ | ४२५८ | २१.१ | २०७५१ | १४.० | २०.५ |
| दोडामार्ग | ४२९ | ५.६ | ५४० | ५.८ | ९६९ | ५.७ | १२३१ | ६.४ | ८३४६ | ५.६ | १४.७ |
| एकूण | ७६७४ | १०० | ९२०२ | १०० | १६८७९ | १०० | २०१५७ | १०० | १४८३६६ | १०० | १३.३ |

स्त्रोत : पाटबंधारे कार्यालय जिल्हा परिषद ओरोस, सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ४.८ मध्ये विविध साधनाखाली ओलिताखालील क्षेत्राचे अध्ययन करण्यात आले आहे. जिल्ह्यात पृष्ठभागीय साधनाद्वारे एकूण ७६७४ हे. क्षेत्र ओलिताखालील असून मालवण तालुक्यात सर्वाधिक २३.८% क्षेत्र आहे. विहीरीद्वारे एकूण ९२०२ हे. क्षेत्र ओलिताखाली असून सावंतवाडी तालुक्यात सर्वाधिक क्षेत्र २२.३% हे. ओलिताखाली आहे. जिल्ह्यात निव्वळ ओलिताखालील १६८७९ क्षेत्रापैकी एकट्या मालवण तालुक्यात २२.८ क्षेत्र असल्याचे आढळते. तसेच ओलिताखालील स्थूल क्षेत्राच्या बाबतीतही मालवण तालुका अग्रेसर आहे. जिल्ह्याच्या एकूण लागवडीखालील स्थूल क्षेत्राच्या बाबतीत कुडाळ तालुक्याचे प्रमाण १८.८% असून ते अधिक आहे. जिल्ह्याच्या सरासरी पेक्षा वैभववाडी, कणकवली, मालवण आणि कुडाळ या तालुक्यात ओलिताखालील स्थूल क्षेत्राचे लागवडीखालील स्थूल क्षेत्राशी असणारे कमी प्रमाण ही नक्कीच उल्लेखनीय बाब नाही.

४.६ सारांश :

सदर प्रकरणामध्ये सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील भूमि-उपयोजन आणि पीक रचनेचा अभ्यास केलेला आहे. जिल्ह्यामध्ये तृणधान्ये, कडधान्ये आणि तेलबिया यांचे उत्पादन घेतले जाते. जिल्ह्यात भात हे मुख्य पीक असल्यामुळे ८०% उत्पादन भाताचे होते. सर्वच तालुक्यात कडधान्ये आणि तेलबिया यांचे लागवड क्षेत्र आणि उत्पादनामध्ये समाधानकारक चित्र नाही. जिल्ह्यात आंबा, काजू, नारळ, कोकम, सुपारी, आवळा, चिकू, फणस इ. फळांची लागवड आणि मिरी, लवंग, दालचिन इ. मसाला आंतरपीके घेतली जातात.

विशिष्ट अशी नैसर्गिक-भौगोलिक रचना आणि हवामान यामुळे जिल्ह्यामध्ये काही पिकाचे उत्पादन होत नाही. परंतु मागील काही वर्षात कणकवली, वैभववाडी आणि कुडाळ, दोडामार्ग तालुक्यामध्ये ऊस आणि केळी या नगदी पिकांची शेती करण्याकडे कल दिसून येत आहे. त्यामुळे भविष्यात शेती पूरक व्यवसाय म्हणून दुग्ध व्यवसायाकडे लोकांचा कल दिसून येईल. जिल्ह्यात २००१ पासून अनेक लघु, मध्यम आणि मोठे पाटबंधारे प्रकल्पांची निर्मिती होत आहे. त्यावेळी बारमाही शेती आणि पीक रचनेत फार मोठा बदल दिसून येईल आणि आर्थिक विकासास चालना मिळेल असे संशोधनातून आढळून आले.

संदर्भ सुची :

१. मुल्लाणी एम. यु./लोहकरे रोहिदास (ऑक्टोबर २००९)
'महाराष्ट्रातील शेती' डायमंड प्रकाशन पुणे पान नं. १३/१४
२. सिंधुदुर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन मार्च २००९-१० अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय महाराष्ट्र शासन मुंबई पान नं. १, ६
३. उपरोक्त पान नं. २१
४. सिंधुदुर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन मार्च २००९-१० अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय महाराष्ट्र शासन मुंबई पान नं. ७
५. उपरोक्त पान नं. १
६. जिल्हा परिषद ओरोस कृषी कार्यालय सकलित माहिती
७. उपरोक्त
८. उपरोक्त
९. उपरोक्त
१०. उपरोक्त
११. उपरोक्त
१२. उपरोक्त
१३. उपरोक्त
१४. उपरोक्त
१५. उपरोक्त
१६. सिंधुदुर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन मार्च २००९-१० अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय महाराष्ट्र शासन मुंबई पान नं. ७
१७. उपरोक्त पान नं. ७
१८. उपरोक्त पान नं. ७

प्रकरण पाचवे

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात राबविलेल्या फळझाड योजना

५.१ प्रस्तावना

कोकण विभागाच्या कृषी विकासाच्या दृष्टीने फळ बागायतीस अनन्यसाधारण महत्त्व आहे. विशेषतः कोकणातील रत्नागिरी व सिंधुदुर्ग या जिल्ह्यांची जमीन व हवामान फळपिकासाठी अतिशय पोषक आहे. फळबागायतीची लागवड नियोजन पूर्वक केल्यास फक्त या जिल्ह्याचाच नव्हे तर संपूर्ण महाराष्ट्राचा आर्थिक पाया शाश्वत व बळकट करण्याची क्षमता या जिल्ह्यांमध्ये आहे. परंतु योग्य ठिकाणी फळपिकांची निवड न केल्याने आज हजारो हेक्टरमध्ये लागवड केलेल्या बागा किफायतशीर होतीलच यांची खात्री देता येत नाही. आज कोकण विभागामध्ये जवळपास १.४० लाख हेक्टर आंबा व तेवढीच काजूची लागवड झालेली असून, त्यापैकी अधिकाधिक क्षेत्र रत्नागिरी व सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील आहे.^१

कोकणातील हवामान व जमीन फळझाड लागवडीला अनुकूल असल्यामुळे या जिल्ह्यामध्ये आंबा, काजू, नारळ, सुपारी, कोकम, चिकू, फणस इ. फळझाड लागवड झालेली दिसून येते. यामध्ये आंबा व काजू या पिकांचा मोठा वाटा आहे. कोकण कृषी विद्यापीठाने अलिकडे विकसित केलेल्या वेंगुर्ला १ व वेंगुर्ला ५ या अधिक उत्पन्न देणाऱ्या काजूच्या जाती व काजू बियाना मिळणारी वाढती किंमत यामुळे काजूच्या लागवडीला चालना मिळाली आहे. त्यामुळे काजू पिकाखालील क्षेत्र दिवसेंदिवस झपाट्याने वाढू लागले आहे. काजू पिकाच्या संरक्षणाबाबतही बदलत्या परिस्थितीत शेतकरी किडी आणि रोगाचे नियंत्रण करण्यामध्ये अधिक जागृत झाला आहे.^२

५.२ रोजगार हमी योजनेतर्गत लागवड करण्यात आलेल्या फळांविषयी माहिती

५.२.१ आंबा : आंबा पिकाखाली देशातील एकूण फळझाड लागवडीखालील क्षेत्राच्या ४२% क्षेत्र असून त्यापासून ९० लाख टन इतके उत्पादन मिळते. महाराष्ट्रात जवळ-जवळ सर्व जिल्ह्यात आंब्याची लागवड होते. कोकण विभागात सर्वात जास्त क्षेत्र लागवडीखाली असून त्यानंतर पश्चिम महाराष्ट्राचा क्रमांक लागतो. आंब्यात अ-ब-क जीवनसत्त्वे तसेच खनिजे आणि साखर भरपूर प्रमाणात असतात.

जमीन व हवामान : या पिकाला उत्तम निचऱ्याची जमीन लागते. आम्लयुक्त जमिनीत या पिकाची वाढ चांगली होते. कोकणातील डोंगर उताराच्या व वरकस पडीक जमिनी आणि दमट व कोरडे हवामान या पिकास योग्य आहेत. आंबा कलमांना पाचव्या वर्षामध्ये येणारा मोहोर फळे घेण्यासाठी ठेवावा.

सुधारीत जाती : हापूस, रत्ना, सिंधू, कोकण रुची, सुवर्णा या जाती कोकण कृषी विद्यापीठाने विकसित केल्या आहे. कोकण विभागासाठी हापूस, रत्ना, केसर, सिंधू या आंब्यांच्या जातीची लागवडीसाठी शिफारस केलेली आहे.^३

तक्ता क्र. ५.१
आंब्याचे उत्पन्न

| अ.क्र. | जात | उत्पन्न फळे/झाड | वैशिष्ट्ये |
|--------|-----------|-----------------|--|
| १ | हापूस | १५०/२५० | उत्कृष्ट चव, स्वाद रंग व टिकाऊपणा, हंगामात लवकर फळे, निर्यातीसाठी उत्तम, वर्षाआड फळे देते. |
| २ | रत्ना | २५०/३०० | प्रतिवर्षी फळे देते, मोठे फळ, फळामध्ये साका नाही |
| ३ | सिंधू | २००/२५० | गराचे प्रमाण अधिक-मध्यम फळ |
| ४ | केसर | ४००/५०० | कोकणात तसेच देशावरही चांगले उत्पन्न देते. हापूस पेक्षा दुप्पट ते अडीच पट उत्पन्न |
| ५ | पायरी | २५०/३०० | रसासाठी योग्य जात |
| ६ | कोकण रुची | २५०/३०० | खास लोणच्यासाठी जात |
| ७ | सुवर्णा | २५० | प्रतिवर्षी फळे एकसारख्या आकाराची फळे |

५.२.२ काजू : काजू हे एक परकीय चलन मिळवून देणारे महत्त्वाचे पीक आहे. आपल्या देशात काजू बियांचे उत्पादन वाढविण्यासाठी महाराष्ट्र शासनाने फळबाग विकास योजनेमधून प्रयत्न सुरु केले आहेत. महाराष्ट्रात काजू या फळझाडांची लागवड

पश्चिम किनारा पट्टीतील कोकण विभागातील रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, ठाणे आणि रायगड या जिल्ह्यात आणि कोल्हापूर जिल्ह्याच्या पश्चिम भागात आढळून येते.

जमीन व हवामान : पाण्याचा निचरा होणाऱ्या सर्व प्रकारच्या जमिनीत काजूचे पीक चांगले येते. विशेषतः वरकस जमिनीत काजूचे झाडे चांगले पोसते. समुद्र सपाटीपासून ७०० मीटर उंचीपर्यंत काजूचे पीक चांगले येते. कोकणातील उष्ण व दमट हवामानाचा पिकास फारच अनुकूल आहे. लागवडीनंतर ६ ते ७ व्या वर्षापासून उत्कृष्ट प्रतिक्या काजू बियांचे उत्पादन मिळण्यास सुरुवात होते.^४

तक्ता क्र. ५.२

विद्यापीठाने विकसित व शिफारस केलेल्या काजूच्या सुधारीत जाती

| जात | उत्पन्न (किलो/झाड) | वैशिष्ट्ये | | |
|---------------|-----------------------|------------------------------|------------------------------|-------------|
| | | फक्त किलोत बियांची संख्या | बी मधील गराचे प्रमाण % | बोडांचा रंग |
| वेंगुर्ला - १ | १५-२० | १६० | ३० | पिवळा |
| वेंगुर्ला - ४ | १५-२० | १४० | ३१ | तांबडा |
| वेंगुर्ला - ६ | १५-२० | १२५ | २८ | पिवळा |
| वेंगुर्ला - ७ | १५-२० | १०० | ३१ | पिवळा |
| वेंगुर्ला - ८ | १५-२० | ८७ | २८ | नारंगी |

५.२.३ नारळ : नारळ हे बहुवर्षायु, बहुपयोगी असे फळझाड आहे. या झाडास कल्पवृक्ष असेही म्हणतात. भारतातील नारळ लागवडी खालील एकूण क्षेत्रापैकी महाराष्ट्रात फक्त १% क्षेत्र आहे. महाराष्ट्रातील नारळ लागवडीखालील क्षेत्र प्रामुख्याने कोकण विभागापुरतेच मर्यादित आहे.

जमीन व हवामान : जमीन किमान एक मीटर खोलीपर्यंतची कसदार भुसभूसीत आणि पाण्याचा निचरा होणारी असावी. नारळाच्या झाडास फुलोरा आल्यापासून १२ महिन्यांनी त्यांची फळे पक्व होतात.

तक्ता क्र. ५.३
सुधारीत जाती

| जात | उत्पन्न (नारळ/माठ) | वैशिष्ट्ये |
|--------------------------|-----------------------|--|
| बाणवली | ८०-१०० | आयुमर्यादा ८० ते १०० वर्षे - ६ ते ८ व्या वर्षापासून फलधारणा खोबऱ्यामध्ये तेलाचे प्रमाण ६८% |
| प्रताप | १५० | बाणावली हिरवा गोल प्रकारात निवड पद्धतीने विकसित केलेली जात खोबऱ्यामध्ये तेलाचे प्रमाण ६८% |
| टी×डी (केशसंकरा) | १४० | ४ ते ५ वर्षांनंतर उत्पन्न मिळते खोबऱ्यामध्ये तेलाचे प्रमाण ७०% |
| लक्षद्वीप ऑर्डिनरी | १५० | उंच वाढणारी जात खोबऱ्यामध्ये तेलाचे प्रमाण ७२% |
| फिलिजीन्स ऑर्डिनरी | १०५ | उंच वाढणारी जात खोबऱ्याचे प्रमाण २२५ ग्रॅम/नारळ |
| डी × टी-२ | १२१ | ४.५ ते ५ वर्षात उत्पन्न मिळते. खोबऱ्यात तेलाचे प्रमाण ६७.१०% आहे. संकरीत जात |
| डी × टी (चंद्र संकरा) | ११६ | ४ ते ५ वर्षात उत्पन्न मिळते. खोबऱ्यात २१५ ग्रॅम/नारळ तेलाचे प्रमाण ६८.५% संकरीत जात |

आंतर व मिश्रपिके : लागवडीनंतर नारळाच्या बागेत सुरुवातीची ३ वर्षे अननस, पपया, केळी, सुरण; रताळी व भाजीपाला, पांढरी लिली, निशिंगंध, झेंडू तसेच माड पूर्ण वाढल्यानंतर ७-८ वर्षापासून बागेत काळी मिरी, लवंग, जायफळ, दालचिनी, केळी, हळद, अननस इ. आंतरपिके घेऊन उत्पन्न मिळविता येतो.^५

५.२.४ सुपारी : सुपारीत पोफळी, अरेकानट, पाम, बीटलनट पाम या नावाने ओळखले जाते. भारतात सुपारी खाली २५,००० हेक्टर क्षेत्र असून त्यापैकी २५०० हेक्टर क्षेत्र महाराष्ट्रात आहे. कोकण भागात सुपारीची लागवड अधिक आहे. तेथे त्याला पोफळ असे म्हणतात.

जमीन व हवामान : या पिकास समुद्रकाठच्या वाळूच्या, गाळाच्या, पाण्याचा चांगल्या प्रकारे निचरा होणाऱ्या बारमाही पाण्याचा जमिनी मानवतात. या पिकास २० ते ३५ अंश सेल्सिअस तापमान मानवते.

सुधारीत जाती :

* **श्रीवर्धिनी :** ही जात डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषी विद्यापीठाने श्रीवर्धन परिसरातील स्थानिक जातीतून निवड पद्धतीने विकसित केलेली प्रसिद्ध जात आहे. कोकणामध्ये ही जात उत्तम प्रकारे येते.

* **मंगला :** ही जात विठ्ठल या कर्नाटकातील केंद्रावर विकसित झालेली आहे. ही जात उत्पादनास चांगली आहे. पाचव्या वर्षापासून फळे लागतात.^६

५.२.५ चिकू : चिकूचे मूळ स्थान मेक्सिको हा देश असून त्याचा प्रसार इतर देशात व भारतात झाला. महाराष्ट्रातील सर्वच जिल्ह्यात चिकूची लागवड यशस्वी होऊ शकते.

जमीन व हवामान : मध्यम प्रतीच्या, उत्तम निचरा होणाऱ्या आणि बारमाही पाण्याची सोय असलेल्या जमिनीत या पिकांची लागवड करता येते. दमट आणि कोरड्या या दोन्ही हवामानात चिकूची वाढ चांगली होते.

सुधारीत जाती :

* **कालीपत्ती :** या जातीच्या झाडाची पाने गर्द हिरव्या रंगाची व फळे गोल व अंडाकृती असतात. फळाची साल पातळ असून गर गोड असतात. कोकणातील ठाणे जिल्ह्यातील डहाणू व पालघर या भागात या जातीची मोठ्या प्रमाणावर लागवड आहे.

* **क्रिकेट बॉल :** या जातीपासून मोठी गोलाकार फळे मिळतात. गर कणीदार असतो मात्र गोडी कमी आणि चवीलाही कमी असतात. फळे भरपूर लागतात.

* **छत्री :** या झाडांच्या फाद्यांची ठेवण छत्रीसारखे असते. पाने फिकट हिरव्या रंगाची असतात. फळांचा आकार काली पत्तीच्या फळाप्रमाणे असतो परंतु गोडी कमी असते.

५.२.६ कोकम :

जमीन व हवामान : पाण्याचा चांगला निचरा होणाऱ्या जमिनी या झाडास उपयुक्त आहेत. या झाडाच्या चांगल्या वाढीसाठी उष्ण व दमट हवामान योग्य आहे. विद्यापीठाने मृदूकाष्ठ कलम पद्धत विकसित केली आहे. लागवडीत ९०% मादि व १०% नराची झाडे ठेवावीत.

सुधारीत जात : * **कोकण अमृता :** विद्यापीठाने ही नवीन सुधारीत जात प्रसारीत केली आहे. या जातीची फळे मध्यम आकाराची, जाड सालीची आणि आकर्षक लाल रंगाची असून भरपूर उत्पन्न (१४० किलो/झाड) पावसाळ्यापूर्वी मिळते.

* **कोकण हातीस :** विद्यापीठाने २००६ मध्ये कोकण हातीस ही मादी जात कोकणामध्ये लागवडीसाठी शिफारस केली आहे. फळे मोठी, जाड व गर्द लाल रंगाची आहेत. १० व्या वर्षी १५० किलो फळे मिळतात.

५.३ सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील किफायतशीर फळझाड लागवडीचे नियोजन:

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात फळझाड लागवड करताना जमिनीचा उंच सखलपणा, दिशा, वातावरण, उतार इ. बाबींचा विचार अनेक वेळा करण्यात आलेला दिसत नाही. आज जिल्ह्यात अनेक श्रीमंत व्यक्तींनी मोठ्या प्रमाणावर एकक्षेत्री जमिनीची खरेदी करून लागवड केलेली आहे. त्या ठिकाणी जमिनीचा उंच सखलपणा, उतार, दिशा या बाबींचा विचार न करता लागवड केलेली आहे. अशा फळझाड लागवडी तोट्यात जाण्याची दाट शक्यता असते. या दृष्टीने काटेकोरपणे नियोजन करणे आवश्यक आहे.^६

५.३.१ टेकडीचा माथा :

सिंधुदुर्ग मध्ये सद्यस्थितीत पाण्याची कमतरता आहे. विशेषतः टेकडीच्या माथ्यावर तर पाण्याची फारच दुर्मिळता आहे. तरी देखील आंबा व काजू या दोन्हीही पिकासाठी असा भाग उत्कृष्ट आहे. टेकडीवर दव व धुके कमी प्रमाणात पडते. वाऱ्यामुळे दव लवकर सुकून जात असल्यामुळे मोहोर निकोप राहतो. त्याचबरोबर स्वच्छ आणि विपूल सुर्यप्रकाशामुळे आंबा लवकर तयार होतो. फळे चांगली मिळतात.

समुद्र किनाऱ्या लगतच्या १५ ते २० कि.मी. च्या पट्ट्यात हापूस आंबा चांगला येतो. परंतु हे देखील पूर्ण सत्य नाही. उदा. वेंगुर्ले तालुक्यामध्ये वेंगुर्ले, उभादांडा,

मोचेमाड या ठिकाणी हापूस लवकर येतो. परंतु तोच हापूस तुळस, मातोंड, आडेली हा भाग समुद्रापासून ५ ते १० कि.मी. च्या पट्ट्यात असून देखील अपेक्षेप्रमाणे चांगला येत नाही.

हापूस आंब्यासाठी हवेशीर म्हणजेच ज्या ठिकाणी चांगला वारा वाहतो व भरपूर सुर्यप्रकाश मिळतो अशी जागा योग्य असते. देवगड भागात आंबा लवकर व चांगला येतो. वेंगुर्ला, देवगड, मालवण हे तालुके समुद्र किनाऱ्या लगत आहेत. परंतु वेंगुर्ले व मालवणपेक्षा देवगडची नैसर्गिक ठेवण वेगळी आहे. वेंगुर्ले समुद्राजवळ दाभोली, तुळस व मोचेमाडचे उंच डोंगर आहेत. त्या भागात आंबा लवकर नियमित येत नाही. या उलट देवगड-विजयदुर्ग परिसरात समुद्राजवळ टेकड्या नसल्यामुळे किनाऱ्यावरून येणारे वारे थेट शिरगांवपर्यंत पोहचू शकतात. म्हणूनच देवगडला पवन चक्क्या चालतात. वान्यामुळे आंब्यांच्या पानामधून मोठ्या प्रमाणावर बाष्पीभवन होते. परिणामी आंबे लवकर व नियमित येतात. किनाऱ्या जवळील फळ झाडांना आंबा लवकर येण्यामागे दुसरे महत्त्वाचे कारण म्हणजे तापमान. त्यामुळे येथील आंबे जवळपास २० ते २५ दिवस लवकर तयार होतात. हापूस आंबा तयार होण्यासाठी सर्वसाधारण ७५५ ते ८०० तापमान लागते. यामध्ये कमाल किमान तापमानामध्ये कोकणामध्ये फारसा फरक नसतो. त्यामुळे समुद्र किनाऱ्याजवळ आंब्याची तापमान एककाची गरज लवकर पूर्ण होते. परिणामी फळे लवकर पक्व होतात. कोकणामध्ये ८० ते ११० दिवसात आंबे काढणीस तयार होतात. या उलट देशावर किमान तापमान बरेच खाली असल्यामुळे आंबे पक्व होण्यास ४ ते ४.५ महिने लागतात.

आंबा लागवड करू इच्छिणाऱ्या इतर भागातील किंवा सखल व सपाट भागातील शेतकऱ्यांना केसर, रत्ना, सिंधू, आम्रपाली या, वातावरणाच्या बदलास कमी संवेदनशील असणाऱ्या आंबा जातीची लागवड, मिश्र स्वरूपात करणे योग्य ठरते. हापूस सोबत १५ ते २० टक्के केसर अथवा रत्ना या जातीची लागवड करावी त्यामुळे फळधारणा वाढण्यास मदत होते.^९

५.३.२ काजू लागवड पूर्व नियोजन :

डोंगर उतारावर लावण्यास दुसरे महत्त्वाचे पर्यायी पीक म्हणजे काजू हापूस आंब्यासाठी योग्य असणाऱ्या ठिकाणी काजू चांगला येऊ शकतो. डोंगर उतारावर व

किनाऱ्यापासून दूर असणाऱ्या टेकड्यांची काजू लागवडीसाठी निवड करणे योग्य ठरते. सपाटीपासून (खलाटीमध्ये) तसेच दरीच्या भागात काजू कलमापासून अपेक्षित उत्पादन येत नाही. कारण येथे कलमे चांगली येतात. पण लवकर आलेला मोहर ऑक्टोबर-नोव्हेंबर मध्ये पडणाऱ्या दवाने लवकर पडून वाया जातो. या उलट टेकड्यावर वारे चांगले वाहतात. धुके कमी काळ व कमी प्रमाणात असते. त्यामुळे फळधारणा खूपच चांगली असते. रायवळ झाडांना जानेवारी-फेब्रुवारी मध्ये मोहोर येतो तेव्हा दव-धुके नसते. परिणामी फळधारणा चांगली होते. या वरील सर्व बाबीचा विचार करून काजू लागवड करणे गरजेचे आहे.^{१०}

५.३.३ नारळ, सुपारी मसाला पिके लागवड पूर्व नियोजन :

ज्या ठिकाणी पाण्याची उपलब्धता आहे उदा. नाला, नदी किनारा, टेकडीचा पायथा या जागा नारळ, सुपारी तसेच मसाला पिके लागवडीसाठी योग्य आहे. नारळाच्या लागवडीसाठी चांगल्या रोपांची निवड शासकीय रोपवाटिकेतून करावी. नारळाची लागवड करताना कमीत कमी ७.५० मीटर अंतर ठेवणे गरजेचे आहे. अन्यथा रोपे चांगली असूनही अपेक्षित उत्पादन मिळत नाही. नारळाच्या बागेत सुरुवातीस केळी, अननस ही पिके उत्तम येऊ शकतात. त्यामुळे बाग वाढविण्याचा खर्च निघू शकतो. नंतर झाडे मोठी झाल्यावर काळी मीरी, जायफळ, लवंग, दालचिनी इ. पिके घेता येतात. अलीकडेच डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषी विद्यापीठाने दिलेली संकल्पना देखील राबवता येते.

भरपूर पाण्याची उपलब्धता असल्यास चिक्ू लागवडीचा जिल्ह्यात विचार करता येतो. हे पीक अतिशय उत्कृष्ट येते. जिल्ह्यात वेंगुर्ले या ठिकाणी केलेल्या लागवडीवरून सिद्ध झाले आहे.

अशा प्रकारे जिल्ह्यात फळझाड लागवड करण्यापूर्वी वरील बाबीचा विचार करून नियोजनबद्ध लागवड केली तर फळजाड लागवड निश्चित किफायतशीर होईल.^{१५}

सिंधुदूर्ग जिल्ह्यात रोजगार हमीयोजनेअंतर्गत राबविलेली
तालुकानिहाय फळझाड योजना
१) वेंगुर्ला तालुका (क्षेत्र हेक्टरमध्ये)^{१२}

| वर्ष (१) | | आंबा (२) | काजू (३) | नारळ (४) | चिकू (५) | इतर (६) | एकूण (७) |
|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|------------|-------------|
| १९९०- ९१ | क्षेत्र | १५३.०३ | ८७.७९ | ३३.०४ | ०.०० | ०.०० | २७३.८६ |
| | टक्के | १३.५ | ५.५ | ८.३ | - | - | ८.९ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| १९९१- ९२ | क्षेत्र | १५२.४९ | २०४.६० | ६८.३९ | २.३६ | २.३६ | ४२७.८४ |
| | टक्के | १३.४ | १२.९ | १७.२ | ३४.७ | ५.९ | १४.० |
| | वाढ / घट | -०.५४ | ११६.८१ | ३५.३५ | २.३६ | २.३६ | १५३.९८ |
| १९९२- ९३ | क्षेत्र | १२८.०६ | ३५६.९८ | ७५.१६ | १.४७ | ०.०० | ४६०.२० |
| | टक्के | ११.२ | २२.५ | १८.२ | २१.६ | - | १५.० |
| | वाढ / घट | -२४.४३ | १५२.३८ | ६.७७ | -०.०५ | १.४२ | -५७.३६ |
| १९९३- ९४ | क्षेत्र | १३१.१८ | २०७.१० | ६३.१० | १.४२ | १.४२ | ४०२.८४ |
| | टक्के | ११.७ | १३.० | १५.८ | २०.८ | ३.५ | १३.१ |
| | वाढ / घट | ३.१२ | - | - | -०.८९ | २.३६ | ३२.३६ |
| १९९४- ९५ | क्षेत्र | ९२.७९ | ११२.५३ | २३.६९ | ०.०० | ०.०० | २२९.०१ |
| | टक्के | ८.१८ | ७.१ | ५.९ | - | - | ७.५ |
| | वाढ / घट | -३८.३९ | -९४.५७ | - | -१.४२ | -१.४२ | - |
| १९९५- ९६ | क्षेत्र | ८९.९४ | १३८.०० | २८.३३ | ०.०० | ०.०० | २५६.२७ |
| | टक्के | ७.९ | ८.७ | ७.१ | - | - | ८.५ |
| | वाढ / घट | -२.८५ | २५.४७ | ४.६४ | - | - | २७.२६ |
| १९९६- ९७ | क्षेत्र | ७८.९० | २२४.१८ | २९.६३ | ०.०० | ०.९६ | ३३३.६७ |
| | टक्के | ६.९ | १४.१ | ७.६ | - | २.४ | १०.९ |
| | वाढ / घट | ११.०४ | ८८.१८ | १.३ | ०.९६ | १२.२७ | -५४.१५ |
| १९९७- ९८ | क्षेत्र | ९८.६५ | १३३.०५ | ३४.५९ | ०.४६ | १३.२३ | २७९.५२ |
| | टक्के | ८.७ | ८.४ | ८.७ | २१.४ | ३३.४ | १०.५ |
| | वाढ / घट | १९.७५ | -९१.१३ | ४.९६ | १.४६ | १२.२७ | -५४.१५ |
| १९९८- ९९ | क्षेत्र | १०१.८३ | ५७.९३ | १७.३८ | १.०९ | १५.४३ | १९२.५७ |
| | टक्के | ८.९ | ३.० | ४.५ | १६.० | ३९.२ | ९.५ |
| | वाढ / घट | ३.१८ | -७५.१२ | - | -०.३७ | २.२ | -८६.९५ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|---------|---------|--------|-------|-------|---------|
| १९९९-०० | क्षेत्र | १०६.४८ | ५९.१३ | २४.२७ | ०.०० | ६.१९ | १९६.०७ |
| | टक्के | ९.७ | ४.८ | ६.७ | - | १५.६ | ६.४ |
| | वाढ / घट | ४.६५ | १.२ | ६.८९ | -१.०९ | -९.२४ | ३.५ |
| एकूण | क्षेत्र | ११३३.३५ | ११८१.२९ | ३९७.५८ | ७.८० | ३९.५९ | ३०५१.८५ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | -४६.५५ | -२८.६६ | -८.७७ | ०.०० | ६.१९ | -७७.७९ |
| २०००-०१ | क्षेत्र | ८२.९३ | १००.४२ | २६.७५ | १.३१ | १४.८३ | २२४.९३ |
| | टक्के | १६.८ | २८.१ | ३५.७ | ८४.० | १३.५ | २०.५ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| २००१-०२ | क्षेत्र | ३८.६६ | ४७.४७ | ७.५२ | ०.२५ | १६.६१ | १९०.५१ |
| | टक्के | ७.८ | १३.२ | १०.० | १६.० | १५.१ | १७.१ |
| | वाढ / घट | -४४.२७ | -५२.९५ | - | -१.०६ | १.७८ | -३४.४२ |
| २००२-०३ | क्षेत्र | २३.१६ | ९.१७ | २.५२ | ०.०० | ७.४८ | ४३.२२ |
| | टक्के | ४७ | २.५ | ३.६ | - | ६.८ | ३.९ |
| | वाढ / घट | -१५.५० | -३८.३ | -५.० | -०.२५ | -९.१३ | - |
| २००३-०४ | क्षेत्र | ३८.३९ | ३८.९५ | ६.१८ | ०.०० | १५.७५ | ९९.२७ |
| | टक्के | १५.२३ | १०.९ | ८.२ | - | १४.३ | ८.९ |
| | वाढ / घट | १५.२३ | २९.७८ | ३.६६ | - | ८.२७ | ५६.०५ |
| २००४-०५ | क्षेत्र | ३७.२२ | १०.५१ | २.५४ | ०.०० | १२.६२ | ६२.८५ |
| | टक्के | ६.७ | २.९ | ३.४ | - | ११.५ | ५.६ |
| | वाढ / घट | -१.१७ | -२८.४४ | -३.६४ | - | -३.१३ | -३६.४२ |
| २००५-०६ | क्षेत्र | ५२.८३ | २८.४६ | ४.५६ | ०.०० | ४.५६ | ९०.४१ |
| | टक्के | १०.७ | ७.९ | ६.० | - | ४.१ | ८.१ |
| | वाढ / घट | १५.६१ | १७.९५ | २.०२ | - | -८.०६ | २७.५६ |
| २००६-०७ | क्षेत्र | ५४.१७ | २५.७२ | ६.४८ | ०.०० | १०.८४ | ९७.२१ |
| | टक्के | ११.० | ७.२ | ८.६ | - | ९.८ | ८.७ |
| | वाढ / घट | १.३४ | -२.७४ | १.९२ | - | ६.२८ | -६.८ |
| २००७-०८ | क्षेत्र | ५४.१७ | ४०.४५ | ४.८४ | ०.०० | ८.२६ | १०८.३७ |
| | टक्के | ११.० | ११.७ | ६.४ | - | ७.५ | ९.७ |
| | वाढ / घट | ०.०० | १४.७३ | -१.६४ | - | -२.५८ | ११.१६ |
| २००८-०९ | क्षेत्र | ६४.८३ | २६.१६ | ७.७० | ०.०० | १३.७९ | ११२.४८ |
| | टक्के | १४.० | ७.५ | १०.२ | - | १३.२ | १०.१ |
| | वाढ / घट | १४.६६ | -१४.२९ | २.८६६ | - | ५.५३ | ४.११ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|--------|--------|-------|------|--------|---------|
| २००९-१० | क्षेत्र | ४१.०९ | २९.७१ | ५.७५ | -- | ४.९२ | ८१.४७ |
| | टक्के | ९.५ | ८.१ | ७.९ | - | ४.२ | ७.३ |
| | वाढ / घट | -२७.८४ | ३.५५ | -१.९५ | - | -८.८७ | -३१.०१ |
| एकूण | क्षेत्र | ४९१.४५ | ३५७.०२ | ७४.८४ | १.५६ | १०९.६२ | १११०.७२ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | -४१.८४ | -७०.७१ | - | १.३१ | -९.९१ | - |
| | | | | २१.०० | | | १४३.२६ |

स्त्रोत : तालुका कृषी कार्यालय वेंगुर्ला, जिल्हा सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ५.४ मध्ये वेंगुर्ला तालुक्यातील रोजगार हमी योजनेनंतर्गत झालेली फळझाड लागवडीचे अध्ययन करण्यात आले आहे. १९९१-९१ ते १९९९-२००० या काळात आंब्याखाली एकूण ११३३.३५ हे. क्षेत्र, काजूचे १५८१.२९ हे. क्षेत्र, नारळाचे ३९७.५८ हे. क्षेत्र, चिकू ७.८० हे. क्षेत्र आणि इतर फळाखाली ३९.५९ हे. क्षेत्र असल्याचे आढळते. रोजगार हमी योजनेनंतर्गत २०००-०१ ते २००९-१० या काळाचा विचार करता आंबा या पिकाखाली केवळ ४९१.४५ हे क्षेत्र, काजू ३५७.०२ हे. क्षेत्र नारळ ७४.८४ हे., चिकू १.५६ हे. क्षेत्र तर इतर फळ पिकाखाली १०९.६२ हे. क्षेत्र असल्याचे आढळून आले. रोजगार हमी योजनेनंतर प्रामुख्याने आंबा, काजू, नारळ, चिकू, या पिकाच्या लागवडी खालील क्षेत्र कमी झाले आहे ही नक्कीच उल्लेखनीय बाब नाही.

तक्ता क्र. ५.५

२) कणकवली तालुका (हेक्टरमध्ये क्षेत्र) ^{१३}

| वर्ष (१) | | आंबा (२) | काजू (३) | नारळ (४) | चिकू (५) | इतर (६) | एकूण (७) |
|----------|----------|----------|----------|----------|----------|---------|----------|
| १९९०-९१ | क्षेत्र | १३२.८७ | ४१०.९६ | २९.५१ | ०.०० | ०.०० | ५७२.७० |
| | टक्के | १५.२ | ६.० | ५.६ | - | - | ६.९ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| १९९१-९२ | क्षेत्र | १३८.४२ | ९७९.७५ | ८८.९८ | ०.०० | ०.५५ | १२०७.७० |
| | टक्के | १५.९ | १४.५ | १९.९ | - | १.० | १४.५ |
| | वाढ / घट | ५.५५ | ५६८.७९ | ५९.४७ | - | ०.५५ | ६३४.३६ |
| १९९२-९३ | क्षेत्र | ८३.३५ | ९५०.४८ | ८९.३४ | ०.०० | ४.७९ | ११२७.९६ |
| | टक्के | ९.५ | १४.२ | १७.० | - | ८.८ | १३.६ |
| | वाढ / घट | -५५.०७ | -२९.२७ | ०.३६ | - | ४.२४ | -७९.७४ |
| | क्षेत्र | ८२.४७ | ८३३.७८ | ७४.३१ | ०.०० | ८.६२ | ९९९.१८ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|--------|---------|--------|------|-------|---------|
| १९९३-९४ | टक्के | ९.४ | १२.० | १४.१ | - | १५.८ | १२.० |
| | वाढ / घट | -०.८८ | -११६.७ | - | - | ३.८३ | - |
| १९९४-९५ | क्षेत्र | ६०.०२ | ४००.१४ | ४०.०८ | ०.०० | २.२७ | ५०२.५१ |
| | टक्के | ६.९ | ५.७ | ७.६ | - | ४.१ | ६.० |
| | वाढ / घट | -२२.४५ | - | - | - | -६.३५ | - |
| १९९५-९६ | क्षेत्र | ४६.४८ | ५९९.३३ | ४२.७९ | ०.०० | २.५९ | ६८३.१९ |
| | टक्के | ५.३ | ८.९ | ८.१ | - | ४.४ | ८.२ |
| | वाढ / घट | -१३.५४ | ११९.१९ | २.७१ | - | ०.३२ | १८०.६८ |
| १९९६-९७ | क्षेत्र | ४८.२३ | ६६८.९८ | ३५.९४ | ०.०० | ४.०८ | ७५७.२३ |
| | टक्के | ५.५ | ९.६ | ६.८ | - | ८.० | ९.१ |
| | वाढ / घट | १.७५ | ७७.६५ | -६.८५ | - | १.४९ | ७४.०४ |
| १९९७-९८ | क्षेत्र | ६५.०४ | ६८२.०४ | ३९.६६ | ०.०० | ११.१३ | ७९०.३९ |
| | टक्के | ७.४ | ९.९ | ६.० | - | २०.४ | ९.५ |
| | वाढ / घट | १६.८१ | १३.०६ | -४.२८ | - | ७.०५ | ३२.६४ |
| १९९८-९९ | क्षेत्र | १२३.०४ | ५८७.५७ | ४६.९६ | ०.०० | ७.०८ | ७६४.६५ |
| | टक्के | १४.६ | ८.६ | ९.० | - | १३.० | ९.२ |
| | वाढ / घट | ५८.० | -९४.४७ | १५.३ | - | -४.०५ | -२५.२२ |
| १९९९-०० | क्षेत्र | ९०.२६ | ७२४.३९ | ४४.७३ | ०.०० | १३.२९ | ८७२.६७ |
| | टक्के | १०.३ | १०.६ | ८.९ | - | २४.५ | ११.० |
| | वाढ / घट | -३२.७८ | १३६.८२ | -२.२३ | - | ६.२९ | १०८.०२ |
| एकूण | क्षेत्र | ८७०.१९ | ६८२९.९६ | ५२४.३० | - | ५४.४० | ८२७८.१८ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | -४२.६१ | ३१३.४३ | १५.२२ | - | १३.२९ | २९९.३३ |
| २०००-०१ | क्षेत्र | ६०.८४ | ७८९.१५ | २४.९५ | ०.०० | २६.७० | ९०१.६४ |
| | टक्के | ३०.६ | ४०.५ | २१.७ | - | १९.६ | ३७.५ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| २००१-०२ | क्षेत्र | ४०.५४ | ३७६.१२ | ३८.६० | २.७० | ३८.१७ | ४९६.१३ |
| | टक्के | २०.४ | १९.३ | ३३.६ | ३१.४ | २८.१ | २०.६ |
| | वाढ / घट | -२०.३ | - | १३.६५ | २.७० | ११.४७ | - |
| २००२-०३ | क्षेत्र | १२.२३ | १०३.६० | १०.३१ | १.४० | १०.५२ | १३८.०६ |
| | टक्के | ६.१ | ५.३ | ८.९ | १६.२ | ७.७ | ५.७ |
| | वाढ / घट | -२७.८९ | - | - | -१.३ | - | - |
| | | | २७२.२७ | २८.२९ | | २७.६५ | ३५८.०४ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|--------|---------|--------|-------|--------|---------|
| २००३-०४ | क्षेत्र | १५.५८ | १०८.६० | ११.०८ | ३.२० | ३.०८ | १४१.२३ |
| | टक्के | ७.८ | ५.० | ९.६ | ३६.८ | २.३ | ५.९ |
| | वाढ / घट | ३.३५ | ५.० | ०.७७ | १.८० | -७.४४ | ३.१७ |
| २००४-०५ | क्षेत्र | १६.०४ | ६९.७८ | ३.८९ | ०.३० | ८.२६ | ९८.२७ |
| | टक्के | ८.० | ३.८ | ३.४ | ३.६ | ६.० | ४.० |
| | वाढ / घट | ०.४६ | -३८.८२ | -७.१९ | -२.९० | ५.१८ | -४३.९५ |
| २००५-०६ | क्षेत्र | १९.८७ | ११३.५६ | ८.८९ | ०.२० | २०.४४ | १६२.९६ |
| | टक्के | १०.० | ५.८ | ७.७ | २.४ | १५.० | ५.८ |
| | वाढ / घट | ३.८३ | ४३.७८ | ५.० | -०.१० | १२.१८ | ६५.६८ |
| २००६-०७ | क्षेत्र | १०.३१ | ११३.२४ | ५.२२ | ०.४० | १५.४३ | १४४.६० |
| | टक्के | ५.१ | ५.६ | ४.५ | ४.८ | ११.३ | ६.० |
| | वाढ / घट | -९.५६ | -०.३२ | -३.६७ | ०.२० | -५.०१ | -१८.३६ |
| २००७-०८ | क्षेत्र | १०.१९ | ६६.२३ | ३.४१ | ०.३० | ८.३४ | ८८.४७ |
| | टक्के | ४.९ | ३.४ | ३.० | ३.६ | ६.१ | ३.७ |
| | वाढ / घट | -०.१२ | -४७.०१ | -१.८१ | -०.१० | -७.०९ | -५६.१३ |
| २००८-०९ | क्षेत्र | ९.४८ | ९७.६४ | ४.४५ | ०.१० | २.७० | ११४.३७ |
| | टक्के | ४.७ | ६.५ | ७.६ | १.२ | २.० | ४.७ |
| | वाढ / घट | -०.१७ | ३१.४१ | १.०४ | -०.२० | -५.६४ | २५.९ |
| २००९-१० | क्षेत्र | ३.५८ | १०६.७६ | ३.९७ | ०.०० | २.०७ | ११६.२८ |
| | टक्के | २.४ | ५.१ | ३.४ | - | १.९ | ५.१ |
| | वाढ / घट | -५.९ | ९.१२ | -०.४८ | ०.१० | -०.६३ | -१.९१ |
| एकूण | क्षेत्र | १९८.६६ | १९४४.६८ | ११४.७७ | ८.६ | १३५.७१ | २४०२.४२ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | -५७.८६ | - | २०.९८ | ०.०० | २४.६३ | ७८५.३३ |

स्त्रोत : तालुका कृषी कार्यालय कणकवली जिल्हा सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ५.५ मध्ये कणकवली तालुक्यातील विविध फळाखाली असणारे क्षेत्र दर्शविले आहे. १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात सर्व पिकाखाली एकूण ८२७८.८४ हेक्टर क्षेत्र असून या काळात आंब्याचे एकूण क्षेत्र ८७०.१८ हे. इतके आहे. याच काळात सर्वात जास्त क्षेत्र काजूचे असून ते ६२२९.९६ हे. इतके आहे. मात्र याच काळात चिकू या पिकाखाली काहीच क्षेत्र नसल्याचे आढळते. १९९०-९१ मध्ये आंब्याचे क्षेत्र १३२.८७ हे. (१५.२%) इतके असून त्यास १९९९-२००० पर्यंत ९०२६ इतकी घट झाली. अभ्यास काळात आंब्याचे क्षेत्र -४२.६१ इतके कमी झाल्याचे आढळते.

२०००-०१ ते २००९-०१ या काळात काजूचे सर्वाधिक क्षेत्र १९४४.६८ हे. असून आंब्याचे १९८६६ हे. नारळ ११४.९७ हे., इतर पिकाखाली १३५.७१ हे. क्षेत्र आहे. २०००-०१ मध्ये आंब्याचे क्षेत्र ६०.८४ हे. वरून २००९-१० पर्यंत ३.५८ हे. पर्यंत कमी झाले. मात्र याच काळात चिकू आणि इतर फळांचे क्षेत्र काही प्रमाणात वाढल्याचे संशोधनकर्त्याला आढळते. यावरून रोजगार हमी योजनेंतर्गत फळझाड लागवड कार्यक्रम राबवून सुद्धा आंबा, काजू, नारळ या पिकाखालील क्षेत्र हळूहळू कमी होत गेले हे विकासाच्या दृष्टीने योग्य नाही.

तक्ता क्र. ५.६

३) कुडाळ तालुका (क्षेत्र हेक्टरमध्ये)^{१४}

| वर्ष (१) | | आंबा (२) | काजू (३) | नारळ (४) | चिकू (५) | इतर (६) | एकूण (७) |
|----------|----------|----------|----------|----------|----------|---------|----------|
| १९९०-९१ | क्षेत्र | ३५८.२५ | २०५.७४ | १६९.९९ | ०.०० | २.६० | ७३६.५८ |
| | टक्के | २०.३ | ३.१ | ७.८ | - | ४.३ | ६.९ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| १९९१-९२ | क्षेत्र | २६६.५१ | ५४४.६६ | ४०३.५४ | ०.०० | १.५० | १२१६.२१ |
| | टक्के | १५.१ | ८.३ | १८.० | - | २.५ | ११.४ |
| | वाढ / घट | -९७.७४ | ३३८.९२ | २३३.५५ | - | -१.१ | ४७९.६३ |
| १९९२-९३ | क्षेत्र | १७३.७६ | ७४१.२४ | २६५.२० | ०.०० | १.९० | ११८२.१० |
| | टक्के | ९.८ | ११.३ | ११.८ | - | ३.१ | ११.१ |
| | वाढ / घट | -९२.७५ | १९६.५८ | - | - | -०.४० | -३४.११ |
| १९९३-९४ | क्षेत्र | १६१.६५ | ७११.५० | २३४.९० | ०.०० | २.०० | १११०.०५ |
| | टक्के | ९.१ | १०.८ | १०.५ | - | ३.३ | १०.४ |
| | वाढ / घट | -१२.११ | -३०.१६ | -३०.३ | - | ०.१० | -७२.०५ |
| १९९४-९५ | क्षेत्र | ११७.६३ | ७०४.२३ | २३८.९६ | ०.०० | ४.७० | ११६५.५२ |
| | टक्के | ६.६ | १०.७ | १०.७ | - | ७.७ | १०.९ |
| | वाढ / घट | -४४.०२ | -७.२७ | ४.०६ | - | २.७० | ५५.४७ |
| १९९५-९६ | क्षेत्र | ११७.३० | ७५६.१४ | २२९.८३ | ०.०० | २.३९ | ११०५.६६ |
| | टक्के | ६.५ | ११.५ | १०.४ | - | ४.० | १०.४ |
| | वाढ / घट | -०.३३ | ५१.९१ | -९.१३ | - | २.३१ | -६०.१४ |
| १९९६-९७ | क्षेत्र | ८६.१९ | ९०३.८० | १९२.५६ | ०.०० | ४.४७ | ११८७.०२ |
| | टक्के | ४.८ | १३.७ | ८.६ | - | ७.४ | ११.३ |
| | वाढ / घट | -३१.१ | १४७.६६ | -३७.२७ | - | २.०८ | -८१.३६ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|---------|---------|--------|-------|--------|----------|
| १९९७-९८ | क्षेत्र | ८४.६६ | ६६५.६२ | १३०.०५ | ०.०० | १८.२० | ८९८.५३ |
| | टक्के | ४.७ | १०.१ | ५.८ | - | ३०.४ | ८.४ |
| | वाढ / घट | -१.५३ | - | -६२.५१ | - | १३.७३ | -२८८.४९ |
| १९९८-९९ | क्षेत्र | २०८.०६ | ७२७.४३ | १७८.९५ | ०.०० | १०.५६ | ११२५.०० |
| | टक्के | ११.८ | ११.१ | ८.० | - | १७.७ | १०.६ |
| | वाढ / घट | १२३.४ | ६१.८१ | ४८.९ | - | -७.६४ | २२५.४७ |
| १९९९-०० | क्षेत्र | १९०.३२ | ५९१.४३ | १८८.४२ | ०.०० | ११.३८ | ८९१.५५ |
| | टक्के | ११.३ | ९.० | ८.४ | - | १९.० | ९.२ |
| | वाढ / घट | -१७.७४ | -१३६ | ९.४७ | - | ०.८२ | -१४३.७८ |
| एकूण | क्षेत्र | १७६४.३३ | ६५५१.७९ | २२३२.४ | ०.०० | ५९.७ | १०६०८.२२ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | - | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | - | - | १८.४३ | - | ८.७८ | २४४.९७ |
| २०००-०१ | क्षेत्र | १०८.१७ | ६५७.७२ | १६१.८३ | ०.०० | ८.६३ | ९३६.३५ |
| | टक्के | २५.७ | ३६.२ | ३५.६ | - | २.१ | ३०.६ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| २००१-०२ | क्षेत्र | ७३.२३ | २९६.४१ | ८२.३५ | ७.५२ | ८८.५० | ५४८.०१ |
| | टक्के | १७.४ | १६.३ | १८.१ | ५२.८ | २१.८ | १७.६ |
| | वाढ / घट | -३४.९४ | - | -७९.४८ | ७.५२ | ७९.८७ | -३८८.३४ |
| २००२-०३ | क्षेत्र | १५.३५ | ७२.४६ | ३२.८४ | ०.२० | ४४.९१ | १६५.७६ |
| | टक्के | ३.६ | ४.० | ७.२ | १.४ | ११.० | ५.३ |
| | वाढ / घट | -५७.८८ | - | -४९.५१ | -७.३२ | - | -३८२.२५ |
| २००३-०४ | क्षेत्र | ४०.८२ | १०६.९३ | २८.३६ | २.९५ | २१.३१ | २००.३७ |
| | टक्के | ९.७ | ५.८ | ६.२ | २०.७ | ५.२ | ६.४ |
| | वाढ / घट | २८.४७ | ३४.४७ | -४.४८ | -२.७५ | २३.६ | ३४.६१ |
| २००४-०५ | क्षेत्र | २५.९० | ८०.०७ | ३०.३४ | १.३३ | १०७.४८ | २४५.१२ |
| | टक्के | ६.१ | ४.४ | ६.७ | ९.३ | २६.५ | ७.८ |
| | वाढ / घट | -१४.९२ | -२६.८६ | १.९८ | -१.६२ | ८६.१७ | ४४.७५ |
| २००५-०६ | क्षेत्र | ३७.१५ | ९१.११ | २५.५६ | ०.९० | ४१.५१ | १९६.२३ |
| | टक्के | ८.८ | ५.० | ५.६ | ६.३ | १०.२ | ६.३ |
| | वाढ / घट | ११.२५ | ११.०४ | -४.७८ | -०.४३ | - | -४८.८९ |
| २००६-०७ | क्षेत्र | २६.१६ | १२२.३० | १९.८९ | ०.३४ | ५४.५८ | २२३.२७ |
| | टक्के | ६.२ | ६.७ | ४.३ | २.४ | १३.४ | ७.१ |
| | वाढ / घट | -१०.९९ | ३१.१९ | -५.६७ | -०.५६ | १३.०६ | २६.९४ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|--------|---------|--------|-------|--------|---------|
| २००७-०८ | क्षेत्र | ३६.९१ | ११३.१५ | २२.२३ | ०.०० | १२.०८ | १८४.३७ |
| | टक्के | ८.७ | ६.२ | ४.९ | - | ३.० | ५.९ |
| | वाढ / घट | १०.७५ | ९.१५ | २.३४ | -०.३४ | -४२.५ | -३८.८ |
| २००८-०९ | क्षेत्र | ३२.३० | १३८.९४ | २८.९६ | ०.९० | १७.०९ | २१८.२५ |
| | टक्के | ७.६ | ७.६ | ६.३ | ६.३ | ४.२ | ७.० |
| | वाढ / घट | -४.६१ | २५.७९ | ६.७३ | ०.९० | ५.०१ | ३३.८२ |
| २००९-१० | क्षेत्र | २३.६४ | १३४.९६ | २०.९८ | ०.१० | ८.५३ | १८८.२१ |
| | टक्के | ६.२ | ७.२ | ४.६ | ०.७ | २.१ | ६.० |
| | वाढ / घट | -८.६६ | -३.९८ | -८.०४ | -०.८० | -८.५६ | -२९.९८ |
| एकूण | क्षेत्र | ४१९.६३ | १८१४.०५ | ४५३.३४ | १४.२४ | ४०४.६२ | ३१०५.८८ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | -८४.५३ | ५२२.७८ | - | ०.१० | ०.१० | ७४८.१४ |

स्त्रोत : तालुका कृषी कार्यालय कुडाळ जिल्हा सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ५.६ मध्ये कुडाळ तालुक्यातील फळ पिकाखालील क्षेत्राचे अध्ययन करण्यात आले आहे. कुडाळ तालुक्यात १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात विविध फळाखाली एकूण १०६०८.२२ हे. क्षेत्र असून यापैकी आंब्याचे १७६४.३३ हे. क्षेत्र, काजू ६५५१.७९, नारळ २२३२.४, इतर फळांचे ५९.७ हे. क्षेत्र असून चिकू या पिकाची लागवड झालेली आढळत नाही. २०००-०१ ते २००९-१० या काळात विविध फळाखाली एकूण ३१०५.८८ हे. इतके क्षेत्र असून यापैकी आंबा ४१९.६३ हे., काजू १८१४.०५ हे., नारळ ४५३.३४ हे., चिकू १४.२४ हे. आणि इतर फळाखाली ४०४.६२ हे. क्षेत्र असल्याचे आढळून आले. आंबा, काजू या पिकांचे क्षेत्र कमी झाले असले तरी नारळ, चिकू व इतर फळांची उल्लेखनीय लागवड झाल्याचे आढळते. यावरून, आंबा, काजू या पारंपारिक पिकांपेक्षा फळबागायतदार शेतकरी नारळ, चिकू, सुपारी या पिकांकडे वळल्याचे आढळते. म्हणजेच पीक रचनेत हळूहळू बदल होत असल्याचे संशोधनातून आढळून येते.

तक्ता क्र. ५.७

४) मालवण तालुका (क्षेत्र हेक्टरमध्ये) ^{१५}

| वर्ष (१) | | आंबा (२) | काजू (३) | नारळ (४) | चिकू (५) | इतर (६) | एकूण (७) |
|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|------------|-------------|
| १९९०- ९१ | क्षेत्र | १९२.६० | १४२.३९ | ५२.११ | ०.०० | ०.०० | ३८७.१० |
| | टक्के | १०.७ | ३.० | ४.४ | - | - | ५.० |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| १९९१- ९२ | क्षेत्र | २५८.१३ | ४०१.१२ | १७०.७७ | ०.०० | १३.८० | ८४३.८२ |
| | टक्के | १४.४ | ८.६ | १४.७ | - | १६.० | १०.९ |
| | वाढ / घट | ६५.५३ | २५८.७३ | ११८.६६ | - | १३.८० | ४५६.७२ |
| १९९२- ९३ | क्षेत्र | १९४.११ | ५४३.५९ | १५७.२३ | ०.०० | १.८८ | ८९६.८१ |
| | टक्के | १०.८ | ११.६ | १३.५ | - | २.१ | ११.६ |
| | वाढ / घट | -६४.०२ | १४२.४७ | -१३.५४ | - | - | ५२.९९ |
| १९९३- ९४ | क्षेत्र | २०९.८३ | ५७७.८९ | १४१.३४ | ०.०० | ०.४५ | ९२९.५१ |
| | टक्के | ११.७ | १२.४ | १२.२ | - | ०.५ | १२.० |
| | वाढ / घट | ६४.२ | ३४.३ | -१५.८९ | - | -१.४३ | ३२.७ |
| १९९४- ९५ | क्षेत्र | १९१.०१ | ३६४.७३ | १३०.०९ | ०.०० | ०.६५ | ६८६.४८ |
| | टक्के | १०.६ | ७.८ | ११.२ | - | ०.७ | ८.९ |
| | वाढ / घट | -१८.८२ | - | -११.२५ | - | -०.२० | - |
| १९९५- ९६ | क्षेत्र | १०२.२६ | ४७१.७७ | ८६.६० | ०.०० | १.०० | ६६१.६३ |
| | टक्के | ५.७ | १०.१ | ७.४ | - | १.१ | ८.६ |
| | वाढ / घट | -१८.७५ | १०७.०४ | -४३.४९ | - | ०.३५ | -२४.८५ |
| १९९६- ९७ | क्षेत्र | १७९.७५ | ५८९.३८ | १६६.२० | ०.०० | ४.८७ | ९४०.२० |
| | टक्के | १०.० | १२.६ | १४.३ | - | ५.६ | १२.२ |
| | वाढ / घट | ७७.४९ | ११७.६१ | ७९.६ | - | ३.८७ | २७८.५७ |
| १९९७- ९८ | क्षेत्र | १४५.५१ | ५८७.४७ | ८८.८९ | ०.०० | २०.१७ | ८४२.०४ |
| | टक्के | ८.१ | १२.६ | ७.६ | - | २३.४ | १०.९ |
| | वाढ / घट | -३४.२४ | -१.९१ | -७७.३१ | - | १५.३ | -९८.१६ |
| १९९८- ९९ | क्षेत्र | १८०.०६ | ५००.६२ | ७१.३० | ०.०० | २९.०४ | ७८१.०२ |
| | टक्के | १०.० | १०.७ | ६.१ | - | ३३.७ | १०.१ |
| | वाढ / घट | ३४.५५ | -८६.८५ | -१७.५९ | - | ९.१३ | ६१.०२ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|---------|---------|---------|-------|-------|---------|
| १९९९-०० | क्षेत्र | १३५.३३ | ४७०.५० | ९३.५५ | ०.०० | १४.३० | ७१३.६८ |
| | टक्के | ८.० | १०.१ | ८.० | - | १६.६ | ९.२ |
| | वाढ / घट | -४४.७३ | ३०.१२ | २२.२५ | - | ५.७४ | ६७.३४ |
| एकूण | क्षेत्र | १७८८.५९ | ४६४९.४६ | ११५८.०८ | ०.०० | ८६.१३ | ७६८२.२९ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | - | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | -५७.२७ | ३२८.११ | ४१.५५ | - | १४.३० | ३२६.५८ |
| २०००-०१ | क्षेत्र | ९१.९५ | ५२०.८९ | ८९.४० | ०.०० | ३२.५८ | ७३४.८२ |
| | टक्के | १३.९ | ३१.५ | ३१.३ | - | १९.२ | २६.५ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| २००१-०२ | क्षेत्र | ७५.१७ | २२७.६७ | ३०.४० | १.३५ | २०.१६ | ३५४.७५ |
| | टक्के | ११.४ | १३.७ | १०.५ | १४.० | ११.९ | १२.६ |
| | वाढ / घट | -१६.७८ | - | -५९.० | १.३५ | - | - |
| २००२-०३ | क्षेत्र | ३६.९८ | ७१.४५ | १८.३६ | १.४५ | २१.१८ | १४९.४४ |
| | टक्के | ५.६ | ४.३ | ६.४ | १५.० | १२.५ | ५.३ |
| | वाढ / घट | -३८.१९ | - | -१२.०४ | ०.१ | १.०२ | - |
| २००३-०४ | क्षेत्र | ६५.४५ | ५०.४२ | २१.८४ | ०.३० | १४.१२ | १९२.१३ |
| | टक्के | ९.९ | ३.० | ७.६ | ३.१ | ८.३ | ६.९ |
| | वाढ / घट | २८.४७ | -२१.०३ | ३.४८ | -१.१५ | -७.०६ | ४२.६९ |
| २००४-०५ | क्षेत्र | ८६.७४ | ६३.१८ | १६.५६ | १.६० | १३.७६ | १८१.८४ |
| | टक्के | १३.१ | ३.८ | ५.७ | १६.६ | ८.१ | ६.५ |
| | वाढ / घट | २१.२९ | १२.७६ | -५.२८ | १.३० | ०.३६ | -१०.२९ |
| २००५-०६ | क्षेत्र | ६८.०३ | १२४.२३ | १३.५४ | १.६३ | २१.३९ | २२८.८२ |
| | टक्के | १०.३ | ७.५ | ४.७ | १६.९ | १२.८ | ८.२ |
| | वाढ / घट | -१८.७१ | ८८.०५ | -३.०२ | -०.०३ | ७.६३ | ४६.९८ |
| २००६-०७ | क्षेत्र | ७३.४८ | १६५.६७ | २२.९७ | १.११ | ३.६० | २६६.८३ |
| | टक्के | ११.१ | १०.० | ७.९ | ११.५ | २.१ | ९.६ |
| | वाढ / घट | ५.४५ | ४१.४४ | ९.४३ | -०.५२ | - | ३८.०१ |
| २००७-०८ | क्षेत्र | ५१.७६ | १५७.५५ | ३१.६८ | १.३९ | ६.६४ | २४९.०२ |
| | टक्के | ७.८ | ९.५ | ११.० | १४.४ | ३.९ | ८.९ |
| | वाढ / घट | -२१.७२ | -८.१२ | ८.७१ | ०.२९ | ३.०४ | -१७.८१ |
| २००८-०९ | क्षेत्र | ८४.७५ | १४३.४१ | २९.८६ | ०.५० | १७.१४ | २७५.६६ |
| | टक्के | १२.७ | ८.६ | १०.३ | ५.१ | १०.१ | ९.९ |
| | वाढ / घट | ३२.९९ | १४.१४ | -१.८२ | -०.८९ | १०.५ | २६.६४ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|--------|---------|--------|-------|--------|---------|
| २००९-१० | क्षेत्र | २४.८८ | ८८.९० | १२.६१ | ०.३० | ८.७६ | १३५.४५ |
| | टक्के | ३.७ | ५.३ | ४.३ | ३.१ | ५.० | ४.८ |
| | वाढ / घट | -५९.८७ | -५४.५१ | -१७.२५ | -०.२० | -८.३४ | -१४०.२१ |
| एकूण | क्षेत्र | ६५८.३९ | १६५३.३७ | २८७.२२ | ९.६३ | १६९.१२ | २७६८.९६ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | -६७.०७ | ४३१.९९ | -७६.७९ | ०.३ | २३.८२ | ५९९.३७ |

स्त्रोत : तालुका कृषी कार्यालय मालवण जिल्हा सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ५.७ मध्ये मालवण तालुक्यातील फळबाग योजनेपूर्वी आणि योजनेनंतरची परिस्थिती दर्शवली आहे. १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात एकूण ७६८२.२९ हे. फळझाडलागवड करण्यात आली होती. त्यापैकी सर्वात जास्त क्षेत्र काजू या पिकाखाली ४६४९ हे. इतके असून आंबा १७८८.५९ हे., नारळाचे ११५८.०८ हे., इतर फळाखाली ८६.१३ हे. क्षेत्र होते. फळबाग योजनेंतर २०००-०१ ते २००९-१० या काळात एकूण विविध फळाखालील २७.६८.९६ हे. क्षेत्र असून आंबा ६५८.३९ हे., काजू १६५३.३७ हे. तर नारळ २८.२२ हे. क्षेत्र होते. या तिन्ही पिकांचे क्षेत्र कमी झाल्याचे आढळते. याच काळात चिकूचे क्षेत्र ९.६३ इतके वाढले, तर इतर फळांचे क्षेत्र १६९.१२ हे. ने वाढले असे स्पष्ट चित्र संशोधनातून प्रत्यक्ष दर्शनी आढळून आले. यावरून, मालवण तालुक्यात आंबा आणि काजू या पिकाखालील क्षेत्र झपाट्याने कमी होत गेल्याचे संशोधनातून आढळून येते ही तशी प्रगतीच्या दृष्टीने योग्य नाही.

तक्ता क्र. ५.८

५) वैभववाडी तालुका (क्षेत्र हेक्टरमध्ये)^{१६}

| वर्ष (१) | | आंबा (२) | काजू (३) | नारळ (४) | चिकू (५) | इतर (६) | एकूण (७) |
|----------|----------|----------|----------|----------|----------|---------|----------|
| १९९०-९१ | क्षेत्र | ४७.०७ | १०५.९९ | ४.९७ | ०.०० | ०.०० | १५८.०३ |
| | टक्के | ११.६ | ३.७ | ३.७ | - | - | ४.६ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| १९९१-९२ | क्षेत्र | ४१.८६ | ३८४.९५ | ११.८५ | ०.०० | ४.०० | ४४२.६६ |
| | टक्के | १०.३ | १३.४ | ८.२ | - | १७.८ | १२.८ |
| | वाढ / घट | -५.२१ | २७८.९६ | ६.८८ | - | ४ | २८४.६३ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|--------|---------|--------|------|-------|---------|
| १९९२-९३ | क्षेत्र | ४०.४० | ४०८.१४ | १६.६० | ०.०० | १.१० | ४६६.२४ |
| | टक्के | ९.९ | १४.२ | १२.५ | - | ४.९ | १३.५ |
| | वाढ / घट | -१.४६ | २३.१९ | ४.७५ | - | -२.९ | २३.५८ |
| १९९३-९४ | क्षेत्र | ५०.६० | ५३३.४२ | २२.९८ | ०.०० | ४.०० | ६११.०० |
| | टक्के | १२.४ | १८.५ | १७.३ | - | १७.८ | १७.८ |
| | वाढ / घट | १०.२ | १२५.२८ | ६.३८ | - | २.९ | १४४.७६ |
| १९९४-९५ | क्षेत्र | ३७.३७ | २४९.३८ | १२.०४ | ०.०० | ०.०० | २९८.७९ |
| | टक्के | ९.२ | ८.६ | ९.० | - | - | ८.७ |
| | वाढ / घट | -१३.२३ | - | -१०.९४ | - | -४ | - |
| १९९५-९६ | क्षेत्र | २५.२८ | २३७.४७ | १४.९१ | ०.०० | ०.०० | २७७.६६ |
| | टक्के | ६.२ | ८.२ | ११.२ | - | - | ८.० |
| | वाढ / घट | -१२.०९ | -११.९१ | २.८७ | - | ० | -२१.१३ |
| १९९६-९७ | क्षेत्र | ३१.९३ | २३४.७६ | १२.३३ | ०.०० | ०.०० | २७९.०२ |
| | टक्के | ७.८ | ८.१ | ९.२ | - | - | ८.१ |
| | वाढ / घट | ६.६५ | -२.७१ | -२.५८ | - | ० | १.३६ |
| १९९७-९८ | क्षेत्र | ३५.८८ | १६२.०६ | २१.८० | ०.०० | ९.८२ | २२९.५६ |
| | टक्के | ८.८ | ५.६ | १६.४ | - | ४४.० | ६.६ |
| | वाढ / घट | ३.९५ | -७२.७ | ९.४७ | - | ९.८२ | -४९.४६ |
| १९९८-९९ | क्षेत्र | ४३.६६ | २८४.१२ | ७.६८ | ०.०० | १.३० | ३३६.७६ |
| | टक्के | १०.७ | ९.८ | ५.८ | - | ५.७ | ९.८ |
| | वाढ / घट | ७.७८ | १२०.०६ | -१४.१२ | - | -८.५२ | १०७.२ |
| १९९९-०० | क्षेत्र | ५१.६३ | २७०.७१ | ७.६२ | ०.०० | २.२० | ३३२.१६ |
| | टक्के | १२.७ | ९.४ | ५.६ | - | ९.८ | १०.१ |
| | वाढ / घट | ७.९७ | -११.४१ | -०.०६ | - | ०.९ | -४.६ |
| एकूण | क्षेत्र | ४०५.६८ | २८७१.०० | १३२.७८ | ०.०० | २२.४२ | ३४३०.३७ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | - | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | ४.५६ | १६४.७२ | २.६५ | - | २.२ | १७४.१३ |
| २०००-०१ | क्षेत्र | ४४.१५ | ३००.९५ | ११.२२ | ०.०० | २.६० | ३५८.९२ |
| | टक्के | ३३.७ | ३०.५ | २५.३ | - | ११.८ | ३०.७ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| २००१-०२ | क्षेत्र | ३१.७५ | २४८.६३ | ४.४२ | ०.१५ | ०.६५ | २८५.६० |
| | टक्के | २४.२ | २५.२ | ९.९ | २०.० | २.९ | २४.० |
| | वाढ / घट | -१२.४ | -५२.३२ | -६.८ | ०.१५ | -१.९५ | -७३.३२ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|--------|--------|-------|-------|-------|---------|
| २००२-०३ | क्षेत्र | ८.१९ | ९७.८३ | ०.८८ | ०.०० | २.२० | १०७.१० |
| | टक्के | ६.२ | ९.९ | १.९ | - | १०.० | ९.० |
| | वाढ / घट | -२३.५६ | -१५०.८ | -३.५४ | -०.१५ | १.१५ | -१७८.५ |
| २००३-०४ | क्षेत्र | ५.०० | ५४.९४ | ३.१६ | ०.५० | ०.४५ | ६४.०५ |
| | टक्के | ३.८ | ५.५ | ७.१ | ६६.७ | २.० | ५.४ |
| | वाढ / घट | -३.१९ | -४२.८९ | २.२८ | ०.५० | -१.७५ | -४३.०५ |
| २००४-०५ | क्षेत्र | ६.९४ | ३६.६० | १.६६ | ०.०० | ५.६२ | ५०.८२ |
| | टक्के | ५.२ | ३.७ | ३.७ | - | २५.५ | ४.३ |
| | वाढ / घट | १.९४ | -१८.३४ | -१.५ | -०.५० | ५.१७ | -१३.२३ |
| २००५-०६ | क्षेत्र | ५.८० | ५७.४७ | १०.४२ | ०.१० | १०.२२ | ८४.०१ |
| | टक्के | ४.४ | ५.८ | २३.५ | १३.३ | १२.३ | ७.० |
| | वाढ / घट | -१.१४ | २०.८७ | ८.७६ | ०.१० | ४.६ | ३३.१९ |
| २००६-०७ | क्षेत्र | ७.०४ | ४२.६५ | २.११ | ०.०० | २.०७ | ५३.८७ |
| | टक्के | ५.५ | ४.३ | ४.७ | - | ९.४ | ४.५ |
| | वाढ / घट | १.२४ | -१४.८२ | -८.३१ | -०.१० | -८.१५ | -३०.१४ |
| २००७-०८ | क्षेत्र | ४.४५ | ४५.५१ | ०.७६ | ०.०० | २.०० | ५०.७४ |
| | टक्के | ३.४ | ४.६ | १.७ | - | ९.० | ४.२ |
| | वाढ / घट | -२.५९ | २.८६ | -१.३५ | - | -०.०७ | -३.७३ |
| २००८-०९ | क्षेत्र | १२.२५ | ४६.१० | २.९९ | ०.०० | ३.५८ | ६४.९२ |
| | टक्के | ९.३ | ४.६ | ६.७ | - | १६.२ | ५.४ |
| | वाढ / घट | ७.८ | ०.५९ | २.२३ | - | १.५८ | १४.१८ |
| २००९-१० | क्षेत्र | ५.४१ | ५३.१४ | ६.६३ | ०.०० | ०.२० | ६५.३८ |
| | टक्के | ४.१ | ५.४ | १४.९ | - | ०.९ | ५.५ |
| | वाढ / घट | -६.८४ | ७.०४ | ३.६४ | - | -३.३८ | ०.४६ |
| एकूण | क्षेत्र | १३०.९८ | ९८३.८२ | ४४.२५ | ०.७५ | २१.९९ | ११८५.४१ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | -३८.४४ | - | -४.५९ | ०.०० | -२.४ | - |
| | | | २४७.८१ | | | | २९३.५४ |

स्त्रोत : तालुका कृषी कार्यालय मालवण जिल्हा सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ५.८ मध्ये वैभववाडी तालुक्यातील फळबाग लागवडीचे अध्ययन करण्यात आले आहे. वैभववाडी तालुक्यात विविध फळ पिकाखाली १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात एकूण ३४३१.८८ हे क्षेत्र असून त्यापैकी आंबा पिकाखाली

४०५.६८ हे. काजू या पिकाखाली २८७१.०० हे. नारळ या पिकाखाली १३२.७८ हे. व इतर फळ पिकाखाली २२.४२ हे. क्षेत्र होते. वैभववाडी तालुक्यात रोजगार हमी योजनेतर्गत फळबाग लागवड कार्यक्रम राबवल्यानंतर २०००-०१ ते २००९-१० या काळात एकूण ११८५.४१ हे. क्षेत्र फळ पिकांखाली असल्याचे आढळून आले. या क्षेत्रापैकी आंब्याखाली १३०.९८, काजू या पिकाखाली ९८३.८२ हे. नारळ या पिकाखाली ४४.२५ हे., इतर फळ पिकाखाली २१.९९ हे. क्षेत्र असून या सर्व पिकांचे क्षेत्र कमी झाल्याचे संशोधनातून आढळून येते. मात्र चिकूचे क्षेत्र काही प्रमाणात लागवडीखाली आले. चिकूची एकूण लागवड ०.७५ हे. इतकी असल्याचे स्पष्ट होते.

तक्ता क्र. ५.९

६) देवगड तालुका (क्षेत्र हेक्टरमध्ये)^{१७}

| वर्ष (१) | | आंबा (२) | काजू (३) | नारळ (४) | चिकू (५) | इतर (६) | एकूण (७) |
|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|------------|-------------|
| १९९०- ९१ | क्षेत्र | ३२३.२८ | ३६.७५ | १२.७५ | ०.०० | ०.०० | ३७२.७८ |
| | टक्के | ६.८ | २.६ | ६.३ | - | - | ५.८ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| १९९१- ९२ | क्षेत्र | ५७३.५४ | २२७.८१ | ५०.७७ | ०.०० | ०.०० | ८२५.३० |
| | टक्के | १२.१ | १६.२ | २५.४ | - | - | १३.४ |
| | वाढ / घट | २५०.२६ | १९१.०६ | ३८.०२ | - | ० | ४७९.५२ |
| १९९२- ९३ | क्षेत्र | २३९.२४ | १९७.४१ | १५.७७ | ०.०० | ४.२३ | ७५६.६४ |
| | टक्के | ११.४ | १४.० | ९.७ | - | ०.१ | ११.९ |
| | वाढ / घट | -३४.३ | -३०.४ | -३५ | - | ४.२३ | -९५.६६ |
| १९९३- ९४ | क्षेत्र | ६०१.१० | १२२.१५ | १९.५३ | ०.०० | ०.०० | ७४२.७८ |
| | टक्के | १२.७ | ८.६ | ७.७ | - | - | ११.७ |
| | वाढ / घट | ६१.८६ | -७५.२६ | ३.७६ | - | -४.२३ | -१३.८६ |
| १९९४- ९५ | क्षेत्र | ५९८.४६ | १२२.२८ | १७.०६ | ०.०० | ०.०० | ७३७.८० |
| | टक्के | १२.६ | ८.७ | ८.५ | - | - | ११.६ |
| | वाढ / घट | -२.६४ | ०.१३ | -२.४७ | - | ० | -४.९८ |
| १९९५- ९६ | क्षेत्र | ४७९.४८ | १५१.३५ | २१.५५ | ०.०० | १.५० | ६५३.८८ |
| | टक्के | १०.१ | १०.७ | १०.७ | - | ०.०६ | १०.३ |
| | वाढ / घट | - | २९.०७ | ४.४९ | - | १.५ | -८३.९२ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|---------|---------|--------|-------|-------|---------|
| १९९६-९७ | क्षेत्र | ४८५.९५ | १७८.०५ | २२.९७ | ०.०० | ०.०० | ६८६.९७ |
| | टक्के | १०.३ | १२.६ | ११.५ | - | - | १०.८ |
| | वाढ / घट | ६.४७ | २६.७ | १.४२ | - | -१.५ | ३३.०९ |
| १९९७-९८ | क्षेत्र | ४१५.०३ | १४७.२५ | १९.२० | ०.०० | ०.०० | ५८१.४८ |
| | टक्के | ८.८ | १०.४ | ९.४६ | - | - | ९.१ |
| | वाढ / घट | -७०.९२ | -३०.८ | -३.७७ | - | ० | -१०५.४९ |
| १९९८-९९ | क्षेत्र | ३६९.२५ | १०६.७९ | ६.८७ | ०.०० | ०.४५ | ४८३.३६ |
| | टक्के | ७.८ | ७.६ | ६.५ | - | ०.०१ | ७.६ |
| | वाढ / घट | -४५.७८ | -४०.४६ | -१२.३३ | - | ०.४५ | -९८.१२ |
| १९९९-०० | क्षेत्र | ३२८.६७ | ११४.२१ | १३.१६ | ०.०० | १८.०० | ४७४.०४ |
| | टक्के | ६.९ | ८.१ | ६.५ | - | ७४.४ | ७.४ |
| | वाढ / घट | -४०.५८ | ७.४२ | ६.२९ | - | १७.५५ | -९.३२ |
| एकूण | क्षेत्र | ४७१४.५१ | १४०४.०५ | १६९.६३ | ०.०० | २४.१८ | ६३४२.०३ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०.० | - | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | ५.३९ | -२२.५४ | ०.४१ | - | १८ | १०१.२६ |
| २०००-०१ | क्षेत्र | ३१४.४७ | १३३.७५ | ६.६४ | ०.०० | ०.१० | ४५४.९६ |
| | टक्के | १६.७ | २८.७ | २.१८ | - | २.३ | १९.१ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| २००१-०२ | क्षेत्र | २४७.८१ | ५३.१० | ५.१६ | ०.०० | ०.१६ | ३०६.२३ |
| | टक्के | १३.१ | ११.४ | ३.९ | - | ३.८ | १२.८ |
| | वाढ / घट | -६६.६६ | -८०.६५ | -१.४८ | - | ०.०६ | १४८.७३ |
| २००२-०३ | क्षेत्र | १५१.८६ | २७.९८ | १.२० | ०.१० | ०.५० | १८१.५४ |
| | टक्के | ८.० | ६.० | ३.९ | १०० | ११.९ | ७.६ |
| | वाढ / घट | -९५.९५ | -२५.१२ | -३.९६ | ०.१० | ०.३४ | -१२४.६९ |
| २००३-०४ | क्षेत्र | १६६.७५ | २५.१२ | १.३४ | ०.०० | ०.७० | १९१.९१ |
| | टक्के | ८.८ | ५.३ | ४.४ | - | १६.७ | ८.० |
| | वाढ / घट | १४.८९ | -२.८६ | ०.१४ | -०.१० | ०.२ | १०.३७ |
| २००४-०५ | क्षेत्र | १८६.८७ | २९.०८ | २.३५ | ०.०० | ०.४५ | २१८.७५ |
| | टक्के | ९.९ | ६.२ | ७.७ | - | १०.७ | ९.१ |
| | वाढ / घट | २०.१२ | ३.९६ | १.०१ | - | -०.२५ | २६.८४ |
| २००५-०६ | क्षेत्र | १६०.८२ | ३७.०५ | ३.०२१ | ०.०० | १.५७ | २०२.९१ |
| | टक्के | ८.५ | ७.९ | २०.६ | - | ३७.५ | ८.५ |
| | वाढ / घट | -२६.०५ | ७.९७ | ०.६७ | - | १.१२ | -१५.८४ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|--------|--------|-------|------|-------|---------|
| २००६-०७ | क्षेत्र | १९८.७२ | ४६.६७ | ६.२९ | ०.०० | ०.२० | २५१.८८ |
| | टक्के | १०.५ | १०.० | २०.६ | - | ४.७ | १०.५ |
| | वाढ / घट | ३७.९ | ९.६२ | ३.२७ | - | -१.३७ | ४८.९७ |
| २००७-०८ | क्षेत्र | १५८.६६ | ४१.९२ | २.७४ | ०.०० | ०.०० | २०३.३२ |
| | टक्के | ८.४ | ९.० | १.४ | - | - | ८.५ |
| | वाढ / घट | -४०.०६ | -४.७५ | -३.५५ | - | -०.२ | -४८.५६ |
| २००८-०९ | क्षेत्र | १८३.१४ | ३७.६४ | ०.४४ | ०.०० | ०.५० | २२१.७२ |
| | टक्के | ९.७ | ८.० | १.४ | - | ११.९ | ९.३ |
| | वाढ / घट | २४.४८ | -४.२८ | २.३ | - | ०.५ | १८.४ |
| २००९-१० | क्षेत्र | ११०.६० | ३३.११ | १.२५ | ०.०० | ०.०० | १४४.९६ |
| | टक्के | ५.८ | ७.१ | ४.२ | - | - | ६.० |
| | वाढ / घट | -७२.५४ | -४.५३ | ०.८१ | - | -०.५ | -७६.७६ |
| एकूण | क्षेत्र | १८७९.७ | ४६५.४२ | ३०.४३ | ०.१० | ४.१८ | २३७८.१८ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | - | - | -५.३९ | ०.०० | -०.१ | -३१० |

स्रोत : तालुका कृषी कार्यालय, देवगड, जिल्हा सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ५.९ मध्ये देवगड तालुक्यातील फळ पिकाखालील क्षेत्राचे वर्गीकरण करण्यात आले आहे. १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात तालुक्यात एकूण ६३४२.०३ हे. क्षेत्रापैकी आंब्याचे ४७१४.० हे. काजूचे १४०४.०५ हे., नारळ १९९.६३ हे. इतर फळांचे २४.१८ हे. क्षेत्र असल्याचे आढळून आले. रोजगार हमी योजनेनंतर २०००-०१ ते २००९-१० या काळात तालुक्यातील एकूण क्षेत्र २३७३.१८ हे. पर्यंत कमी झाले असून त्यात आंबा १८७९.७ हे., काजू ४६५.४२ हे., नारळ ३०.४३ हे. चिकू ०.१० हे. आणि इतर ४.१८ हे. क्षेत्र कमी झाल्याचे अभ्यासातून स्पष्ट होते. म्हणजेच आंबा, काजू, नारळ व इतर फळांचे क्षेत्र दिवसेंदिवस कमी होत आहे.

तक्ता क्र. ५.१०

७) सावंतवाडी तालुका (क्षेत्र हेक्टरमध्ये)^{१८}

| वर्ष (१) | | आंबा (२) | काजू (३) | नारळ (४) | चिकू (५) | इतर (६) | एकूण (७) |
|-------------|----------|-------------|-------------|-------------|-------------|------------|-------------|
| १९९०-९१ | क्षेत्र | २०१.१९ | ३३६.२४ | २७०.०१ | ०.०० | ०.०० | ८०७.४४ |
| | टक्के | १७.० | ३.७ | १२.१ | - | - | ६.५ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| १९९१-९२ | क्षेत्र | १९८.५३ | ७५०.४६ | ३३२.२३ | २.७२ | १.०० | १२८२.२२ |
| | टक्के | १६.८ | ८.४ | १४.९ | १४.६ | १.१ | १०.३ |
| | वाढ / घट | -२.६६ | ४१४.२२ | ६२.२२ | २.७२ | १ | ४७४.७८ |
| १९९२-९३ | क्षेत्र | १३०.०८ | १०२९.३४ | २८३.६६ | १.०० | ५.४७ | १४४८.५५ |
| | टक्के | ११.० | ११.५ | १२.७ | ५.३ | ६.३ | ११.६ |
| | वाढ / घट | -६८.४५ | २७८.८८ | -४८.५७ | -१.७२ | ४.४७ | १६६.३३ |
| १९९३-९४ | क्षेत्र | १२२.८० | ११४६.७६ | २९४.१२ | १.६५ | ३.० | १५६७.२८ |
| | टक्के | १०.४ | १२.८ | १३.२ | ८.८ | ४.१ | १२.६ |
| | वाढ / घट | -७.३२ | ११७.४२ | १०.४६ | ०.६५ | -१.८७ | ११८.७३ |
| १९९४-९५ | क्षेत्र | ८३.९२ | ७५५.८८ | २०९.७३ | ०.०० | १.१० | १०५१.२३ |
| | टक्के | ७.१ | ४.८ | ९.४ | - | १.२ | ८.४ |
| | वाढ / घट | -३८.८८ | - | -८४.३९ | -१.६५ | -२.५ | -५१६.०५ |
| १९९५-९६ | क्षेत्र | ६३.१८ | १०५३.८८ | १५१.०६ | ३.३५ | ८.८५ | १२७६.९७ |
| | टक्के | ५.३ | ११.८ | ६.७ | १८.० | १०.२ | १०.२ |
| | वाढ / घट | -२०.७४ | २९८ | -५८.६७ | ३.३५ | ७.७५ | २२५.७४ |
| १९९६-९७ | क्षेत्र | ७६.६९ | १२७६.८६ | १७२.३३ | १.६० | १.६० | १५२७.४८ |
| | टक्के | ६.५ | १४.२ | ७.७ | ८.६ | १.८ | १२.३ |
| | वाढ / घट | १३.५१ | २२२.९८ | २१.२७ | -१.७५ | -७.२५ | २५०.५१ |
| १९९७-९८ | क्षेत्र | ६८.१४ | ९२१.२७ | ११९.९७ | ०.८५ | २१.२८ | ११३०.६६ |
| | टक्के | ५.७ | १०.३ | ५.३ | ४.५ | २४.६ | ९.१ |
| | वाढ / घट | -८.५५ | - | -५३.०६ | -०.७५ | १९.६८ | -३९७.१२ |
| १९९८-९९ | क्षेत्र | १३३.२७ | ९४०.४१ | १७३.७९ | ३.५० | १५.७७ | १२६३.२४ |
| | टक्के | ११.३ | १०.५ | ७.८ | १८.८ | १८.२ | १०.१ |
| | वाढ / घट | ६५.१३ | १९.१४ | ५४.५२ | २.६५ | -५.५१ | १३२.८८ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|---------|---------|---------|-------|-------|----------|
| १९९९-०० | क्षेत्र | १००.६२ | ७११.०९ | २१८.०९ | ३.९२ | २७.६६ | १०५७.४६ |
| | टक्के | ८.५ | ७.९ | ९.८ | २१.० | ३२.० | ८.५ |
| | वाढ / घट | -३२.६५ | - | ४४.३ | ०.४२ | ११.८९ | -२०५.७८ |
| एकूण | क्षेत्र | ११७८.४२ | ८९२२.१९ | २२२४.९९ | १८.५९ | ८६.३३ | १२४१२.२३ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | - | ३७४.८५ | -५१.९२ | ३.९२ | २७.६६ | -२५०.०२ |
| २०००-०१ | क्षेत्र | २५.०८ | ६०२.६५ | १७०.२५ | ७.०९ | ७१.२१ | १३४३.५७ |
| | टक्के | १४.९ | २६.७ | ४१.० | ४३.८ | १३.१ | २९.५ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| २००१-०२ | क्षेत्र | १८.३१ | ३८१.१८ | ५६.४४ | २.७३ | ९६.६६ | ७५९.३४ |
| | टक्के | १०.९ | १६.९ | १३.६ | १६.८ | १७.८ | १६.६ |
| | वाढ / घट | -६.७७ | - | - | -४.३६ | २५.४५ | -५८४.२३ |
| २००२-०३ | क्षेत्र | ८.९९ | ५३.१८ | १७.४१ | १.०५ | २३.७२ | १६७.४६ |
| | टक्के | ५.३ | २.३ | ४.१ | ६.४ | ४.३ | ३.६ |
| | वाढ / घट | -९.३२ | - | -३९.०३ | -१.६८ | - | -५९१.८८ |
| २००३-०४ | क्षेत्र | २९.७८ | २१९.६१ | २९.८० | २.२० | ८७.०९ | ४५१.१८ |
| | टक्के | १७.७ | ९.७ | ७.१ | १३.५ | १६.० | ९.९ |
| | वाढ / घट | २०.७९ | १६६.५१ | १२.३९ | १.१५ | ६३.३७ | २८३.७२ |
| २००४-०५ | क्षेत्र | १०.९८ | ९३.३० | १८.१३ | ०.४१ | ५०.९४ | २८९.५२ |
| | टक्के | ६.५ | ४.१ | ४.३ | २.५ | ९.४ | ६.३ |
| | वाढ / घट | -१८.८ | - | ११.६७ | -१.७९ | - | -१६१.६६ |
| २००५-०६ | क्षेत्र | २०.३१ | २१०.९८ | १०.४७ | १.४५ | ३७.२२ | ३९९.१९ |
| | टक्के | १२.१ | ९.३ | २.५ | ८.९ | ६.८ | ८.७ |
| | वाढ / घट | ९.३३ | ११७.६८ | -७.६६ | १.०४ | - | १०९.६७ |
| २००६-०७ | क्षेत्र | १४.०३ | १६५.९९ | ३४.५७ | ०.२० | ३९.०८ | ३६१.०९ |
| | टक्के | ८.३ | ७.३ | ८.३ | १.२ | ७.२ | ७.९ |
| | वाढ / घट | -६.२८ | -४४.९९ | २४.१ | -१.२५ | १.८६ | -३८.१ |
| २००७-०८ | क्षेत्र | १६.४६ | १७४.२७ | २८.७३ | ०.२० | ३९.४६ | २५९.१२ |
| | टक्के | ९.८ | ७.७ | ६.९ | १.२ | ७.२ | ५.६ |
| | वाढ / घट | २.४३ | ८.२८ | -५.८४ | ० | ०.३८ | -१०१.९७ |
| २००८-०९ | क्षेत्र | ११.५८ | १८१.२६ | २६.७८ | ०.८५ | ४७.७२ | २६८.१९ |
| | टक्के | ६.९ | ८.० | ६.४ | ५.२ | ८.८ | ५.८ |
| | वाढ / घट | -४.८८ | ६.९९ | -१.९५ | ०.६५ | ८.२६ | ९.०७ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|--------|---------|--------|-------|--------|---------|
| २००९-१० | क्षेत्र | १२.०७ | १६७.३० | २२.२४ | ०.०० | ४८.३९ | २५०.०० |
| | टक्के | ७.२ | ७.४ | ५.३ | - | ८.९ | ५.४ |
| | वाढ / घट | ०.४९ | -१३.९६ | -४.५४ | -०.८५ | ०.३७ | -१८.९९ |
| एकूण | क्षेत्र | १६७.५९ | २२४९.६४ | ४१४.८२ | १६.१८ | ५४१.४९ | ४५४८.६६ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | -१३.०१ | - | - | -७.०९ | - | - |
| | | | ४३५.३५ | १४८.०१ | | २२.८२ | १०९३.५७ |

स्त्रोत : तालुका कृषी कार्यालय, सावंतवाडी, जिल्हा सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ५.१० मध्ये सावंतवाडी तालुक्यातील फळ पिकांच्या क्षेत्राचे वर्गीकरण करण्यात आले आहे. १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात आंबा, काजू, नारळ, चिकू व इतर फळांखाली एकूण १२४१२.२३ हे क्षेत्र होते. रोजगार हमी योजनेतर्गत फळबाग लागवड योजना राबवल्यानंतरच्या कालखंडात २०००-०१ ते २००९-१० या काळात एकूण क्षेत्र ४५४८.६६ हे. पर्यंत कमी झाल्याचे संशोधनातून आढळून आले. सावंतवाडी तालुक्यात १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात चिकू या पिकाचे १८.५९ हे क्षेत्र असल्याचे स्पष्ट होते. ही उल्लेखनीय बाब आहे.

तक्ता क्र. ५.११

८) दोडामार्ग तालुका (क्षेत्र हेक्टरमध्ये)^{१९}

| वर्ष (१) | | आंबा (२) | काजू (३) | नारळ (४) | चिकू (५) | कोकम (६) | सुपारी (७) |
|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|------------|
| २०००-०१ | क्षेत्र | १.३० | ४३४.१८ | ११.९० | १.४५ | ०.०० | ६.९० |
| | टक्के | ९.० | ३३.४ | १५.५ | ४८.५ | - | १५.६ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| २००१-०२ | क्षेत्र | १.९५ | १९६.३५ | ८.७२ | ०.५० | १.०० | १५.५१ |
| | टक्के | १४.० | १५.१ | ११.४ | १६.६ | २८.१ | ३५.५ |
| | वाढ / घट | ०.६५ | - | -३.१८ | -१.०५ | १.०० | ८.६१ |
| | | | २३७.८३ | | | | |
| २००२-०३ | क्षेत्र | १.२० | ५९.२० | २.७६ | ०.१५ | ०.३० | ०.०० |
| | टक्के | ८.२ | ४.५ | ३.६ | ५.० | ८.९ | - |
| | वाढ / घट | -०.७५ | - | -५.९४ | -०.३५ | -०.७० | १५.५१ |
| | | | १३७.१५ | | | | |
| २००३-०४ | क्षेत्र | १.७० | ६७.४३ | १३.०२ | ०.५५ | ०.७५ | ५.१६ |
| | टक्के | ११.८ | ५.१ | १७.० | १८.३ | २१.० | ११.७ |
| | वाढ / घट | ०.५० | ८.२३ | १०.२६ | ०.४० | ०.४५ | ५.१६ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|-------|---------|--------|-------|-------|-------|
| २००४-०५ | क्षेत्र | २.०० | ८९.१३ | १७.६३ | ०.०० | ०.२५ | ७.३६ |
| | टक्के | १३.९ | ६.८ | २३.० | - | ७.० | १६.७ |
| | वाढ / घट | ०.३० | २१.७ | ४.६१ | -०.५५ | -०.५० | २.२ |
| २००५-०६ | क्षेत्र | ०.७० | ११६.९० | १.०६ | ०.१० | ०.५२ | ४.४६ |
| | टक्के | ४.८ | ९.० | १.३ | ३.३७ | -१४.६ | १०.१ |
| | वाढ / घट | -०.३० | २७.७७ | -१६.५७ | ०.१० | ०.२७ | -३.१० |
| २००६-०७ | क्षेत्र | १.०३ | ९९.३३ | ६.८६ | ०.०० | ०.०० | ०.७० |
| | टक्के | ७.१ | ७.६ | ७.९ | - | - | १.५ |
| | वाढ / घट | ०.३३ | -१७.५७ | ५ | -०.१० | -०.५२ | -३.७६ |
| २००७-०८ | क्षेत्र | १.९० | ८७.५७ | ६.२८ | ०.०० | ०.६१ | ०.०० |
| | टक्के | १३.२ | ६.७ | ८.२ | - | १७.१ | - |
| | वाढ / घट | ०.८७ | -११.७६ | ०.२२ | ०.०० | ०.६१ | -०.७० |
| २००८-०९ | क्षेत्र | ०.६० | ५९.६८ | ४.४६ | ०.२५ | ०.१२ | ३.६८ |
| | टक्के | ४.१ | ४.५ | ५.८ | ८३.३ | ८.३३ | ८.३ |
| | वाढ / घट | -१.३० | -२७.८९ | -१.८२ | ०.२५ | -०.४९ | ३.६८ |
| २००९-१० | क्षेत्र | २.०० | ८८.२८ | ३.७० | ०.०० | ०.०० | ०.३० |
| | टक्के | १३.९ | ६.८ | ६.३ | - | - | ०.६ |
| | वाढ / घट | १.४० | २८.६ | -०.७६ | -०.२५ | ०.१२ | -३.३८ |
| एकूण | क्षेत्र | १४.३८ | १२९८.०५ | ७६.३९ | ३.०० | ३.५५ | ४४.०७ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | ०.७० | -३४५.९ | -८.२० | १.४५ | ०.० | ६.६० |

स्रोत : तालुका कृषी कार्यालय, दोडामार्ग, जिल्हा सिंधुदुर्ग

टिप : सावंतवाडी तालुक्याचे विभाजन होऊन १९९९ मध्ये दोडामार्ग तालुक्याची निर्मिती झाली. त्यामुळे १९९०-९१ ते १९९९-२००० पर्यंतची फळझाड लागवडीची आकडेवारीचा सावंतवाडी तालुक्यात समावेश आहे.

तक्ता क्र. ५.११ मध्ये दोडामार्ग तालुक्यातील फळ पिकाखालील क्षेत्राचे अध्ययन करण्यात आले आहे. आंब्याखाली एकूण १४.३८ हेक्टर, काजूसाठी १२९८.०५ हे., नारळ ७६.३९ हे., चिकू ३.०० हे. कोकम ३.५५ हे., सुपारी ४४.०७ हे. क्षेत्र असल्याचे आढळते. यावरून आंबा, काजू, नारळ या पिकांबरोबरच कोकम सुपारी या फळांचे उत्पादन या तालुक्यात होते ही नक्कीच विकासाच्या दृष्टीने उल्लेखनीय बाब आहे.

तक्ता क्र. ५.१२

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील एकूण फळझाड लागवड खालील क्षेत्र (क्षेत्र हेक्टरमध्ये)^{१०}

| वर्ष (१) | | आंबा (२) | काजू (३) | नारळ (४) | चिकू (५) | इतर (६) | एकूण (७) |
|-------------|----------|-------------|-------------|-------------|-------------|------------|-------------|
| १९९०-९१ | क्षेत्र | १४०८.२१ | १३२५.०१ | ५७२.०८ | ०.०० | २.६० | ३३०८.०६ |
| | टक्के | १२.७ | ४.० | ८.३ | - | ०.७ | ०.६ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| १९९१-९२ | क्षेत्र | १६२९.४८ | ३४९३.३५ | ११२६.७१ | ०.०० | २३.२१ | ६२७२.७५ |
| | टक्के | १४.७ | १०.६ | १६.४ | - | ६.२ | १२.३ |
| | वाढ / घट | २२१.२७ | २१६८.३४ | ५५४.६३ | - | २०.६१ | २९६४.८५ |
| १९९२-९३ | क्षेत्र | १२८९.०० | ४१२७.१८ | ९०२.९६ | ०.०० | १९.३७ | ६३३८.५१ |
| | टक्के | ११.६ | १२.६ | १३.१ | - | ५.१ | १२.४ |
| | वाढ / घट | -३४०.४८ | ६३३.८३ | - | - | -३.८४ | ६५.७६ |
| १९९३-९४ | क्षेत्र | १३५९.६३ | ४१३२.६० | ८५०.३२ | ०.०० | २०.०९ | ६२६२.६४ |
| | टक्के | १२.३ | १२.७ | १२.३ | - | ५.३ | १२.३ |
| | वाढ / घट | ७०.६३ | ५.४२ | -५२.६४ | - | ०.७२ | -७५.८७ |
| १९९४-९५ | क्षेत्र | ११८१.२० | २७०९.१७ | ६७१.६५ | ०.०० | ९.३२ | ४५७१.३४ |
| | टक्के | १०.६ | ८.२ | ९.७ | - | २.४ | ८.९ |
| | वाढ / घट | -१७८.४३ | १४२३.४३ | - | - | -१०.७७ | १६९१.३ |
| १९९५-९६ | क्षेत्र | १२३.९२ | ३३९९.९४ | ५७५.०७ | ०.०० | १६.३३ | ४९१५.२६ |
| | टक्के | १.१ | १०.३ | ८.३ | - | ४.३ | ९.६ |
| | वाढ / घट | - | ६९०.७७ | -९६.५८ | - | ७.०१ | ३४३.९२ |
| १९९६-९७ | क्षेत्र | ९८७.६४ | ४०७६.०१ | ६३१.९६ | ०.०० | १५.९८ | ५७११.५९ |
| | टक्के | ८.९ | १२.४ | ९.१ | - | ४.२ | ११.२ |
| | वाढ / घट | ८६३.७२ | ६७६.०६ | ५६.८९ | - | -०.३५ | ७९६.३३ |
| १९९७-९८ | क्षेत्र | ९१२.९१ | ३२९९.२८ | ४४६.१६ | ०.०० | ९३.८३ | ४७५२.१८ |
| | टक्के | ८.२ | १०.० | ६.४ | - | २५.१ | ९.३ |
| | वाढ / घट | ७४.७३ | -७७६.७३ | -१८.५८ | - | ७७.८५ | -९५९.४१ |
| १९९८-९९ | क्षेत्र | ११५१.१७ | ३२०४.८७ | ५०२.९३ | ०.०० | ७९.६३ | ४१४६.६० |
| | टक्के | १०.४ | ९.९ | ७.३ | - | २१.३ | ८.१ |
| | वाढ / घट | २३८.२६ | -९४.४१ | ५६.७७ | - | -१४.२ | -६०५.५८ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|----------|----------|---------|-------|--------|----------|
| १९९९-०० | क्षेत्र | १००३.३१ | २९४१.४६ | ५८९.८४ | ०.०० | ९३.०२ | ४६२७.६३ |
| | टक्के | ९.० | ९.३ | ५.८ | - | २४.९ | १५.३ |
| | वाढ / घट | -१४७.८६ | -२६३.४१ | ८६.९१ | - | १३.४ | ४८१.०३ |
| एकूण | क्षेत्र | ११०४६.४७ | ३२७०८.८७ | ६८६९.६८ | ०.०० | ३७३.३८ | ५०९०६.५६ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | - | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | -४०४.९ | १६१६.४५ | १७.७६ | - | ९०.४३ | १३१९.७३ |
| २०००-०१ | क्षेत्र | ७५५.८९ | ३५३९.७१ | ५०२.९४ | ०.०० | १५६.६५ | ४९५५.१९ |
| | टक्के | १८.९ | ३२.८ | ३३.५ | - | १०.९ | २७.९ |
| | वाढ / घट | - | - | - | - | - | - |
| २००१-०२ | क्षेत्र | ५२७.४२ | १८२६.९३ | २३३.६१ | १४.७० | २५७.९१ | २८६०.५७ |
| | टक्के | १३.२ | १६.८ | १५.५ | ३३.६ | १८.० | १६.१ |
| | वाढ / घट | -२२८.४७ | - | - | १४.७० | १०१.२६ | - |
| २००२-०३ | क्षेत्र | २५७.९६ | ४९४.८७ | ८६.३० | ४.२५ | १०८.३१ | ९५१.६९ |
| | टक्के | ६.४ | ४.५ | ५.७ | ९.७ | ७.५ | ५.३ |
| | वाढ / घट | -२६९.४६ | - | - | - | -१४९.६ | - |
| २००३-०४ | क्षेत्र | ३६३.४७ | ७११.६९ | ११४.७८ | ९.८० | १४२.५० | १३४२.२४ |
| | टक्के | ९.१ | ७.० | ७.६ | २२.४ | ९.९ | ७.५ |
| | वाढ / घट | १०५.५१ | २१६.८२ | २८.४८ | ५.५५ | ३४.१९ | ३९०.५५ |
| २००४-०५ | क्षेत्र | ३७२.६९ | ४७१.६५ | ९६.१० | ३.६४ | २०६.१३ | ११४७.२१ |
| | टक्के | ९.३ | ४.३ | ६.४ | ८.३ | १४.४ | ६.४ |
| | वाढ / घट | ९.२२ | -२४०.०४ | -१८.६८ | - | ६३.६३ | -१९५.०३ |
| २००५-०६ | क्षेत्र | ३६५.५१ | ७८०.२१ | ७७.५२ | ४.३८ | १३६.९१ | १३६४.५३ |
| | टक्के | ९.२ | ७.२ | ५.१ | ९.७ | ९.५ | ७.७ |
| | वाढ / घट | -२.१८ | ३०८.५६ | -१८.५८ | ०.७४ | -६९.२२ | २१७.३२ |
| २००६-०७ | क्षेत्र | ३८४.९४ | ७८१.५७ | १०४.३९ | २.०५ | १२५.८० | १३९८.७५ |
| | टक्के | ९.६ | ७.३ | ६.९ | ४.६ | ८.८ | ७.८ |
| | वाढ / घट | १९.४३ | १.३६ | २६.८७ | - | -११.११ | ३४.२२ |
| २००७-०८ | क्षेत्र | ३३५.१५ | ७२६.६५ | १००.७० | १.८९ | ९४.७५ | १२४९.१४ |
| | टक्के | ८.४ | ७.० | ६.७ | ४.३ | ६.६ | ७.० |
| | वाढ / घट | ४९.५१ | -५४.९२ | -४.३१ | - | ३१.०५ | -१४९.६१ |
| २००८-०९ | क्षेत्र | ३९८.९३ | ७३०.८३ | १०५.६४ | २.६० | १२२.०२ | १३६०.०२ |
| | टक्के | १०.० | ७.१ | ६.८ | ५.९ | ८.५ | ७.६ |
| | वाढ / घट | ६३.७८ | ४.१८ | ५.६ | ०.७१ | २७.२७ | ११०.८८ |

| | | | | | | | |
|---------|----------|---------|----------|---------|-------|----------|----------|
| २००९-१० | क्षेत्र | २२३.२७ | ७०२.१६ | ७७.१३ | ०.४० | ७७.८६ | १०८०.८२ |
| | टक्के | ५.६ | ६.० | ५.१ | ०.९ | ५.४ | ६.१ |
| | वाढ / घट | -१७५.६ | -२८.६७ | -२८.५१ | - | -४४.१६ | -२७९.२ |
| एकूण | क्षेत्र | ३९८५.२३ | १०७६६.२७ | १४९९.११ | ४३.७१ | ११४२८.८४ | १७७१०.१६ |
| | टक्के | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० |
| | वाढ / घट | ५३२.६५ | - | - | ०.४० | -७८.७९ | - |
| | | २८३७.५५ | ४२५.८१ | | | ३८७४.३७ | |

स्रोत : कृषी कार्यालय, जिल्हा परिषद, ओरोस, सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ५.१२ मध्ये सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील फळलागवडीखालील क्षेत्राचे वर्गीकरण करण्यात आले आहे. जिल्ह्यात १९९०-९१ ते १९९९-२००० या काळात एकूण ५०९०६.४ हे. क्षेत्र फळपिकाखाली असून त्यापैकी आंबा ११०४६.७७ हे. काजू ३२७०८.८७ हे. नारळ ६८६९.६८ हे., तर इतर फळपिकांखाली ३७३.३८ हे. क्षेत्र आहे. चिकू या पिकाखाली या काळात काहीच क्षेत्र नसल्याचे संशोधनातून दिसते. जिल्ह्यात २०००-०१ ते २००९-१० या काळात एकूण १७७१०.१६ हे. क्षेत्र असून त्यापैकी आंबा ३९८५.२३ हे. काजू १०७६६.२७ हे. नारळ १४९९.११ हे., चिकू ४३.७१ हे. इतर फळांचे १४२८.८४ हे. क्षेत्र असल्याचे आढळून येते. यावरून जिल्ह्यात फळबाग योजना राबवून सुद्धा चिकूचा अपवाद वगळता आंबा, काजू, नारळ या प्रमुख फळ पिकांचे क्षेत्र कमी झाले आहे.

तक्ता क्र. ५.१३

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळबाग लागवडीचा वर्षवार एकूण^{२१} लक्षांक व झालेली साध्य व खर्च

| अ.क्र. | लागवडीचे वर्ष | लक्षांक (क्षेत्र हे.) | झालेले साध्य (क्षेत्र हे.) | झालेले खर्च लाखात | लाभार्थी संख्या |
|--------|---------------|-----------------------|----------------------------|-------------------|-----------------|
| १ | १९९०-९१ | २८७१.०० | ३३०८.०६ | १३६.४५ | ४१४२.०० |
| २ | १९९१-९२ | ६४५४.०० | ६२७२.७५ | २५८.२० | ७४१२ |
| ३ | १९९२-९३ | ५९००.०० | ६३२२.५५ | ३५८.५४ | ७५०४ |
| ४ | १९९३-९४ | ६१००.०० | ६३२६.०७ | ४३१.२९ | ७६८० |
| ५ | १९९४-९५ | ६०००.०० | ४५६६.६४ | ४३१.६१ | ५८५४ |
| ६ | १९९५-९६ | ७०००.०० | ४९०९.६६ | ५५३.११ | ६१५९ |
| ७ | १९९६-९७ | ५१००.०० | ५७११.५९ | ४१४.२८ | ७५४१ |

| | | | | | |
|----|-------------|-----------------|-----------------|----------------|--------------|
| ८ | १९९७-९८ | ६६४५.०० | ४७५२.१८ | ४१२.९४ | ५७३३ |
| ९ | १९९८-९९ | ४६५८.०० | ४९४६.६४ | ५५२.१३ | ६४४७ |
| १० | १९९९-०० | ४६८६.०० | ४६२७.६९ | ४९१.७२ | ६३८५ |
| | एकूण | ५५४१४.०० | ५१७४३.८३ | ४०४०.२७ | ६५८५७ |
| ११ | २०००-०१ | ४७६५.०० | ४९५५.१९ | ३३१.०० | ६६२४ |
| १२ | २००१-०२ | ३९००.०० | २८६०.५७ | ४१७.८९ | ७७४८ |
| १३ | २००२-०३ | १५५०.०० | ९५१.६९ | ८५५.३१ | १५३९ |
| १४ | २००३-०४ | १५००.०० | १३४२.२४ | ०.०० | २४४६ |
| १५ | २००४-०५ | १४७७.०० | ११४७.२१ | ५८६.६६ | २२१७ |
| १६ | २००५-०६ | १४०५.०० | १३६४.५३ | १५३.२७ | २२९८ |
| १७ | २००६-०७ | १४३१.०० | १३९८.७५ | १४१.३९ | २१९० |
| १८ | २००७-०८ | १३२२.०० | १२७४.३८ | १३१.०८ | २२१८ |
| | एकूण | १७३५०.०० | १५२९४.५६ | २६१६.६० | २७३०० |

स्त्रोत : कृषी विभाग, ओरोस, कृषी कार्यालय, जिल्हा परिषद, सिंधुदुर्ग

तक्ता क्र. ५.१३ मध्ये दिसून येते की, १९९० ते २००७-०८ या कालावधीमध्ये या योजनेतर्गत फळझाड लागवडीचे लक्षांक ७२७६४.०० हेक्टरचे होते. या कालावधीत ६८०८८.३९ हेक्टर मध्ये लागवडीचे उद्दिष्ट्य साध्य करण्यात आले. १९९०-९१ ते १९९९-२००० या कालावधीमध्ये फळझाड लागवडीचे लक्षांक ५५४१४.०० हेक्टरचे होते त्यामध्ये ५१७४३.८३ हेक्टरमध्ये उद्दिष्ट्य साध्य करण्यात आले. २०००-०१ ते २००७-०८ या कालावधीमध्ये १७३५०.०० हेक्टरमध्ये लक्षांक होते ते १५२९४.५६ हेक्टरचे उद्दिष्ट्य साध्य करण्यात आले. वरील तक्त्यावरून असे दिसून येते की, सन १९९०-९१ ते १९९९-२००० या दहा वर्षांच्या कालावधीमध्ये ठरविलेले लक्षांक आणि झालेले साध्य, झालेला खर्च आणि लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या यांची प्रगती चांगली असून त्यानंतरच्या कालावधीमध्ये यामध्ये घट होत असल्याचे आढळून आले.

५.५ सारांश :

सदर प्रकरणामध्ये सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील आठही तालुक्यात आंबा, काजू, नारळ, सुपारी आणि मसाला पीके या किफायतशीर फळझाड लागवडीचे नियोजन आणि वर्गीकरण करण्यात आलेले आहे. जिल्ह्यातील सर्वच तालुक्यात १००% अनुदानामुळे पडीक जमीन लागवडीखाली आली. सन १९९०-९१ ते १९९९-२००० या दहा वर्षांच्या कालावधीचा विचार केल्यास विविध फळपिकांच्या लागवडीची प्रगती दिसून येते. ठरविलेला लक्षांक, झालेले साध्य, लाभार्थी शेतकरी यामध्ये वाढ झालेली तरी या कालावधीत चिकू, फणस, आवळा आणि इतर मसाला पिके यांची लागवड फारच अल्प असल्याचे आढळते. सन २०००-०१ ते २०१०-११ या कालावधीचा विचार करता रो.ह.यो. अंतर्गत झालेली आंबा, काजू, नारळ यांचे लागवड क्षेत्र कमी होत गेल्याचे आढळून येते. या कालावधीमध्ये सुपारी, चिकू, फणस, आवळा आणि मसाला पिके यांची लागवड चांगल्या प्रमाणात झालेली आहे. कणकवली, सावंतवाडी, दौडामार्ग, कुडाळ, वैभववाडी या तालुक्यात काजू लागवड क्षेत्र जास्त असून मालवण, वेंगुर्ला येथे काजू व आंबा लागवड क्षेत्र चांगले आहे. देवगड तालुक्यात आंबा लागवड क्षेत्र चांगले आहे.

संदर्भ सुची :

१. पाटील/मळवे (डॉ. बा.सा.को.कृ.वि. दापोली जून २००६) कोकणातील फलोत्पादन : सर्व साधारण सद्यःस्थिती, समस्या आणि अपेक्षा'' कृषिपंढरी त्रैमासिक पान नं. २३, २४

२. सुर्या गुंजाळ (संपादक एप्रिल २००७)'' फळबाग लागवडी मुलतत्वे आणि कार्यपद्धती'' प्रकाशन यशवंतराव चव्हाण मुक्तविद्यापीठ नाशीक पान नं. २

३. www.dbskkv.org. aticdapolicentre@rediffmail.com (कृषी तंत्रज्ञान दैनंदिनी) पान नं. ४२ ते ४७)

४. उपरोक्त पान नं. ५३, ५४, ५५

५. उपरोक्त पान नं. ६१ ते ६४

६. उपरोक्त पान नं. ५६ ते ६६

७. उपरोक्त पान नं. ६७, ६८, ६९
८. गोडसे/पाटील, (प्रादेशिक फल संशोधन केंद्र वेंगुर्ले - जुलै २००३)
 “कोकणात फळबागा किफायतशीर होण्यासाठी काटेकोर पूर्व नियोजनाची गरज”
 बळीराजा मासिक पान नं. ५४
९. उपरोक्त पान नं. ५४, ५५
१०. उपरोक्त पान नं. ५६
११. उपरोक्त पान नं. ५६, ५७
१२. वेंगुर्ला तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकीय माहिती.
१३. कणकवली तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकीय माहिती.
१४. कुडाळ तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकीय माहिती.
१५. मालवण तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकीय माहिती.
१६. वैभववाडी तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकीय माहिती.
१७. देवगड तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकीय माहिती.
१८. सावंतवाडी तालुका कृषी कार्यालय रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकीय माहिती.
१९. दोडामार्ग तालुका कृषी कार्यालय रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकीय माहिती.
२०. कृषी विभाग ओरोस कार्यालय जिल्हा परिषद सिंधुदुर्ग संकलित सांख्यिकीय माहिती
२१. कृषी विभाग ओरोस कार्यालय जिल्हा परिषद सिंधुदुर्ग संकलित सांख्यिकीय माहिती

प्रकरण सहा

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड योजनेचे सांख्यिकीय विश्लेषण

६.१ प्रस्तावना

प्रस्तुत प्रकरणामध्ये सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील रोजगार हमी योजनेतर्गत राबविलेल्या फळझाड योजनेच्या आर्थिक पहाणी अभ्यासामध्ये नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांकडून प्राथमिक माहितीच्या आधारे मिळालेल्या माहितीचे विश्लेषण केले आहे.

संशोधन अभ्यासासाठी सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील सर्वच तालुक्यांची निवड करण्यात आलेली आहे. जिल्ह्यातील एकूण गावांची संख्या ७४० आहे. यापैकी ६४ (८.६५%) गावाची निवड ही साधा यादृच्छिक नमुना पद्धतीचा वापर अभ्यासासाठी करण्यात आला आहे. जिल्ह्यातील एकूण ५७२ नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांकडून संशोधन अभ्यासासाठी प्रश्नावलीद्वारे माहिती संकलित करण्यात आलेली आहे. त्या नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांकडून मिळालेल्या प्राथमिक माहितीचे विश्लेषण करण्यात आले आहे.

तक्ता क्र. ६.१

६.२ संशोधन अभ्यासासाठी निवडलेल्या लाभार्थी शेतकऱ्यांचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय विश्लेषण

| अ.क्र. | तालुका | जिल्ह्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या |
|--------|---------------------------------|--|
| १ | देवगड | ७२ |
| २ | दोडामार्ग | ६० |
| ३ | कणकवली | ७६ |
| ४ | कुडाळ | ७१ |
| ५ | मालवण | ७१ |
| ६ | सावंतवाडी | ५९ |
| ७ | वैभववाडी | ७७ |
| ८ | वेंगुर्ला | ८६ |
| | सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण लाभार्थी | ५७२ |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

तक्ता क्र. ६.१ मध्ये जिल्ह्यातील सर्व तालुक्यातून एकूण ५७२ नमुना लाभार्थींची संशोधनासाठी निवड करण्यात आलेली आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त फळझाड नमुना लाभार्थी शेतकरी ८६ वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीत कमी ५९ नमुना लाभार्थी शेतकरी सावंतवाडी तालुक्यातील आहे. वरील तक्त्यावरून जिल्ह्यातील संशोधन अभ्यासासाठी निवडलेल्या नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या तालुकानिहाय आकडेवारीची स्थिती आहे.

तक्ता क्र. ६.२

लाभार्थी शेतकरी स्त्री-पुरुष स्थितीचे तालुकानिहाय सांख्यिक वर्गीकरण

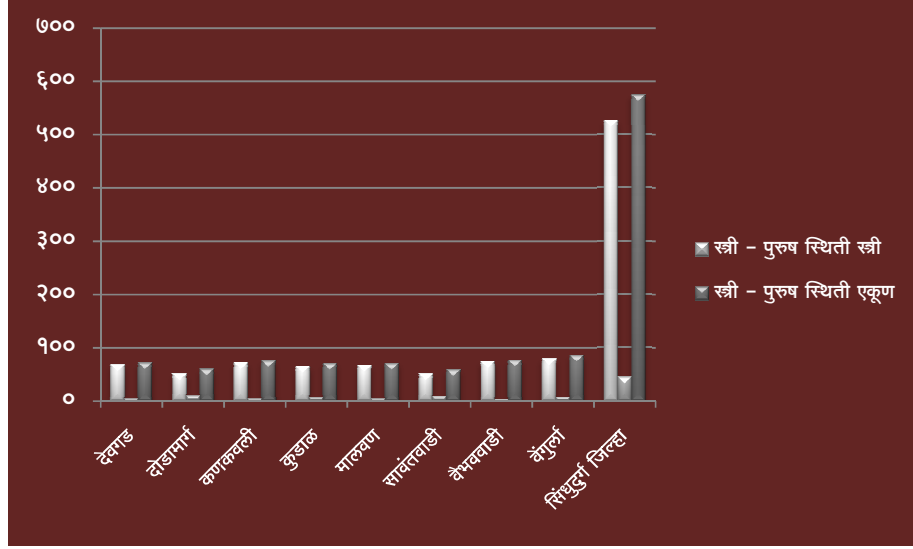
| तालुका | स्त्री - पुरुष स्थिती | | |
|--------------------------|-----------------------|-------------------|-------------------|
| | पुरुष | स्त्री | एकूण |
| देवगड | ६८ (९४%) | ४ (६%) | ७२ (१००%) |
| दोडामार्ग | ५१ (८५%) | ९ (१५%) | ६० (१००%) |
| कणकवली | ७२ (९५%) | ४ (५%) | ७६ (१००%) |
| कुडाळ | ६५ (९२%) | ६ (८%) | ७१ (१००%) |
| मालवण | ६७ (९४%) | ४ (६%) | ७१ (१००%) |
| सावंतवाडी | ५१ (८६%) | ८ (१४%) | ५९ (१००%) |
| वैभववाडी | ७४ (९६%) | ३ (६%) | ७७ (१००%) |
| वेंगुर्ला | ७९ (९३%) | ७ (७%) | ८६ (१००%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा | ५२७ (९२.१४%) | ४५ (७.८६%) | ५७२ (१००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

आलेख क्र. ६.१

लाभार्थी शेतकरी स्त्री-पुरुष स्थितीचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.२ मध्ये असे आढळून आले की, जिल्ह्यामध्ये फळबाग नमुना लाभार्थी शेतकरी म्हणून पुरुष आणि स्त्रियांचा समावेश आहे. एकूण ५७२ नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ५२७ (९२.१३%) नमुना लाभार्थी म्हणून शेतकरी पुरुष आहेत. तर स्त्रिया ४५ (७.८६%) नमुना लाभार्थी शेतकरी आहेत. जिल्ह्यातील सर्वच तालुक्यात अल्प प्रमाणात नमुना लाभार्थी शेतकरी म्हणून स्त्रिया आहेत. दोडामार्ग तालुक्यात ९ (१५%) नमुना लाभार्थी स्त्रिया असून ती संख्या इतर तालुक्यापेक्षा सर्वात जास्त आहे असे संशोधनातून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.३

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या वयोगटानुसार वर्गीकरण

| तालुका | लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या वयाची स्थिती | | | | |
|-----------|-------------------------------------|----------------|----------------|-----------------|--------------|
| | १८ पेक्षा कमी | १९ ते ३५ | ३६ ते ६० | ६१ पेक्षा जास्त | एकूण |
| देवगड | ० (०.००%) | १२ (१६.६६%) | ४६ (६३.८८%) | १४ (१९.४४%) | ७२ (१००%) |
| दोडामार्ग | ० (०.००%) | ३ (५.०%) | ५१ (८५.०%) | ६ (१०.०%) | ६० (१००%) |
| कणकवली | ० (०.००%) | १७ (२२.३६%) | ४८ (६३.१६%) | ११ (१४.४८%) | ७६ (१००%) |

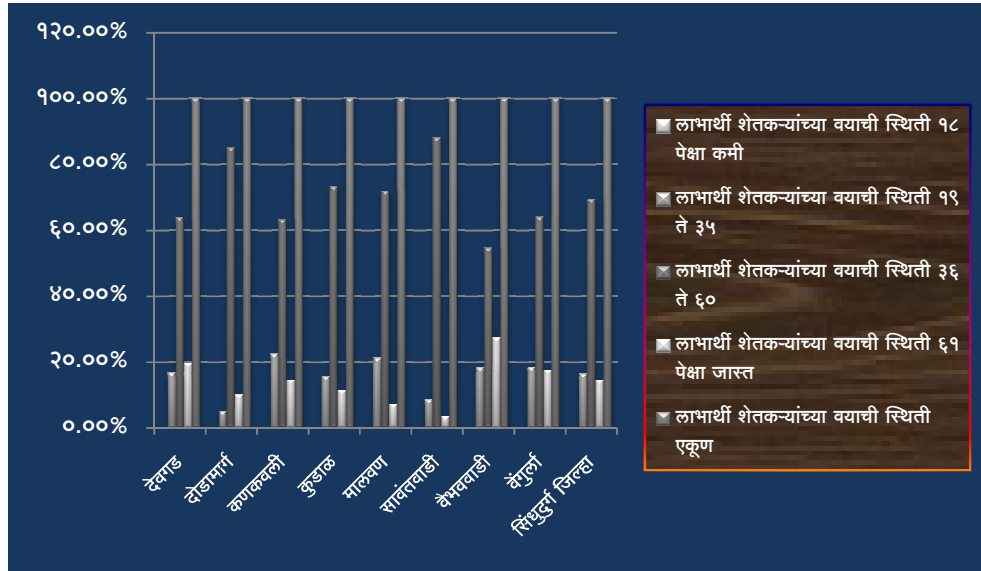
| | | | | | |
|------------------------------|--------------|----------------|-----------------|----------------|---------------|
| कुडाळ | ० (०.००%) | ११ (१५.५०%) | ५२ (७३.२४%) | ८ (११.२६%) | ७१ (१००%) |
| मालवण | ० (०.००%) | १५ (२१.१२%) | ५१ (७१.८४%) | ५ (७.०४%) | ७१ (१००%) |
| सावंतवाडी | ० (०.००%) | ५ (८.४८%) | ५२ (८८.१३%) | २ (३.३८%) | ५९ (१००%) |
| वैभववाडी | ० (०.००%) | १४ (१८.१८%) | ४२ (५४.५४%) | २१ (२७.२८%) | ७७ (१००%) |
| वेगुर्ला | ० (०.००%) | १६ (१८.३०%) | ५५ (६३.९५%) | १५ (१७.४४%) | ८६ (१००%) |
| एकूण सिंधुदूर्ग जिल्हा | ०० (०.०%) | ९३ (१६.२७%) | ३९७ (६९.४०%) | ८२ (१४.३३%) | ५७२ (१००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

आलेख क्र. ६.२

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या वयोगटानुसार वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६. ३ मध्ये नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या वयोगटानुसार तालुकानिहाय अध्ययन केले असता एकूण ५७२ नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३९७ (६९.४०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांचा वयोगट ३६ ते ६० या कर्त्या लोकसंख्या वयोगटामध्ये आहे. यामध्ये जिल्ह्यातील सर्वच तालुक्यातील लाभार्थ्यांचा जास्तितजास्त समावेश आहे.

तसेच ९३ (१६.२७%) लाभार्थी शेतकऱ्यांचा १९ ते ३५ हा वयोगटही कर्त्या लोकसंख्येचा आहे. या वयोगटामध्ये जास्तीत जास्त कणकवली तालुक्यातील १७ (२२.३६%) लाभार्थी शेतकरी असून, कमीतकमी दोडामार्ग तालुक्यातील ३ (५.०%) लाभार्थी शेतकरी आहेत. ३६ ते ६० या वयोगटामध्ये सर्वच तालुक्यातील लाभार्थी शेतकरी असून, जास्तीतजास्त ५५ (६३.९५%) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून, कमीतकमी ४२ (५४.५४%) लाभार्थी शेतकरी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत.

तक्ता क्र. ६.४

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या शैक्षणिक स्थितीचे तालुका निहाय सांख्यिकीय विश्लेषण

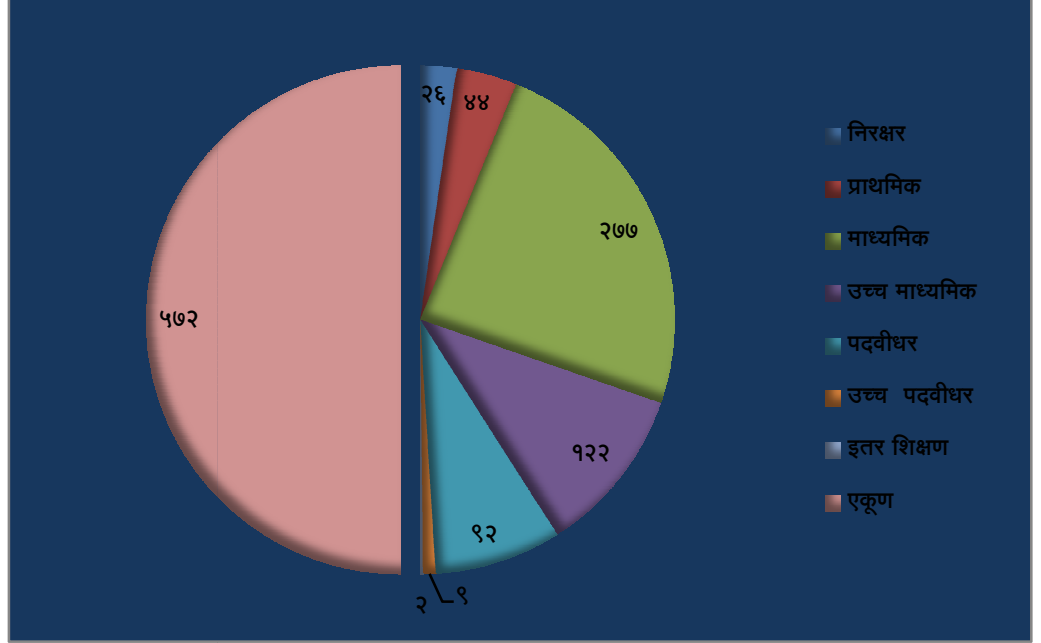
| तालुका | शैक्षणिक स्थिती | | | | | | | |
|-------------|-----------------------|-----------------------|-------------------------|-------------------------|------------------------|----------------------|----------------------|---------------------|
| | निरक्षर | प्राथमिक | माध्यमिक | उच्च माध्यमिक | पदवीधर | उच्च पदवीधर | इतर शिक्षण | एकूण |
| देवगड | १० (४.१६%) | ९ (१२.०५%) | २२ (३०.५५%) | १६ (२२.२२%) | १२ (१६.६६%) | २ (२.७८%) | १ (१.३८%) | ७२ (१००%) |
| दोडामार्ग | ५ (८.३३%) | ० (०.००%) | २८ (४६.६६%) | १३ (२१.६६%) | १३ (२१.६६%) | १ (१.६६%) | ० (०.००%) | ६० (१००%) |
| कणकवली | ३ (३.९४%) | ६ (७.९०%) | ४५ (५९.२२%) | १६ (२१.०५%) | ५ (६.५७%) | १ (१.३१%) | ० (०.००%) | ७६ (१००%) |
| कुडाळ | २ (२.८२%) | २ (२.८२%) | २८ (३९.४४%) | २४ (३३.८०%) | १५ (२१.१२%) | ० (०.००%) | ० (०.००%) | ७१ (१००%) |
| मालवण | ३ (४.२२%) | ४ (५.६४%) | ३२ (४५.०८%) | १२ (१६.९०%) | १९ (२६.७६%) | १ (१.४०%) | ० (०.००%) | ७१ (१००%) |
| सावंतवाडी | २ (३.३८%) | ० (०.००%) | ३७ (६२.७२%) | १२ (२०.३४%) | ८ (१३.५५%) | ० (०.००%) | ० (०.००%) | ५९ (१००%) |
| वैभववाडी | ४ (५.२०%) | १५ (१९.४८%) | ३६ (४६.७५%) | १४ (१८.१८%) | ६ (७.८०%) | २ (२.७०%) | ० (०.००%) | ७७ (१००%) |
| वेगुर्ला | ११ (१५.१२%) | ८ (९.३०%) | ३५ (४८.४४%) | १५ (१७.४४%) | १४ (१६.२८%) | २ (२.३२%) | १ (१.१६%) | ८६ (१००%) |
| एकूण | ४० (६.९९%) | ४४ (७.७०%) | २६३ (४५.९८%) | १२२ (२१.३४%) | ९२ (१६.०८%) | ९ (१.५०%) | २ (०.३५%) | ५७२ १००% |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

आलेख क्र. ६.३

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या शैक्षणिक स्थितीचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६:४ मध्ये असे आढळून येते की, एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी २६३ (४५.९८%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांचे शिक्षण माध्यमिक शालांत परीक्षेपर्यंत झालेले आहे. यामध्ये सर्वात जास्त ४५ (५९.२९%) लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या कणकवली तालुक्यातील आहे. कमीत कमी २२ (३०.५५%) लाभार्थी देवगड तालुक्यातील आहेत. ९२ (१६.०८%) लाभार्थी शेतकरी पदवीपर्यंत शिक्षण घेतलेले असून, ९ (१.५७%) लाभार्थी शेतकरी उच्च पदवीपर्यंत शिक्षण घेतलेले आहेत. मालवण तालुक्यात जास्तीतजास्त ९९ (२६.७६%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी पदवीपर्यंत शिक्षण घेतलेले आहे. यामध्ये कमीत कमी ५ (६.५७%) लाभार्थी शेतकरी कणकवली तालुक्यातील आहेत. एकूण शेतकऱ्यांपैकी ४० (६.९९%) लाभार्थी शेतकरी निरक्षर आहेत. सावंतवाडी तालुक्यातील ५७ (९६.६२%) लाभार्थी शेतकरी साक्षर आहेत असे वरील संशोधनातून दिसून आले आहे.

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या प्रवर्गाचे तालुकानिहाय सांख्यिकी वर्गीकरण

| तालुका | प्रवर्ग वर्गीकरण | | | | | | |
|-------------|-------------------------|-----------------------|----------------------|-----------------------|------------------------|-----------------------|-----------------------|
| | खुलावर्ग | एस.सी. | एस.टी. | एन.टी. | ओ.बी.सी. | एस.बी.सी. | एकूण |
| देवगड | २९ (४२.६४%) | १२ (१७.६४%) | १ (१.४७%) | २ (२.९४%) | २४ (३५.२९%) | ० (०.००%) | ६८ (१००%) |
| दोडामार्ग | ३९ (६५.०%) | ५ (८.३४%) | १ (१.६६%) | २ (३.९४%) | ६ (१०.०%) | ७ (११.६६%) | ६० (१००%) |
| कणकवली | ३९ (५४.९२%) | ४ (५.६३%) | २ (२.८१%) | २ (२.८१%) | २४ (३३.८०%) | ० (०.००%) | ७१ (१००%) |
| कुडाळ | ५० (७३.५२%) | ६ (८.८२%) | १ (१.४७%) | ५ (७.३५%) | ५ (७.३५%) | १ (१.४८%) | ६८ (१००%) |
| मालवण | ३९ (५७.३५%) | १ (१.४७%) | २ (१.४७%) | ५ (७.३५%) | १७ (२५.०%) | ४ (५.५८%) | ६८ (१००%) |
| सावंतवाडी | २९ (५४.७१%) | १ (१.८८%) | ० (०.००%) | १ (१.८८%) | २० (३७.७४%) | २ (३.७७%) | ५३ (१००%) |
| वैभववाडी | ४८ (६७.६०%) | ० (०.००%) | ० (०.००%) | १ (१.४०%) | २२ (३०.९८%) | ० (०.००%) | ७१ (१००%) |
| वेगुर्ला | ५९ (७२.८३%) | ४ (४.९३%) | १ (१.२३%) | ० (०.००%) | १७ (२०.९८%) | ० (०.००%) | ८१ (१००%) |
| एकूण | ३३२ (६१.४८%) | ३३ (६.१२%) | ८ (१.४८%) | १८ (३.३४%) | १३५ (२५.०%) | १४ (२.६९%) | ५४० (१००%) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

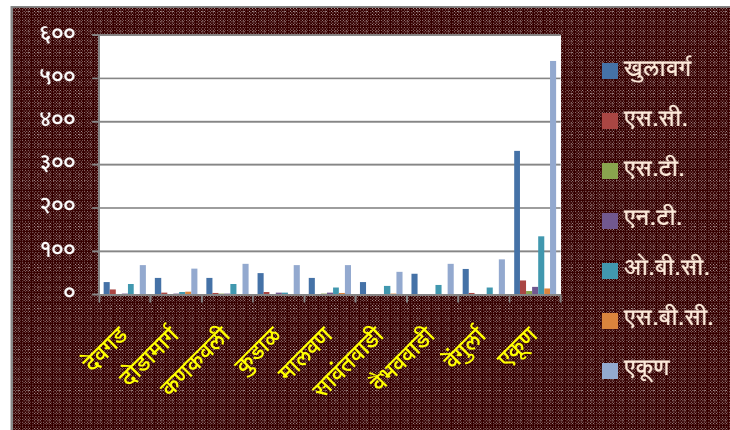
टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

टीप : एकूण ५७२ नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ५४० नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांनी

माहिती दिली व उर्वरीत २२ लाभार्थी शेतकऱ्यांनी प्रवर्गाबद्दल माहिती दिलेली नाही.

आलेख क्र. ६.४

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या प्रवर्गाचे वर्गीकरण



वरील तक्ता क्र. ६.५ मध्ये असे आढळून येते की, एकूण ५४० (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी सर्वात जास्त ३३२ (६१.४८%) नमुना लाभार्थी शेतकरी खुल्या वर्गातील आहेत. सर्वात कमी संख्या एस. टी. लाभार्थी शेतकऱ्यांची असून, ती संख्या ८ (१.४८%) इतकी आहे. खुल्या वर्गामध्ये जास्तीतजास्त वेंगुर्ला तालुक्यात ५९ (७२.८४%) लाभार्थी शेतकरी, तर कमीत कमी २९ (४७.७२%) नमुना लाभार्थी शेतकरी सावंतवाडी व देवगड तालुक्यात आहेत. जिल्ह्यामध्ये ओ.बी.सी. मध्ये १३५ (२५.०%) लाभार्थी शेतकरी आहेत. यामध्ये २४ (३५.२९%) लाभार्थी कुडाळ, कणकवली तालुक्यातील आहेत. एस्.सी. लाभार्थींची संख्या ३३ (६.१२%) इतकी आहे. यामध्ये जिल्ह्यात १२ (१७.६४%) संख्या देवगड तालुक्यात सर्वात जास्त आहे. एस.बी.सी. एकूण १४ (२.६९%) लाभार्थी असून त्यापैकी ७ (११.६६%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. या प्रकारे सर्व प्रवर्ग लाभार्थी शेतकऱ्यांचा समावेश फळझाड लागवडीमध्ये झालेला आहे.

तक्ता क्र. ६.६

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण मालकीच्या जमिनीचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | अर्धा ते १ एकर | १ ते २.५ एकर | २.५ ते ५ एकर | ५ ते १० एकर | १० ते २५ एकर | २५ एकर पेक्षा जास्त | एकूण |
|-------------------|-----------|----------------|--------------|--------------|-------------|--------------|---------------------|----------|
| देवगड | लाभार्थी | ६ | ११ | १८ | १८ | १७ | २ | ७२ |
| | टक्केवारी | (१.००%) | (१.९%) | (३.१%) | (३.१%) | (३.०%) | (३.०%) | (१२.६%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ७ | ८ | १९ | २१ | ५ | ० | ६० |
| | टक्केवारी | (१.२%) | (१.२%) | (३.३%) | (३.७%) | (१.०%) | (०.०%) | (१०.३%) |
| कणकवली | लाभार्थी | २ | १६ | ३३ | १४ | ७ | ४ | ७६ |
| | टक्केवारी | (३.०%) | (२.८%) | (५.८%) | (१.२%) | (७.०%) | (७.०%) | (१३.३%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १ | १७ | २३ | १२ | १२ | ६ | ७१ |
| | टक्केवारी | (२.०%) | (३.०%) | (४.०%) | (२.१%) | (२.१%) | (१०.०%) | (१२.४%) |
| मालवण | लाभार्थी | ३ | ७ | १८ | १७ | २५ | १ | ७१ |
| | टक्केवारी | (७.००%) | (१.२%) | (३.१%) | (३.०%) | (४.४%) | (२.०%) | (१२.६%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १ | ८ | २१ | १८ | ११ | ० | ५९ |
| | टक्केवारी | (२.००%) | (१.४%) | (३.७%) | (३.१%) | (१.९%) | (०.०%) | (१०.३%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ५ | ६ | २८ | २४ | ११ | ३ | ७७ |
| | टक्केवारी | (९.०%) | (१.०%) | (४.९%) | (४.२%) | (१.९%) | (५.०%) | (१३.५%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | १० | १३ | ३३ | २० | ८ | २ | ८६ |
| | टक्केवारी | (१.७%) | (२.३%) | (५.८%) | (३.५%) | (१.४%) | (३.०%) | (१५.०%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा | एकूण | ३५ | ८६ | १९३ | १४४ | ९६ | १८ | ५७२ |
| | | (६.३%) | (१४.९%) | (३३.७%) | (२५.२%) | (१६.८%) | (३.१%) | (१००.०%) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

तक्ता क्र. ६:६ मध्ये जिल्ह्यातील ५७५ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांच्याकडे २.५ ते ५ एकर जमिनीचे क्षेत्र असणाऱ्या लाभार्थ्यांची एकूण संख्या १९३ (३३.७%) इतकी आहे. त्यामध्ये सर्वात जास्त ३३ (५.८%) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील आहेत. तर सर्वात कमी १८ (३.१%) लाभार्थी शेतकरी देवगड, मालवण तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात अर्धा ते १ एकर जमिनीचे क्षेत्रफळ असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या ३६ (६.३%) इतकी असून, त्यामध्ये सर्वात जास्त १० (१.७%) लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील आहे. ऋर्वात कमी १ (२.०%) प्रत्येकी कुडाळ, सावंतवाडी तालुक्यातील आहे. जिल्ह्यातील जास्तीत जास्त २५ एकर पेक्षा जास्त जमिनीचे क्षेत्रफळ असणारे १८ (३.१%) लाभार्थी शेतकरी आहेत. त्यामध्ये सर्वात जास्त ४ लाभार्थी शेतकरी कणकवली तालुक्यातील असून, १ (२.०%) लाभार्थी शेतकरी मालवण तालुक्यातील आहे. अशाप्रकारे वरील तक्त्यामध्ये जिल्ह्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या मालकीच्या क्षेत्राच्या आकडेवारीचे स्पष्ट चित्र संशोधनातून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.७

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या फळझाड लागवडीच्या जमिनीचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

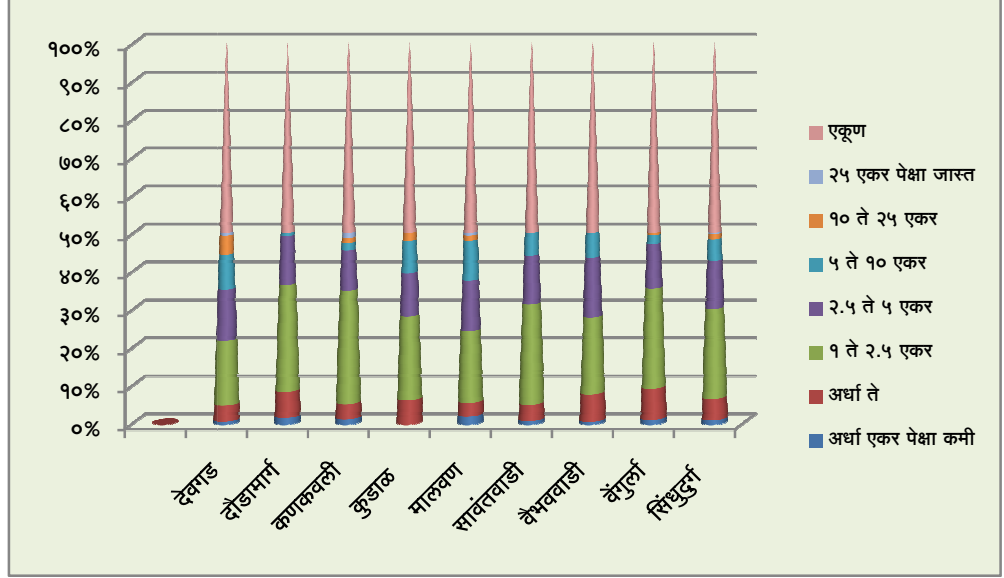
| तालुका | | अर्धा एकर पेक्षा कमी | अर्धा ते १ एकर | १ ते २.५ एकर | २.५ ते ५ एकर | ५ ते १० एकर | १० ते २५ एकर | २५ एकर पेक्षा जास्त | एकूण |
|----------------------|-------------|-------------------------|-------------------|-----------------|-----------------|----------------|-----------------|------------------------|------------|
| देवगड | लाभार्थी | १ | ६ | २५ | १९ | १३ | ७ | १ | ७२ |
| | टक्केवारी | (२%) | (१.१%) | (४.२%) | (३.३%) | (२.३%) | (१.२%) | (२%) | (१२.४%) |
| दौडामार्ग | लाभार्थी | २ | ८ | ३४ | १५ | १ | ० | ० | ६ |
| | टक्केवारी | (४%) | (१.४%) | (५.८%) | (२.६%) | (२%) | (०%) | (०%) | (१०.३%) |
| कणकवली | लाभार्थी | २ | ६ | ४५ | १६ | ३ | २ | २ | ७६ |
| | टक्केवारी | (४%) | (१.१%) | (७.९%) | (२.८%) | (५%) | (४%) | (४%) | (१३.३%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ० | ९ | ३१ | १६ | १२ | ३ | ० | ७१ |
| | टक्केवारी | (०%) | (१.६%) | (५.४%) | (२.८%) | (२.१%) | (५%) | (०%) | (१२.४%) |
| मालवण | लाभार्थी | २ | ५ | २७ | १९ | १५ | २ | १ | ७१ |
| | टक्केवारी | (५.०%) | (९.०%) | (४.७%) | (३.३%) | (२.६%) | (४.०%) | (२.०%) | (१२.६%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १ | ५ | ३१ | १५ | ७ | ० | ० | ५९ |
| | टक्केवारी | (२.०%) | (९.०%) | (५.४%) | (२.६%) | (४.०%) | (०.०%) | (०.०%) | (१०.३%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | १ | ११ | ३१ | २४ | १० | ० | ० | ७७ |
| | टक्केवारी | (२.०%) | (१.९%) | (५.४%) | (४.२%) | (१.८%) | (०.०%) | (०.०%) | (१३.५%) |
| वेगुर्ला | लाभार्थी | २ | १४ | ४५ | २० | ४ | १ | ० | ८६ |
| | टक्केवारी | (४.०%) | (२.५%) | (७.९%) | (३.५%) | (७.०%) | (२.०%) | (०.०%) | (१५.१%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा | एकूण | ११ | ६४ | २६९ | १४४ | ६५ | १५ | ०४ | ५७२ |
| | | (२.१%) | (११.२%) | (४६.७%) | (२५.२%) | (११.४%) | (२.६%) | (०.८%) | (१००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

आलेख क्र. ६.५

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या फळझाड लागवडीच्या जमिनीचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.७ मध्ये जिल्ह्यात ५७२ (१००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी फळझाड लागवडीचे १ एकर ते २.५ एकर जमीन क्षेत्र असणाऱ्या, नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या जिल्ह्यात सर्वात जास्त म्हणजे २६७ (४६.७%) इतकी आहे. यामध्ये सर्वात जास्त ४५ (७.९%) नमुना लाभार्थी वेंगुर्ला, कणकवली तालुक्यातील असून, सर्वात कमी २४ (४.२%) लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील आहे. जिल्ह्यात अर्धा एकर पेक्षा कमी फळझाड लागवड जमिनीचे क्षेत्र असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या १२ (२.१%) इतकी असून, त्यामध्ये जास्तीतजास्त ३ (५.०%) लाभार्थी शेतकरी मालवण तालुक्यातील असून १ (२.०%) लाभार्थी शेतकरी प्रत्येकी देवगड, सावंतवाडी, वैभववाडी तालुक्यातील आहे. जिल्ह्यात २५ एकर पेक्षा जास्त फळझाड लागवड जमीन क्षेत्र असणाऱ्या नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांची एकूण संख्या ४ (०.८%) इतकी आहे. त्यामध्ये २ (४.०%) लाभार्थी शेतकरी कणकवली तालुक्यातील असून, १ (२.०%) लाभार्थी शेतकरी प्रत्येकी देवगड, मालवण तालुक्यातील आहेत असे संशोधनातून आढळून आले आहे.

तक्ता क्र. ६.८

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या लागवडी योग्य पडीक जमिनीचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | अर्धा एकर पेक्षा कमी | अर्धा ते १ एकर | १ ते २.५ एकर | २.५ ते ५ एकर | ५ ते १० एकर | १० ते २५ एकर | २५ एकर पेक्षा जास्त | एकूण |
|----------------------|-----------|-------------------------|-------------------|-----------------|-----------------|----------------|-----------------|------------------------|---------|
| देवगड | लाभार्थी | ८ | ६ | २४ | ४ | ३ | ० | ० | ४५ |
| | टक्केवारी | (२.०%) | (१.५%) | (६.०%) | (१.०%) | (८.०%) | (०.०%) | (०.०%) | (११.३%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ३ | १० | २२ | २ | ४ | १ | ० | ४२ |
| | टक्केवारी | (८%) | (२.५%) | (५.५%) | (५.०%) | (१.०%) | (३.०%) | (०.०%) | (१०.६%) |
| कणकवली | लाभार्थी | १३ | १४ | १२ | ४ | २ | १ | १ | ४७ |
| | टक्केवारी | (३.३%) | (३.५%) | (३.०%) | (१.०%) | (५.०%) | (३.०%) | (३.०%) | (११.८%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ४ | १३ | १४ | २ | ८ | १ | ० | ४२ |
| | टक्केवारी | (१.०%) | (३.३%) | (३.५%) | (५.०%) | (२.०%) | (३.०%) | (०.०%) | (४५%) |
| मालवण | लाभार्थी | २ | १० | २६ | ६ | १ | ० | ० | ४५ |
| | टक्केवारी | (५.०%) | (२.५%) | (६.५%) | (१.५%) | (३.०%) | (०.०%) | (०.०%) | (११.३%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ३ | १७ | २८ | ६ | १ | ० | ० | ५५ |
| | टक्केवारी | (८.०%) | (४.३%) | (७.१%) | (१.५%) | (३.०%) | (०.०%) | (०.०%) | (१३.९%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ४ | ८ | २० | १० | ४ | ४ | ० | ५० |
| | टक्केवारी | (१.०%) | (२.०%) | (५.०%) | (२.५%) | (१.०%) | (१.०%) | (०.०%) | (१२.६%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | १३ | २० | २६ | १० | २ | ० | ० | ७१ |
| | टक्केवारी | (३.३%) | (५.०%) | (६.५%) | (२.५%) | (५.०%) | (०.०%) | (०.०%) | (१७.९%) |
| सिंधुदूर्ग जिल्हा | एकूण | ५० | ९८ | १७२ | ४४ | २५ | ७ | १ | ३९७ |
| | | (१२.६%) | (२४.७%) | (४३.३%) | (११.१%) | (६.३%) | (१.८%) | (०.२%) | (१००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : १) कसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

२) एकूण ५७२ लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३९७ लाभार्थी शेतकऱ्यांचे लागवडीयोग्य पडीक जमिनीच्या क्षेत्राचे तालुकानिहाय वर्गीकरण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.८ मध्ये जिल्ह्यात लागवडी योग्य पडीक क्षेत्र असणाऱ्या नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांची एकूण संख्या ३९७ (१००%) इतकी आहे. जिल्ह्यात १ एकर ते २.५ एकर पर्यंत पण लागवडी योग्य पडीक जमीन क्षेत्र असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या सर्वात जास्त असून, ती १७२ (४३.३%) इतकी आहे. यामध्ये सर्वात जास्त २८ (७.१%) लाभार्थी शेतकरी सावंतवाडी तालुक्यातील असून, सर्वात कमी १२ (३.०%) लाभार्थी शेतकरी कणकवली तालुक्यातील आहेत. २५ एकर पेक्षा जास्त पडीक पण लागवडी योग्य जमिनीचे क्षेत्र असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या जिल्ह्यात १ (०.२%) एवढी आहे. अर्धा एकर पेक्षा कमी पडीक पण लागवडी योग्य जमिनीचे क्षेत्र असणाऱ्या लाभार्थी शेतकरी संख्या ५० (१२.६%) इतकी आहे. यामध्ये सर्वात जास्त १३ (३.३%) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील आहे. तर सर्वात कमी २ (५.०%) लाभार्थी शेतकरी मालवण तालुक्यातील आहे.

तक्ता क्र. ६.९

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या कायम स्वरुपी पडीक जमिनीच्या क्षेत्राचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | अर्धा एकर पेक्षा कमी | अर्धा ते १ एकर | १ ते २.५ एकर | २.५ ते ५ एकर | ५ ते १० एकर | १० ते २५ एकर | एकूण |
|----------------------|-------------|-------------------------|-------------------|-----------------|-----------------|----------------|-----------------|------------|
| देवगड | लाभार्थी | ५ | ७ | १२ | १४ | २ | १ | ४१ |
| | टक्केवारी | (१.३%) | (१.८%) | (३.१%) | (३.७%) | (५.०%) | (३.०%) | (१०.७%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | २ | ९ | १३ | १४ | १ | ० | ३९ |
| | टक्केवारी | (५.०%) | (२.५%) | (३.४%) | (३.७%) | (३.०%) | (०.०%) | (१०.२%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ८ | ९ | २३ | १० | ४ | ० | ५४ |
| | टक्केवारी | (२.१%) | (२.४%) | (६.०%) | (२.६%) | (१.०%) | (०.०%) | (१४.१%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ५ | ७ | १६ | १० | २ | ५ | ४५ |
| | टक्केवारी | (१.३%) | (१.८%) | (४.२%) | (२.६%) | (५.०%) | (१.३%) | (११.८%) |
| मालवण | लाभार्थी | ३ | ८ | १८ | १२ | ७ | २ | ५० |
| | टक्केवारी | (८.८%) | (२.१%) | (४.७%) | (३.१%) | (१.८%) | (५.०%) | (१३.१%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ४ | ११ | १६ | ९ | ३ | ० | ४३ |
| | टक्केवारी | (१.०%) | (२.९%) | (२.४%) | (२.४%) | (८.०%) | (०.०%) | (११.३%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | १ | २० | २० | ८ | ४ | १ | ५४ |
| | टक्केवारी | (३.०%) | (५.२%) | (५.२%) | (२.१%) | (१.०%) | (३.०%) | (१४.१%) |
| वेगुर्ला | लाभार्थी | ९ | २२ | १२ | १० | १ | २ | ५६ |
| | टक्केवारी | (२.४%) | (५.८%) | (३.१%) | (२.६%) | (३.०%) | (५.०%) | (१४.७%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा | एकूण | ३७ | ९३ | १३० | ८७ | २४ | ११ | ३८२ |
| | | (९.७%) | (२४.३४%) | (३४.०%) | (२२.८%) | (६.३%) | (२.९%) | (१००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : १) कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

२) एकूण ५७२ नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३८२ नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या कायम स्वरुपी पडीक जमिनीचे तालुकानिहाय वर्गीकरण दिलेले आहे.

तक्ता क्र. ६.९ मध्ये कायम स्वरूपी पडीक जमिनीच्या (जंगलव्याप्त, अतिशय उंच तीव्र उताराची जमीन, चिरेखाणी, वालुकामय जमीन) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांची एकूण संख्या जिल्ह्यात ३८२ (१००%) इतकी आहे. यापैकी जास्तीत जास्त १३० (३४.०%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यामध्ये कायम स्वरूपी पडीक क्षेत्र १ एकर ते २.५ एकरापर्यंत आहे. त्यामध्ये जास्तीत जास्त २३ (६.०%) लाभार्थी शेतकरी कणकवली तालुक्यातील असून कमीत कमी १२ (३.१%) शेतकरी देवगड तालुक्यातील आहेत. अर्धा एकरपेक्षा कमी कायम स्वरूपी पडीक क्षेत्र असणाऱ्या नमुना लाभार्थी शेतकरी संख्या जिल्ह्यात ३७ (९.७%) इतकी आहे. यामध्ये सर्वात जास्त ९ (२.४%) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून सर्वात कमी १ (३.०%) लाभार्थी शेतकरी वैभववाडी तालुक्यातील आहे. १० ते २५ एकरापेक्षा कायम स्वरूपी पडीक जमिनीचे क्षेत्र असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या ११ (२.९%) इतकी असून, त्यामध्ये जास्तीतजास्त ५ (१.३%) लाभार्थी शेतकरी कुडाळ तालुक्यातील आहेत. सर्वात कमी १ (३.०%) लाभार्थी शेतकरी प्रत्येकी वैभववाडी, देवगड तालुक्यातील आहेत. मालवण तालुक्यातील एकाही लाभार्थी शेतकऱ्यांचा यामध्ये समावेश नाही.

तक्ता क्र. ६.१०

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या उत्पन्नाच्या साधनाचे सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | शेती | | | पशुपालन | | | नोकरी | | | व्यापार/व्यवसाय | | | मजूरी (दैनंदिन) | | |
|------------------------------|-----------|---------|--------|-------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|-----------------|---------|-------|-----------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ६८ | ४ | ७२ | १० | ६२ | ७२ | १० | ६२ | ७२ | ११ | ६१ | ७२ | २९ | ४३ | ७२ |
| | टक्केवारी | (९४.४५) | (५.५५) | (१००) | (१३.८८) | (८६.१२) | (१००) | (१३.८८) | (८६.१२) | (१००) | (१५.२८) | (८४.७२) | (१००) | (४०.२८) | (५९.७२) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ६० | ० | ६० | ७ | ५३ | ६० | १७ | ४३ | ६० | १७ | ४३ | ६० | १५ | ४५ | ६० |
| | टक्केवारी | (१००) | (०.००) | (१००) | (११.६६) | (८८.३४) | (१००) | (२८.३४) | (७१.६६) | (१००) | (२२.३४) | (७९.६६) | (१००) | (२५.००) | (७५.००) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ७५ | १ | ७६ | २३ | ५३ | ७६ | ९ | ६७ | ७६ | ७ | ६९ | ७६ | ३९ | ३७ | ७६ |
| | टक्केवारी | (९८.६८) | (१.३२) | (१००) | (३०.२६) | (६९.७४) | (१००) | (११.८४) | (८८.१६) | (१००) | (९.२२) | (९०.७८) | (१००) | (५१.३२) | (४८.६८) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ७१ | ० | ७१ | ८ | ६३ | ७१ | १३ | ५८ | ७१ | १२ | ५९ | ७१ | १२ | ५९ | ७१ |
| | टक्केवारी | (१००) | (०.००) | (१००) | (११.२६) | (८८.७४) | (१००) | (१८.३०) | (८१.७०) | (१००) | (१६.९०) | (८३.१०) | (१००) | (१६.९०) | (८३.१०) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ७० | १ | ७१ | ६ | ६५ | ७१ | १४ | ५७ | ७१ | १२ | ५९ | ७१ | ३३ | ५८ | ७१ |
| | टक्केवारी | (९८.६८) | (१.३२) | (१००) | (८.३४) | (९१.६६) | (१००) | (१९.४५) | (८०.५५) | (१००) | (१६.६६) | (८३.३४) | (१००) | (१९.४५) | (८०.५५) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ५४ | ५ | ५९ | ४ | ५५ | ५९ | १७ | ४२ | ५९ | १४ | ४५ | ५९ | १६ | ४३ | ५९ |
| | टक्केवारी | (९१.५३) | (८.४७) | (१००) | (६.७८) | (९३.२२) | (१००) | (२८.८२) | (७१.१८) | (१००) | (२३.७२) | (७६.२८) | (१००) | (२७.१२) | (७२.८८) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ७२ | ५ | ७७ | १२ | ६५ | ७७ | २३ | ५४ | ७७ | १० | ६७ | ७७ | २४ | ५३ | ७७ |
| | टक्केवारी | (९३.५०) | (६.५०) | (१००) | (१५.५८) | (८४.४२) | (१००) | (२९.८८) | (७०.१२) | (१००) | (१२.९८) | (८७.०२) | (१००) | (३१.१६) | (६८.८४) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ८१ | ५ | ८६ | १२ | ७४ | ८६ | २३ | ६३ | ८६ | २६ | ५९ | ८४ | १७ | ६९ | ८६ |
| | टक्केवारी | (९५.३०) | (४.७०) | (१००) | (१२.९४) | (८७.०६) | (१००) | (२५.८८) | (७४.१२) | (१००) | (२९.७६) | (७०.२४) | (१००) | (१७.८५) | (८२.१५) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | ५५१ | २१ | ५७२ | ८२ | ४९० | ५७२ | १२६ | ४४६ | ५७२ | १०९ | ४६२ | ५७१ | १६५ | ४०७ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (९६.५०) | (३.५०) | (१००) | (१४.१६) | (८५.८४) | (१००) | (२१.९०) | (७८.१०) | (१००) | (१८.९२) | (८१.०३) | (१००) | (२८.८४) | (७१.१६) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

टिप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

तक्ता क्र. ६.१० मध्ये जिल्ह्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या उत्पन्नाच्या साधनामध्ये एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जिल्ह्यात जास्तीतजास्त ५५२ (९६.५०%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना शेतीपासून उत्पन्न मिळते. यामध्ये जास्तीतजास्त ८१ (९५.३०%) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून, कमीत-कमी ५४ (९१.५३%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात कमीत कमी ८१ (१४.१६%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना, पशुपालन व्यवसायापासून उत्पन्न मिळते. यामध्ये जास्तीत जास्त (३८.२६%) लाभार्थी कणकवली तालुक्यातील असून, कमीतकमी ६ (८.३३%) लाभार्थी मालवण तालुक्यातील आहेत. नोकरी, व्यापार, मजुरी या उत्पन्नाच्या साधनापासून लाभार्थींना अल्प उत्पन्न मिळते असे संशोधनाच्या आकडेवारीवरून आढळून येते.

तक्ता क्र. ६.११

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण उत्पन्नाचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय अध्ययन

| तालुका | | १ लाख रुपयांपेक्षा कमी उत्पन्न | | | १ ते २ लाख रुपये उत्पन्न | | | २ ते ३ लाख रुपये उत्पन्न | | | ३ लाख रुपयांपेक्षा जास्त उत्पन्न | | |
|------------------------|-----------|--------------------------------|---------|-------|--------------------------|---------|-------|--------------------------|---------|-------|----------------------------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ३० | ४२ | ७२ | ७ | ६५ | ७२ | २८ | ४४ | ७२ | ७ | ६५ | ७२ |
| | टक्केवारी | (४१.६६) | (५८.३४) | (१००) | (९.७२) | (९०.२८) | (१००) | (३८.८८) | (६१.१२) | (१००) | (९.७२) | (९०.२८) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | २४ | ३६ | ६० | २ | ५८ | ६० | ३३ | २७ | ६० | १ | ५९ | ६० |
| | टक्केवारी | (४०.००) | (६०.००) | (१००) | (३.३३) | (९६.६६) | (१००) | (५५.००) | (४५.००) | (१००) | (१.६६) | (९८.३४) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | २१ | ५५ | ७६ | ८ | ६८ | ७६ | ३९ | ३७ | ७६ | ८ | ६८ | ७६ |
| | टक्केवारी | (२७.६४) | (७२.३६) | (१००) | (१०.५२) | (९४.३६) | (१००) | (५१.३२) | (४८.६८) | (१००) | (१०.५२) | (८९.४८) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | २८ | ४३ | ७१ | ४ | ६७ | ७१ | ३५ | ३६ | ७१ | ४ | ६७ | ७१ |
| | टक्केवारी | (३९.४४) | (६०.५६) | (१००) | (५.६४) | (९४.३६) | (१००) | (४९.३०) | (५०.७०) | (१००) | (५.६४) | (९४.३६) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | २३ | ३४ | ७१ | ५ | ६६ | ७१ | ३९ | ३२ | ७१ | ४ | ६७ | ७१ |
| | टक्केवारी | (५२.१२) | (४७.८८) | (१००) | (७.०४) | (९२.९६) | (१००) | (५४.९२) | (४५.०७) | (१००) | (५.६४) | (९४.३६) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १० | ४९ | ५९ | ३ | ५६ | ५९ | ४४ | १५ | ५९ | २ | ५७ | ५९ |
| | टक्केवारी | (१६.९४) | (४३.०६) | (१००) | (५.०८) | (९४.९२) | (१००) | (७४.५७) | (२५.४३) | (१००) | (३.३८) | (९६.६२) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २० | ५७ | ७७ | ७ | ७१ | ७७ | ४७ | ३० | ७७ | ३ | ७४ | ७७ |
| | टक्केवारी | (२५.९७) | (७४.०६) | (१००) | (७.८०) | (९२.२०) | (१००) | (६१.०४) | (३८.९६) | (१००) | (३.९०) | (९६.१०) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ४० | ४६ | ८६ | ७ | ७९ | ८६ | ३४ | ५२ | ८६ | ५ | ८१ | ८६ |
| | टक्केवारी | (४६.५२) | (५३.४८) | (१००) | (८.१४) | (९१.८६) | (१००) | (३९.५४) | (६०.४६) | (१००) | (५.८२) | (९४.१८) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | १९६ | ३७६ | ५७२ | ४२ | ५३० | ५७२ | २९९ | २७३ | ५७२ | ३४ | ५३८ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (३४.२६) | (६५.७४) | (१००) | (७.३४) | (९२.६६) | (१००) | (५२.२८) | (४७.७२) | (१००) | (५.९५) | (९४.०५) | (१००) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

टिप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

तक्ता क्र. ६.११ मध्ये असे आढळून येते की, लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण उत्पन्नांचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय विश्लेषणामध्ये ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीत जास्त २९९ (५२.२८%) लाभार्थी शेतकऱ्यांचे २ लाख ते ३ लाख दरम्यान उत्पन्न आहे. यामध्ये जास्तीत जास्त वैभववाडी तालुक्यातील ४७ (६१.०४%) लाभार्थी शेतकऱ्यांचा समावेश आहे, तर कमीत कमी २८ (३८.८८%) लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात १ लाख रुपयांपेक्षा कमी उत्पन्न मिळणारे १९६ (३४.२६%) नमुना लाभार्थी शेतकरी असून यामध्ये जास्तीत जास्त ४० (४६.५१%) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील आहेत. कमीतकमी १० (१६.९४%) लाभार्थी शेतकरी सावंतवाडी तालुक्यातील आहेत. जास्तीत जास्त ३ लाख रुपयांपेक्षा जास्त उत्पन्न मिळविणारे ३४ (५.९५%) लाभार्थी असून त्यामध्ये जास्तीत जास्त ८ (१०.५२%) लाभार्थी कणकवली तालुक्यातील असून कमीतकमी १ (१.६६%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत म्हणजेच जिल्ह्यात उत्पन्नामध्ये २ ते ३ लाख रुपये उत्पन्न असणारे जास्तीत जास्त शेतकरी असून, यामध्ये सर्वच तालुक्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांचा समावेश आहे असे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते.

तक्ता क्र. ६.१२

लाभार्थ्यांच्या फळबागेसाठी आवश्यक सिंचन व्यवस्थेचे सांख्यिकीय वर्गीकरण

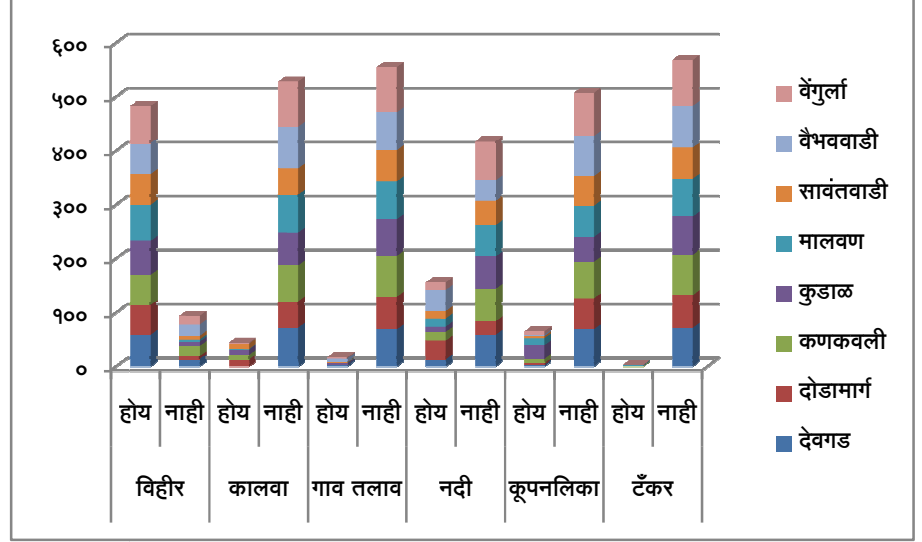
| तालुका | | विहीर | | | कालवा | | | गाव तलाव | | | नदी | | | कूपनलिका | | | टँकर | | |
|------------------------------|-----------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|----------|---------|-------|---------|---------|-------|----------|---------|-------|--------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ५९ | १३ | ७२ | ० | ७२ | ७२ | ३ | ६९ | ७२ | १३ | ५९ | ७२ | ३ | ६९ | ७२ | ० | ७२ | ७२ |
| | टक्केवारी | (८१.९४) | (१८.०६) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (४.१६) | (९५.८४) | (१००) | (१८.०६) | (८१.९४) | (१००) | (४.१६) | (९५.८४) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ५४ | ६ | ६० | १२ | ४८ | ६० | ० | ६० | ६० | ३५ | २५ | ६० | ३ | ५७ | ६० | ० | ६० | ६० |
| | टक्केवारी | (९०.००) | (१००) | (१००) | (२०.००) | (८०.००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (५८.३४) | (४१.६६) | (१००) | (५.००) | (९५.००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ५७ | १९ | ७६ | ९ | ६७ | ७६ | ० | ७६ | ७६ | १६ | ६० | ७६ | ८ | ६८ | ७६ | १ | ७५ | ७६ |
| | टक्केवारी | (७५.००) | (२५.००) | (१००) | (११.८४) | (८८.१६) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (२१.०६) | (७८.९४) | (१००) | (१०.५२) | (८९.४७) | (१००) | (१.३२) | (९८.६८) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ६३ | ८ | ७१ | १० | ६१ | ७१ | ३ | ६८ | ७१ | १० | ६० | ७० | २५ | ४६ | ७१ | ० | ७१ | ७१ |
| | टक्केवारी | (८८.७४) | (११.२६) | (१००) | (१४.०८) | (८५.९२) | (१००) | (४.२२) | (९५.७८) | (१००) | (१४.२८) | (८५.७२) | (१००) | (३५.२२) | (६४.७८) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ६७ | ४ | ७१ | १ | ७० | ७१ | १ | ७० | ७१ | १५ | ५६ | ७१ | १३ | ५८ | ७१ | १ | ७० | ७१ |
| | टक्केवारी | (९४.४४) | (५.५६) | (१००) | (१.३२) | (९८.६२) | (१००) | (१.३२) | (९८.६२) | (१००) | (२०.८४) | (७९.१६) | (१००) | (१८.०६) | (८१.९१) | (१००) | (१.३८) | (९८.६२) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ५७ | ७ | ५९ | १० | ४९ | ५९ | १ | ५८ | ५९ | १४ | ४५ | ५९ | ४ | ५५ | ५९ | ० | ५८ | ५८ |
| | टक्केवारी | (९६.६२) | (३.३८) | (१००) | (१६.९४) | (८३.०६) | (१००) | (१.७०) | (९८.३०) | (१००) | (२३.७२) | (७६.२८) | (१००) | (६.७८) | (९३.२२) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ५६ | २१ | ७७ | ० | ७७ | ७७ | ७ | ७० | ७७ | ३९ | ३८ | ७७ | ३ | ७४ | ७७ | ० | ७७ | ७७ |
| | टक्केवारी | (७२.७२) | (२७.२८) | (१००) | (०.००) | (०.००) | (१००) | (९.१०) | (९०.९०) | (१००) | (५०.६४) | (४९.३६) | (१००) | (३.९०) | (९६.१०) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ७० | १६ | ८६ | ०२ | ८४ | ८६ | ०२ | ८४ | ८६ | १४ | ७२ | ८६ | ६ | ८० | ८६ | १ | ८५ | ८६ |
| | टक्केवारी | (८३.३४) | (१६.६६) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (१४.२८) | (८५.७२) | (१००) | (४.३६) | (९५.२४) | (१००) | (१.२०) | (९८.८०) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | ४७८ | ९४ | ५७२ | ४४ | ५२८ | ५७२ | १७ | ५५५ | ५७१ | १५६ | ४१६ | ५७० | ६४ | ५०८ | ५७२ | ३ | ५६७ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (८३.८८) | (१६.१२) | (१००) | (७.३६) | (९२.६४) | (१००) | (२.६२) | (९७.३८) | (१००) | (२७.०२) | (७२.९८) | (१००) | (११.०४) | (८८.९६) | (१००) | (०.५२) | (९९.४८) | (१००) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

टिप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

आलेख क्र. ६.६

लाभार्थ्यांच्या फळबागेसाठी आवश्यक सिंचन व्यवस्थेचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.१२ मध्ये, जिल्ह्यातील फळबागेसाठी विहीर, कालवा, गाव तलाव, नदी, कूपनलिका आणि टँकर इत्यादींच्या सहाय्याने फळबागेसाठी जलसिंचनाचा पुरवठा केला जातो. यामध्ये ५७२ (१००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ४७८ (८३.८८%) लाभार्थी शेतकरी विहीरीच्या माध्यमातून फळबागेसाठी जलसिंचन करतात. यामध्ये जास्तीतजास्त ७० (८३.३४%) लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून, कमीत कमी ५४ (१००%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. टँकरचा वापर अतिशय कमी असून कणकवली, मालवण आणि वैभववाडी तालुक्यातील प्रत्येकी १ लाभार्थी शेतकऱ्यांनी केलेला आहे. कालवा, नदी, गावतलाव आणि उपनलिका यांचाही वापर जलसिंचनासाठी केल्याचे संशोधनातून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.१३

आधुनिक जलसिंचन सुविधांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय अध्ययन

| तालुका | | तुषार सिंचन | | | टिबक सिंचन | | | इतर साधने | | |
|------------------------|-----------|-------------|---------|-------|------------|---------|-------|-----------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ९ | ६३ | ७२ | १५ | ५७ | ७२ | ३ | ६९ | ७२ |
| | टक्केवारी | (१२.५०) | (८७.५०) | (१००) | (२०.८४) | (७९.१६) | (१००) | (४.१६) | (९५.८४) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | २० | ४० | ६० | ४ | ५६ | ६० | ० | ६० | ६० |
| | टक्केवारी | (३३.३०) | (६६.७०) | (१००) | (६.६६) | (९३) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ९ | ६७ | ७६ | २ | ७४ | ७६ | १३ | ६३ | ७६ |
| | टक्केवारी | (११.८०) | (८८.२०) | (१००) | (२.६४) | (९७.३६) | (१००) | (१७.१०) | (८२.९०) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | २८ | ४३ | ७१ | १८ | ५३ | ७१ | ३ | ६८ | ७१ |
| | टक्केवारी | (३९.४४) | (६०.५६) | (१००) | (२५.३६) | (७४.६४) | (१००) | (४.२२) | (९५.७८) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | २७ | ४४ | ७१ | ९ | ६२ | ७१ | ५ | ६६ | ७१ |
| | टक्केवारी | (३७.५०) | (६२.५०) | (१००) | (१२.५०) | (८७.५०) | (१००) | (६.९४) | (९३.०६) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २९ | ३० | ५९ | १२ | ४७ | ५९ | १ | ५८ | ५९ |
| | टक्केवारी | (४९.१६) | (५०.८४) | (१००) | (२०.३४) | (७९.६६) | (१००) | (१.७०) | (९८.३०) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ८ | ६८ | ७६ | १६ | ६० | ७६ | १५ | ६१ | ७६ |
| | टक्केवारी | (१०.५२) | (८९.४८) | (१००) | (२१.०६) | (७८.९४) | (१००) | (१९.७४) | (८०.२६) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ६ | ७८ | ८४ | ८ | ७६ | ८४ | १५ | ६९ | ८४ |
| | टक्केवारी | (७.१४) | (९२.८६) | (१००) | (९.५२) | (९०.४८) | (१००) | (१७.०८) | (८२.९२) | (१००) |
| एकूण सिंधुदूर्ग जिल्हा | लाभार्थी | १३६ | ४३३ | ५६९ | ८४ | ४८५ | ५६९ | ५५ | ५१४ | ५६९ |
| | टक्केवारी | (२३.८६) | (७६.१४) | (१००) | (१४.७४) | (८५.२६) | (१००) | (९.५०) | (९०.५०) | (१००) |

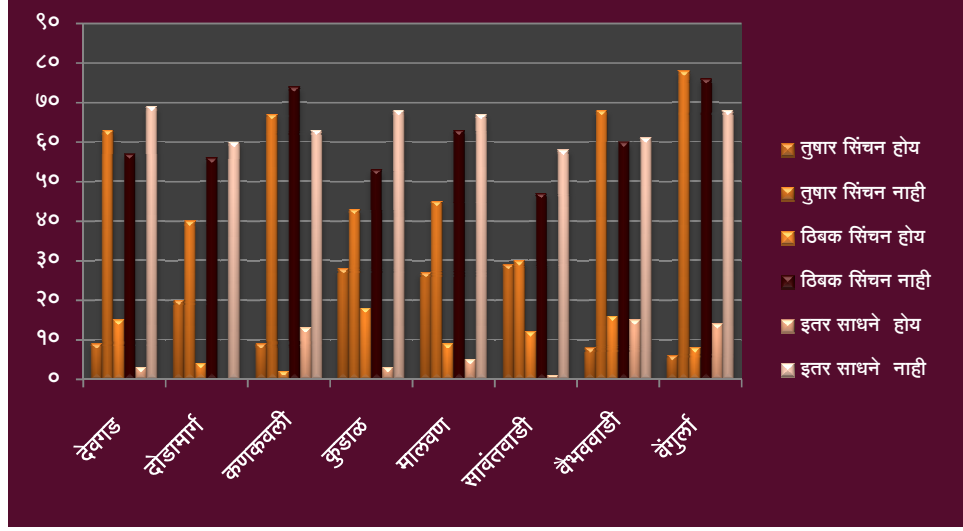
स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे.

टीप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

एकूण ५७२ नमुना लाभार्थी पैकी ५६९ लाभार्थी शेतकऱ्यांनी माहिती दिली यावरून जलसिंचन सुविधांचे तालुकानिहाय विश्लेषण केले आहे.

आलेख क्र. ६.६

आधुनिक जलसिंचन सुविधांचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.१३ मध्ये असे आढळून येते की, जिल्ह्यामध्ये फळबागेसाठी पाणी बचतीच्या अत्यावश्यक, आधुनिक जलसिंचनाच्या सुविधांचा विचार करता ५६९ (१००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीत जास्त १३६ (२४%) लाभार्थी शेतकऱ्यांकडे 'तुषार सिंचन' ही आधुनिक सुविधा उपलब्ध आहे. यामध्ये जास्तीत जास्त २९ (४९.१६%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील असून कमीत कमी ६ (७.१४%) वेंगुर्ला तालुक्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांकडे ही सुविधा उपलब्ध आहे. जलसिंचनाची इतर साधने यामध्ये डब्याचा वापर, झारीचा वापर, नळ योजना इ. वापर करणारे ५४ (१०%) नमुना लाभार्थी शेतकरी जिल्ह्यात असून यामध्ये जास्तीत जास्त १५ (१९.७४%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील असून कमीत कमी १ (१.७%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील आहेत.

लाभार्थी फळबागेसाठी जलसिंचन उपलब्धतेचे सांख्यिकीय वर्गीकरण

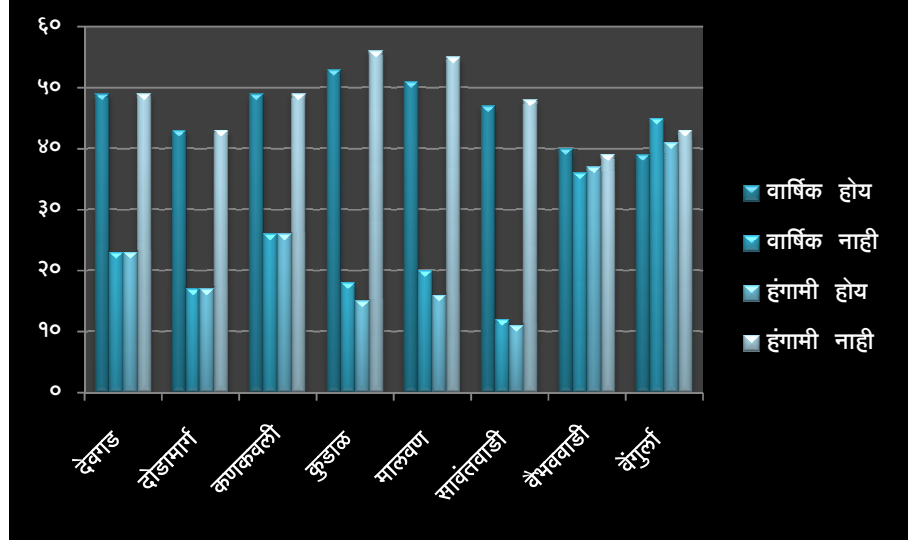
| तालुका | | वार्षिक | | | हंगामी | | |
|------------------------|-----------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ४९ | २३ | ७२ | २३ | ४९ | ७२ |
| | टक्केवारी | (६८.०६) | (३१.९४) | (१००) | (३१.९४) | (६८.६) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ४३ | १७ | ६० | १७ | ४३ | ६० |
| | टक्केवारी | (७१.६६) | (२८.३४) | (१००) | (२८.३४) | (७१.६६) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ४९ | २६ | ७५ | २६ | ४९ | ७५ |
| | टक्केवारी | (६५.३४) | (३४.६६) | (१००) | (३४.६६) | (६५.३४) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ५३ | १८ | ७१ | १५ | ५६ | ७१ |
| | टक्केवारी | (७४.६४) | (२५.३६) | (१००) | (२१.१२) | (७८.८८) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ५१ | २० | ७१ | १६ | ५५ | ७१ |
| | टक्केवारी | (४२.२२) | (२७.७८) | (१००) | (२३.६२) | (७८.३८) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ४७ | १२ | ५९ | ११ | ४८ | ५९ |
| | टक्केवारी | (७९.६६) | (२०.३४) | (१००) | (१८.६४) | (८१.३६) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ४० | ३६ | ७६ | ३७ | ३९ | ७६ |
| | टक्केवारी | (५२.६४) | (४७.३६) | (१००) | (४८.६८) | (५१.३२) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ३९ | ४५ | ८४ | ४१ | ४३ | ८४ |
| | टक्केवारी | (४६.४२) | (५३.५९) | (१००) | (४८.८०) | (५१.२०) | (१००) |
| एकूण सिंधुदूर्ग जिल्हा | लाभार्थी | ३७१ | १९७ | ५६८ | १८६ | ३८२ | ५६८ |
| | टक्केवारी | (६५.३७) | (३४.६२) | (१००) | (३२.८६) | (६७.१३) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

टीप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

आलेख क्र. ६.७

लाभार्थी फळबागेसाठी जलसिंचन उपलब्धतेचे वर्गीकरण



एकूण ५७२ नमुना लाभार्थी पैकी ५६८ लाभार्थी शेतकऱ्यांनी दिलेल्या माहितीवरून तालुकानिहाय विश्लेषण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.१४ मध्ये असे आढळून येते की, जिल्ह्यामध्ये फळबाग सिंचनासाठी उपलब्ध असणारा जलसिंचन पुरवठ्याचा विचार करता, एकूण ५६८ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३७२ (६५.३८%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी वर्षभर पुरेल इतका जलसिंचनाचा साठा उपलब्ध आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त ४७ (४९.६६%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील असून, कमीतकमी ४९ (४६.४२%) लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील आहेत. यामध्ये सर्वच तालुक्यांची स्थिती समाधानकारक दिसते. हंगामी जलसिंचनाचा साठा उपलब्ध असणारे एकूण लाभार्थी १८७ (३२.८६%) असून, त्यामध्ये जास्तीतजास्त ४१ (४८.८०) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून, कमीतकमी ११ (१८.६४%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील आहेत.

तक्ता क्र. ६.१५

लाभार्थी शेतकऱ्यांकडे फळबाग लागवडीसाठी उपलब्ध साधनांचे सांख्यिकीय विश्लेषण

| तालुका | | पाँवर टेलर (लहान) | | | मोठा ट्रॅक्टर | | | बैलगाडी | | | औषध फवारणीसाठी पंप | | | कमले कर्टिंग व इतर अवजारे | | | स्टोअर रूम | | |
|------------------------|-----------|-------------------|---------|-------|---------------|---------|-------|---------|---------|-------|--------------------|---------|-------|---------------------------|---------|-------|------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | १० | ६० | ७० | १ | ७० | ७१ | १० | ६१ | ७१ | २० | ५१ | ७१ | ४७ | २४ | ७१ | १३ | ५८ | ७१ |
| | टक्केवारी | (१४.२८) | (८५.७२) | (१००) | (१.४०) | (९८.६०) | (१००) | (१४.०८) | (८५.९२) | (१००) | (२८.१६) | (७१.८४) | (१००) | (६६.२०) | (३३.८०) | (१००) | (१८.३०) | (८१.७०) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ७ | ५३ | ६० | १ | ५९ | ६० | ९ | ५१ | ६० | ७ | ५३ | ६० | २७ | ३३ | ६० | १० | ५० | ६० |
| | टक्केवारी | (११.६६) | (८८.३४) | (१००) | (१.६६) | (९८.३४) | (१००) | (१५.००) | (८५.००) | (१००) | (११.६६) | (८८.३४) | (१००) | (४५.००) | (५५.००) | (१००) | (१६.६६) | (८३.३४) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ६ | ७० | ७६ | २ | ७४ | ७६ | ६ | ७० | ७६ | १० | ६६ | ७६ | ४६ | ३० | ७६ | १३ | ६३ | ७६ |
| | टक्केवारी | (८.९०) | (९२.१०) | (१००) | (२.६३) | (९७.३७) | (१००) | (८.९०) | (९२.१०) | (१००) | (१३.१५) | (८६.८४) | (१००) | (६०.५२) | (३९.४८) | (१००) | (१७.१०) | (८२.९०) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ४ | ६६ | ७० | २ | ६८ | ७० | ७ | ६३ | ७० | १५ | ५५ | ७० | ३८ | ३२ | ७० | १४ | ५६ | ७० |
| | टक्केवारी | (५.७२) | (९४.२८) | (१००) | (२.८६) | (९७.१४) | (१००) | (१०.००) | (९०.००) | (१००) | (२१.४२) | (७८.४८) | (१००) | (५४.२८) | (४५.७२) | (१००) | (२०.००) | (८०.००) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ४ | ४३ | ४७ | ३ | ४४ | ४७ | ८ | ३९ | ४७ | १० | ४९ | ५९ | २४ | २३ | ४७ | १९ | २८ | ४७ |
| | टक्केवारी | (८.५२) | (९१.४८) | (१००) | (६.६८) | (९३.६२) | (१००) | (१७.०२) | (८२.९८) | (१००) | (१६.९४) | (८६.०६) | (१००) | (५१.०६) | (४८.९४) | (१००) | (४०.४२) | (५९.५८) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १ | ५८ | ५९ | ० | ५९ | ५९ | ९ | ५० | ५९ | १६ | ४३ | ५९ | २४ | २३ | ४७ | १९ | २८ | ४७ |
| | टक्केवारी | (१.६९) | (९८.३०) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (१५.२५) | (८४.७५) | (१००) | (२७.११) | (७२.८९) | (१००) | (४०.६८) | (५९.३२) | (१००) | (२८.८२) | (७१.१८) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | १ | ७५ | ७६ | ३ | ७४ | ७७ | २ | ७५ | ७७ | ९ | ६८ | ७७ | ३५ | ४२ | ७७ | १० | ६० | ७० |
| | टक्केवारी | (१.३२) | (९८.६८) | (१००) | (३.९०) | (९६.१०) | (१००) | (२.६०) | (९७.४०) | (१००) | (११.६८) | (८८.३२) | (१००) | (४५.४५) | (५४.५५) | (१००) | (१४.२८) | (८५.७२) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | १ | ८३ | ८४ | ४ | ८१ | ८५ | ३ | ८१ | ८४ | ९ | ७६ | ८५ | ६७ | १८ | ८५ | १५ | ६६ | ८१ |
| | टक्केवारी | (१.१९) | (९८.९०) | (१००) | (४.७०) | (९५.३०) | (१००) | (३.५७) | (९६.४३) | (१००) | (१०.५८) | (८९.४२) | (१००) | (७८.८२) | (२१.१८) | (१००) | (१८.५२) | (८१.४८) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | ३४ | ५०८ | ५४२ | १६ | ५२९ | ५४५ | ५४ | ४९० | ५४४ | ९६ | ४६१ | ५५७ | ३१८ | २३७ | ५५५ | १११ | ४२३ | ५३४ |
| | टक्केवारी | (६.२८) | (९३.७२) | (१००) | (२.९४) | (९७.०६) | (१००) | (९.९२) | (९०.०८) | (१००) | (१७.२४) | (८२.७६) | (१००) | (५७.३०) | (४२.७०) | (१००) | (२०.७८) | (७९.२२) | (१००) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

तक्ता क्र. ६.१५ मध्ये असे आढळून येते की, फळबागेसाठी लाभार्थी शेतकऱ्यांकडे असणाऱ्या साधनांमध्ये जिल्ह्यात कलमे कटींग साहित्य आणि इतर किरकोळ औजारे असणाऱ्या एकूण ५५५ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीतजास्त ३१८ (५७.३०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांकडे ही औजारे आहेत. यामध्ये जास्तीतजास्त ६७ (७८.८२%) नमुना लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून, कमीतकमी २४ (४०.६८%) नमुना लाभार्थी शेतकरी सावंतवाडी तालुक्यातील आहेत. एकूण ५४५ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १६ (२.९४%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांकडे ट्रॅक्टर हे यांत्रिक साधन आहे. यामध्ये जास्तीत जास्त ४ (४.७०%) नमुना लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीत कमी १ (१.४०%) नमुना लाभार्थी देवगड तालुक्यातील आहेत. इतर फळबागेसाठी आवश्यक असणाऱ्या साधनांचे प्रमाण फारच कमी आहे. काही लाभार्थी शेतकऱ्यांकडे यापैकी कोणतेही साधन नसल्याचे संशोधनातून आढळून आले आहे.

तक्ता क्र. ६.१६

फळबाग लागवडीसाठी कलमे पुरविणाऱ्या रोपवाटीकांचे सांख्यिकीय अध्ययन

| तालुका | | खाजगी रोपवाटीका कलमे | | | सरकारी रोपवाटीका कलमे | | | स्वतः निर्माण केलेली कलमे | | |
|-----------|-----------|----------------------|---------|-------|-----------------------|---------|-------|---------------------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | १५ | ५७ | ७२ | ७२ | ० | ७२ | ० | ७२ | ७२ |
| | टक्केवारी | (२०.८४) | (७९.१६) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (०.००) | (०.००) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ११ | ४९ | ६० | ५६ | ०३ | ६० | ० | ६० | ६० |
| | टक्केवारी | (१८.६४) | (८१.३६) | (१००) | (९४.९२) | (५.०८) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | १५ | ६१ | ७६ | ७६ | ० | ७६ | ० | ७६ | ७६ |
| | टक्केवारी | (१९.७४) | (८०.२६) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १५ | ५६ | ७१ | ७१ | ० | ७१ | ०२ | ६९ | ७१ |
| | टक्केवारी | (२१.१२) | (७८.८८) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (२.८२) | (९७.१८) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ०८ | ६३ | ७१ | ६९ | ०२ | ७१ | ० | ७१ | ८२ |
| | टक्केवारी | (११.२६) | (८८.७४) | (१००) | (९७.१८) | (२.८२) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २० | ३९ | ५९ | ५७ | ०२ | ५९ | १ | ५८ | ५९ |
| | टक्केवारी | (३३.९०) | (६६.१०) | (१००) | (९६.६२) | (३.३८) | (१००) | (१.७०) | (९८.३०) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | १२ | ६५ | ७७ | ७१ | ०६ | ७७ | २ | ७७ | ७७ |
| | टक्केवारी | (१५.३८) | (८४.६२) | (१००) | (९२.३०) | (८.७०) | (१००) | (२.५६) | (९७.४४) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ३१ | ५५ | ८६ | ७२ | १४ | ८६ | ५ | ८१ | ८६ |
| | टक्केवारी | (३६.०४) | (६४.९६) | (१००) | (८३.७२) | (१६.२८) | (१००) | (५.८२) | (९४.१८) | (१००) |
| एकूण | लाभार्थी | १२७ | ४४५ | ५७२ | ५४५ | २७ | ५७२ | १० | ५६२ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (२२.२०) | (७७.८०) | (१००) | (९५.२८) | (४.७२) | (१००) | (१.७४) | (९८.२६) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

टिप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

तक्ता क्र. ६.१६ मध्ये असे आढळून येते की, रोजगार हमी योजनेतर्गत फळबाग लागवाडीसाठी कलमे उपलब्ध करून दिली जातात. यामध्ये जिल्ह्यातील एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीतजास्त ५४५ (७७.८०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी सरकारी रोपवाटीकेमधून कलमे उपलब्ध केलेली आहेत. यामध्ये जास्तीतजास्त ७६ (१००%) लाभार्थी कणकवली तालुक्यातील असून, कमीतकमी ५६ (९४.९२%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. तसेच १० (१.७४%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी स्वतः कलमे तयार करून लागवड केलेली आहे. यामध्ये जास्तीत जास्त ५ (५.८२%) लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीत कमी १ (१.७०%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील आहे. खाजगी रोपवाटीकेतून १२७ (२२.२०%) लाभार्थी कलमे उपलब्ध करून लागवड केलेली आहे. तर काहींनी सरकारी, खाजगी अशा दोन्ही रोपवाटीकांमधून कलमे उपलब्ध करून लागवड केल्याचे आढळून आले आहे.

तक्ता क्र. ६.१७

जिल्ह्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या आंबा लागवडीचे विविध कालखंडातील तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

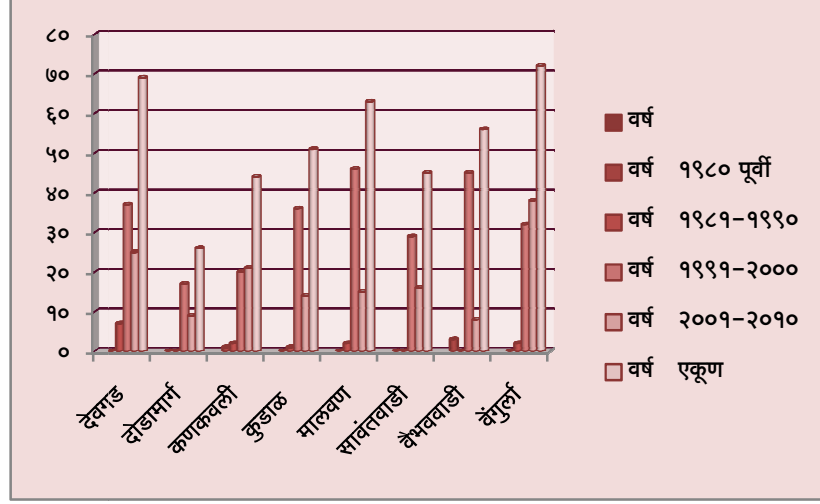
| तालुका | | वर्ष | | | | एकूण |
|-------------------|-----------|-------------|-----------|-----------|-----------|----------|
| | | १९८० पूर्वी | १९८१-१९९० | १९९१-२००० | २००१-२०१० | |
| देवगड | लाभार्थी | ० | ७ | ३७ | २५ | ६९ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (१०.१४%) | (५३.६२%) | (३६.२३%) | (१००.०%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ० | ० | १७ | ९ | २६ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (६५.४५%) | (३४.६१%) | (१००.०%) |
| कणकवली | लाभार्थी | १ | २ | २० | २१ | ४४ |
| | टक्केवारी | (२.२७%) | (४.५४%) | (४५.४५%) | (४७.७२%) | (१००.०%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ० | १ | ३६ | १४ | ५१ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (१.९६%) | (७०.५८%) | (२७.४५%) | (१००.०%) |
| मालवण | लाभार्थी | ० | २ | ४६ | १५ | ६३ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (३.१८%) | (७३.०२%) | (२३.८०%) | (१००.०%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ० | ० | २९ | १६ | ४५ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (६४.४४%) | (२७.२२%) | (१००.०%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ३ | ० | ४५ | ८ | ५६ |
| | टक्केवारी | (५.३६%) | (०.००%) | (८०.३६%) | (१४.२८%) | (१००.०%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ० | २ | ३२ | ३८ | ७२ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (२.७८%) | (४४.४४%) | (५२.७८%) | (१००.०%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा | एकूण | ०४ | १४ | २६२ | १४६ | ४२६ |
| | | (०.९४%) | (३.२९%) | (६१.५%) | (३४.२९०%) | (१००.०%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

आलेख क्र. ६.८

आंबा लागवडीचे विविध कालखंडातील वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.१७ मध्ये एकूण ४२६ (१००%) लाभार्थी आंबा लागवड शेतकऱ्यांपैकी जास्तीतजास्त २६२ (५१.५०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी १९९१-२००० या कालावधीत आंबा लागवड केलेली आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त ४६ (७३.०२%) लाभार्थी शेतकरी हे मालवण तालुक्यातील असून कमीतकमी १७ (६५.३८%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यात आहेत. २००१ ते २०१० पर्यंतच्या कालखंडात १४५ (३४.०४%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी आंबा लागवड केली आहे. १९९०-९१ पासून रोजगार हमी योजना सुरु झालेल्या पासून १९९१ ते २००० या कालावधीत जिल्ह्यात आंबा लागवड मोठ्या प्रमाणात झाली नंतर ती कमी-कमी होत गेली. जिल्ह्यातील सर्वच तालुक्यात आंबा लागवड लाभार्थी शेतकरी दिसून येतात. परंतु रोजगार हमी योजनेपूर्वी म्हणजे १९८० पूर्वी ०४ (०.९४%) लाभार्थी आंबा लागवड शेतकरी, १९८१ ते १९९० पूर्वी १४ (३.२९%) आंबा लागवड शेतकरी दिसून येतात. त्यामध्ये देवगड तालुक्यात ७ (१०.१४%) आंबा लागवड शेतकरी असून १९८० पूर्वी वैभववाडी ३ आंबा लागवड शेतकरी दिसून येतात. वेंगुर्ला, देवगड, मालवण तालुक्यात आंबा लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या जास्त दिसून येते.

तक्ता क्र. ६.१८

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या आंबा लागवडीखालील क्षेत्राचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

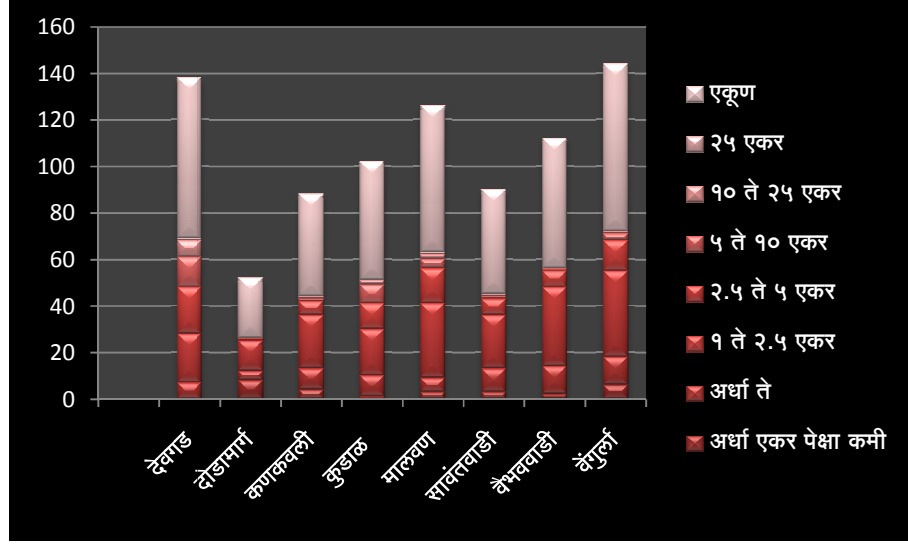
| तालुका | | अर्धा एकर पेक्षा कमी | अर्धा ते १ एकर | १ ते २.५ एकर | २.५ ते ५ एकर | ५ ते १० एकर | १० ते २५ एकर | २५ एकर पेक्षा जास्त | एकूण |
|----------------------|-----------|-------------------------|-------------------|-----------------|-----------------|----------------|-----------------|------------------------|--------|
| देवगड | लाभार्थी | ० | ७ | २१ | २० | १३ | ७ | १ | ६९ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (१०.१४%) | (३०.४४%) | (२८.९८%) | (१८.८४%) | (१०.१४%) | (१.४४%) | (१००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ८ | ४ | १३ | १ | ० | ० | ० | २६ |
| | टक्केवारी | (३०.७६%) | (१५.३८%) | (५०.०%) | (३.८४%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ४ | ९ | २३ | ६ | १ | १ | ० | ४४ |
| | टक्केवारी | (९.१०%) | (२२.४५%) | (५२.२८%) | (१३.६४%) | (२.२८%) | (२.२८%) | (०.००%) | (१००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १ | ९ | २० | ११ | ८ | २ | ० | ५१ |
| | टक्केवारी | (१.९२) | (१९.२४%) | (३८.४६%) | (२१.१६%) | (१५.३८%) | (३.८४%) | (०.००%) | (१००%) |
| मालवण | लाभार्थी | ३ | ६ | ३२ | १५ | ४ | २ | १ | ६३ |
| | टक्केवारी | (३.१८%) | (९.९२%) | (५०.८०%) | (२३.८०%) | (६.३४%) | (३.१८%) | (१.५८%) | (१००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ३ | १० | २३ | ७ | १ | १ | ० | ४५ |
| | टक्केवारी | (६.६६%) | (२२.२२%) | (५१.१२%) | (१५.५६%) | (२.२२%) | (२.२२%) | (०.००%) | (१००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २ | १२ | ३४ | ७ | १ | ० | ० | ५६ |
| | टक्केवारी | (३.५८%) | (२१.४२%) | (७.७२%) | (१२.५०%) | (१.७८%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००%) |
| वेगुर्ला | लाभार्थी | ६ | १२ | ३७ | १३ | ३ | १ | ० | ७२ |
| | टक्केवारी | (८.३४%) | (१६.६६%) | (५१.३८%) | (१८.०६%) | (४.१६%) | (१.३८%) | (०.००%) | (१००%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा | एकूण | २७ | ६९ | २०३ | ८० | ३२ | १४ | २ | ४२६ |
| | | ५.८७% | १६.४३% | ४७.८९% | १८.७८% | ७.२८% | ३.२९% | ०.४७% | १००% |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

आलेख क्र. ६.९

आंबा लागवडीखालील क्षेत्राचे तालुका निहाय वर्गीकरण



वरील तक्ता क्र. ६.१८ आंबा लागवडी खालील क्षेत्राचा विचार करता एकूण ४२६ लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी २०३ (४७.८९%) लाभार्थी शेतकऱ्यांचे आंबा लागवडी खालील क्षेत्र १ एकर ते २.५ एकर एवढे आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त ३७ (५१.३८%) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील आहे. तर कमीत कमी १३ (५०.०%) शेतकरी दोडामार्ग तालुक्यातील आहे. एकूण लाभार्थी पैकी ८० (१८.७८%) लाभार्थी शेतकऱ्यांचे आंबा लागवड क्षेत्र २.५ एकर ते ५ एकरा पर्यंत आहे. जास्तीतजास्त त्यामध्ये २० (२८.९८%) लाभार्थी देवगड तालुक्यातील तर कमीतकमी १ (३.८५%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. २५ एकर पेक्षा जास्त आंबा लागवड लाभार्थींची संख्या २ (०.४७%) असून ती देवगड व मालवण तालुक्यातील आहे. या दोन तालुक्यात आंबा लागवड क्षेत्र अधिक असून दोडामार्ग तालुक्यात फारच कमी आहे. ५ ते १० एकर ३१ (७.२८%) आंबा लाभार्थी १० ते २५ एकर १४ (३.२९%) आंबा लाभार्थी संख्या संशोधनातून आढळून आली आहे.

तक्ता क्र. ६.१९

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या उत्पादक आंबा कलमांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | उत्पाक आंबा (जिवंत) कलमे | | | | | | | | एकूण |
|----------------------|--------------------------|---------------|----------|----------|------------|------------|-------------|-------------------|--------|
| | | २० पेक्षा कमी | २१ ते ४० | ४१-१०० | १०१ ते २०० | २०१ ते ४०० | ४०१ ते १००० | १००० पेक्षा जास्त | |
| देवगड | लाभार्थी | ० | ७ | २४ | १८ | १३ | ६ | १ | ६९ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (१०.१४%) | (३४.७८%) | (२६.०८%) | (१८.८४%) | (८.७०%) | (१.४४%) | (१००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ७ | ६ | ११ | १ | १ | ० | ० | २६ |
| | टक्केवारी | (२६.९२%) | (२३.०८%) | (४३.३०%) | (३.८४%) | (३.८४%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ९ | १० | २१ | १ | २ | १ | ० | ४४ |
| | टक्केवारी | (२०.४५%) | (२२.७२%) | (४७.७२%) | (२.२८%) | (४.५४%) | (२.२८%) | (०.००%) | (१००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ३ | १५ | २० | ८ | ४ | १ | ० | ५१ |
| | टक्केवारी | (५.६६%) | (२८.३०%) | (३७.७४%) | (१५.१०%) | (७.५४%) | (१.८८%) | (०.००%) | (१००%) |
| मालवण | लाभार्थी | ३ | ८ | ३५ | ११ | ३ | २ | १ | ६३ |
| | टक्केवारी | (४.७६%) | (१२.७०%) | (५५.५६%) | (१७.४६%) | (४.४६%) | (३.७८%) | (१.५८%) | (१००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २ | १६ | २१ | ३ | २ | १ | ० | ४५ |
| | टक्केवारी | (४.४४%) | (३५.५६%) | (४६.६६%) | (६.६६%) | (४.४४%) | (२.२२%) | (०.००%) | (१००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ३ | १९ | ३२ | २ | ० | ० | ० | ५६ |
| | टक्केवारी | (५.३६%) | (३३.९२%) | (५७.१४%) | (३.५८%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००%) |
| वेगुर्ला | लाभार्थी | ५ | २२ | ३३ | ८ | ३ | १ | ० | ७२ |
| | टक्केवारी | (६.९४%) | (३०.५६%) | (४५.८४%) | (११.१२%) | (४.१६%) | (१.३८%) | (०.००%) | (१००%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा | एकूण | ३२ | १०३ | १९७ | ५२ | २८ | १२ | ०२ | ४२६ |
| | | (७.५१%) | (१७.६१%) | (४७.१८%) | (१६.४३%) | (७.७५%) | (३.०५%) | (०.४७%) | (१००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.१९ मध्ये जिल्ह्यात २० पेक्षा कमी आणि १००० पेक्षा जास्त उत्पादक आंबा कलमे (जिवंत) असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची एकूण संख्या ४२६ (१००%) इतकी आहे. २० पेक्षा कमी उत्पादक आंबा कलमे असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या ३२ (७.५१%) आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त ९ (२०.४५) लाभार्थी शेतकरी कणकवली तालुक्यातील असून कमीतकमी २ (४.४४%) लाभार्थी शेतकरी सावंतवाडी तालुक्यातील आहेत. ४१ ते १०० आंबा उत्पादक (जिवंत) कलमे असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या सर्वात जास्त असून ती १९७ (४६.२४%) इतकी आहे. यामध्ये जास्तीत जास्त ३५ (५५.५६%) लाभार्थी मालवण तालुक्यातील असून कमीतकमी ११ (४२.३०%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. १००१ पेक्षा जास्त उत्पादक कलमे असणारे लाभार्थी शेतकरी संख्या २ (०.४७%) इतकी असून ती मालवण आणि देवगड तालुक्यात आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त उत्पादक आंबा लागवड देवगड, कुडाळ, मालवण तालुक्यात असल्याचे संशोधनातून आढळून आले आहे.

तक्ता क्र. ६.२०

शेतकऱ्यांच्या काजू लागवडीचे विविध कालखंडातील तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

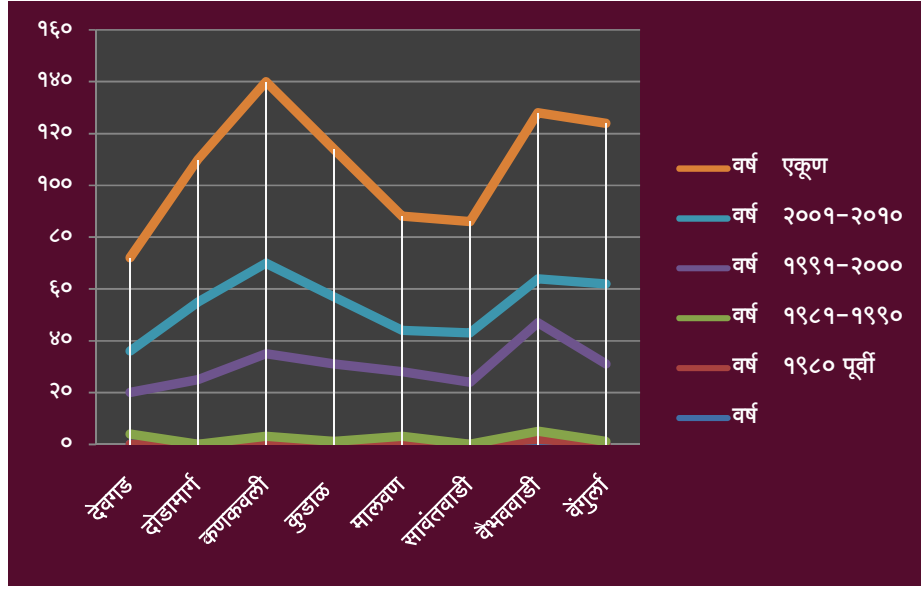
| तालुका | | वर्ष | | | | एकूण |
|-------------------|-----------|-------------|----------|-----------|----------|----------|
| | | १९८० पूर्वी | १९८१-९० | १९९१-२००० | २००१-१० | |
| देवगड | लाभार्थी | ० | ४ | १६ | १६ | ३६ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (११.१२%) | (४४.४४%) | (४४.४४%) | (१००.०%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ० | ० | २५ | ३० | ५५ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (४५.४६%) | (५४.५४%) | (१००.०%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ० | ३ | ३२ | ३५ | ७० |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (४.२८%) | (४५.७२%) | (५०.०%) | (१००.०%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १ | ० | ३० | २६ | ५७ |
| | टक्केवारी | (१.७६%) | (०.००%) | (५२.६४%) | (४५.६२%) | (१००.०%) |
| मालवण | लाभार्थी | ० | ३ | २५ | १६ | ४४ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (६.८२%) | (५६.८२%) | (३६.३६%) | (१००.०%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ० | ० | २४ | १९ | ४३ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (५५.८२%) | (४४.१८%) | (१००.०%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २ | ३ | ४२ | १७ | ६४ |
| | टक्केवारी | (३.१२%) | (४.६८%) | (६५.६२%) | (२६.५६%) | (१००.०%) |
| वेगुर्ला | लाभार्थी | ० | १ | ३० | ३१ | ६२ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (१.६२%) | (४८.३८%) | (५०.०%) | (१००.०%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा | एकूण | ३ | १४ | २२४ | १९० | ४३१ |
| | | (०.३८%) | (३.२५%) | (५१.९७%) | (४४.०८%) | (१००.०%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

आलेख क्र. ६.१०

काजू लागवडीचे विविध कालखंडातील वर्गीकरण



वरिल तक्ता क्र. ६.२० मध्ये एकूण ४३१ (१००%) काजू लागवड लाभार्थीपैकी १९९१ ते २००० या कालखंडात २२४ (५९.९७%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी काजू लागवड केली आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त ४२ (६५.६२%) लाभार्थी शेतकरी वैभववाडी तालुक्यातील असून कमीतकमी १६ (४४.४४%) लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील आहेत. २००१ ते २०१० पर्यंतच्या कालखंडात १८९ (४३.८५) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी काजू लागवड केली आहे. म्हणजे रोजगार हमी योजना १९९० पासून सुरु झाली त्यानंतरच्या १० वर्षात काजू लागवड मोठ्या प्रमाणात झाली. नंतर २००१ ते २०१० या वर्षात काजू लागवड झाली. सर्वात जास्त वैभववाडी तालुक्यात ६४ (१००%) लाभार्थी शेतकरी तर सर्वात कमी मालवण आणि देवगड तालुक्यात लाभार्थी शेतकरी आहेत. परंतु १९८० पूर्वी ३ (०.६८%) लाभार्थी शेतकरी आणि १९८१ ते १९९० ते च्या कालखंडात १४ लाभार्थी शेतकऱ्यांनी काजू लागवड केली आहे.

तक्ता क्र. ६.२१

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या काजू लागवडीखालील क्षेत्राचे सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | अर्धा एकर पेक्षा कमी | अर्धा ते १ एकर | १ ते २.५ एकर | २.५ ते ५ एकर | ५ ते १० एकर | १० ते २५ एकर | २५ एकर पेक्षा जास्त | एकूण |
|----------------------|-------------|-------------------------|-------------------|-----------------|-----------------|----------------|-----------------|------------------------|------------|
| देवगड | लाभार्थी | ६ | १२ | १४ | ३ | ० | १ | ० | ३६ |
| | टक्केवारी | (१६.६६%) | (३३.३४%) | (३८.८८%) | (८.३४%) | (०.००%) | (२.७८%) | (०.००%) | (१००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ९ | १३ | २४ | ८ | १ | ० | ० | ५५ |
| | टक्केवारी | (१६.३६%) | (२३.६४%) | (४३.६४%) | (१४.५४%) | (१.०८%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ३ | ११ | ३४ | १५ | ४ | २ | १ | ७० |
| | टक्केवारी | (४.२८%) | (१५.५२%) | (४८.५८%) | (२१.४२%) | (५.७२%) | (२.८६%) | (१.४२%) | (१००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | २ | ११ | २९ | ७ | ४ | ३ | १ | ५७ |
| | टक्केवारी | (३.५०%) | (१९.२०%) | (५०.८७%) | (१२.२८%) | (७.०%) | (५.२६%) | (१.७५%) | (१००%) |
| मालवण | लाभार्थी | ४ | ११ | १९ | ८ | २ | ० | ० | ४४ |
| | टक्केवारी | (९.०%) | (२५.०%) | (४३.१८%) | (१८.१८%) | (४.५४%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २ | ५ | ३१ | १ | ३ | १ | ० | ४३ |
| | टक्केवारी | (४.६५%) | (११.६३%) | (७२.१०%) | (२.३२%) | (६.९८%) | (२.३२%) | (०.००%) | (१००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ४ | १५ | २४ | १७ | ३ | १ | ० | ६४ |
| | टक्केवारी | (६.२५%) | (२३.४३%) | (३७.०५%) | (२६.५६%) | (४.६८%) | (१.५६%) | (०.००%) | (१००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ४ | १९ | २९ | ५ | ०३ | १ | १ | ६२ |
| | टक्केवारी | (६.४५%) | (३०.६४%) | (४६.७८%) | (८.०६%) | (४.८४%) | (१.६२%) | (१.६२%) | (१००%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा | एकूण | ३४ | ९७ | २०४ | ६४ | २० | ०९ | ०३ | ४३१ |
| | | (७.८९%) | (२२.५०%) | (४७.३३%) | (१४.८५%) | (४.६४%) | (२.०९%) | (०.७०%) | (१००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

तक्ता क्र. ६.२१ काजू लागवडीखाली क्षेत्राचा विचार करता एकूण ४३१ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीतजास्त २०४ (४७.३३%) लाभार्थी शेतकऱ्यांचे काजू लागवडीखालील क्षेत्र १ एकर ते २.५ एकर एवढे आहे. जिल्ह्यात कणकवली तालुक्यात सर्वात जास्त ३४ (४८.५७%) लाभार्थी शेतकरी या वर्गात मोडतात. कमीत कमी १४ (३८.८८%) लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील आहेत. २५ एकर पेक्षा जास्त असणाऱ्या मोठ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांनी संख्या ०३ (०.७०%) असून ती कणकवली, कुडाळ, वेंगुर्ला या तालुक्यात प्रत्येकी १ प्रमाणे आहे. अर्धा एकर पासून ते २५ एकरावरील मोठ्या शेतकऱ्यांपर्यंत काजू लागवड केलेले नमुना लाभार्थी शेतकरी आढळून येतात. जिल्ह्यातील सर्वच तालुक्यात काजू लागवडीचे क्षेत्र संशोधनातून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.२२

शेतकऱ्यांच्या काजू फळपिकांच्या उत्पादक कलमांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | उत्पादक काजू (जिवंत) कलमे | | | | | | | | एकूण |
|----------------------|---------------------------|---------------|----------|----------|------------|------------|-------------|-------------------|--------|
| | | २० पेक्षा कमी | २१ ते ४० | ४१-१०० | १०१ ते २०० | २०१ ते ४०० | ४०१ ते १००० | १००० पेक्षा जास्त | |
| देवगड | लाभार्थी | ६ | १० | १५ | ४ | १ | ० | ० | ३६ |
| | टक्केवारी | (१६.६६%) | (२७.७८%) | (२१.६६%) | (११.१२%) | (२.७८%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ७ | १२ | २६ | ६ | ० | ० | ० | ५२ |
| | टक्केवारी | (१२.७२%) | (२५.४५%) | (४९.०९%) | (१२.७२%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ४ | १० | ३५ | १४ | ४ | २ | १ | ७० |
| | टक्केवारी | (५.७२%) | (१४.२८%) | (५०.०%) | (२०.०%) | (५.७२%) | (२.८६%) | (१.४२%) | (१००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | २ | ८ | २९ | १० | ४ | ३ | १ | ५७ |
| | टक्केवारी | (३.५०%) | (१४.०३%) | (५.८८%) | (१७.५४%) | (७.०९%) | (५.२६%) | (१.७५%) | (१००%) |
| मालवण | लाभार्थी | ५ | १० | २० | ६ | २ | १ | ० | ४४ |
| | टक्केवारी | (११.६६%) | (२२.७२%) | (४५.४६%) | (१३.६४%) | (४.५४%) | (२.२८%) | (०.००%) | (१००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ३ | ८ | २४ | ७ | १ | ० | ० | ४३ |
| | टक्केवारी | (३.९८%) | (१८.६०%) | (५५.८२%) | (१६.२८%) | (२.३२%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ५ | १२ | २४ | २० | ०२ | १ | १ | ६४ |
| | टक्केवारी | (६.२५%) | (१८.७५%) | (३७.०५%) | (३१.२५%) | (३.१२%) | (३.५६%) | (१.५६%) | (१००%) |
| वेगुर्ला | लाभार्थी | ५ | १८ | २७ | ८ | २ | १ | १ | ६२ |
| | टक्केवारी | (८.०६%) | (२९.०३%) | (४३.५४%) | (१२.९०%) | (३.२२%) | (१.६२%) | (१.६२%) | (१००%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा | एकूण | ३७ | ८९ | २०१ | ७६ | १६ | ९ | ३ | ४३१ |
| | | ८.५८% | २०.६५% | ४६.६४% | १७.६३% | ३.७४% | २.०९% | ०.६८% | १००% |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

तक्ता क्र. ६.२२ मध्ये जिल्ह्यात काजू लागवड उत्पादक कलमे असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची एकूण संख्या ४३१ (१००%) इतकी आहे. जिल्ह्यात ८१ ते १०० काजू लागवड कलमे असणाऱ्या लाभार्थींची संख्या सर्वात जास्त असून ती २०१ (४६.६४%) नमुना लाभार्थी शेतकरी आहेत. यामध्ये जास्तीतजास्त ३५ (५०.०%) लाभार्थी शेतकरी कणकवली तालुक्यात असून कमीत कमी १५ (४१.६६%) लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यात आहे. २००० पेक्षा जास्त काजू लागवड कलमे असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या ४ (३७.६८%) इतकी असून ती कणकवली कुडाळ आणि वेंगुर्ला या तालुक्यात आहे. जिल्ह्यात १०१ ते २०० उत्पादक कलमे लाभार्थी ७६ (१७.६३%) २०१ ते ४०० उत्पादित कलमे लाभार्थी १६ (३.७४%) ४०१ ते १००० उत्पादक कलमे लाभार्थी ३ (०.६८%) संशोधनातून आढळून आले आहे.

तक्ता क्र. ६.२३

नारळ लागवडीची विविध कालखंडातील तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | नारळ लागवड वर्ष | | | | एकूण |
|---------------------------|-----------|-----------------|--------------|--------------|--------------|-----------|
| | | १९८० पूर्वी | १९८१ ते १९९० | १९९१ ते २००० | २००० ते २०१० | |
| देवगड | लाभार्थी | ० | ० | १० | ७ | १७ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (५८.८२%) | (४१.१८%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ० | ० | ८ | २६ | ३४ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (२३.५२%) | (७६.४८%) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ० | ० | १३ | १७ | ३० |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (४३.३४%) | (५६.६६%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १ | ० | १६ | १८ | ३५ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (४५.७२%) | (५१.४२%) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | ० | ० | १० | २४ | ३४ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (२९.४२%) | (७०.५८%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ० | ० | २० | १८ | ३८ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (५२.६४%) | (४४.७४%) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ४ | ० | १७ | ९ | ३० |
| | टक्केवारी | (१३.३४%) | (०.००%) | (५६.६६%) | (३०.००%) | (१००.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ० | ० | १८ | २७ | ४५ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (४०.००%) | (६०.००%) | (१००.००%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | ५ | ० | ११२ | १४६ | २६३ |
| | टक्केवारी | (२.१२%) | (०.००%) | (४२.२८%) | (५५.५३%) | (१००.००%) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.२३ मध्ये की, २६३ (१००%) नमुना नारळ उत्पादक लाभार्थी पैकी २००१ ते २०१० या कालखंडात १४६ (५५.५३%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी नारळ लागवड केलेली आहे. त्यामध्ये जास्तीत जास्त २७ (६०%) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीतकमी ७ (४१.१८%) लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील आहेत. एकूण नारळ उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीतजास्त ४५ (१००%) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीत कमी १७ (१००%) लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील आहे. रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवड योजना १९९० पासून सुरु झाली. १९९१ ते २००० या काळात ११२ (४२.२८%) लाभार्थींनी नारळ लागवड केलेली आहे. परंतु पुढील १० वर्षात म्हणजे २००१ ते २०१० या कालखंडात २६३ पैकी १४६ (५५.५३%) लाभार्थी नारळ उत्पादक शेतकरी संख्या आहे. १९८० ला योजना सुरु होण्यापूर्वी एकूण ५ (२.१२%) नारळ उत्पादक लाभार्थी शेतकरी असून त्यापैकी ४ (१३.३४%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत.

तक्ता क्र. ६.२४

नारळ लागवडीखालील क्षेत्राचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | लागवड क्षेत्र (एकरमध्ये) | | | | एकूण |
|------------------------|-----------|--------------------------|----------------|--------------|--------------|-----------|
| | | अर्धा एकरपेक्षा कमी | अर्धा ते १ एकर | १ ते २.५ एकर | २.५ ते ५ एकर | |
| देवगड | लाभार्थी | ११ | ४ | १ | ० | १७ |
| | टक्केवारी | (६४.७०%) | (२३.५२%) | (५.८८%) | (५.८८%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | २६ | ५ | ३ | ० | ३४ |
| | टक्केवारी | (७६.४५%) | (१४.७०%) | (८.८२%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | २२ | ७ | १ | ० | ३० |
| | टक्केवारी | (७३.३३%) | (२३.३४%) | (३.३४%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | २५ | ४ | ६ | ० | ३५ |
| | टक्केवारी | (७१.४२%) | (११.४२%) | (१७.१४%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | २२ | ६ | ६ | ० | ३४ |
| | टक्केवारी | (६२.८६%) | (१७.६४%) | (१७.६४%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १८ | १५ | ४ | १ | ३८ |
| | टक्केवारी | (४७.३६%) | (३९.४८%) | (१०.५२%) | (२.६३%) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २५ | ४ | १ | ० | ३० |
| | टक्केवारी | (८३.३४%) | (१३.३४%) | (३.३३%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | २६ | ५ | ४ | ० | ३५ |
| | टक्केवारी | (७४.२८%) | (१४.२८%) | (११.४२%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सिंधुदूर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | १७५ | ५० | १६ | २ | २५३ |
| | टक्केवारी | (६१.१६%) | (१९.७५%) | (१०.२७%) | (०.७९%) | (१००.००%) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.२४ मध्ये की, नारळ लागवडीखालील क्षेत्राचा विचार करता २५३ (१००%) नमुना नारळ लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी अर्धा एकर पेक्षा कमी क्षेत्रात नारळ लागवड केलेली शेतकरी संख्या १७५ (७०.३४%) इतकी असून यापैकी जास्तीतजास्त लाभार्थी संख्या २६ (७४.२८%) लाभार्थी शेतकरी प्रत्येकी दोडामार्ग आणि वेंगुर्ला तालुक्यातील आहेत. कमीतकमी ११ लाभार्थी देवगड तालुक्यातील आहे. जिल्ह्यात नारळ लागवड लाभार्थी जास्तीतजास्त शेतकरी संख्या ३५ (१००%) वेंगुर्ला तालुका आणि कमीत कमी नारळ लागवड लाभार्थी संख्या १७ देवगड तालुक्यातील आहे. २.५ एकर ते ५ एकरापर्यंत नारळ लागवड लाभार्थी शेतकरी संख्या फक्त २ (०.७९%) ती देवगड आणि सावंतवाडी तालुक्यातील प्रत्येकी १ इतकी आहे. यावरून जिल्ह्यातील नारळ लागवड क्षेत्राची स्थिती स्पष्ट होते.

तक्ता क्र. ६.२५

नारळ लागवड केलेल्या उत्पादक कलमांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | उत्पादक नारळ कलमे | | | एकूण |
|---------------------------|-----------|-------------------|----------|-----------|-----------|
| | | ४० पेक्षा कमी | ४१ ते ८० | ८१ ते २०० | |
| देवगड | लाभार्थी | १६ | ० | १ | १७ |
| | टक्केवारी | (९४.१२%) | (०.००%) | (५.८८%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ३० | २ | २ | ३४ |
| | टक्केवारी | (८८.२०%) | (५.८८%) | (५.८८%) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | २३ | ६ | १ | ३० |
| | टक्केवारी | (७६.६६%) | (२०.००%) | (३.३४%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | २७ | ५ | ३ | ३५ |
| | टक्केवारी | (७७.१४%) | (१४.२८%) | (५.५८%) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | २३ | ९ | २ | ३४ |
| | टक्केवारी | (६७.३४%) | (२६.४८%) | (५.८८%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २९ | ६ | ३ | ३८ |
| | टक्केवारी | (७६.३२%) | (१५.७८%) | (७.९०%) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २९ | ० | १ | ३० |
| | टक्केवारी | (९६.६६%) | (०.००%) | (३.३४%) | (१००.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ३८ | ६ | १ | ४५ |
| | टक्केवारी | (८४.४४%) | (१३.३४%) | (२.२२%) | (१००.००%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | २१५ | ३४ | १४ | २६३ |
| | टक्केवारी | (८१.७४%) | (१२.९२%) | (५.३२%) | (१००.००%) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

वरील तक्ता क्र. ६.२५ मध्ये की, जिल्ह्यामध्ये नारळ लागवड उत्पादक कलमे असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या २६३ (१००%) इतकी आहेत. यापैकी ४० पेक्षा कमी नारळ कलमे असणाऱ्या नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या २१५ (८१.७५%) इतकी असून जास्तीत जास्त लाभार्थी शेतकरी ३८ (८४.४४%) नारळ लागवड उत्पादक कलमे लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीत कमी १६ लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात सर्वात जास्त नारळ लागवड उत्पादक कलमे असणारी लाभार्थी शेतकरी संख्या ४५ (१००%) असून ती वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीत कमी १७ (१००%) नारळ लागवड उत्पादक कलमे लाभार्थी संख्या देवगड तालुक्याची आहे. जास्तीत जास्त ८१ ते २०० नारळ लागवड उत्पादक कलमे असणारे जिल्ह्यात लाभार्थी शेतकरी संख्या १४ (५.३२) इतकी असून त्यामध्ये जास्तीत जास्त नारळ उत्पादक कलमे लागवड लाभार्थी शेतकरी प्रत्येकी ३ (७.९०%) सावंतवाडी आणि कुडाळ तालुक्यातील आहेत.

तक्ता क्र. ६.२६

सुपारी लागवडीची विविध कालखंडातील तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | लागवड वर्ष | | | | एकूण |
|-----------|-----------|-------------|--------------|--------------|--------------|-----------|
| | | १९८० पूर्वी | १९८१ ते १९९० | १९९१ ते २००० | २००१ ते २०१० | |
| देवगड | लाभार्थी | ० | ० | ३ | ३ | ६ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (५०.००%) | (५०.००%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ० | ० | ५ | १८ | २३ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (२१.७४%) | (७८.२६%) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ० | ० | ३ | ४ | ७ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (४२.८६%) | (५७.१४%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १ | ० | ५ | ८ | १४ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (३५.७२%) | (५७.१४%) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | ० | ० | ६ | ८ | १४ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (४२.८६%) | (५७.१४%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ० | ० | ११ | ११ | २२ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (५०.००%) | (५०.००%) | (१००.००%) |

| | | | | | | |
|-----------|-----------|----------|---------|----------|----------|-----------|
| वैभववाडी | लाभार्थी | ४ | ० | ३ | २ | ९ |
| | टक्केवारी | (४४.४४%) | (०.००%) | (३३.३४%) | (२२.२२%) | (१००.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ० | ० | ११ | १९ | ३० |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (३६.६६%) | (६३.३३%) | (१००.००%) |
| एकूण | लाभार्थी | ५ | ० | ४७ | ७३ | १२५ |
| | टक्केवारी | (४.००%) | (०.००%) | (३६.६०%) | (५८.४०%) | (१००.००%) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.२६ मध्ये की, रोजगार हमी योजनेअंतर्गत १२५ (१००%) नमुना सुपारी उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी २००१ ते २०१० या कालखंडात ७३ (५८.४%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी सुपारी लागवड केलेली आहे. त्यामध्ये जास्तीत जास्त १९ (६३.३४%) लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीतकमी २ (२२.२२%) लाभार्थी शेतकरी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत. रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवड योजना १९९० - ९१ पासून सुरु झाली. परंतु पुढील १० वर्षात म्हणजे २००१ ते २०१० या कालखंडात ७३ (५८.४%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी सुपारी लागवड केल्याचे आढळून येते. १९८० पूर्वी सुपारी लागवड करणारे ५ पैकी ४ नमुना लाभार्थी शेतकरी वैभववाडी तालुक्यात असल्याचे आढळून येते. १९९१ ते २००० या कालखंडात ४७ (३६.६०%) लाभार्थी शेतकरी असून यामध्ये सर्वात जास्त ११ (३६.६६%) लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असल्याचे संशोधन आकडेवारी वरून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.२७

सुपारी लागवडीखालील क्षेत्राची तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | लागवड क्षेत्र (एकरमध्ये) | | | | एकूण |
|-----------|-----------|--------------------------|----------------|--------------|--------------|-----------|
| | | अर्धा एकरपेक्षा कमी | अर्धा ते १ एकर | १ ते २.५ एकर | २.५ ते ५ एकर | |
| देवगड | लाभार्थी | ४ | ० | १ | १ | ६ |
| | टक्केवारी | (६६.६६%) | (०.००%) | (१६.६६%) | (१६.६६%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | १८ | ३ | २ | ० | २३ |
| | टक्केवारी | (७८.२६%) | (१३.०४%) | (७.८०%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ५ | २ | ० | ० | ७ |
| | टक्केवारी | (७१.४२%) | (२८.५८%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ९ | ३ | २ | ० | १४ |
| | टक्केवारी | (६४.२८%) | (२१.४२%) | (१४.२८%) | (०.००%) | (१००.००%) |

| | | | | | | |
|-----------|-----------|-----------|----------|----------|---------|-----------|
| मालवण | लाभार्थी | ११ | ० | ३ | ० | १४ |
| | टक्केवारी | (७८.५८%) | (०.००%) | (२१.४२%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १७ | ५ | ० | ० | २२ |
| | टक्केवारी | (७७.२८%) | (२२.७२%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ९ | ० | ० | ० | ९ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | २८ | १ | १ | ० | ३० |
| | टक्केवारी | (९३.३४%) | (३.३४%) | (३.३४%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| एकूण | लाभार्थी | १०१ | १४ | ९ | १ | १२५ |
| | टक्केवारी | (८०.८०%) | (११.२०%) | (७.२०%) | (०.८०%) | (१००.००%) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

वरील तक्ता क्र. ६.२७ मध्ये की, सुपारी लागवडीखालील क्षेत्राचा विचार करता १२५ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी अर्धा एकर पेक्षा कमी सुपारी लागवड केलेल्या लाभार्थी शेतकरी संख्या १०१ (८०.८%) इतकी असून सर्वात जास्त २८ (९३.३४%) वेंगुर्ला तालुक्यातील लाभार्थी शेतकरी आहेत. कमीत कमी ४ (६६.६६%) लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील आहे. जिल्ह्यात जास्तीत जास्त २.५ एकर ते ५ एकरापर्यंत सुपारी लागवड लाभार्थी शेतकरी संख्या फक्त १ (०.८४%) असून ती देवगड तालुक्यातील आहे. यावरून जिल्ह्यातील सुपारी लागवड क्षेत्राची स्थिती संशोधनातून आढळून आली. जिल्ह्यात दोडामार्ग, वेंगुर्ला आणि सावंतवाडी तालुक्यात सुपारी लागवड करणारी लाभार्थी संख्या जास्त आहे.

तक्ता क्र. ६.२८

सुपारी उत्पादक कलमांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | सुपारी उत्पादक कलमे | | | | | एकूण |
|-----------|-----------|---------------------|----------|-----------|------------|------------|-----------|
| | | ४० पेक्षा कमी | ४१ ते ८० | ८१ ते २०० | २०१ ते ४०० | ४०१ ते ८०० | |
| देवगड | लाभार्थी | ६ | ० | ० | ० | ० | ६ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | २१ | ० | २ | ० | ० | २३ |
| | टक्केवारी | (९१.३०%) | (०.००%) | (८.७०%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ७ | ० | ० | ० | ० | ७ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ९ | ३ | २ | ० | ० | १४ |
| | टक्केवारी | (६४.२८%) | (२१.४२%) | (१४.२८%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |

| | | | | | | | |
|-----------|-----------|-----------|----------|---------|---------|---------|-----------|
| मालवण | लाभार्थी | ११ | २ | १ | ० | ० | १४ |
| | टक्केवारी | (७८.५८%) | (१४.२८%) | (७.१४%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २० | ० | १ | ० | १ | २२ |
| | टक्केवारी | (९०.९०%) | (०.००%) | (४.४५%) | (०.००%) | (४.४५%) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ९ | ० | ० | ० | ० | ९ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | २९ | १ | ० | ० | ० | ३० |
| | टक्केवारी | (९६.६६%) | (३.३४%) | (३.९४%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| एकूण | लाभार्थी | ११२ | ६ | ६ | ० | १ | १२५ |
| | टक्केवारी | (८९.६०%) | (४.८०%) | (४.८०%) | (०.००%) | (०.८०%) | (१००.००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.२८ मध्ये की, जिल्ह्यात ४० पेक्षा कमी सुपारी उत्पादक (जिवंत) कलमे असणाऱ्या नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या ११२ इतकी असून सर्वांत जास्त लाभार्थी शेतकरी २९ वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीतकमी ६ (१००%) लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील आहे. जिल्ह्यात जास्तीतजास्त ४०१ ते ८०० सुपारी उत्पादक (जिवंत) कलमे असणाऱ्या लाभार्थी संख्या १ (०.८%) असून ती सावंतवाडी तालुक्यात आहेत. सुपारी उत्पादक (जिवंत) कलमांचे प्रमाण वरील कोष्टकातून आढळून येते. जिल्ह्यात दोडामार्ग, सावंतवाडी आणि वेंगुर्ला तालुक्यात सुपारी उत्पादक (जिवंत) कलमांचे प्रमाण अधिक आहे.

तक्ता क्र. ६.२९

कोकम लागवडीचे विविध कालखंडातील तालुका निहाय वर्गीकरण

| तालुका | | कोकम लागवड वर्ष | | | | एकूण |
|-----------|-----------|-----------------|--------------|--------------|--------------|-----------|
| | | १९८० पूर्वी | १९८१ ते १९९० | १९९१ ते २००० | २००१ ते २०१० | |
| देवगड | लाभार्थी | ० | ० | १ | ० | १ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (१००.०%) | (०.००%) | (१००.०%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ० | ० | ० | ० | ० |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ० | ० | ० | २ | २ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ० | ० | २ | ४ | ६ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (३३.३४%) | (६६.६६%) | (१००.०%) |
| मालवण | लाभार्थी | ० | ० | १ | १ | २ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (५०.००%) | (५०.००%) | (१००.००%) |

| | | | | | | |
|---------------------------|-----------|---------|---------|----------|----------|----------|
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ० | ० | १ | ० | १ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (१००.०%) | (०.००%) | (१००.०%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ० | ० | ० | ० | ० |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ० | ० | ५ | ८ | १३ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (३८.४६%) | (६१.५४%) | (१००.०%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | ० | ० | १० | १५ | २५ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (४०.००%) | (६०.००%) | (१००.०%) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.२९ मध्ये की, जिल्ह्यातील १९९० पूर्वी कोकम लागवड लाभार्थी शेतकरी संख्या दिसून येत नाही. १९९१ ते २००० या कालखंडात एकूण २५ (१००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १० (४०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी लागवड केली आहे. यामध्ये सर्वात जास्त वेंगुर्ला तालुक्यातील ५ लाभार्थी शेतकरी आहेत. २००१ ते २०१० पर्यंतच्या कालखंडात १५ (६०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी कोकम लागवड केली आहे. त्यामध्ये जास्तीत जास्त ८ (६१.५४%) लाभार्थी शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील आहेत. कमीत कमी १ (५०.०%) लाभार्थी मालवण तालुक्यातील आहे. जिल्ह्यात कोकम लागवड लाभार्थी शेतकरी दोडामार्ग आणि वैभववाडी तालुक्यात आढळून येत नाहीत. रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यात कोकम लागवड झाल्याचे संशोधनातून आढळून येते.

तक्ता क्र. ६.३०

कोकम लागवडीखालील क्षेत्राचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | लागवड क्षेत्र (एकरमध्ये) | | | एकूण |
|-----------|-----------|--------------------------|-------------------|-----------------|-----------|
| | | अर्धा एकरपेक्षा कमी | अर्धा ते १ एकर | १ ते २.५ एकर | |
| देवगड | लाभार्थी | १ | ० | ० | १ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ० | ० | ० | ० |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | १ | ० | १ | ०२ |
| | टक्केवारी | (५०.००%) | (०.००%) | (५०.००%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ४ | २ | ० | ६ |
| | टक्केवारी | (६६.६६%) | (३३.३४%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | २ | ० | ० | २ |

| | | | | | |
|---------------------------|-----------|-----------|----------|----------|-----------|
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १ | ० | ० | १ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ० | ० | ० | ० |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | १३ | ० | ० | १३ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सिंधुदूर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | २२ | २ | १ | २५ |
| | टक्केवारी | (८८.००%) | (०८.००%) | (०४.००%) | (१००.००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.३० मध्ये जिल्ह्यातील कोकम लागवडीखालील क्षेत्राचा विचार करता एकूण २५ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी २२ (८८%) कोकम लागवडीखालील क्षेत्र अर्धा एकर पेक्षा कमी आहे यामध्ये वेंगुर्ला तालुक्यातील १३ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांचा समावेश आहे. उर्वरित २ (८.००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांचे कोकम लागवडीखालील अर्धा ते १ एकर एवढे असून सदर लाभार्थी शेतकरी कुडाळ तालुक्यातील ४ (३३.६६%) आहेत. जिल्ह्यात कोकम लागवडीखालील क्षेत्राचे प्रमाण फारच कमी असून वेंगुर्ला, कुडाळ तालुक्यात कोकम लागवड धारण क्षेत्राचे प्रमाण जास्त आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.३१

कोकम उत्पादक कलमांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | कोकम उत्पादक (जिवंत) कलमे | | | एकूण |
|-----------|-----------|---------------------------|----------|-----------|-----------|
| | | ४० पेक्षा कमी | ४१ ते ८० | ८१ ते २०० | |
| देवगड | लाभार्थी | १ | ० | ० | १ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ० | ० | ० | ० |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | १ | ० | १ | ०२ |
| | टक्केवारी | (५०.००%) | (०.००%) | (५०.००%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ५ | १ | ० | ६ |
| | टक्केवारी | (८३.३४%) | (१६.६६%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | २ | ० | ० | २ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १ | ० | ० | १ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |

| | | | | | |
|---------------------------|-----------|-----------|----------|----------|-----------|
| वैभववाडी | लाभार्थी | ० | ० | ० | ० |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | १३ | ० | ० | १३ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | २३ | १ | १ | २५ |
| | टक्केवारी | (९२.००%) | (०४.००%) | (०४.००%) | (१००.००%) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.३१ मध्ये, ४० पेक्षा कमी कोकमची उत्पादक (जिवंत) कलमे असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची एकूण संख्या २३ (९२%) असून सर्वात जास्त वेंगुर्ला तालुक्यात १३ (१००%) आहे. दोडामार्ग, वैभववाडी तालुक्यात ही संख्या शुन्य आहे. ४१ ते ८० आणि ८१ ते २०० कोकमची जिवंत उत्पादक कलमे असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या प्रत्येकी १ असून ती अनुक्रमे कुडाळ आणि कणकवली तालुक्यातील आहे. जिल्ह्यात या पीकाचे उत्पादन घेणारे जास्तीत जास्त लाभार्थी वेंगुर्ला आणि कुडाळ तालुक्यात असल्याचे आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.३२

चिक्कू लागवडीचे विविध कालखंडातील तालुका निहाय वर्गीकरण

| तालुका | | लागवड वर्ष | | | | एकूण |
|---------------------------|-----------|-------------|------------|------------|------------|-----------|
| | | १९८० पूर्वी | १९८१ ते ९० | १९९१ ते ०० | २००१ ते १० | |
| देवगड | लाभार्थी | ० | ० | १ | १ | १ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | १ | ० | १ | ० | १ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (१००.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ० | ० | ० | १ | १ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ० | १ | ० | १ | २ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (५०.००%) | (०.००%) | (५०.००%) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | ० | १ | ० | १ | २ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (५०.००%) | (०.००%) | (५०.००%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १ | ० | १ | ० | २ |
| | टक्केवारी | (५०.००%) | (०.००%) | (५०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ४ | ० | ० | ० | २ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ० | ३ | ० | ४ | ७ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (४२.८६%) | (०.००%) | (५७.१४%) | (१००.००%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | ४ | ५ | ३ | ६ | १८ |
| | टक्केवारी | (२२.२२%) | (२७.७८%) | (१६.६७%) | (३३.३४%) | (१००.००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.३२ मध्ये की, १८ (१००%) चिकू उत्पादक लाभार्थी पैकी १९८० ते १९९० या कालखंडात ९ (५०.००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी चिकूची लागवड केलेली आहे. १९९१ ते २००० या कालावधीत ३ (१६.६७%) शेतकऱ्यांनी चिकूची लागवड केलेली आढळून येते. २००१ ते २०११ या कालखंडात ६ (३३.३३%) लाभार्थ्यांनी लागवड केलेली आहे. सर्वात जास्त वेंगुर्ला तालुक्यातील ७ (१००%) लाभार्थी असून दोडामार्ग तालुक्यात लाभार्थी संख्या ०१ आहे. १९९० पूर्वीही चिकूची लागवड आणि रोजगार हमी योजना कालखंडानंतरही चिकूची लागवड झाल्याचे संशोधनातून आढळून येते.

तक्ता क्र. ६.३३

चिकू लागवडीखालील क्षेत्राचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | लागवड क्षेत्र (एकरमध्य) | | एकूण |
|---------------------------|-----------|-------------------------|----------------|-----------|
| | | अर्धा एकरपेक्षा कमी | अर्धा ते १ एकर | |
| देवगड | लाभार्थी | १ | ० | १ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | १ | ० | १ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ० | १ | १ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (१००.००%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १ | १ | २ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (१००.००%) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | २ | ० | २ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १ | १ | २ |
| | टक्केवारी | (५०.००%) | (५०.००%) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २ | ० | २ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ५ | २ | ७ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | १३ | ५ | १८ |
| | टक्केवारी | (७२.२२%) | (२७.७८%) | (१००.००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.३३ मध्ये की, चिक्कू लागवडीखाली क्षेत्राचा विचार करता एकूण १८ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १३ (७२.२२%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांचे चिक्कू लागवडीखालील क्षेत्र अर्धा एकर पेक्षा कमी आहे. यामध्ये जास्तीत जास्त वेंगुर्ला तालुक्यातील ५ (७१.४२%) लाभार्थी शेतकऱ्यांचा समावेश आहे. कमीत कमी १ लाभार्थी शेतकरी देवगड-कुडाळ तालुक्यातील आहे. उर्वरित ५ (२७.७८%) लाभार्थी शेतकरी अर्धा ते १ एकर या क्षेत्रात चिक्कूची लागवड केल्याचे आढळून येते. यामध्ये कणकवली कुडाळ, सावंतवाडी तालुक्यातील प्रत्येकी १ लाभार्थी शेतकरी असून २ (२८.५८%) शेतकरी वेंगुर्ला तालुक्यातील आहे. जिल्ह्यामध्ये चिक्कू लागवडीचे क्षेत्र १ एकर पर्यंत असल्याचे आढळून येते. जिल्ह्यामध्ये वेंगुर्ला तालुक्यात चिक्कू लागवड क्षेत्र सर्वात जास्त असल्याचे संशोधनातून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.३४

चिक्कू उत्पादक कलमांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | चिक्कू उत्पादक (जिवंत) कलमे | | | एकूण |
|-----------|-----------|-----------------------------|-----------|-----------|-----------|
| | | ४० पेक्षा कमी | ४१ ते ८० | ८१ ते २०० | |
| देवगड | लाभार्थी | १ | ० | ० | १ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | १ | ० | ० | ० |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ० | १ | १ | १ |
| | टक्केवारी | (०.००%) | (१००.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १ | १ | ० | २ |
| | टक्केवारी | (५०.००%) | (५०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | २ | ० | ० | २ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १ | १ | ० | २ |
| | टक्केवारी | (५०.००%) | (५०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २ | ० | ० | २ |
| | टक्केवारी | (१००.००%) | (०.००%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ६ | १ | ० | ७ |
| | टक्केवारी | (८५.७२%) | (१४.२८%) | (०.००%) | (१००.००%) |
| एकूण | लाभार्थी | १४ | ४ | १ | १८ |
| | टक्केवारी | (७७.७८%) | (२२.२२%) | (०.००%) | (१००.००%) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

वरील तक्ता क्र. ६.३४ मध्ये की, जिल्ह्यामध्ये ४० पेक्षा कमी चिकूची जिवंत उत्पादक कलमे असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची एकूण संख्या १४ (१७.७८%) असून सर्वात जास्त वेंगुर्ला तालुक्यात ६ (८५.७२%) आहे. दोडामार्ग तालुक्यात ही संख्या शुन्य आहे. ४१ ते ८० उत्पादक जिवंत कलमे असणाऱ्या चिकू लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या जिल्ह्यात एकूण ४ (२२.२२%) इतकी असून वेंगुर्ला, सावंतवाडी, कुडाळ आणि कणकवली तालुक्यात प्रत्येकी १ इतकी आहे. जिल्ह्यात या फळ पिकांचे उत्पादन घेणारे लाभार्थी शेतकरी संख्येने कमी असल्याचे संशोधनातून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.३५

घरातील फळझाड लागवडीसाठी उपलब्ध मजुरांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय विश्लेषण

| तालुका | (कालखंड) जून ते सप्टेंबर सत्रिया | | | | | | (कालखंड) ऑक्टोबर ते जानेवारी | | | | | | (कालखंड) फेब्रुवारी ते मे | | | | | |
|------------------------------|----------------------------------|---------|------|------------|---------|------|------------------------------|---------|------|------------|---------|------|---------------------------|---------|------|------------|---------|------|
| | स्त्री मजुर | | | पुरुष मजुर | | | स्त्री मजुर | | | पुरुष मजुर | | | स्त्री मजुर | | | पुरुष मजुर | | |
| | १ ते ५ | ६ ते १० | एकूण | १ ते ५ | ६ ते १० | एकूण | १ ते ५ | ६ ते १० | एकूण | १ ते ५ | ६ ते १० | एकूण | १ ते ५ | ६ ते १० | एकूण | १ ते ५ | ६ ते १० | एकूण |
| देवगड | ४८ | ० | ४८ | ४९ | १ | ५० | ४८ | ० | ४८ | ४९ | १ | ५० | ४९ | ० | ४९ | ४९ | १ | ५० |
| दोडामार्ग | ५८ | ० | ५८ | ५८ | ० | ५८ | ५८ | ० | ५८ | ५८ | ० | ५८ | ५८ | ० | ५८ | ५८ | ० | ५८ |
| कणकवली | ६० | ० | ६० | ६५ | ० | ६५ | ६३ | ० | ६५ | ६० | १ | ६१ | ६५ | २ | ६७ | ६८ | १ | ६८ |
| कुडाळ | ६० | ० | ६० | ६६ | ० | ६६ | ६२ | ० | ६२ | ६७ | ० | ६७ | ६४ | ० | ६४ | ६७ | ० | ६७ |
| मालवण | ६४ | ० | ६४ | ६९ | ० | ६९ | ६६ | ० | ६९ | ६८ | ० | ६८ | ६७ | ० | ६७ | ६९ | ० | ६९ |
| सावंतवाडी | ४८ | ० | ४८ | ४९ | ० | ४९ | ५० | ० | ५० | ५० | ० | ५० | ४९ | ० | ४९ | ५० | ० | ५० |
| वैभववाडी | ७१ | १ | ७२ | ७२ | १ | ७३ | ७२ | ० | ७२ | ७२ | १ | ७३ | ७३ | ० | ७३ | ७४ | ० | ७४ |
| वेगुर्ला | ७२ | ० | ७२ | ८० | १ | ८१ | ७१ | २ | ७३ | ८० | १ | ८१ | ७३ | १ | ७४ | ८० | १ | ८१ |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | ४८१ | १ | ४८२ | ५०८ | ३ | ५११ | ४९० | २ | ४९२ | ५१० | ४ | ५१४ | ४९८ | ३ | ५०१ | ५१५ | ३ | ५१८ |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

तक्ता क्र. ६.३५ मध्ये जिल्ह्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या घरातील मजूरांचे तीन कालखंडात सांख्यिकीय विश्लेषण केले आहे. जून ते सप्टेंबर या कालखंडात लाभार्थीकडे घरातील सरासरी १ ते ५ स्त्री-पुरुष मजूर सतत सर्वच तालुक्यात काम करताना आढळून येतात. याच कालखंडात ६ ते १० पुरुष मजूर देवगड, वैभववाडी आणि कुडाळ तालुक्यात प्रत्येकी एकाच लाभार्थी कुटुंबात आढळून येतात. भर घालणे, खते देणे यासाठी हा कालखंड महत्त्वाचा असल्याने घरातील मजूर फळबागेत काम करीत असतात.

ऑक्टोबर ते जानेवारी या कालखंडात घरातील सरासरी १ ते ५ स्त्री-पुरुष सतत काम करीत असतात अशी स्थिती जिल्ह्यातील ४९२ ते ५१४ लाभार्थी कुटुंबात आढळून येते. ६ ते १० स्त्री-पुरुष वेंगुर्ला तालुक्यातील दोन लाभार्थी कुटुंबात आढळतात तर ६ ते १० पुरुष देवगड, वैभववाडी आणि वेंगुर्ला तालुक्यातील लाभार्थी कुटुंबामध्ये काम करतात. फळधारणेचा हा कालखंड असल्यामुळे घरातील स्त्री-पुरुष मजूर सतत बागेमध्ये काम करीत असतात.

फेब्रुवारी ते मे या कालखंडातील सरासरी ५०० लाभार्थी कुटुंबातील १ ते ५ स्त्री-पुरुष स्वतःच्या बागेत वर्षभर उपलब्ध असतात. याच कालखंडात ६ ते १० स्त्री मजूर वेंगुर्लातील १ कुटुंबात दिसून येतात. तर याच कालखंडात ६ ते १० पुरुष मजूर देवगड आणि वेंगुर्ला तालुक्यातील प्रत्येक एकच कुटुंबात आढळून येतात. या कालखंड फलोत्पादन आणि फळविक्रीचा असल्यामुळे घरातील स्त्री-पुरुष मजूरांना सतत काम करावे लागतात. अशा प्रकारे जिल्ह्यात रोजगार हमी योजनेतर्गत फलोत्पादनात घरातील मजूरांना फार मोठ्या प्रमाणात रोजगार उपलब्ध झाल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते.

तक्ता क्र. ६.३६

फळझाड लागवडीसाठी उपलब्ध बाहेरील मजुरांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय विश्लेषण

| तालुका | (कालखंड) जून ते सप्टेंबर स्थिरा | | | | | | | | (कालखंड) ऑक्टोबर ते जानेवारी | | | | | | | | (कालखंड) फेब्रुवारी ते मे | | | | | | | |
|---------------------------|---------------------------------|------|-------|------|------------|------|-------|------|------------------------------|------|-------|------|------------|------|-------|------|---------------------------|------|-------|------|------------|------|-------|------|
| | स्त्री मजुर | | | | पुरुष मजुर | | | | स्त्री मजुर | | | | पुरुष मजुर | | | | स्त्री मजुर | | | | पुरुष मजुर | | | |
| | १ ते | ६ ते | ११ ते | एकूण | १ ते | ६ ते | ११ ते | एकूण | १ ते | ६ ते | ११ ते | एकूण | १ ते | ६ ते | ११ ते | एकूण | १ ते | ६ ते | ११ ते | एकूण | १ ते | ६ ते | ११ ते | एकूण |
| | ५ | १० | १५ | | ५ | १० | १५ | | ५ | १० | १५ | | ५ | १० | १५ | | ५ | १० | १५ | | ५ | १० | १५ | |
| देवगड | ४६ | १५ | २ | ६३ | ३३ | २५ | ५ | ६३ | ३४ | २४ | ६ | ६४ | ४२ | १७ | २ | ६१ | ५४ | ९ | १ | ६३ | ४८ | १३ | १ | ६२ |
| दोडामार्ग | ३७ | ० | ० | ३७ | ३० | १ | ० | ३१ | २९ | ८ | ० | ३७ | ३० | ० | ० | ३० | ३७ | ० | ० | ३७ | २९ | ० | ० | २९ |
| कणकवली | ५० | २ | ० | ५२ | ४३ | ४ | ० | ५० | ४३ | ९ | ० | ५२ | ४५ | २ | ० | ४७ | ४५ | २ | ० | ४७ | ४८ | १ | ० | ४९ |
| कुडाळ | ४६ | १ | ० | ५१ | ३७ | ११ | २ | ५० | १८ | ३१ | २ | ५१ | ४३ | २ | १ | ४६ | ४६ | १ | ० | ४७ | ४५ | ० | १ | ४६ |
| मालवण | ४१ | १४ | ० | ५५ | २८ | २६ | ३ | ५७ | १८ | ३३ | ३ | ५४ | ५० | ६ | ० | ५६ | ५१ | ४ | ० | ५५ | ४९ | ५ | ० | ५४ |
| सावंतवाडी | २८ | १४ | ० | ४२ | २१ | २१ | १ | ४३ | २२ | २१ | ० | ४३ | ३७ | ७ | ० | ४४ | २२ | १ | ० | ४३ | ३९ | ५ | ० | ४४ |
| वैभववाडी | ४३ | १४ | १ | ५८ | ४४ | २० | १ | ६५ | ३२ | २४ | ४ | ६० | ५० | १३ | १ | ६४ | ५२ | ७ | ० | ५९ | ५५ | ८ | ० | ६३ |
| वेगुर्ला | ५९ | ४ | ० | ६३ | ६३ | ६ | २ | ५१ | ५४ | १४ | ० | ६८ | ६३ | ४ | ० | ६७ | ५२ | ० | ० | ७२ | ६३ | २ | २ | ६७ |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | ३५० | ६८ | ३ | ४२१ | ३०२ | ११४ | १४ | ४३० | २५० | १६४ | १५ | ४२९ | ३६० | ५१ | ४ | ४१५ | ३७९ | २४ | १ | ४०३ | ३७६ | ३४ | ४ | ४१४ |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

तक्ता क्र. ६.३६ मध्ये रोजगार हमी योजनेंतर्गत फळझाड लागवडीकरिता उपलब्ध बाहेरील मजुरांचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय विश्लेषण केले आहे. फळबागेमध्ये वर्षभर काम करण्यासाठी मजुरांची गरज असते. त्यानुसार वर्षाचे जून ते सप्टेंबर, ऑक्टोबर ते जानेवारी आणि फेब्रुवारी ते मे असे तीन कालखंडात वर्गीकरण केलेले आहे. जून ते सप्टेंबर हा कालखंड फळबागेचा अंतर्गत मशागतीचा असल्यामुळे सर्व तालुक्यातील लाभार्थींकडून सरासरी १ ते ५ स्त्री-पुरुष मजुरांना सतत काम दिले जाते. जिल्ह्यातील एकूण ३५० (८३.१३%) लाभार्थी कुटुंबामध्ये १ ते ५ सरासरी बाहेरील स्त्री-पुरुष मजूर सतत कामावर असतात. याच काळात जिल्ह्यात ६८ लाभार्थी कुटुंबाकडे सरासरी ६ ते १० स्त्री मजूर आणि ११४ लाभार्थी कुटुंबामध्ये ६ ते १० पुरुष मजूर यांना रोजगार उपलब्ध करून दिला जातो. देवगड, कुडाळ, मालवण, सावंतवाडी या तालुक्यात पुरुष मजुरांना मागणी जास्त आहे. ऑक्टोबर ते जानेवारी या कालखंडात जिल्ह्यातील एकूण २५० (५८.२७%) लाभार्थी कुटुंबाकडे सरासरी १ ते ५ स्त्री मजूर आणि एकूण ३६० (८६.७४%) लाभार्थींकडे सरासरी १ ते ५ पुरुष मजूर सतत काम करीत असतात. तसेच १६४ (३८.२२%) लाभार्थी शेतकऱ्यांकडे सरासरी ६ ते १० स्त्री मजुरांना रोजगार उपलब्ध आहे. यावेळी पुरुष मजुरांना मागणी कमी आहे. कुडाळ, मालवण, सावंतवाडी आणि वैभववाडी या तालुक्यात स्त्री मजुरांना जास्त मागणी आहे. याच काळात काही तालुक्यात सरासरी ६ ते १० आणि ११ ते १५ स्त्री-पुरुष मजुरांना मागणी आहे. देवगड, मालवण तालुक्यात सर्वात जास्त पुरुष मजुरांना मागणी असलेली दिसते. फेब्रुवारी ते मे हा कालखंड फळहंगाम कालखंड असल्यामुळे घरातील मजुरांबरोबर बाहेरील स्त्री-पुरुष मजुरांना जिल्ह्यातील एकूण ३७९ (९४.०४%) लाभार्थी कुटुंबाकडे सरासरी १ ते ५ स्त्री मजूर सतत कामावर असतात. याच ३७६ लाभार्थी कुटुंबाकडे सरासरी १ ते ५ पुरुष मजुरांना सतत मागणी असते. जिल्ह्यात २४ लाभार्थींकडे सरासरी ६ ते १० स्त्री मजुरांना आणि ३४ लाभार्थींकडे सरासरी ६ ते १० मजूर मजुरांना सतत काम असते. जिल्ह्यात देवगड, मालवण, सावंतवाडी या भागात स्त्री-पुरुष मजुरांची संख्या सर्वात जास्त आहे. अशाप्रकारे या तिन्ही कालखंडात फलोत्पादनामुळे स्त्री-पुरुष मजुरांना सारख्याच पद्धतीने सतत वर्षभर रोजगार उपलब्ध असल्याचे आकडेवारीच्या संशोधनातून आढळून आले आहे.

तक्ता क्र. ६.३७

स्त्री-पुरुषांच्या दैनंदिन मजूरी दरांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण (चालू स्थितीतील मजूरी दर) (सन २०१०)

| तालुका | स्त्रियांची दैनंदिन मजूरी | | | | | | | पुरुषांची दैनंदिन मजूरी | | | | | | |
|---------------------------|---------------------------|-------------|--------------|---------------|---------------|---------------------|------|-------------------------|--------------|---------------|---------------|---------------------|------|--|
| | ५० पेक्षा कमी | ५१ ते ७५ | ७६ ते १०० | १०१ ते १२५ | १२६ ते १५० | १५१ पेक्षा जास्त | एकूण | ५१ ते ७५ | ७६ ते १०० | १०१ ते १२५ | १२६ ते १५० | १५१ पेक्षा जास्त | एकूण | |
| देवगड | २ | १० | ५० | ६ | २ | २ | ७२ | ० | ४३ | १४ | १२ | ३ | ७२ | |
| दोडामार्ग | ० | ० | ४४ | ५ | ९ | २ | ६० | ० | १२ | ३३ | ५ | १० | ५९ | |
| कणकवली | २ | ९ | ५८ | ६ | १ | ० | ७६ | ० | ३७ | १६ | २३ | ० | ७६ | |
| कुडाळ | ० | १ | ६२ | ६ | १ | १ | ७१ | ० | २२ | ३१ | १६ | २ | ७१ | |
| मालवण | ० | ० | ५० | १९ | २ | ० | ७१ | ० | १८ | १४ | ३१ | ८ | ७१ | |
| सावंतवाडी | १ | ० | ४८ | ३ | ५ | २ | ५९ | ० | ७ | १७ | २५ | १० | ५९ | |
| वैभववाडी | ० | २४ | ४० | १३ | १ | ० | ७७ | ० | ४९ | ९ | १८ | १ | ७७ | |
| वेंगुर्ला | २ | ४ | ७३ | ४ | ३ | ० | ८६ | ० | ६१ | ५ | १४ | ६ | ८६ | |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | ०७ | ४८ | ४२५ | ६२ | २३ | ७ | ५७२ | ० | २४९ | १३९ | १४४ | ४० | ५७२ | |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

तक्ता क्र. ६.३७ वरून असे दिसून येते, की जिल्ह्यातील वर्षभरातील दैनंदिन स्त्री-पुरुषांच्या मजूरी दराचा विचार करता स्त्रीयांना सरासरी ७६ ते १०० रु. दैनंदिन मजूरी दिली जाते. जिल्ह्यातील एकूण ५७२ (१००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ४२५ (७४.३०%) लाभार्थी शेतकरी स्त्रीयांना वर्षभराच्या कालखंडात सरासरी ७६ रु ते १०० रु. मजूरी देतात. काही ठिकाणी कमीतकमी ५० रु. पेक्षा कमी मजूरी स्त्रियांना दिली जाते. आणि जास्तीत जास्त १५१ रु. पेक्षा जास्त दैनंदिन मजूरी दिली जाते. एकूण लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ७ (१.२२%) लाभार्थी शेतकरी स्त्रियांना अशी मजूरी देतात. वेंगुर्ला तालुक्यात एकूण ८४ (१००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ७३ (८४.८८%) लाभार्थी शेतकरी स्त्रियांना सरासरी ७६ ते १०० रु. दैनंदिन मजूरी देतात. ५० रु.पेक्षा कमी आणि १०० रु. पर्यंत, दैनंदिन मजूरी स्त्रियांना दिली जाते. त्या ठिकाणी स्त्रियांना एक वेळचे जेवण लाभार्थी शेतकऱ्याकडून दिले जाते.

पुरुषांच्या दैनंदिन मजूरी दराचा विचार करता सरासरी ७६ रु. ते १०० रु. दैनंदिन मजूरी दिसून येते. एकूण जिल्ह्यातील ५७२ (१००%) लाभार्थी पैकी २४९ (४३.५३%) लाभार्थी शेतकरी पुरुषांना ७६ ते १०० रु. दैनंदिन मजूरी देतात. अशा प्रकारच्या मजूरीच्या दराला पुरुषांना एक वेळचे जेवण लाभार्थी शेतकऱ्यांकडून मिळते. एकूण ५७२ (१००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ४० (६.९९%) लाभार्थी शेतकरी १५१ रुपयांपेक्षा जास्त दैनंदिन मजूरी पुरुषांना देतात. पुरुषांच्या दैनंदिन मजूरी मध्ये ७६ रुपये पासून १५१ रु. पर्यंत दिली जाते. यावरून असे दिसून येते की, स्त्री-पुरुष यांच्या दैनंदिन मजूरी दरामध्ये कामाच्या स्वरूपावरून विविधता दिसून येते. पुरुषांच्या दैनंदिन मजूरी दरापेक्षा स्त्रियांना दैनंदिन मजूरी कमी मिळते.

तक्ता क्र. ६.३८

फळबाग हंगामातील स्त्री-पुरुषांच्या मजुरी दराचे सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | स्त्रियांची फळबाग हंगामातील मजुरी (रु.) | | | | | | पुरुषांची फळबाग हंगामातील मजुरी (रु.) | | | | | |
|---------------------------|---|--------------|---------------|---------------|---------------------|------|---------------------------------------|--------------|---------------|---------------|---------------------|------|
| | ५१ ते ७५ | ७६ ते १०० | १०१ ते १२५ | १२६ ते १५० | १५१ पेक्षा जास्त | एकूण | ५१ ते ७५ | ७६ ते १०० | १०१ ते १२५ | १२६ ते १५० | १५१ पेक्षा जास्त | एकूण |
| देवगड | ० | ३० | २२ | ७ | १३ | ७२ | ० | १५ | १३ | २४ | २० | ७२ |
| दोडामार्ग | ० | ३१ | १० | १२ | ७ | ६० | ० | ८ | २५ | १३ | १२ | ६० |
| कणकवली | ४ | ४१ | १२ | १० | ९ | ७६ | ० | ९ | १३ | २५ | १९ | ७६ |
| कुडाळ | १ | ३४ | २१ | १० | ५ | ७१ | ० | ०८ | २६ | २७ | १० | ७१ |
| मालवण | ० | ४६ | १० | ०५ | १० | ७१ | ० | ०४ | ०५ | ३७ | २५ | ७१ |
| सावंतवाडी | ० | २४ | १९ | ०६ | १० | ५९ | ० | ०७ | १७ | ११ | २४ | ५९ |
| वैभववाडी | ०७ | ३९ | २० | ०७ | ०४ | ७७ | ० | १५ | २१ | २६ | १५ | ७७ |
| वेंगुर्ला | ० | ३६ | २० | १४ | ०६ | ८६ | ० | २५ | १६ | ३२ | १३ | ८६ |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | १२ | २८१ | १४४ | ७१ | ६४ | ५७२ | ० | ९१ | १३६ | २०५ | १४० | ५७२ |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

वरील तक्ता क्र. ६.३८ वरून असे दिसून येते की, जिल्ह्यातील फळबाग हंगामाच्या काळात एकूण ५७२ (१००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी २८१ लाभार्थी शेतकरी, स्त्रियांना ७६ ते १०० रु. दैनंदिन मजुरी देतात. फळ हंगामात इतर हंगामपेक्षा स्त्रियांना एकूण लाभार्थी पैकी ६४ लाभार्थी शेतकऱ्यांकडून, १५१ रुपयापेक्षा जास्त दैनंदिन मजुरी दिली जाते. फळबाग हंगामाच्या काळात ५० रु. पेक्षा कमी दैनंदिन मजुरी दरावर स्त्रिया कामावर येत नाही. या काळात कमीत कमी ७५ रुपयापासून १५१ रुपयापेक्षा जास्त अशी दैनंदिन मजुरी दरामध्ये विविधता स्त्रियांच्या बाबतीत पहायला मिळते. पुरुषांच्या फळबाग हंगामातील दैनंदिन मजुरी दरामध्ये कामाच्या स्वरूपावरून विविधता दिसून येते. एकूण लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १३६ लाभार्थी शेतकरी पुरुषांना १०१ रु. ते १२५ रुपयापर्यंत दैनंदिन मजुरी देतात. ५७२ लाभार्थी पैकी २०५ लाभार्थी पुरुषांना ११६ रु. ते १५० रु. पर्यंत दैनंदिन मजुरी देतात या दैनंदिन मजुरीचे प्रमाण जास्त आहे. तसेच ५७२ लाभार्थी पैकी १४० लाभार्थी, १५१ रु. पेक्षा जास्त दैनंदिन मजुरी पुरुषांना देतात. फळबाग हंगाम आणि कामाचे स्वरूप यावरून याकाळात पुरुषांची दैनंदिन मजुरी दिली जाते. मालवण सावंतवाडी आणि देवगड तालुक्यात आंबा उत्पादक या हंगामात पुरुषांना दैनंदिन मजुरी जास्तीत जास्त देतात.

मजुरीचा वार्षिक कालखंड आणि फळबाग हंगाम कालखंडातील दैनंदिन मजुरीदरांची तुलना करता, फळबाग हंगामातील स्त्री-पुरुषांची दैनंदिन मजुरी ही इतर हंगामापेक्षा निश्चित जास्त आहे.

तक्ता क्र. ६.३९

फळबागेसाठी आवश्यक असणाऱ्या खतांच्या वापरांचे सांख्यिकीय अध्ययन

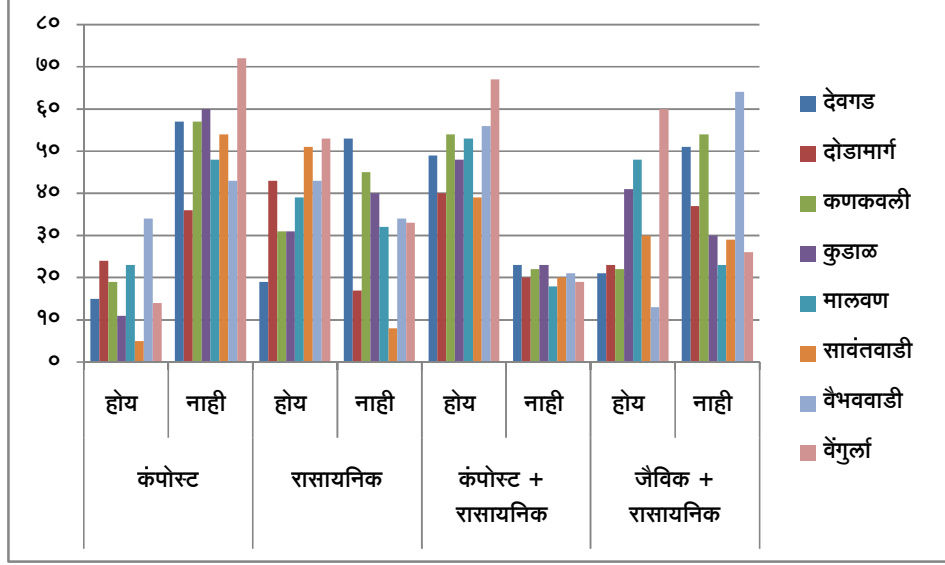
| तालुका | | कंपोस्ट | | | रासायनिक | | | कंपोस्ट + रासायनिक | | | जैविक + रासायनिक | | |
|---------------------------|-----------|---------|---------|-------|----------|---------|-------|--------------------|---------|-------|------------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | १५ | ५७ | ७२ | १९ | ५३ | ७२ | ४९ | २३ | ७२ | २१ | ५१ | ७२ |
| | टक्केवारी | (२०.२४) | (७९.१६) | (१००) | (२६.३२०) | (७३.६२) | (१००) | (६८.०६) | (३१.९४) | (१००) | (२९.१२) | (७०.८४) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | २४ | ३६ | ६० | ४३ | १७ | ६० | ४० | २० | ६० | २३ | ३७ | ६० |
| | टक्केवारी | (४०.६८) | (५९.३२) | (१००) | (७२.८८) | (२७.१२) | (१००) | (६७.८०) | (३२.२०) | (१००) | (३८.९८) | (६१.०२) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | १९ | ५७ | ७६ | ३१ | ४५ | ७६ | ५४ | २२ | ७६ | २२ | ५४ | ७६ |
| | टक्केवारी | (२५.०) | (७५.०) | (१००) | (४०.७८) | (५९.२२) | (१००) | (७१.०६) | (२८.९४) | (१००) | (२८.९४) | (७१.०६) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ११ | ६० | ७१ | ३१ | ४० | ७१ | ४८ | २३ | ७१ | ४१ | ३० | ७१ |
| | टक्केवारी | (१५.५०) | (८४.५०) | (१००) | (४३.६६) | (५६.३४) | (१००) | (६७.६०) | (३२.४०) | (१००) | (५७.७४) | (४२.२६) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | २३ | ४८ | ७१ | ३९ | ३२ | ७१ | ५३ | १८ | ७१ | ४८ | २३ | ७१ |
| | टक्केवारी | (३२.४०) | (६७.६०) | (१००) | (५४.९२) | (५०.०८) | (१००) | (७४.६४) | (२५.३६) | (१००) | (६७.६०) | (३२.४०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ५ | ५४ | ५९ | ५१ | ८ | ५९ | ३९ | २० | ५९ | ३० | २९ | ५९ |
| | टक्केवारी | (८.४८) | (९१.५२) | (१००) | (८६.४४) | (१३.५६) | (१००) | (६६.१०) | (३३.९०) | (१००) | (५०.८४) | (५१.१६) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ३४ | ४३ | ७७ | ४३ | ३४ | ७७ | ५६ | २१ | ७७ | १३ | ६४ | ७७ |
| | टक्केवारी | (४३.५८) | (५६.४२) | (१००) | (५५.१२) | (४४.८८) | (१००) | (७१.८०) | (२८.२०) | (१००) | (१६.६६) | (८३.३४) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | १४ | ७२ | ८६ | ५३ | ३३ | ८६ | ६७ | १९ | ८६ | ६० | २६ | ८६ |
| | टक्केवारी | (१६.२८) | (८३.७२) | (१००) | (६१.६२) | (३८.३८) | (१००) | (७७.९०) | (२२.१०) | (१००) | (६९.७६) | (३०.२४) | (१००) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | १४५ | ४२७ | ५७२ | ३१० | २६२ | ५७२ | ४०६ | १६६ | ५७२ | २५८ | ३१४ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (२५.३४) | (७४.६६) | (१००) | (५४.२०) | (४५.८०) | (१००) | (७०.९८) | (२०.०२) | (१००) | (४५.१०) | (५४.९०) | (१००) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

आलेख क्र. ६.११

फळबागेसाठी आवश्यक असणाऱ्या खतांच्या वापराचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.३९ मध्ये असे आढळून येते की, जिल्ह्यात एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीत जास्त ४०६ (७०.९८%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी कंपोस्ट आणि रासायनिक या संयुक्त खतांचा वापर केलेला आहे. यामध्ये जास्तीत जास्त ६७ (७७.९०%) लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीत कमी ३९ (६६.१०%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील आहे. जिल्ह्यात एकूण नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी फक्त १४५ (२५.३४%) लाभार्थी शेतकरी कंपोस्ट खतांचा वापर करतात यामध्ये जास्तीतजास्त ३४ (४३.५८%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील असून, कमीतकमी ५ (८.४८%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील आहेत. एकूण ३१४ (५४.९०) नमुना लाभार्थी जैविक, रासायनिक या मिश्र स्वरूपातील खतांच्या फळबागेसाठी वापर करित असल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.४० (१)

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या फळबागेवर फवारण्यात आलेल्या औषधांचे सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | त्रिशूल | | | कल्टर | | | थायोडिन | | | बोडो मिश्रण पावडर | | |
|---------------------------|-----------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|-------------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ३९ | ३३ | ७२ | ४३ | २९ | ७२ | १९ | ५३ | ७२ | ४३ | २९ | ७२ |
| | टक्केवारी | (५४.१६) | (४८.८४) | (१००) | (५९.७२) | (४०.२८) | (१००) | (२६.३८) | (७३.६२) | (१००) | (५९.७२) | (४०.२८) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | २० | ४० | ६० | ९ | ५१ | ६० | ७ | ५३ | ६० | ४४ | १६ | ६० |
| | टक्केवारी | (३३.३४) | (६६.६६) | (१००) | (१५.००) | (८५.००) | (१००) | (११.६६) | (८८.३४) | (१००) | (७३.३४) | (२६.६६) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ३४ | ४२ | ७६ | ३० | ४६ | ७६ | १४ | ६२ | ७६ | ५५ | २१ | ७६ |
| | टक्केवारी | (४४.७४) | (५५.२६) | (१००) | (३९.४८) | (६०.५२) | (१००) | (२२.४२) | (८१.५८) | (१००) | (७२.३६) | (२७.६४) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ३२ | ३९ | ७१ | ३९ | ३२ | ७१ | ११ | ६० | ७१ | ४७ | २४ | ७१ |
| | टक्केवारी | (४५.०८) | (५४.९२) | (१००) | (५४.९२) | (४५.०८) | (१००) | (१५.५०) | (८४.५०) | (१००) | (६६.२०) | (३३.८०) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ५१ | २० | ७१ | ५० | २१ | ७१ | १४ | ५७ | ७१ | ४९ | २२ | ७१ |
| | टक्केवारी | (७१.८४) | (२८.१६) | (१००) | (७०.४२) | (२९.५८) | (१००) | (१९.७२) | (८०.२८) | (१००) | (६९.०२) | (३०.९८) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ३१ | २८ | ५९ | ३९ | २० | ५९ | ९ | ५० | ५९ | ४४ | १५ | ५९ |
| | टक्केवारी | (५२.५४) | (४७.४६) | (१००) | (६६.९०) | (३३.१०) | (१००) | (१५.२६) | (८४.७४) | (१००) | (७५.५८) | (२५.४२) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | १४ | ६३ | ७७ | ७ | ७० | ७७ | ३ | ७४ | ७७ | ४४ | ३३ | ७७ |
| | टक्केवारी | (१८.१८) | (८१.८२) | (१००) | (९.१०) | (९०.९०) | (१००) | (३.९०) | (९६.१०) | (१००) | (५७.१४) | (४२.८६) | (१००) |
| वेगुर्ला | लाभार्थी | ३५ | ५१ | ८६ | ३४ | ५२ | ८६ | १५ | ६० | ७५ | ५३ | ३३ | ८६ |
| | टक्केवारी | (४०.७०) | (५९.३०) | (१००) | (३९.५७) | (६०.४६) | (१००) | (२०.००) | (८०.००) | (१००) | (६१.६२) | (३८.३८) | (१००) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | २५६ | ३१६ | ५७२ | २५१ | ३२१ | ५७२ | ९२ | ४६९ | ५६१ | ३७९ | १९३ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (४४.७५) | (५५.२५) | (१००) | (४३.८८) | (५६.१२) | (१००) | (१६.४०) | (८४.६०) | (१००) | (६६.२६) | (३३.७४) | (१००) |

तक्ता क्र. ६.४० (२)

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या फळबागेवर फवारण्यात आलेल्या औषधांचे सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | मोनोफोटोफॉस | | | क्विनॉलफॉस | | | इन्डोसल्फान | | | गोमुत्र | | |
|---------------------------|-----------|-------------|---------|-------|------------|---------|-------|-------------|---------|-------|---------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | १३ | ५९ | ७२ | २३ | ४९ | ७२ | ४२ | ३० | ७२ | ७ | ६५ | ७२ |
| | टक्केवारी | (१८.०५) | (८१.९४) | (१००) | (३१.९४) | (६०.०६) | (१००) | (५८.३४) | (४१.६६) | (१००) | (९.७२) | (९०.२७) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | १० | ५० | ६० | ९ | ५१ | ६० | ४० | २० | ६० | २९ | ३१ | ६० |
| | टक्केवारी | (१६.६६) | (८३.३४) | (१००) | (१५.००) | (८५.००) | (१००) | (६६.६६) | (३३.३४) | (१००) | (४८.३४) | (५१.६६) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ७ | ६९ | ७६ | १० | ६६ | ७६ | ५१ | २५ | ७६ | ७ | ६९ | ७६ |
| | टक्केवारी | (९.२२) | (९०.७८) | (१००) | (१३.१५) | (८६.८४) | (१००) | (६७.१०) | (३२.९०) | (१००) | (९.२२) | (९०.७८) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ३ | ६८ | ७१ | २ | ६९ | ७१ | ४९ | २२ | ७१ | ५ | ६६ | ७१ |
| | टक्केवारी | (४.२२) | (९५.७८) | (१००) | (२.८२) | (८७.१८) | (१००) | (६९.०२) | (३०.९८) | (१००) | (७.०४) | (९२.९५) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | २४ | ४७ | ७१ | ११ | ६० | ७१ | ४४ | २७ | ७१ | ४ | ६७ | ७१ |
| | टक्केवारी | (३३.८०) | (६६.२०) | (१००) | (१५.५०) | (८४.५०) | (१००) | (६१.९८) | (३८.०२) | (१००) | (५.६४) | (९४.३६) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | १९ | ४० | ५९ | १० | ४९ | ५९ | ४१ | १८ | ५९ | ११ | ४८ | ५९ |
| | टक्केवारी | (३२.८००) | (६७.८०) | (१००) | (१६.९४) | (८३.०६) | (१००) | (६९.५०) | (३०.५०) | (१००) | (१८.६४) | (८१.३६) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ५ | ७२ | ७७ | ५ | ७२ | ७७ | ५१ | २६ | ७७ | ११ | ६६ | ७७ |
| | टक्केवारी | (६.५०) | (९३.५०) | (१००) | (६.५०) | (९३.५०) | (१००) | (६६.२४) | (३३.७६) | (१००) | (१४.२८) | (८५.७२) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | २९ | ५७ | ८६ | १३ | ७३ | ८६ | ५३ | ३३ | ८६ | १३ | ७३ | ८६ |
| | टक्केवारी | (३३.७२) | (६६.२८) | (१००) | (१५.१२) | (८४.८८) | (१००) | (६१.६२) | (३८.३८) | (१००) | (१५.१२) | (८४.८८) | (१००) |
| सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | ११० | ४६२ | ५७२ | ८३ | ४८९ | ५७२ | ३७१ | २०१ | ५७२ | ८७ | ४८५ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (१९.२४) | (८०.७६) | (१००) | (१४.५२) | (८५.४८) | (१००) | (६४.८६) | (३५.१४) | (१००) | (१५.८०) | (८४.८०) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

तक्ता क्र. ६.४० मध्ये जिल्ह्यातील नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या फळबागेवर फवारण्यात आलेल्या औषधांच्या तालुकानिहाय सांख्यिकीय अध्ययनावरून असे आढळून येते की, जिल्ह्यात जास्तीत जास्त ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी पैकी ३७९ (६६.२६) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी बोर्डोमिश्रण पावडरचा औषध फवारणीसाठी वापर केलेला आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त ४४ (७४.५८%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील असून कमीत कमी ४३ (५९.७२%) लाभार्थी देवगड तालुक्यातील आहेत. बोर्डो मिश्रण पावडर हे किटकनाशक सर्व फळपिकावर उपयुक्त असल्याने जिल्ह्यात सर्वच लाभार्थी शेतकरी त्याचा वापर मोठ्या प्रमाणात करतात. जिल्ह्यात कमीत कमी ८३ (१४.५२%) नमुना लाभार्थी क्रिनाॅलफॉस या किटकनाशकाचा वापर करतात. यामध्ये जास्तीतजास्त २३ (३१.९४%) लाभार्थी देवगड तालुक्यातील असून कमीत कमी २ (२.६२%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. विशेषतः विविध फळ पिकांच्यासाठी वेगवेगळ्या किटकनाशक औषधांचा वापर केला जातो. कल्टरचा वापर आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकरी करतात. यामध्ये जिल्ह्यात एकूण नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी २५१ (४३.८८%) लाभार्थी यांचा वापर करतात. यामध्ये जास्तीतजास्त ५० (७०.४२%) लाभार्थी मालवण तालुक्यातील असून कमीतकमी ७ (९.१०%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत असे वरील संकलित आकडेवारीवरून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.४१

आंबा लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण दर हेक्टरी चालू खर्चाचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय विश्लेषण (२०१०)

१) देवगड (उत्पादक शेतकरी = ७०)

(दर हेक्टरी खर्च रुपयामध्ये)

| आंबा | जमीन क्षेत्र (क्षेत्र = गुंठे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुंपण (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|-----------------|-----------------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|-----------|------------------------------|---------|---------|-------------|
| जास्तीतजास्त | ६८० | ० | ४५००० | ० | ४१००० | ३२००० | ४०००० | २७९०० | २५००० | १५००० | १४००० |
| कमीत कमी | २० | ० | ० | ० | ३००० | २००० | १५०० | २००० | ० | २०० | ० |
| सरासरी | १८६ | ० | १३२६४ | ० | १८४३९ | १२१४० | २१५५४ | १२४२४ | ५७१३ | ६७४३ | ३२६४ |
| विस्तार | ६६० | ० | ४५००० | ० | ३८००० | ३०००० | ३८५०० | २५९०० | २५००० | १४८०० | १४००० |
| एकूण | १२९८६ | ० | ९२८५०० | ० | १२९०७०० | ८४९८०० | १५०८८०० | ८६९७०० | ३९९९०० | ४७२००० | २२८५०० |
| दर हेक्टरी खर्च | ५०४२२.७६ | ० | ७१५००० | ० | ९९३९.१६ | ६५४३.९७ | ११६१८.६७ | ६६९७.२१ | ३०७९.४७ | ३६३४.६८ | १७५९.५८ |

२) दोडामार्ग (उत्पादक शेतकरी = २६)

| | | | | | | | | | | | |
|-----------------|----------|---|---------|---|----------|---------|----------|---------|---------|---------|---------|
| जास्तीतजास्त | २७३ | ० | १०००० | ० | ३०००० | १८००० | २२००० | १०००० | २५००० | १५००० | १३००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | १००० | १००० | १००० | १००० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ६२ | ० | २४५० | ० | ६२३१ | ४३५० | ७०१९ | ३१२५ | ३०५० | २५९२ | १३३५ |
| विस्तार | २६३ | ० | १०००० | ० | २९००० | १७००० | २१००० | ९००० | २५००० | १५००० | १३००० |
| एकूण | १६१८ | ० | ४९००० | ० | १६२००० | ११३१०० | १८२५०० | ७५००० | ६१००० | ६७४०० | ३४७०० |
| दर हेक्टरी खर्च | ४६०२५.९६ | ० | ३०२८.४३ | ० | १००१२.३६ | ६९९०.११ | ११२७९.३६ | ४६३५.३५ | ३७७०.०८ | ४१६५.६३ | २१४४.६२ |

३) कणकवली (उत्पादक शेतकरी = ४४)

| आंबा | जमीन (क्षेत्र =गुंठे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|-----------------|--------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|-----------|-----------------------------|---------|---------|-------------|
| जास्तितजास्त | ४८० | २००० | १४००० | १००० | २५००० | १५००० | ३८००० | १९३०० | २५००० | २०००० | ३००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | १००० | १००० | १००० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ६९ | ५३ | ४७५० | २६ | ६४०९ | ४१२७ | ८१०९ | ४८७९ | २६०० | ३१०७ | ९९१ |
| विस्तार | ४७० | २००० | १४००० | १००० | २४००० | १४००० | ३७००० | १९३०० | २५००० | २०००० | ३००० |
| एकूण | ३०२५ | २००० | १८०५०० | १००० | २८२००० | १८१६०० | ३५६८०० | २०४९०० | ९८८०० | १३६७०० | ४३६०० |
| दर हेक्टरी खर्च | ४९१८६.७८ | ६६.११ | ५९६६.९४ | ३३.०५ | ९३२२.३१ | ६००३.३० | ११७९५.०४ | ६७७३.५५ | ३२६६.११ | ४५१९.०० | १४४१.३२ |

४) कुडाळ (उत्पादक शेतकरी = ५१)

| | | | | | | | | | | | |
|-----------------|---------|---|---------|---|---------|---------|--------|---------|---------|--------|---------|
| जास्तीतजास्त | ४०० | ० | ४५००० | ० | २५००० | १५००० | ३५००० | ७५००० | २५००० | २०००० | १०००० |
| कमीत कमी | १५ | ० | ० | ० | १००० | १००० | १५०० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | १०४ | ० | ७३७५ | ० | ९७०६ | ५८२४ | १४१०८ | ६२७५ | २७६० | ४६२० | २११८ |
| विस्तार | ३८५ | ० | ४५००० | ० | २४००० | १४००० | ३३५०० | ७५००० | २५००० | २०००० | १०००० |
| एकूण | ५२८५ | ० | ३५४००० | ० | ४९५००० | २९७००० | ७१९५०० | ३२०००० | १३२५०० | २३५६०० | १०८००० |
| दर हेक्टरी खर्च | ५०३६१.४ | - | ६६९८.२० | ० | ९३६६.१३ | ५६१९.६७ | १३६१४ | ६०५४.८७ | २५०७.०९ | ४४५७.९ | २०४३.५१ |

५) मालवण (उत्पादक शेतकरी = ६३)

| आंबा | जमीन (क्षेत्र = गुंठे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|-----------------|---------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|-----------|-----------------------------|---------|---------|-------------|
| जास्तीतजास्त | ५०० | ० | ४५००० | ५००० | ४०००० | ३०००० | ५०००० | २९००० | २५००० | ९५००० | ५००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | १००० | ० | १५०० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ११३ | ० | ६३२० | ८२ | ११५८९ | ७४५२ | १६३४४ | ५८५२ | ३४१८ | ४५३० | १३२० |
| विस्तार | ४९० | ० | ४५००० | ५००० | ३९००० | ३०००० | ४८५०० | २९००० | २५००० | ९५००० | ५००० |
| एकूण | ७१४० | ० | ३८५५०० | ५००० | ७३०१०० | ४६९५०० | १०२९७०० | ३५७००० | २०८५०० | २८५४०० | ८४५०० |
| दर हेक्टरी खर्च | ४९७९२.७२ | ० | ७२९४.२२ | ९४.६० | १३८१४.५७ | ८८८३.६३ | १९४८३.४४ | ६७५४.९६ | ३९४५.१२ | ५४००.१८ | १५९८.८६ |

६) सावंतवाडी (उत्पादक लाभार्थी शेतकरी = ४५)

| | | | | | | | | | | | |
|-----------------|----------|---|---------|-------|----------|---------|----------|---------|---------|---------|---------|
| जास्तीतजास्त | २०० | ० | ४५००० | १००० | २५००० | १५००० | ३०००० | १०००० | २५००० | १०००० | ५००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | ७०० | ५०० | १५०० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ६९ | ० | ३९३० | ४७ | ८४३८ | ५९०० | १२२५६ | ३७२१ | १५१२ | ३४२२ | १३८९ |
| विस्तार | १९० | ० | ४५००० | १००० | २४३०० | १४५०० | २८५०० | १०००० | २५००० | १०००० | ५००० |
| एकूण | ३११८ | ० | १६९००० | २००० | ३७९७०० | २६५५०० | ५५१५०० | १६०००० | ६५००० | १५४००० | ६२५०० |
| दर हेक्टरी खर्च | ५८०२४.३७ | ० | ५४२०.१४ | ६४.१४ | १२१७७.६८ | ८५१५.०७ | १७६८७.६२ | ५१३१.४९ | २०८४.६७ | ४९३९.०६ | २००४.४९ |

७) वैभववाडी (उत्पादक शेतकरी = ५८)

| आंबा | जमीन (क्षेत्र =गुंठे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|-----------------|--------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|-----------|-----------------------------|---------|---------|-------------|
| जास्तीतजास्त | २०० | ० | ४५००० | ० | १५००० | १०००० | १८००० | १४००० | २५००० | १०००० | ३००० |
| कमीत कमी | २० | ० | ० | ० | ३००० | ० | ३००० | १००० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ६६ | ० | ३१९० | ० | ७५९५ | ३०६९ | ८५७२ | ४५७४ | ९६६ | २०८७ | १२११ |
| विस्तार | १८० | ० | ४५००० | ० | १२००० | १०००० | १५००० | १३००० | २५००० | १०००० | ३००० |
| एहू ण | ३८५० | ० | १८५००० | ० | ४४०५०० | १७८००० | ४९७२०० | २६५३०० | ५६००० | १२१०५० | ६९००० |
| दर हेक्टरी खर्च | ४७०६६.३३ | ० | ४८०५.१९ | ० | ११४४१.५६ | ४६२३.३७ | १२९१४.२९ | ६८९०.९० | १४५४.५४ | ३१४४.१५ | १७९२.२० |

८) वेंगुर्ला (उत्पादक शेतकरी = ७०)

| | | | | | | | | | | | |
|-----------------|----------|---|---------|---|----------|---------|--------|---------|---------|---------|---------|
| जास्तीतजास्त | ४०० | ० | ४५००० | ० | २५००० | १५००० | ३०००० | २३००० | २५००० | १०००० | ५००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | ५०० | २०० | १५०० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ७२ | ० | ४३७१ | ० | ७३०० | ५४०० | १०४०७ | ४६०७ | १९६० | २४५१ | ८२९ |
| विस्तार | ३९० | ० | ४५००० | ० | २४५०० | १४८०० | २८५०० | २३००० | २५००० | १०००० | ५००० |
| एहू ण | ५०७१ | ० | ३०६००० | ० | ५११००० | ३७८००० | ७२८५०० | ३२२५०० | १३७२०० | १७१६०० | ५८००० |
| दर हेक्टरी खर्च | ५१५२४.३५ | ० | ६०३४.३१ | ० | १००७६.९१ | ७४५४.१५ | १४३६६ | ६३५९.३६ | २७०५.५८ | ३३८३.९४ | ११४३.७५ |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप : एकूण ४२७ आंबा लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ४१९ आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांनी दिलेल्या माहितीवरून आंब्याच्या उत्पन्न खर्चाचे विश्लेषण केलेले आहे.

तक्ता क्र. ६.४१ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यातील एकूण ४१९ (१००%) आंबा या फळझाड लागवडीसाठी करण्यात आलेल्या विविध बाबीवरील चालू एकूण खर्चाच्या आकडेवारीवरून असे दिसून येते की, कमीत कमी २६ (१००%) आंबा, लागवड लाभार्थी शेतकरी दोडामार्ग या तालुक्यातील व जास्तीतजास्त ७० (१००%) आंबा लागवड लाभार्थी शेतकरी देवगड, वेंगुर्ला तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात सर्वात कमी आंबा लागवड क्षेत्र १६.१८ हेक्टर दोडामार्ग या तालुक्यात असून सर्वात जास्त आंबा लागवड क्षेत्र १२९.८६ हेक्टर देवगड या तालुक्यात असल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून दिसून आले. जिल्ह्यात कमीतकमी आंबा लागवड क्षेत्र १० गुंठे लागवडीपासून जास्तीत जास्त क्षेत्र ६ हेक्टर ७ गुंठे क्षेत्र देवगड तालुक्यात आहे. जिल्ह्यात आंबा लागवडीचा कमीत कमी चालू दर हेक्टरी एकूण खर्च रु. ४६,०२५ इतका दोडामार्ग तालुक्याचा आहे. जास्तीतजास्त दर हेक्टरी चालू खर्च रु. ५८०२४ इतका सावंतवाडी तालुक्याचा आहे.

जिल्ह्यात आंबा लागवडीचा दर हेक्टरी चालू एकूण खर्चामध्ये जास्तीतजास्त श्रमिक मजुरी, कुंपण खर्च, विविध प्रकारची खते आणि औषधे इत्यादी बाबींवर सर्वच तालुक्यात खर्च झाल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते. जिल्ह्यात कमीत कमी दर हेक्टरी चालू मजुरी खर्च रु. ११२७९ इतका दोडामार्ग तालुक्याचा असून जास्तीत जास्त रु. १९४८३.४४ इतका मालवण तालुक्याचा आहे. जिल्ह्यात आंबा बागेसाठी चांगली माती आणण्याचे दर हेक्टरी कमीतकमी चालू एकूण खर्च रु. ३०२८.४३ इतका दोडामार्ग तालुक्याचा असून, जास्तीतजास्त खर्च रु. ७२९४.२२ इतका मालवण तालुक्याचा आहे. फळबाग विकासासाठी जिल्ह्यात विविध रासायनिक आणि सेंद्रीय खतांचा कमीत कमी दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. ९३२२.३१ इतका कणकवली तालुक्याचा असून जास्तीत जास्त खर्च रु. १३८१४.५७ इतका मालवण तालुक्याचा असल्याचे आढळून येते.

जिल्ह्यात आंबा पिकावर औषध फवारणीचा कमीतकमी दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. ४६२३.३७ इतका वैभववाडी तालुक्याचा असून जास्तीतजास्त खर्च रु.

८८८३.६३ इतका मालवण तालुक्याचा आहे. जिल्ह्यात कमीतकमी दर हेक्टरी चालू एकूण कुंपण खर्च रु. ४६३५.३५ इतका दोडामार्ग तालुक्याचा असून जास्तीतजास्त रु. ६८९०.९० इतका देवगड तालुक्याचा आहे. फळबाग विकासासाठी विविध औजारे, साहित्य इत्यादीवर कमीतकमी दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. १४५४.५४ इतका वैभववाडी तालुक्याचा असून, जास्तीतजास्त रु. ३९४५.१२ इतका मालवण तालुक्याचा असल्याचे आढळून आले. आंबा फळबाग जलसिंचनासाठी कमीतकमी दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. १४५४.५४ इतका वैभववाडी तालुक्याचा असून, जास्तीतजास्त खर्च रु. ५४००.१८ इतका मालवण तालुक्याचा आहे. फळबाग पिकासाठी दरवर्षी इतर काही खर्च केला जातो. यामध्ये (अंतर मशागतीसाठी नाग्या, पाला पाचोळा भरणे इ.) कमीतकमी दर हेटरी चालू एकूण खर्च रु. ११४३.७५ इतका वेंगुर्ला तालुक्याचा असून, जास्तीतजास्त खर्च रु. २१४४.६२ इतका दोडामार्ग तालुक्याचा आहे. अशा प्रकारे आंबा फळबाग लागवडीवर दरवर्षी दर हेक्टरी जिल्ह्यातील विविध तालुक्यात विविध बाबीवर केल्या जाणाऱ्या एकूण सर्वांच्या आकडेवारीचे चित्र संशोधनातून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.४२

आंबा लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण दर हेक्टरी चालू खर्चाचे जिल्हा सांख्यिकीय विश्लेषण (२०१०)

(दर हेक्टरी खर्च रुपयामध्ये)

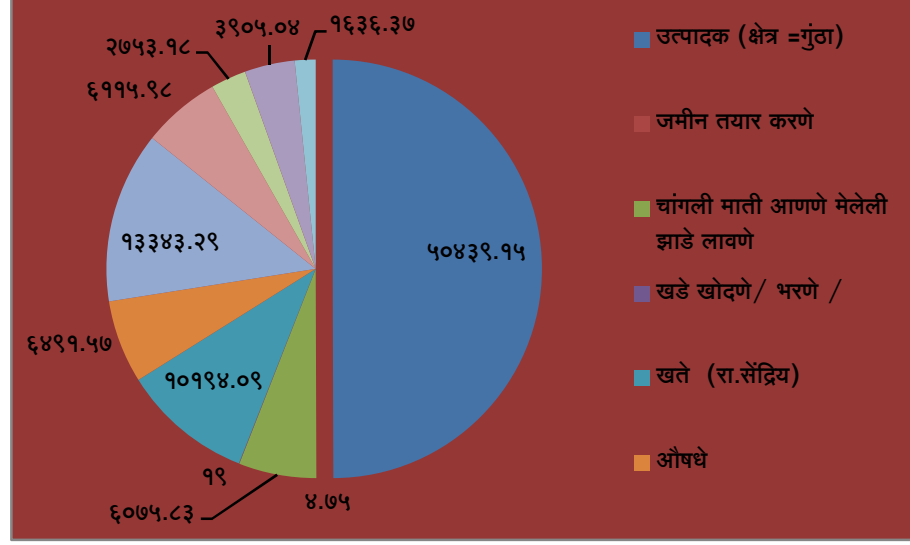
लाभार्थी = ४२७

| आंबा | जमीन (क्षेत्र = गुंठे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|-----------------|---------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|-----------|-----------------------------|---------|---------|-------------|
| जास्तीतजास्त | ६८० | २००० | ४५००० | ५००० | ४९००० | ३२००० | ५०००० | ७५००० | २५००० | २०००० | ९४००० |
| कमीत कमी | ९० | ० | ० | ० | ५०० | ० | ९००० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ९९ | ५ | ६२६८ | २० | ९००४९ | ६३९९ | ९३०५५ | ६९४४ | २८४० | ३८५० | ९६९३ |
| विस्तार | ६८० | २००० | ४५००० | ५००० | ४०५०० | ३२००० | ४९००० | ७५००० | २५००० | २०००० | ९४००० |
| एकूण | ४२०९३ | २००० | २५५७५०० | ८००० | ४२९९००० | २७३२५०० | ५५७४५०० | २५७४४०० | ९९५८९०० | ९६४३७५० | ६८८८०० |
| दर हेक्टरी खर्च | ५०४३९.९५ | ४.७५ | ६०७५.८३ | ९९.०० | ९०९९४.०९ | ६४९९.५७ | ९३३४३.२९ | ६९९५.९८ | २७५३.९८ | ३९०५.०४ | ९६३६.३७ |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

आलेख क्र. ६.१२

आंबा लागवडीचे एकूण खर्चाचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.४२ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यातील एकूण ४२७ (१००%) आंबा या फळझाड लागवडीसाठी करण्यात आलेल्या विविध बाबीवरील जिल्ह्याच्या चालू एकूण दर हेक्टरी खर्चाच्या आकडेवारीवरून असे आढळून येते की, सिंधुदूर्ग जिल्ह्यात कमीतकमी आंबा लागवड हे क्षेत्र १० गुंठे लागवडीपासून, जास्तीत जास्त आंबा लागवड क्षेत्र ६ हेक्टर ८० गुंठापर्यंत असून जिल्ह्याचे आंबा लागवडीचे सरासरी क्षेत्र ९९ गुंठे इतके आहे. यावरून संपूर्ण जिल्ह्यात आंबा लागवडीखालील एकूण क्षेत्र ४२० हेक्टर ९३ गुंठे इतके आहे. जिल्ह्याच्या आंबा लागवडीचा दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. ५०८३९.९५ इतका आहे. यामध्ये सर्वात जास्त श्रमिकांची मजुरीवरील दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. १३२४३.२९ इतका आहे. जमीन सपाट करणे, खड्डे खोदणे यावर केल्या जाणाऱ्या दर हेक्टर खर्चाचे प्रमाण फारच अल्प आहे. अशा प्रकारे सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील आंबा लागवडीच्या चालू एकूण खर्चाच्या आकडेवारीचे स्पष्ट चित्र संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.४३

काजू लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण दर हेक्टरी चालू खर्चाचे जिल्हा सांख्यिकीय विश्लेषण (२०१०)
(लाभार्थी = ४३१) (दर हेक्टरी खर्च रुपयामध्ये)

१) देवगड (उत्पादक शेतकरी = ३७)

| काजू | जमीन (क्षेत्र = गुंठे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|-----------------|---------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|--------------|-----------------------------|--------|---------|-------------|
| जास्तीतजास्त | ५८० | ६००० | ७००० | ० | २५००० | १०००० | ३०००० | ३५००० | १०००० | ५००० | ४००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | ० | ० | २००० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ६८ | १६२ | १८९ | ० | ३५०८ | १५७० | ५७६२ | ४३९१ | ६३० | ७६२ | ११२५ |
| विस्तार | ५७० | ६००० | ७००० | ० | २५००० | १०००० | २८००० | ३५००० | १०००० | ५००० | ४००० |
| एकूण | २५१९ | ६००० | ७००० | ० | १२९८०० | ५८१०० | २१३२०० | १५३७०० | १७००० | २५९०० | ४०५०० |
| दर हेक्टरी खर्च | २५८५१.५३ | २३८.१८ | २७७.८८ | ० | ५१५२.८३ | २३०६.४७ | ८४६३.६७ | ६१०१.६२ | ६७४.८७ | १०२८.१८ | १६०७.७८ |

२) दोडामार्ग (उत्पादक शेतकरी = ५४)

| | | | | | | | | | | | |
|-----------------|----------|--------|--------|---|---------|---------|----------|---------|---------|---------|---------|
| जास्तीतजास्त | २०० | २००० | ३००० | ० | १३७०० | ५००० | २०००० | १४९०० | ३००० | ३००० | ३००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | १००० | ० | १००० | ५०० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ६४ | ८९ | ३९३ | ० | ४८२२ | १७८० | ६९५२ | ५४६१ | ७८५ | ७५८ | ८९८ |
| विस्तार | १९० | २००० | ३००० | ० | १२७०० | ५००० | १९००० | १४४०० | ३००० | ३००० | ३००० |
| एकूण | ३४३३ | ४८०० | २१२०० | ० | २६०४०० | ९६१०० | ३७५४०० | २९४९०० | ३७७०० | ३६४०० | ४८५०० |
| दर हेक्टरी खर्च | ३४२३८.२८ | १३९.८१ | ६१७.५३ | ० | ७५८५.२० | २७९९.३० | १०९३५.०४ | ८५९०.१५ | १०९८.१६ | १०६०.२९ | १४१२.७५ |

३) कणकवली (उत्पादक शेतकरी = ६९)

| काजू | उत्पादक (क्षेत्र = गुंठा) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|-----------------|------------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|-----------|-----------------------------|---------|---------|-------------|
| जास्तीतजास्त | ४०० | ० | ४४०० | ० | १५००० | ५००० | १९८०० | १४५०० | ५००० | ५००० | ५००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | १००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ८३ | ० | ४५८ | ० | ४४३० | १८८४ | ७५३५ | ४७३५ | ११४० | ७११ | १७५४ |
| विस्तार | ३९० | ० | ४४०० | ० | १४००० | ५००० | १९८०० | १४५०० | ५००० | ५००० | ५००० |
| एकूण | ५७४२ | ० | ३१६०० | ० | ३०५७०० | १३०००० | ५१९९०० | ३२६७०० | ७१८०० | ४४१०० | १२१००० |
| दर हेक्टरी खर्च | २७००८.०१ | ० | ५५०.३३ | ० | ५३२३.९२ | २२६४.०२ | ९०५४.३३ | ५६८९.६५ | १२५०.०२ | ७६८.०२ | २१०७.२८ |

४) कुडाळ (उत्पादक शेतकरी = ५७)

| | | | | | | | | | | | |
|-----------------|----------|---|--------|---|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| जास्तीतजास्त | ४०० | ० | ६००० | ० | १५००० | ५००० | २५००० | १५६००० | ५००० | ७००० | १०००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | १००० | ० | ५०० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ७६ | ० | २२५ | ० | ४३०२ | १३४४ | ६८४६ | ३५८१ | ८७४ | ८८२ | १४३० |
| विस्तार | ३९० | ० | ६००० | ० | १४००० | ५००० | २४५०० | १५६०० | ५००० | ७००० | १०००० |
| एकूण | ४३२० | ० | १२८०० | ० | २४५२०० | ७६६०० | ३९०२०० | २०४१०० | ४९८०० | ५०३०० | ८१५०० |
| दर हेक्टरी खर्च | २५७०६.०२ | - | २९६.२९ | ० | ५६७५.९२ | १७७३.१४ | ९०३२.४० | ४७२४.५३ | ११५२.७७ | ११६४.३५ | १८८६.५७ |

५) मालवण (उत्पादक शेतकरी = ४४)

| काजू | जमीन (क्षेत्र =गुंठे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|-----------------|--------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|--------------|-----------------------------|--------|---------|-------------|
| जास्तितजास्त | ३०० | १५०० | ५००० | ० | २०००० | ७००० | १५००० | ८५०० | २००० | ५००० | ५००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | ० | ० | १००० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ७७ | १०२ | ४८४ | ० | ४४३९ | १७७७ | ५८४१ | २७५९ | ५४३ | १००९ | १३६४ |
| विस्तार | २९० | १५०० | ५००० | ० | २०००० | ७००० | १४००० | ८५०० | २००० | ५००० | ५००० |
| एकूण | ३४०० | ४५०८ | २१३०० | ० | १९५३०० | ७८२०० | २५७०० | १२१४०० | २३९०० | ४३४०० | ६००० |
| दर हेक्टरी खर्च | २३६७६.७१ | ० | ४९३.०५ | ० | ४५२०.८३ | १८१०.१८ | ५९४९.०७ | २८१०.१८ | ५५३.२४ | १००४.६३ | १३८८.८८ |

६) सावंतवाडी (उत्पादक शेतकरी = ४४)

| | | | | | | | | | | | |
|-----------------|----------|---|--------|-------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| जास्तितजास्त | २०० | ० | ३००० | ५०० | १५००० | १५००० | २०००० | १६८०० | ४००० | ५००० | ३००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | १००० | ० | १००० | ५०० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ६४ | ० | ४७७ | ४३ | ३५८० | २२२७ | ६३५९ | ४९५५ | ८२६ | ८२६ | १२१९ |
| विस्तार | १९० | ० | ३००० | ५०० | १४००० | १५००० | १९००० | १६३०० | ४००० | ५००० | ३००० |
| एकूण | २८३५ | ० | २११००० | १९०० | १५७५०० | ९८००० | २७९८०० | २१८००० | ३५५०० | ३५५०० | ५३५०० |
| दर हेक्टरी खर्च | ३१७७०.७२ | ० | ७४०.७४ | ६७.०१ | ५५५५.५५ | ३४५६.७९ | ९८६९.४८ | ७६८९.५९ | १२५२.२० | १२५२.२० | १८८७.१२ |

७) वैभववाडी (उत्पादक शेतकरी = ६५)

| काजू | जमीन (क्षेत्र = गुंठे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|-----------------|---------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|--------------|-----------------------------|--------|---------|-------------|
| जास्तीतजास्त | ४०० | ० | १५०० | ० | २००० | १०००० | १५००० | १०००० | ३००० | ५००० | ५००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | १००० | ० | २००० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ९१ | ० | २०० | ० | ४६२३ | १६०६ | ५६०० | ३९०२ | ३९९ | १३८६ | १६४५ |
| विस्तार | ३९० | ० | १५०० | ० | १९००० | १०००० | १३००० | १०००० | ३००० | ० | ५००० |
| एकूण | ५८८९ | ० | १३००० | ० | ३००५०० | १०४४०० | ३६४००० | २५३६०० | २५९५० | ९०१०० | १०६९०० |
| दर हेक्टरी खर्च | २१३६९.५ | ० | २२०.७५ | ० | ५१०२.७३ | १७७२.७९ | ६१८१.०१ | ४३०६.३३ | ४४०.६५ | १५२९.९७ | १८१५.२६ |

८) वेंगुर्ला (उत्पादक शेतकरी = ६१)

| | | | | | | | | | | | |
|-----------------|----------|---|---------|---|---------|---------|----------|---------|--------|---------|---------|
| जास्तीतजास्त | २०० | ० | ४००० | ० | १०००० | १५००० | २०००० | २३४०० | ४००० | ५००० | ५९०० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | ५०० | ० | २००० | २०० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ५६ | ० | ७४६ | ० | २६३९ | १५०० | ५९११ | ४५५७ | ४७० | ७७५ | ९०२ |
| विस्तार | १९० | ० | ४००० | ० | ९५०० | ५००० | १८००० | २३२०० | ४००० | ५००० | ५९०० |
| एकूण | ३४३० | ० | ४५५०० | ० | १६१००० | ९१५०० | ३६०६०० | २७८००० | २८२०० | ४७३०० | ५५००० |
| दर हेक्टरी खर्च | ३१११०.७९ | ० | १३२६.५३ | ० | ४६९३.५३ | २६६७.६३ | १०५१३.९५ | ८१०४.९५ | ८२२.१५ | १३७९.०० | १६०३.४९ |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

तक्ता क्र. ६.४३ मध्ये जिल्ह्यातील एकूण ४३१ (१००%) काजू या फळझाड लागवडीसाठी करण्यात आलेल्या विविध बाबीवरील चालू एकूण खर्चाच्या आकडेवारीवरून कमितकमी ३७ (१००%) काजू उत्पादक लाभार्थी देवगड तालुक्यातील तर ६९ (१००%) काजू उत्पादक लाभार्थी कणकवली या तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात सर्वात कमी काजू लागवड क्षेत्र २५ हेक्टर १९ गुंठे देवगड या तालुक्यात असून, जास्तीतजास्त काजू लागवड क्षेत्र ५८ हेक्टर ८९ गुंठे वैभववाडी तालुक्यात आहे. जिल्ह्यात सर्वच तालुक्यात काजू लागवड क्षेत्र १० गुंठे पासून क्षेत्र ५ हेक्टर ८० गुंठे देवगड तालुक्यात आहे. जिल्ह्यात दर हेक्टरी काजू लागवडीच्या कमीत कमी चालू एकूण खर्च रु. २१३६९.५ इतका वैभववाडी तालुक्यात असून, जास्तीतजास्त खर्च रु. ३४२३८.२८ इतका दोडामार्ग तालुक्यात आहे.

जिल्ह्यात काजू लागवडीचा दर हेक्टरी चालू एकूण खर्चामध्ये जमीन सपाट करणे, खड्डे खोदणे/ भरणे या बाबीवरील खर्चाचे प्रमाण अल्प असून विविध रासायनिक, सेंद्रिय खते, मजुर खर्च आणि कुंपण खर्च या बाबीवरील दर हेक्टरी खर्चाचे प्रमाण जिल्ह्यात सर्वत्र जास्तितजास्त असल्याचे दिसून आले. जिल्ह्यात काजू लागवडीच्या दर हेक्टरी चालू एकूण खर्चामध्ये मजुरावरील खर्च हा प्रमुख खर्च असून यामध्ये कमीतकमी खर्च रु. ५९४९.०७ मालवण तालुक्यात असून यामध्ये जास्तीतजास्त खर्च रु. १०९३५ इतका दोडामार्ग तालुक्याचा आहे. जिल्ह्यात एकूण विविध रासायनिक आणि सेंद्रिय खतावरील कमीतकमी दर हेक्टरी खर्च रु. ४५२०.८३ इतका मालवण तालुक्यातील जास्तित जास्त खर्च रु. ७५८५.२० इतका दोडामार्ग लाभार्थींचा आहे. जिल्ह्यात काजू बागेसाठी कुंपण खर्च कमीतकमी दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. २८१०.१८ इतका मालवण तालुक्यातील असून, जास्तितजास्त खर्च रु. ८५९०.१५ इतका दोडामार्ग तालुक्याचा आहे. जिल्ह्यात काजू बागेसाठी जलसिंचन सुविधावरील दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. ७६८ इतका कणकवली तालुक्यातील असून खर्च रु. १५२९ इतका वैभववाडी तालुक्यात आढळून येतो. औजारेवरील कमितकमी दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. ४४०.६५ वैभववाडी तालुक्यातील असून, जास्तितजास्त खर्च रु. १२५२.२० सावंतवाडी तालुक्यात दिसून आला आहे. इतर खर्चामध्ये अंतर मशागत कमितकमी दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. १३८८ इतका मालवण तालुक्यातील असून जास्तितजास्त खर्च रु. २१०७ कणकवली तालुक्यात झाल्याचे आढळून येते. अशाप्रकारे काजू फळबाग लागवडीवर दरवर्षी दर हेक्टरी विविध तालुक्यात विविध बाबींवर केल्या जाणाऱ्या खर्चाच्या आकडेवारीवरून चित्र संशोधनातून आढळून येते.

तक्ता क्र. ६.४४

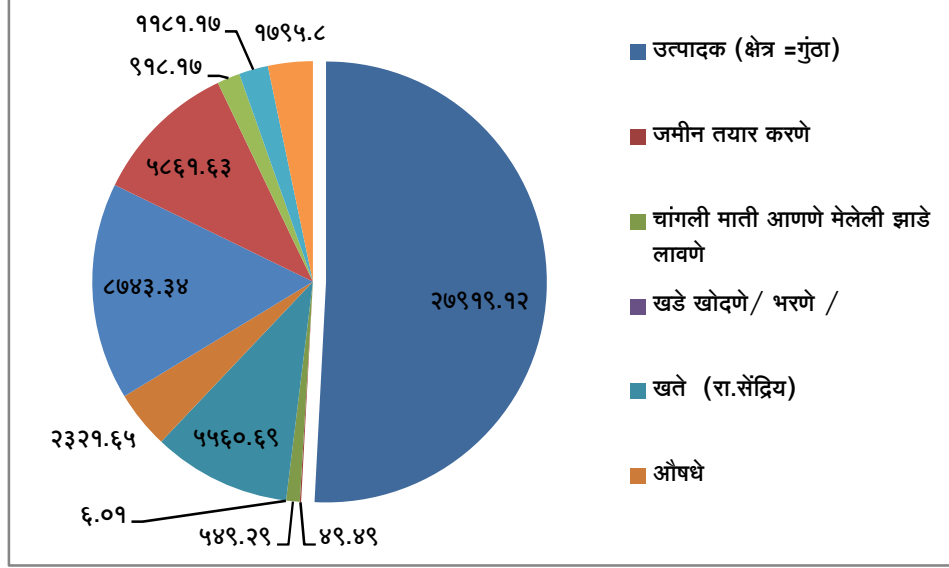
काजू लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण दर हेक्टरी चालू खर्चाचे जिल्हा सांख्यिकीय विश्लेषण (सन २०१०)
(लाभार्थी = ४३१)

| काजू | जमीन (क्षेत्र =गुंठे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|--------------------|--------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|--------------|-----------------------------|--------|---------|-------------|
| जास्तीतजास्त | ५८० | ६००० | ७००० | ५०० | २५००० | १५००० | ३०००० | ३५००० | १०००० | ७००० | १०००० |
| कमीत कमी | १० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | ७३ | ३६ | ४०२ | ४ | ४०७३ | १७०० | ६४०४ | ४३१३ | ७१२ | ९०३ | १३१८ |
| विस्तार | ५७० | ६००० | ७००० | ५०० | २५००० | १५००० | ३०००० | ३५००० | १०००० | ७००० | १०००० |
| एकूण | ३१५६८ | १५३०८ | १७३४०० | १९०० | १७५५४०० | ७३२९०० | २७६०१०० | १८५०४०० | २८९८५० | ३७३००० | २६६९०० |
| दर हेक्टरी खर्च | २७९१९.१२ | ४८.४९ | ५४९.२९ | ६.०१ | ५५६०.६९ | २३२१.६५ | ८७४३.३४ | ५८६१.६३ | ९१८.१७ | ११८१.१७ | १७९५.८० |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्यांच्या आधारे

आलेख क्र. ६.१३

काजू लागवडीचे एकूण खर्चाचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.४४ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यातील एकूण ४३१ (१००%) काजू या फळझाड लागवडीसाठी करण्यात आलेल्या विविध बाबींवरील चालू एकूण खर्चाच्या आकडेवारीवरून असे आढळून येते की, सिंधुदूर्ग जिल्ह्यात कमीतकमी काजू लागवड क्षेत्र १० गुंठे लागवडीपासून जास्तीतजास्त काजू लागवड क्षेत्र ५ हेक्टर ८० गुंठापर्यंत आहे. जिल्ह्याचे काजू लागवडीचे सरासरी क्षेत्र ७३ गुंठे इतके आहे. यावरून संपूर्ण जिल्ह्यात काजू लागवडीखालील एकूण क्षेत्र ३१५ हेक्टर ६८ गुंठे इतके असल्याचे संकलित आकडेवारीवरून दिसून आले. जिल्ह्याच्या काजू लागवडीचा दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. २०९९९.९२ इतका आहे. यामध्ये सर्वात जास्त श्रमिकांच्या दर हेक्टरी एकूण खर्च रु. ८०८३.३८ इतका आहे. जमीन सपाट करणे, खड्डे खोदणे यावर केल्या जाणाऱ्या दर हेक्टर खर्चाचे प्रमाण फारच अल्प आहे.

जिल्ह्यात काजू लागवडीमध्ये रासायनिक आणि सेंद्रीय खतावरती केला जाणारा चालू दर हेक्टरी खर्च रु. ५५६० इतका आहे. अशा प्रकारे सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील काजू लागवडीच्या दर हेक्टरी चालू एकूण उत्पादन खर्चाच्या आकडेवारीचे स्पष्ट स्थिती संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.४५

नारळ लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण दर हेक्टरी चालू खर्चाचे जिल्हा सांख्यिकीय विश्लेषण (२०१०)

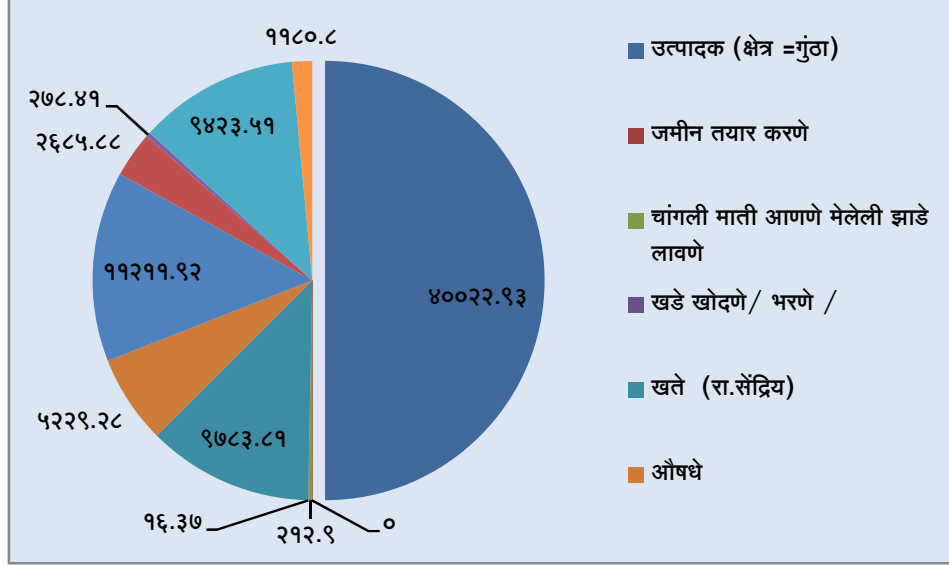
(लाभार्थी = २६१) (दर हेक्टरी खर्च रुपयामध्ये)

| नारळ | जमीन (क्षेत्र =गुंठे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंद्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|--------------------|--------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|-----------|-----------------------------|--------|---------|-------------|
| जास्तीतजास्त | २०० | ० | २००० | ५०० | १५००० | १०००० | २५००० | ५००० | २००० | १५००० | १०००० |
| कमीत कमी | ५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | २३ | ० | ५० | ४ | २२८९ | १२२३ | २६२३ | ६२८ | ६५ | २२१३ | २७६ |
| विस्तार | १९५ | ० | २००० | ५०० | १५००० | १०००० | २५००० | ५००० | २००० | १५००० | १०००० |
| एकूण | ६१०६ | ० | १३००० | १००० | ५९७४०० | ३१९३०० | ६८४६०० | १६४००० | १७००० | ५७५४०० | ७२१०० |
| दर हेक्टरी खर्च | ४००२२.९३ | ० | २१२.९० | १६.३७ | ९७८३.८१ | ५२२९.२८ | ११२११.९२ | २६८५.८८ | २७८.४१ | ९४२३.५१ | ११८०.८० |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

आलेख क्र. ६.१४

नारळ लागवडीचे एकूण खर्चाचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.४५ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यातील एकूण २६१ (१००%) नमुना लाभार्थींचा नारळ लागवडीपासून करण्यात आलेल्या विविध बाबीवरील जिल्ह्याच्या चालू एकूण दर हेक्टरी खर्चाच्या आकडेवारीवरून असे आढळून येते की, सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात कमीतकमी नारळ लागवड क्षेत्र ५ गुंठ्यापासून जास्तीत जास्त नारळ लागवड क्षेत्र २ हेक्टर पर्यंत आहे. जिल्ह्यामध्ये नारळ लागवडीचे सरासरी क्षेत्र २३ गुंठे इतके आहे. यावरून संपूर्ण जिल्ह्यात नारळ लागवडीखालील एकूण क्षेत्र ६१ हेक्टर ६ गुंठे इतके आहे. जिल्ह्याच्या नारळ लागवडीचा दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. ४००२२ इतका आहे. यामध्ये जिल्ह्यात जास्तीतजास्त खर्च दर हेक्टरी रु. ९९२९९/- इतका श्रमिकांच्या मजुरीवर केलेला आढळून येतो. याशिवाय दर हेक्टरी रासायनिक खते आणि जलसिंचन यावरील खर्च रु. ९८२३/- इतका असल्याचे आढळून आले. जमीन सपाटीकरण, चांगली माती आणणे, खड्डे खोदणे यावरील नारळ लागवडीचा दर हेक्टरी खर्च प्रमाण फारच अल्प आहे. याशिवाय औषधे, कुंपण खर्च, औजारे यावरती केलेल्या खर्चांमध्ये फरक असल्याचे दिसून आले. अशा प्रकारे सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात नारळ लागवडीचा दर हेक्टरी चालू एकूण उत्पादन खर्चाच्या आकडेवारीची स्थिती आहे.

तक्ता क्र. ६.४६

सुपारी लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण दर हेक्टरी चालू खर्चाचे जिल्हा सांख्यिकीय विश्लेषण

(लाभार्थी १२०) (दर हेक्टरी खर्च रुपयामध्ये)

| सुपारी | जमीन (क्षेत्र =गुंटे) | जमीन तयार करणे | चांगली माती आणणे मेलेली झाडे लावणे | खडे खोदणे/ भरणे / | खते (रा.सेंट्रिय) | औषधे | मजूर खर्च | कुपन (घालणे दुरुस्ती) | औजारे | जलसिंचन | इतर खर्च |
|--------------------|--------------------------|----------------------|--|-------------------------|----------------------|---------|--------------|-----------------------------|---------|---------|-------------|
| जास्तीत जास्त | १२० | ० | ० | ५०० | १२००० | ८००० | ९००० | ६००० | ४००० | ५००० | ५००० |
| कमीत कमी | ५ | ० | ० | ० | ५० | ३० | ० | ० | ० | ० | ० |
| सरासरी | १९ | ० | ० | ८ | ११४५ | ७७९ | १०५४ | ८३५ | २१६ | ६६१ | २७५ |
| विस्तार | ११५ | ० | ० | ५०० | ११९५० | ७९७० | ९००० | ६००० | ४००० | ५००० | ५००० |
| एकूण | २२२१ | | ० | १००० | १३५१५० | ९१८८० | १२४३८० | ९८५०० | २५५०० | ७७९८० | ३२५०० |
| दर हेक्टरी खर्च | २६४२४.५८ | ० | ० | ४५.०२ | ६०८५.०९ | ४१३६.८७ | ५६००.१८ | ४४३४.९३ | ११४८.१३ | ३५११.०३ | १४६३.३० |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

तक्ता क्र. ६.४६ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यातील एकूण १२० (१००%) सुपारी या फळझाड लागवडीपासून करण्यात आलेल्या विविध बाबीवरील जिल्ह्याच्या चालू एकूण दर हेक्टरी खर्चाच्या आकडेवारीवरून असे आढळून येते की, सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात कमीतकमी सुपारी लागवड क्षेत्र ५ गुठ्यापासून जास्तीतजास्त सुपारी लागवड क्षेत्र १ हे २० गुठे पर्यंत आहे. जिल्ह्यामध्ये सुपारी लागवडीचे सरासरी क्षेत्र १९ गुठे इतके आहे. यावरून संपूर्ण जिल्ह्यात सुपारी लागवडीखालील एकूण क्षेत्र २२ हेक्टर २१ गुठे इतके असल्याचे आकडेवारीवरून दिसून आले. जिल्ह्याच्या सुपारी लागवडीचा दर हेक्टरी चालू एकूण खर्च रु. २६४२४ इतका आहे. यामध्ये जास्तीत जास्त दिसून आले. रासायनिक खतांचा दर हेक्टरी खर्च रु. ६०८५ इतका आहे. सुपारी लागवडीच्या दर हेक्टरी खर्चामध्ये जमीन सपाटीकरण, चांगली माती झाडांना घालणे, खड्डे खोदणे यावर केल्या जाणाऱ्या खर्चाचे प्रमाण फारच अल्प आहे. जिल्ह्यात सुपारी लागवडीमध्ये रासायनिक खतांच्या बरोबर श्रमिक खर्च, औषधावरील खर्च, जलसिंचन खर्च इत्यादी वरती केल्या जाणाऱ्या दर हेक्टरी खर्चाचे अधिक असल्याचे दिसून आले. यावरून असे म्हणता येईल सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील सुपारी लागवडीच्या दर हेक्टरी एकूण उत्पादन खर्चाची स्थिती लक्षात येते.

तक्ता क्र. ६.४७

लाभार्थी शेतकऱ्यांनी फळझाड लागवडीसाठी घेतलेल्या कर्जाचे तालुका निहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | ५०००० रु. पेक्षा कमी | | | ५०००० ते १ लाख रुपये | | | १ लाख ते २ लाख रु. | | | २ लाख रुपयापेक्षा जास्त | | |
|-------------|-----------|----------------------|---------|-------|----------------------|---------|-------|--------------------|---------|-------|-------------------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | १६ | ५६ | ७२ | ११ | ६१ | ७२ | १० | ६२ | ७२ | २ | ७० | ७२ |
| | टक्केवारी | (२२.२२) | (७७.७८) | (१००) | (१५.२८) | (८४.७२) | (१००) | (१३.८८) | (८६.११) | (१००) | (२.७८) | (९७.२२) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | १६ | ४४ | ६० | ३ | ५७ | ६० | १ | ५९ | ६० | १ | ५९ | ६० |
| | टक्केवारी | (२७.१२) | (७२.८८) | (१००) | (३.३८) | (९६.६२) | (१००) | (१.७०) | (९८.३०) | (१००) | (१.७०) | (९८.३०) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | १९ | ५७ | ७६ | ५ | ७१ | ७६ | २ | ७४ | ७६ | ० | ७६ | ७६ |
| | टक्केवारी | (२५.०) | (७५.०) | (१००) | (६.५८) | (९३.४२) | (१००) | (२.६४) | (९७.३६) | (१००) | (०.००) | (१००.०) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १४ | ५७ | ७१ | ९ | ६२ | ७१ | २ | ६९ | ७१ | ० | ७१ | ७१ |
| | टक्केवारी | (१९.७२) | (८०.२८) | (१००) | (१२.६८) | (८७.३२) | (१००) | (२.८२) | (९७.१८) | (१००) | (०.०) | (१००) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | १८ | ५३ | ७१ | ९ | ६२ | ७१ | ४ | ६७ | ७१ | ० | ७१ | ७१ |
| | टक्केवारी | (१९.७२) | (७४.३४) | (१००) | (१२.६८) | (८७.३२) | (१००) | (५.६४) | (९४.३६) | (१००) | (०.०) | (१००) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ११ | ४८ | ५९ | १४ | ४५ | ५९ | २ | ५७ | ५९ | २ | ५७ | ५९ |
| | टक्केवारी | (१८.६४) | (८१.३६) | (१००) | (२३.७२) | (७६.२८) | (१००) | (३.३८) | (९६.६२) | (१००) | (३.३८) | (९६.६२) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २५ | ५२ | ७७ | ५ | ७२ | ७७ | १ | ७६ | ७७ | ० | ७७ | ७७ |
| | टक्केवारी | (३२.०६) | (६७.९४) | (१००) | (७.७०) | (९२.३०) | (१००) | (१.२८) | (९८.७२) | (१००) | (०.०) | (१००) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | २२ | ६४ | ८६ | ४ | ८२ | ८६ | ० | ८६ | ८६ | २ | ८४ | ८६ |
| | टक्केवारी | (२२.५८) | (७४.४२) | (१००) | (४.६६) | (९४.३४) | (१००) | (०.०) | (१००) | (१००) | (२.३२) | (९७.६४) | (१००) |
| जिल्हा एकूण | लाभार्थी | १४१ | ४३१ | ५७२ | ६० | ५१२ | ५७२ | २२ | ५५० | ५७२ | ७ | ५६५ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (२४.६६) | (७५.३४) | (१००) | (१०.४९) | (८९.५१) | (१००) | (३.८५) | (२६.१५) | (१००) | (१.२२) | (९८.७८) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

तक्ता क्र. ६.४७ मध्ये सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांनी फळझाड लागवडीसाठी घेतलेल्या कर्जाचे तालुका निहाय सांख्यिकीय अध्ययनातून असे आढळून येते की, एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीतजास्त ५० हजार रुपयापेक्षा कमी कर्ज घेतलेल्या लाभार्थी शेतकऱ्यांची संख्या जिल्ह्यात जास्तीतजास्त १४१ (२४.६५%) आहे. यामध्ये सर्वात जास्त २५ (३२.०५%) नमुना लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील असून, कमीतकमी ११ (१८.६४%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात २ लाख रुपयापेक्षा जास्त कर्ज घेणाऱ्या लाभार्थी शेतकरी ७ (१.२२%) इतके प्रमाण आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त २ (३.३४%) नमुना लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील असून, कमीतकमी १ (१.६९%) नमुना लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. यामध्ये कणकवली, कुडाळ, मालवण आणि वैभववाडी तालुक्यातील एकाही लाभार्थी शेतकऱ्यांचा समावेश नाही असे संशोधनातून आढळून आले आहे.

तक्ता क्र. ६.४८

लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या कर्ज घेणाऱ्या माध्यमांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय अध्ययन

| तालुका | | बँक | | | सहकारी सोसायटी | | | पतसंस्था | | | दलाल | | | इतर (मित्र, नातेवाईक) | | |
|-------------|-----------|---------|---------|-------|----------------|---------|-------|----------|---------|-------|---------|---------|-------|-----------------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | एकूण | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ३१ | ४१ | ७२ | ४ | ६८ | ७२ | २ | ७० | ७२ | ८ | ६४ | ७२ | ८ | ६४ | ७२ |
| | टक्केवारी | (४३.०५) | (५६.९४) | (१००) | (५.५५) | (९४.४४) | (१००) | (२.७७) | (९७.२२) | (१००) | (११.१२) | (८८.८८) | (१००) | (११.१२) | (८८.८८) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | १० | ५० | ६० | २ | ५८ | ६० | ० | ६० | ६० | ८ | ५२ | ६० | ८ | ५२ | ६० |
| | टक्केवारी | (१६.९४) | (८३.०५) | (१००) | (३.३८) | (९६.६१) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (१३.५५) | (८६.४४) | (१००) | (१३.५५) | (८६.४४) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | १४ | ६२ | ७६ | ६ | ७० | ७६ | ४ | ७२ | ७६ | १ | ७५ | ७६ | १ | ७५ | ७६ |
| | टक्केवारी | (१८.४२) | (८१.५७) | (१००) | (७.८९) | (९२.१०) | (१००) | (६.५७) | (९४.७३) | (१००) | (१.३१) | (९८.६८) | (१००) | (१.३१) | (९८.३८) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १५ | ५६ | ७१ | ६ | ६५ | ७१ | १ | ७० | ७१ | ९ | ६२ | ७१ | ९ | ६२ | ७१ |
| | टक्केवारी | (२१.१२) | (७८.८७) | (१००) | (८.४५) | (९१.५४) | (१००) | (१.४०) | (९८.३०) | (१००) | (१२.६७) | (६७.३२) | (१००) | (१२.६७) | (८७.३२) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | २० | ५१ | ७१ | २ | ६९ | ७१ | २ | ६९ | ७१ | १० | ६१ | ७१ | १० | ६१ | ७१ |
| | टक्केवारी | (२८.१६) | (७१.८३) | (१००) | (२.८१) | (९७.१८) | (१००) | (२.८१) | (९७.१८) | (१००) | (१४.०८) | (८५.९१) | (१००) | (१४.०८) | (८५.९१) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २६ | ३३ | ५९ | ५ | ५४ | ५९ | ० | ५९ | ५९ | १० | ४९ | ५९ | १० | ४९ | ५९ |
| | टक्केवारी | (४४.०६) | (५५.९३) | (१००) | (८.४७) | (९१.५२) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (१६.९४) | (८३.०५) | (१००) | (१६.९४) | (८३.०५) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २४ | ५३ | ७७ | ३ | ७४ | ७७ | ७ | ७० | ७७ | ० | ७७ | ७७ | ० | ७७ | ७७ |
| | टक्केवारी | (३०.७६) | (६९.२३) | (१००) | (३.८४) | (९६.१५) | (१००) | (८.९७) | (९१.१२) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | २० | ६६ | ८६ | ५ | ८१ | ८६ | ४ | ८२ | ८६ | २ | ८४ | ८६ | २ | ८४ | ८६ |
| | टक्केवारी | (२७.९०) | (७६.७४) | (१००) | (५.८१) | (९४.१८) | (१००) | (४.६५) | (९५.३४) | (१००) | (२.३२) | (९७.६७) | (१००) | (२.३२) | (९७.६७) | (१००) |
| जिल्हा एकूण | लाभार्थी | १६० | ४१२ | ५७२ | ३० | ५४२ | ५७२ | २० | ५५२ | ५७२ | ४८ | ५२४ | ५७२ | ४८ | ५२४ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (२७.९७) | (७२.०२) | (१००) | (५.२४) | (९४.७६) | (१००) | (३.५०) | (९६.५०) | (१००) | (८.३९) | (९१.६०) | (१००) | (८.३९) | (९१.६०) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

तक्ता क्र. ६.४८ मध्ये सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांनी फळझाड लागवडीसाठी कर्ज घेतलेल्या माध्यमांचे तालुका निहाय सांख्यिकीय अध्ययनातून असे आढळून येते की, एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीत जास्त १६० (२७.९७%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी बँकेच्या माध्यमातून कर्ज घेतलेले दिसून येते. यामध्ये जास्तीत जास्त २६ (४४.०६%) नमुना लाभार्थी शेतकरी सावंतवाडी तालुक्यातील असून, कमीतकमी १० (१६.९४%) नमुना लाभार्थी शेतकरी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. सर्वात कमी कर्ज पुरवठा २० (३.४९%) पत संस्थेच्या माध्यमातून झालेला आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त ७ (८.९७%) नमुना लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील असून कमीत कमी शुन्य (०.०%) नमुना लाभार्थी सावंतवाडी दोडामार्ग तालुक्यातील आहे. कर्ज पुरवठा करणाऱ्या माध्यमांमध्ये इतर माध्यम (मित्र नातेवाईक) यांच्याकडून ८.३९%, दलालाकडून ८.३९%, सहकारी संस्थाकडून ५.२४% कर्ज पुरवठा नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना करण्यात आल्याचे संशोधकाला वरील कोष्टकातून आढळून आले आहे.

तक्ता क्र. ६.४९

फळझाड बागेमध्ये घेण्यात येणाऱ्या अंतर्गत पिकांचे सांख्यिकीय विश्लेषण

| तालुका | | मिरी | | | जायफळ | | | लवंग | | | अननस | | | भुईमूग | | | भाजीपाला | | |
|------------------------------|-----------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|----------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | २४ | ४८ | ७२ | ११ | ६१ | ७२ | ६ | ६१ | ६७ | २२ | ४९ | ७१ | १२ | ६० | ७२ | ८ | ६४ | ७२ |
| | टक्केवारी | (३३.३४) | (६६.६६) | (१००) | (१५.२८) | (८४.७२) | (१००) | (८.९६) | (९१.०४) | (१००) | (३०.९८) | (६९.०२) | (१००) | (१६.६६) | (८३.३४) | (१००) | (११.१२) | (८८.८८) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ११ | ४९ | ६० | ११ | ४९ | ६० | ११ | ४९ | ६० | १२ | ४८ | ६० | ६ | ५४ | ६० | ३७ | २३ | ६० |
| | टक्केवारी | (१८.३४) | (८१.६६) | (१००) | (१८.३४) | (८१.६६) | (१००) | (१८.३४) | (८१.६६) | (१००) | (१५.८०) | (८४.२०) | (१००) | (७.९०) | (९२.१०) | (१००) | (६१.६६) | (३२.३४) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | १३ | ६३ | ७६ | ५ | ७१ | ७६ | ११ | ६५ | ७६ | ६ | ७० | ७६ | ६ | ७० | ७६ | ११ | ६५ | ७६ |
| | टक्केवारी | (१७.१०) | (८२.९०) | (१००) | (६.५८) | (९३.४२) | (१००) | (१४.४८) | (८५.५२) | (१००) | (७.९०) | (९२.१०) | (१००) | (७.९०) | (९२.१०) | (१००) | (१४.४८) | (८५.५२) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | २३ | ४८ | ७१ | ८ | ६३ | ७१ | ४ | ६७ | ७१ | ० | ७१ | ७१ | ३ | ६९ | ८१ | १३ | ५८ | ७१ |
| | टक्केवारी | (३२.४०) | (६७.६०) | (१००) | (११.२६) | (८८.७४) | (१००) | (५.६४) | (९४.३६) | (१००) | (०.००) | (१००.०) | (१००) | (४.२२) | (९५.७८) | (१००) | (१८.३०) | (८१.७०) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ३३ | ३८ | ७१ | ३३ | ३८ | ७१ | ३० | ४१ | ७१ | १ | ७० | ७१ | ४ | ६७ | ७१ | १ | ७० | ७१ |
| | टक्केवारी | (४६.४८) | (५४.५२) | (१००) | (४६.४८) | (५४.५२) | (१००) | (४२.२६) | (५७.७४) | (१००) | (१.४०) | (९८.६०) | (१००) | (५.६३) | (६४.३६) | (१००) | (५.४०) | (९८.६०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २३ | ३६ | ५९ | २१ | ३८ | ५९ | २१ | ३८ | ५९ | २ | ५६ | ५८ | ३ | ५६ | ५९ | २ | ५७ | ५९ |
| | टक्केवारी | (३८.९८) | (६१.०२) | (१००) | (३५.६०) | (६०.४०) | (१००) | (३५.६०) | (६०.४०) | (१००) | (३.४४) | (९६.५६) | (१००) | (५.०८) | (९४.१२) | (१००) | (३.३८) | (९६.६२) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २६ | ३२ | ५८ | २६ | ५१ | ७७ | २६ | ५१ | ७७ | २० | ५७ | ७७ | १० | ६७ | ७७ | ११ | ६६ | ७७ |
| | टक्केवारी | (४४.८२) | (५५.१८) | (१००) | (३३.७६) | (६६.२४) | (१००) | (३३.७६) | (६६.२४) | (१००) | (२५.९८) | (७४.०२) | (१००) | (१२.९८) | (८७.०२) | (१००) | (१४.२८) | (८५.७२) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | २० | ६६ | ८६ | १९ | ६७ | ८६ | १७ | ६९ | ८६ | ३ | ८२ | ८५ | ७ | ७८ | ८५ | १२ | ७४ | ८६ |
| | टक्केवारी | (२३.२६) | (७६.७४) | (१००) | (२२.१०) | (७७.९०) | (१००) | (१९.७६) | (८०.२४) | (१००) | (३.५२) | (९८.४८) | (१००) | (८.२४) | (९१.७६) | (१००) | (१३.९६) | (८६.०४) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | १७३ | ३८० | ५५३ | १३४ | ४३८ | ५७२ | १२६ | ४४१ | ५६७ | ६७ | ५०३ | ५७० | ५१ | ५२० | ५७१ | १०५ | ४६८ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (३१.२८) | (६५.७२) | (१००) | (२३.४२) | (७६.५७) | (१००) | (२२.२२) | (७७.७८) | (१००) | (११.७६) | (८८.२४) | (१००) | (८.९४) | (९१.०६) | (१००) | (१८.३६) | (८१.६४) | (१००) |

तक्ता क्र. ४९ (१)

| तालुका | | चवळी | | | मूग | | | मिरची | | | कलिंगड | | | टोमॅटो | | |
|------------------------------|-----------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ८ | ६४ | ७२ | ८ | ६४ | ७२ | ० | ७२ | ७२ | ० | ७२ | ७२ | ० | ७० | ७० |
| | टक्केवारी | (११.१२) | (८८.८८) | (१००) | (११.१२) | (८८.८८) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ६ | ४५ | ५१ | ६ | ५४ | ६० | ६ | ५४ | ६० | ११ | ४९ | ६० | २९ | ३९ | ६० |
| | टक्केवारी | (११.७६) | (८८.२४) | (१००) | (१०.००) | (९०.००) | (१००) | (१०.००) | (९०.००) | (१००) | (१८.३४) | (८१.६६) | (१००) | (३५.००) | (६५.००) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | १२ | ६४ | ७६ | ११ | ६५ | ७६ | ० | ७६ | ७६ | ० | ७६ | ७६ | ० | ७६ | ७६ |
| | टक्केवारी | (१५.७८) | (८२.२२) | (१००) | (१४.४८) | (८५.५२) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १० | ६१ | ७१ | १० | ६१ | ७१ | ० | ७१ | ७१ | ० | ७१ | ७१ | २ | ६९ | ७१ |
| | टक्केवारी | (१४.०८) | (८५.९२) | (१००) | (१४.०८) | (८५.५२) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००.०) | (१००) | (२.८२) | (९७.१८) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | १ | ७० | ७१ | १ | ७० | ७१ | १ | ७० | ७१ | १ | ७० | ७१ | १ | ७० | ७१ |
| | टक्केवारी | (१.४०) | (९८.६०) | (१००) | (१.४०) | (९८.६०) | (१००) | (१.४०) | (९८.६०) | (१००) | (१.४०) | (९८.६०) | (१००) | (१.४०) | (९८.६०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ६ | ५३ | ५९ | ६ | ५३ | ५९ | ० | ५९ | ५९ | ० | ५९ | ५९ | ० | ५९ | ५९ |
| | टक्केवारी | (१०.१६) | (८९.८४) | (१००) | (१०.१६) | (८९.८४) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | १० | ६७ | ७७ | ४ | ७३ | ७७ | ० | ७७ | ७७ | २ | ७५ | ७७ | १ | ७६ | ७७ |
| | टक्केवारी | (१२.९८) | (८७.०२) | (१००) | (५.२०) | (९४.८०) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (२.६०) | (९७.४०) | (१००) | (१.३०) | (९८.७०) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ११ | ७५ | ८६ | १० | ७६ | ८६ | ६ | ८० | ८६ | ४ | ८२ | ८६ | ५ | ८१ | ८६ |
| | टक्केवारी | (१२.८०) | (८७.२०) | (१००) | (११.६२) | (८८.३८) | (१००) | (६.९८) | (९३.१२) | (१००) | (४.६६) | (९५.३४) | (१००) | (५.८२) | (९४.१८) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | ६४ | ४९९ | ५६३ | ५६ | ५१६ | ५७२ | १३ | ५५९ | ५७२ | १८ | ५५४ | ५७२ | ३० | ५७० | ५७० |
| | टक्केवारी | (११.३६) | (८८.६४) | (१००) | (९.८०) | (९०.२०) | (१००) | (२.२८) | (९७.७२) | (१००) | (३.१४) | (९६.८४) | (१००) | (५.२६) | (९४.७४) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

टिप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

तक्ता क्र. ६.४९ मध्ये जिल्ह्यातील रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड बागेमध्ये अंतर मशागत करून, घेण्यात येणाऱ्या विविध पिकांच्या तालुकानिहाय सांख्यिकीय विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, एकूण ५५३ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १७३ (३१.२८%) लाभार्थी शेतकरी अंतर मशागत करून मिरीच्या मसाला पिकांचे उत्पादन घेत आहेत. त्यामध्ये जिल्ह्यात सर्वात जास्त मालवण तालुक्यातील ३३ (४६.४७%) लाभार्थी शेतकरी मिरी या पिकाचे उत्पादन घेतात. तर कमीतकमी ११ (१८.३३%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात एकूण ५७२ (१००%) लाभार्थी शेतकरी दोडामार्ग आणि वेंगुर्ला तालुक्यात असून कमीतकमी १ (१.४०%) लाभार्थी मालवण तालुक्यातील आहेत. इतर तालुक्यातील एकाही लाभार्थी शेतकऱ्याचा यामध्ये समावेश नाही. जिल्ह्यात एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जायफळ १३४ (२३.४२%), लवंग १२६ (२२.२२%), अननस ६७ (११.७६%), भुईमूग ५१ (८.९४%), भाजीपाला १०५ (१८.३६%), चवळी ६४ (११.३६%), कलिंगड १८ (३.१४%), टोमॅटो ३० (५.२६%) नमुना लाभार्थी शेतकरी फळबागेमध्ये अंतर मशागत करून जिल्ह्यातील प्रत्येक तालुक्यात कमी जास्त प्रमाणात पिके घेतात. यामध्ये मसाला पिकामध्ये मालवण तालुका आणि भाजीपाल्यामध्ये दोडामार्ग तालुक्यातील लाभार्थी शेतकरी सर्वात जास्त असल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते.

तक्ता क्र. ६.५०

रोजगार हमी योजना आणि लाभार्थींच्या राहणीमानातील भौतिक सुखसोईचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | रोजगार हमी योजना फायद्याची | | | राहणीमानातील भौतिक सुखसोई | | |
|-----------|-----------|----------------------------|---------|-------|---------------------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ५७ | १५ | ७२ | ५० | २२ | ७२ |
| | टक्केवारी | (७९.१६) | (२०.८४) | (१००) | (६९.४४) | (३०.५६) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ४५ | १५ | ६० | ३२ | २८ | ६० |
| | टक्केवारी | (७५.००) | (२५.००) | (१००) | (५३.३) | (४६.७) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ४९ | २७ | ७६ | ४२ | ३४ | ७६ |
| | टक्केवारी | (६४.४८) | (३५.५२) | (१००) | (५५.२६) | (४४.७४) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ५५ | १६ | ७१ | ४८ | २३ | ७१ |
| | टक्केवारी | (७७.४६) | (२२.५४) | (१००) | (६७.६०) | (३२.४०) | (१००) |

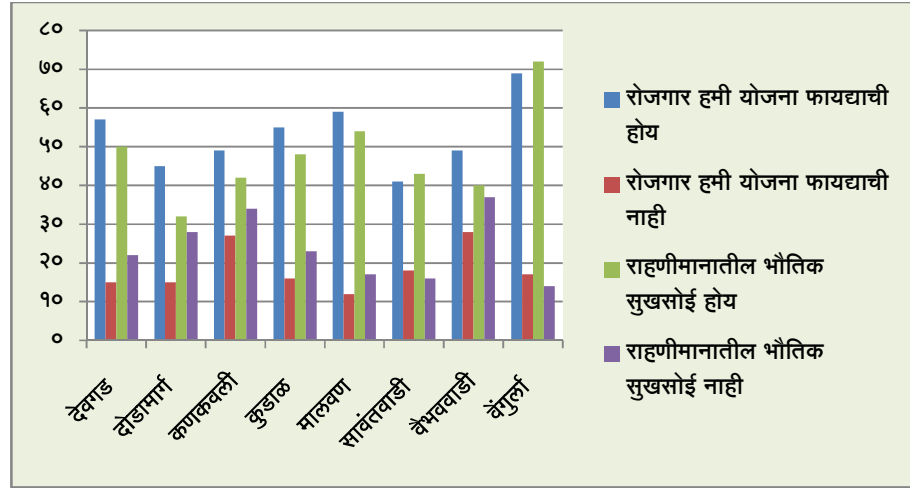
| | | | | | | | |
|-------------|-----------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|
| मालवण | लाभार्थी | ५९ | १२ | ७१ | ५४ | १७ | ७१ |
| | टक्केवारी | (८३.०९) | (१६.०१) | (१००) | (७६.१०) | (२३.९०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ४१ | १८ | ५९ | ४३ | १६ | ५९ |
| | टक्केवारी | (६९.५०) | (३०.५०) | (१००) | (७२.९०) | (२७.१०) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ४९ | २८ | ७७ | ४० | ३७ | ७७ |
| | टक्केवारी | (६३.६४) | (३६.३६) | (१००) | (५१.९४) | (४८.०५) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ६९ | १७ | ८६ | ७२ | १४ | ८६ |
| | टक्केवारी | (८०.२४) | (१९.७६) | (१००) | (२३.७२) | (१६.२८) | (१००) |
| जिल्हा एकूण | लाभार्थी | ४२४ | १४८ | ५७२ | ३८१ | १९१ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (७४.१२) | (२५.८८) | (१००) | (६६.६०) | (३३.४०) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित तथ्याच्या आधारे

टिप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

आलेख क्र. ६.१५

रोजगार हमी योजना आणि भौतिक सुखसोईचे तालुकानिहाय वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.५० मध्ये रोजगार हमी योजना फायद्याची आणि फलोत्पादनामुळे लाभार्थीच्या राहणीमानातील भौतिक सुखसोईमध्ये वाढ. यामध्ये असे आढळून येते की, जिल्ह्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ४२४ (७४.१२%) लाभार्थींनी ही योजना फायद्याची आहे असे जिल्ह्यातील सर्वच तालुक्यातील लाभार्थींच्या संशोधन अध्ययनावरून आढळून येते. रोजगार हमी योजनेतर्गत फलोत्पादनामुळे लाभार्थींच्या राहणीमानातील भौतिक सुखसोईमध्ये वाढ झालेली आहे असे जिल्ह्यातील एकूण ३८१ (६६.६०%) लाभार्थींच्या आकडेवाडीतून आढळून आले. यामध्ये देवगड, कुडाळ, मालवण, वेंगुर्ला आणि सावंतवाडी या तालुक्यातील जास्तीत जास्त लाभार्थींचा समावेश आहे.

तक्ता क्र. ६.५१

उत्पादित फळांच्या विक्री पद्धतीचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | व्यापारी | | | दलाल | | | कंत्राटदार | | | सहकारी | | | स्वतः विक्री | | |
|-----------|-----------|----------|---------|-------|---------|---------|-------|------------|---------|-------|--------|---------|-------|--------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ३७ | ३५ | ७२ | ५२ | २० | ७२ | १४ | ५८ | ७२ | २ | ७० | ७२ | २ | ७० | ७२ |
| | टक्केवारी | (५१.३८) | (४८.६२) | (१००) | (७२.२२) | (२७.२८) | (१००) | (१९.४४) | (८०.५६) | (१००) | (२.८६) | (९७.१४) | (१००) | (२.८६) | (९७.१४) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | २४ | ३६ | ६० | ३५ | २५ | ६० | १६ | ४४ | ६० | ० | ६० | ६० | ० | ६० | ६० |
| | टक्केवारी | (४०.००) | (६०.००) | (१००) | (५८.३४) | (४४.६६) | (१००) | (२६.६६) | (७३.४४) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ४७ | ३० | ७६ | ३७ | ३९ | ७६ | १४ | ६२ | ७६ | ५ | ७१ | ७६ | ५ | ७१ | ७६ |
| | टक्केवारी | (६१.८४) | (३९.४८) | (१००) | (४८.६८) | (५१.३२) | (१००) | (१८.४२) | (८१.५८) | (१००) | (६.५८) | (९३.५२) | (१००) | (६.५८) | (९३.५२) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ४३ | २८ | ७१ | ४३ | २८ | ७१ | १४ | ५७ | ७१ | ५ | ६६ | ७१ | ५ | ६६ | ७१ |
| | टक्केवारी | (६०.५६) | (३९.४४) | (१००) | (६०.५६) | (३९.४४) | (१००) | (१९.७२) | (८०.२८) | (१००) | (७.०४) | (९२.९६) | (१००) | (७.०४) | (९२.९६) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ५२ | १९ | ७१ | ५५ | १६ | ७१ | २८ | ४३ | ७१ | ० | ७१ | ७१ | ० | ७१ | ७१ |
| | टक्केवारी | (७३.२४) | (२६.७६) | (१००) | (७७.४६) | (२२.५४) | (१००) | (३९.४४) | (६०.५६) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ३३ | २६ | ५९ | ३९ | २० | ५९ | १८ | ४१ | ५९ | ० | ५९ | ५९ | ० | ५९ | ५९ |
| | टक्केवारी | (५५.९४) | (४४.०६) | (१००) | (६६.१०) | (३३.९०) | (१००) | (३०.५०) | (६९.५०) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २० | ५७ | ७७ | ८ | ६९ | ७७ | ८ | ५० | ५८ | ० | ५८ | ५८ | ० | ५८ | ५८ |
| | टक्केवारी | (२५.९८) | (७४.०२) | (१००) | (१०.३८) | (८९.६२) | (१००) | (१३.८०) | (८६.२०) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ५३ | ३३ | ८६ | ५९ | २७ | ८६ | ८ | ७७ | ८५ | ० | ८६ | ८६ | ० | ८६ | ८६ |
| | टक्केवारी | (६१.६२) | (३८.३८) | (१००) | (६८.६०) | (३१.४०) | (१००) | (९.४२) | (९०.५८) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) |
| एकूण | लाभार्थी | ३०९ | २६३ | ५७२ | ३२८ | २४४ | ५७२ | १२० | ४३२ | ५५२ | १२ | ५४१ | ५५३ | १२ | ५४१ | ५५३ |
| | टक्केवारी | (५४.०२) | (४५.९८) | (१००) | (५७.३४) | (४२.६६) | (१००) | (२१.७४) | (७८.२६) | (१००) | (२.१६) | (९७.८४) | (१००) | (२.१६) | (९७.८४) | (१००) |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

तक्ता क्र. ६.५१ मध्ये जिल्ह्यातील रोजगार हमी योजनेंतर्गत फळझाड बागेमधून लाभार्थी शेतकऱ्यांनी उत्पादित केलेल्या फळांच्या विक्री पद्धतीचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय विश्लेषणावरून असे आढळून येते की, एकूण ५७२ (१००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तितजास्त ३२८ (४७.३४%) लाभार्थी शेतकरी उत्पादित फळे दलालामार्फत विक्री करतात. जिल्ह्यातील जास्तितजास्त वेंगुर्ला तालुक्यातील ५९ (६८.६०%) लाभार्थी शेतकरी आणि कमित कमी वैभववाडी तालुक्यातील ८ (१०.३८%) लाभार्थी शेतकरी दलालांना विक्री करतात. याचप्रमाणे ५७२ (१००%) लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३०९ (५४.०२%) लाभार्थी शेतकरी व्यापाऱ्यांमार्फत फळे उत्पादनाची विक्री करतात. यामध्ये जास्तित जास्त ५३ (६१.६२%) लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमित कमी २० (२५.९८%) लाभार्थी शेतकरी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत. उत्पादित माल स्वतः बाजारपेठेत विक्री करण्याचे प्रमाण खूपच कमी असून १२ (२.१६%) लाभार्थी शेतकरी जिल्ह्यात आहेत. त्यापैकी कुडाळ आणि कणकवली तालुक्यात ५ (७%) लाभार्थी आहेत. लाभार्थी शेतकऱ्यांनी उत्पादित केलेली फळे ही मुख्यत्वे करून दलाल आणि व्यापारी मार्फतच विक्री केली जातात असे संशोधनातील आकडेवारीवरून आढळून येते.

तक्ता क्र. ६.५२

स्थानिक बाजारपेठेत फळांच्या विक्रीच्या उद्भवणाऱ्या समस्यांचे सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | अधिक वाहतूक खर्च | | | कमी किंमत | | | दलालांचा हस्तक्षेप | | | मुलभूत सुविधांचा अभाव | | | प्रक्रिय उद्योगांचा अभाव | | |
|-----------|-----------|------------------|---------|-------|-----------|---------|-------|--------------------|---------|-------|-----------------------|---------|-------|--------------------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ३८ | ३४ | ७२ | ६० | १२ | ७२ | ३८ | ३४ | ७२ | ४६ | २६ | ७२ | ४ | ६७ | ७१ |
| | टक्केवारी | (५२.७८) | (४७.२२) | (१००) | (८३.३४) | (१६.६६) | (१००) | (५२.७८) | (४७.२२) | (१००) | (६३.८८) | (३६.१२) | (१००) | (५.६४) | (९४.३६) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ३७ | २३ | ६० | ४६ | १४ | ६० | ३६ | २४ | ६० | ५० | १० | ६० | ४९ | ११ | ६० |
| | टक्केवारी | (६१.६६) | (३८.३४) | (१००) | (७६.६६) | (३७.३४) | (१००) | (६०.००) | (४०.००) | (१००) | (८३.३४) | (१६.६६) | (१००) | (८१.६६) | (१८.३४) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ४३ | ३३ | ७६ | ५९ | १७ | ७६ | ४४ | ३२ | ७६ | ३९ | ३७ | ७६ | ३२ | ४४ | ७६ |
| | टक्केवारी | (५६.५८) | (४३.४२) | (१००) | (७७.६४) | (२२.३६) | (१००) | (५७.९०) | (४२.१०) | (१००) | (५१.३२) | (४८.६८) | (१००) | (४२.१०) | (५७.९०) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ४९ | २२ | ७१ | ५६ | १५ | ७१ | ३८ | ३३ | ७१ | ३७ | ३४ | ७१ | १३ | ५९ | ७१ |
| | टक्केवारी | (६९.००) | (३१.००) | (१००) | (७८.८८) | (२१.१२) | (१००) | (५३.५२) | (४६.५८) | (१००) | (५२.१२) | (४७.८८) | (१००) | (१८.३०) | (८१.७०) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ४७ | २४ | ७१ | ५१ | २० | ७१ | ४९ | २२ | ७१ | ४७ | २४ | ७१ | २६ | ४५ | ७१ |
| | टक्केवारी | (६६.२०) | (३३.८०) | (१००) | (७१.८४) | (२८.१६) | (१००) | (६९.०२) | (३०.९८) | (१००) | (६६.२०) | (३३.८०) | (१००) | (३६.६२) | (६३.३८) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ५२ | ७ | ५९ | ५८ | १ | ५९ | २० | ३९ | ५९ | ४३ | १६ | ५९ | १८ | ४१ | ५९ |
| | टक्केवारी | (८८.१४) | (११.८६) | (१००) | (९८.३०) | (१.७०) | (१००) | (३३.९०) | (६६.१०) | (१००) | (७२.८८) | (२२.१२) | (१००) | (३०.५०) | (६९.५०) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ३९ | १९ | ५८ | ४० | ३७ | ७७ | २५ | ५२ | ७७ | १३ | ४५ | ५८ | ३५ | ४० | ७५ |
| | टक्केवारी | (६७.३४) | (३२.७६) | (१००) | (५१.९४) | (४८.०६) | (१००) | (३२.४६) | (६७.५४) | (१००) | (२२.४२) | (७७.५८) | (१००) | (४६.६६) | (५३.३४) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ६४ | २२ | ८६ | ६३ | २३ | ८६ | ५७ | २९ | ८६ | ६३ | २३ | ८६ | १९ | ६७ | ८६ |
| | टक्केवारी | (७४.४२) | (२५.५८) | (१००) | (८१.८२) | (२६.७२) | (१००) | (६६.२८) | (३३.७२) | (१००) | (७६.२६) | (२६.७४) | (१००) | (२२.०९) | (७७.९०) | (१००) |
| एकूण | लाभार्थी | ३६९ | १८४ | ५५३ | ४३३ | १३९ | ५७२ | ३०७ | २६५ | ५७२ | ३३८ | २१५ | ५५३ | १९६ | ३७३ | ५६९ |
| | टक्केवारी | (६६.७२) | (३३.२८) | (१००) | (७५.७०) | (२४.३०) | (१००) | (५३.६८) | (४६.३२) | (१००) | (६१.१२) | (३८.८८) | (१००) | (३४.४४) | (६५.६६) | (१००) |

तक्ता क्र. ६.५२ (१)

| तालुका | | स्थानिक आठवडा बाजारपेठ | | | वाहतूक दळणवळण साधनांचा अभाव | | | जिल्हाकृषी उत्पन्न बाजारसमितीचा अभाव | | | मजूर टंचाई | | |
|-----------|-----------|------------------------|---------|-------|-----------------------------|---------|-------|--------------------------------------|---------|-------|------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ४६ | २६ | ७२ | ७ | ६५ | ७२ | ५ | ६७ | ७२ | ४७ | २५ | ७२ |
| | टक्केवारी | (६३.८८) | (३६.१२) | (१००) | (९.७२) | (९०.२८) | (१००) | (६.९९) | (९३.०६) | (१००) | (६५.२८) | (३४.७२) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ३९ | २१ | ६० | १८ | ४१ | ५९ | १९ | ४१ | ६० | २८ | ३२ | ६० |
| | टक्केवारी | (६५.००) | (३५.००) | (१००) | (३०.५०) | (६९.५०) | (१००) | (३१.६६) | (६८.३४) | (१००) | (४६.६६) | (५३.३४) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ४३ | ३३ | ७६ | ७ | ६९ | ७६ | १५ | ६१ | ७६ | ५४ | २२ | ७६ |
| | टक्केवारी | (५७.५८) | (४२.४२) | (१००) | (९.२२) | (९०.७८) | (१००) | (१९.७४) | (८०.२६) | (१००) | (७१.०६) | (२८.९४) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | १५ | ५६ | ७१ | १० | ६१ | ७१ | ० | ७१ | ७१ | ४५ | २६ | ७१ |
| | टक्केवारी | (२१.१२) | (७८.८८) | (१००) | (१४.०८) | (८५.९२) | (१००) | (०.००) | (१००) | (१००) | (६३.३८) | (३६.६२) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | २९ | ४२ | ७१ | १३ | ५८ | ७१ | १३ | ५८ | ७१ | ४९ | २२ | ७१ |
| | टक्केवारी | (४०.८४) | (५९.३२) | (१००) | (१८.३०) | (८१.७०) | (१००) | (१८.३०) | (८१.७०) | (१००) | (६९.०२) | (३०.९८) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २४ | ३५ | ५९ | १७ | ४२ | ५९ | १४ | ४५ | ५९ | ४७ | १२ | ५९ |
| | टक्केवारी | (४०.६८) | (५९.३२) | (१००) | (२८.८२) | (७१.१८) | (१००) | (२३.७२) | (७८.२८) | (१००) | (८९.६६) | (२०.३४) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ४० | ३६ | ७६ | ३० | ४६ | ७६ | १ | ७५ | ७६ | ७६ | ७० | ७६ |
| | टक्केवारी | (५२.६४) | (४७.३६) | (१००) | (३९.४८) | (६०.५२) | (१००) | (१.३२) | (९८.६८) | (१००) | (७.९०) | (९२.१०) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ५५ | ३१ | ८६ | १७ | ६९ | ८६ | १४ | ७२ | ८६ | ४७ | ३९ | ८६ |
| | टक्केवारी | (६३.९४) | (३६.०४) | (१००) | (१९.७६) | (८०.२४) | (१००) | (१६.२८) | (८३.७२) | (१००) | (५४.६५) | (४५.३४) | (१००) |
| एकूण | लाभार्थी | २९१ | २८० | ५७१ | ११९ | ४५२ | ५७१ | ८१ | ४९० | ५७१ | ३२३ | २४८ | ५७१ |
| | टक्केवारी | (५०.९६) | (४९.०४) | (१००) | (२०.८४) | (७९.१६) | (१००) | (१४.१८) | (८५.८२) | (१००) | (५६.५६) | (४३.४४) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टीप : कसांतील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात

तक्ता क्र. ६.५२ मध्ये जिल्ह्यात लाभार्थी शेतकऱ्यांना स्थानिक बाजारपेठेत फळाच्या विक्रीच्या उद्भवणाऱ्या समस्यांचे सांख्यिकीय वर्गीकरण केल्यावर पुढील निष्कर्ष निजालेत.

अधिक वाहतुक खर्च : लाभार्थी शेतकऱ्यांचा उत्पादित माल कमी आणि वाहतुक खर्च अधिक होतो. त्यामुळे उत्पादित मालाला योग्य किंमत मिळत नाही. जिल्ह्यातील एकूण ३६९ (६६.७२%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना अधिक वाहतुक खर्च हे कारण संशोधनातून आढळून आले. यामध्ये जास्तितजास्त ५२ (८८.९३%) नमुना लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील असून कमीतकमी ३८ (५२.७७%) लाभार्थी देवगड तालुक्यातील आहेत.

कमी किंमत : जिल्ह्यातील एकूण ४३३ (७५.६९%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना ही समस्या आढळून आली. यामध्ये जास्तितजास्त ५८ (९८.३०%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील असून कमीतकमी ४० (५१.९४%) नमुना लाभार्थी शेतकरी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत.

दलालांचा हस्तक्षेप : जिल्ह्यातील एकूण ३०७ (५३.६७%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना दलालांचा हस्तक्षेप विक्रीमध्ये आढळून आला. यामध्ये जास्तित जास्त ४९ (६९.०१%) लाभार्थी शेतकरी मालवण तालुक्यातील असून, कमीतकमी २५ (३२.४६%) लाभार्थी शेतकरी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत.

मुलभूत सुविधांचा अभाव : जिल्ह्यातील एकूण ३३८ (३१.९२%) लाभार्थी शेतकऱ्यांना मुलभूत सुविधांचा अभाव ही समस्या आढळून आली. उदा. शितगृह व्यवस्था, प्रक्रिया व्यवस्था यामध्ये जास्तितजास्त ५० (८३.३३%) लाभार्थी शेतकरी दोडामार्ग तालुक्यातील असून कमीतकमी १३ (२२.४१%) लाभार्थी शेतकरी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत.

वाहतुक आणि दळणवळण साधनांचा अभाव : जिल्ह्यात फळउत्पादन विक्री व्यवस्था कार्यक्षम होण्यासाठी आवश्यक अशा वाहतुक आणि दळणवळण साधनांचा अभाव दिसून येतो. हंगामात योग्य वेळेत माल बाजारपेठेत पोहचत नसल्यामुळे उत्पादित मालाला योग्य दर मिळत नाही. यामध्ये जास्तित जास्त ३० (३९.४७%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत. कमीत कमी ७ (९.७२%) लाभार्थी देवगड तालुक्यातील आहेत.

मजूर टंचाई : फळे हंगामात उत्पादित माल भरून बाजारपेठेत नेण्यासाठी आवश्यक असा मजूर वर्ग उपलब्ध होत नाही. एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी

शेतकऱ्यांपैकी ३२३ (५६.५६%) लाभार्थी शेतकऱ्यांना ही समस्या आढळून आली. यामध्ये जास्तितजास्त ४७ (७९.६६%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील कमीतकमी ६ (७.९०%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत. अशा प्रकारे या सर्व समस्यांमुळे लाभार्थी शेतकऱ्यांना अपेक्षित असा योग्य दर उत्पादित मालाला मिळत नाही हे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.५३

रोजगार हमी योजना संदर्भात प्रशासकीय अधिकारी आणि लाभार्थी यांच्यातील हित संबंध दर्शविणारे कोष्टक

| तालुका | | कृषी अधिकाऱ्यांची भेट | | | कृषी अधिकाऱ्यांची लाभार्थींकडून अपेक्षा | | |
|------------------------|-----------|-----------------------|---------|-------|---|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ४४ | २८ | ७२ | ११ | ६१ | ७२ |
| | टक्केवारी | (६१.१२) | (३८.८८) | (१००) | (१५.३०) | (८४.७०) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ४५ | १५ | ६० | ३३ | २७ | ६० |
| | टक्केवारी | (७५.०) | (२५.०) | (१००) | (५५.०) | (४५.०) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ५२ | २४ | ७६ | ३७ | ३९ | ७६ |
| | टक्केवारी | (६२.४२) | (३१.५८) | (१००) | (४८.६८) | (५१.३२) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ३१ | ४० | ७१ | ७ | ६४ | ७१ |
| | टक्केवारी | (४३.६६) | (५६.३४) | (१००) | (९.८६) | (९०.१४) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ६५ | ६ | ७१ | २३ | ४८ | ७१ |
| | टक्केवारी | (९१.५४) | (८.४६) | (१००) | (३२.४०) | (६७.६०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २० | ३९ | ५९ | २९ | ३० | ५९ |
| | टक्केवारी | (३३.९०) | (६६.१०) | (१००) | (४९.१६) | (५०.८४) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ५४ | २३ | ७७ | ४० | ३७ | ७७ |
| | टक्केवारी | (७०.१२) | (२९.८८) | (१००) | (५१.९४) | (४८.०६) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ८० | ६ | ८६ | १४ | ७२ | ८६ |
| | टक्केवारी | (९३.०२) | (६.९८) | (१००) | (१६.२८) | (८३.७२) | (१००) |
| सिंधुदूर्ग जिल्हा एकूण | लाभार्थी | ३९१ | १८१ | ५७२ | १९४ | ३७८ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (६८.३६) | (३१.६४) | (१००) | (३३.९२) | (६६.०८) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

टिप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

तक्ता क्र. ६.५३ मध्ये एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३९१ (६८.३६%) लाभार्थी शेतकऱ्यांना कृषी अधिकारी बागेस भेट देतात. यामध्ये जास्तितजास्त ८० (९३.०२%) लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीतकमी २० (३३.९०%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील आहेत. फळबाग लागवडीनंतर, कृषी

अधिकाऱ्यांची लाभार्थी शेतकऱ्यांकडून काही अपेक्षा आहे काय याबाबतीत एकूण लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १९४ (३३.९२%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांनी होय म्हंटले असून यामध्ये जास्तीतजास्त ४० (५१.५४%) नमुना लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील असून कमीतकमी ७ (९.८६%) लाभार्थी कुडाळ तालुक्यातील आहेत असे संशाधन अभ्यासातून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.५४

१००% अनुदान योजनेबद्दलच्या लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या अनुभवामध्ये सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | पडिक जमीन लागवडीखाली आली | | | स्वतःची बाग तयार झाली | | | कृषीतज्ञाचा अभाव | | | उत्पन्न मिळविण्याचे साधन / मार्ग | | |
|------------------------|-----------|--------------------------|---------|-------|-----------------------|---------|-------|------------------|---------|-------|----------------------------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ३० | ४२ | ७२ | २४ | ४८ | ७२ | ४ | ६८ | ७२ | ६९ | ३ | ७२ |
| | टक्केवारी | (४९.७०) | (५८.३०) | (९००) | (३३.३०) | (६६.७०) | (९००) | (५.६०) | (९४.४०) | (९००) | (९५.८०) | (४.२०) | (९००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | १३ | ४७ | ६० | ३९ | २१ | ६० | ३८ | २२ | ६० | २१ | ३९ | ६० |
| | टक्केवारी | (२९.७०) | (५९.३०) | (९००) | (६५.००) | (३५.००) | (९००) | (६३.३०) | (३६.७०) | (९००) | (३५.००) | (६५.००) | (९००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ३७ | ३९ | ७६ | ४३ | ३३ | ७६ | १३ | ६३ | ७६ | ५४ | २२ | ७६ |
| | टक्केवारी | (४८.७०) | (५९.३०) | (९००) | (५६.६०) | (४३.४०) | (९००) | (१७.९०) | (८२.९०) | (९००) | (७९.९०) | (२८.९०) | (९००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ६१ | १० | ७१ | ५९ | १२ | ७१ | ४० | ३१ | ७१ | ४१ | ३० | ७१ |
| | टक्केवारी | (८५.९०) | (१४.९०) | (९००) | (६३.९०) | (१६.९०) | (९००) | (५६.३०) | (४३.७०) | (९००) | (५७.७०) | (४२.३०) | (९००) |
| मालवण | लाभार्थी | १९ | ५२ | ७१ | ३१ | ४० | ७१ | २७ | ४४ | ७१ | ४६ | २५ | ७१ |
| | टक्केवारी | (२६.८०) | (७३.२०) | (९००) | (४३.७०) | (५६.३०) | (९००) | (३८.००) | (६२.००) | (९००) | (६४.८०) | (३५.२०) | (९००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २२ | ३७ | ५९ | २८ | ३१ | ५९ | २२ | ३७ | ५९ | ५४ | ५ | ५९ |
| | टक्केवारी | (३७.३०) | (६२.७०) | (९००) | (४७.५०) | (५२.५०) | (९००) | (३७.३०) | (६२.७०) | (९००) | (९९.५०) | (८.५०) | (९००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | १७ | ६० | ७७ | २५ | ५२ | ७७ | ९ | ६८ | ७७ | ३७ | ४० | ७७ |
| | टक्केवारी | (२२.९०) | (७७.९०) | (९००) | (३२.५०) | (६७.५०) | (९००) | (११.७०) | (८८.३०) | (९००) | (४८.९०) | (५९.९०) | (९००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ५२ | ३४ | ८६ | ४४ | ४२ | ८६ | ८ | ७८ | ८६ | ७५ | ११ | ८६ |
| | टक्केवारी | (६०.५०) | (३९.५०) | (९००) | (५९.२०) | (४८.८०) | (९००) | (९.३०) | (९०.७०) | (९००) | (८७.२०) | (९२.८०) | (९००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | २५१ | ३२१ | ५७२ | २९३ | २७९ | ५७२ | १६१ | ४११ | ५७२ | ३९७ | १७५ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (४३.९०) | (५६.९०) | (९००) | (५२.२०) | (४८.८०) | (९००) | (२८.९०) | (७९.९०) | (९००) | (६९.४०) | (३०.६०) | (९००) |

तक्ता क्र. ६.५४. (१)

१००% अनुदान योजनेबद्दलच्या लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या अनुभवामध्ये सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | बाजारपेठ उपलब्ध नाही | | | प्रशासकीय समस्या | | | रोजगार निर्मिती | | |
|------------------------|-----------|----------------------|---------|-------|------------------|---------|-------|-----------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | २२ | ५० | ७२ | १३ | ५९ | ७२ | २३ | ४९ | ७२ |
| | टक्केवारी | (३०.६०) | (६९.४०) | (१००) | (१८.१०) | (८१.९०) | (१००) | (३१.९४) | (६८.०६) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ३९ | २१ | ६० | ३८ | २२ | ६० | ३९ | २१ | ६० |
| | टक्केवारी | (६५.००) | (३५.००) | (१००) | (६३.३०) | (३६.७०) | (१००) | (६५.००) | (३५.००) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | १३ | ६३ | ७६ | १४ | ६२ | ७६ | २९ | ४७ | ७६ |
| | टक्केवारी | (१७.१०) | (८२.९०) | (१००) | (१८.४०) | (८१.६०) | (१००) | (३८.१६) | (६१.८४) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | २६ | ४५ | ७१ | २२ | ४९ | ७१ | ५६ | १५ | ७१ |
| | टक्केवारी | (३६.६०) | (६३.४०) | (१००) | (३१.००) | (६९.००) | (१००) | (७८.९०) | (२१.१०) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | १२ | ५९ | ७१ | १६ | ५५ | ७१ | ३३ | ३८ | ७१ |
| | टक्केवारी | (१६.००) | (८३.१०) | (१००) | (२२.५०) | (७७.५०) | (१००) | (४६.५०) | (५३.५०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २९ | ३० | ५९ | २२ | ३७ | ५९ | २२ | ३७ | ५९ |
| | टक्केवारी | (४९.२०) | (५०.८०) | (१००) | (३७.३०) | (६२.७०) | (१००) | (३७.३०) | (६२.७०) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ५ | ७२ | ७७ | १० | ६७ | ७७ | १९ | ५८ | ७७ |
| | टक्केवारी | (६.५०) | (९३.५०) | (१००) | (१२.९८) | (८७.०२) | (१००) | (२४.६८) | (७५.३२) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | २५ | ६१ | ८६ | १६ | ७० | ८६ | ३४ | ५२ | ८६ |
| | टक्केवारी | (२९.०६) | (७०.९४) | (१००) | (१८.६०) | (८१.४०) | (१००) | (३९.५०) | (६०.५०) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | १७१ | ४०१ | ५७२ | १५१ | ४२१ | ५७२ | २५५ | ३१७ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (२९.९०) | (७०.१०) | (१००) | (२६.४०) | (४३.६०) | (१००) | (४.५८) | (५५.४२) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

टिप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

तक्ता क्र. ६.५४ मध्ये जिल्ह्यातील एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३९७ (६९.४०%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांनी या योजनेला उत्पन्न मिळविण्याचे साधन म्हणून अनुभव घेतला. यामध्ये जास्तीतजास्त ७५ (८७.२०%) लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून, कमीतकमी २१ (३५.००%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यातील एकूण २५१ (४३.९०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी पडिक जमीन लागवडीखाली आणली असा अनुभव घेतला. यामध्ये जास्तीतजास्त ६१ (८५.९०%) लाभार्थी कुडाळ तालुक्यातील असून कमीतकमी १३ (२१.७०%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यातील एकूण २९३ (५२.२०%) लाभार्थ्यांनी योजनेमुळे स्वतःची बाग तयार झाल्याचा अनुभव घेतला. यामध्ये जास्तीतजास्त योजनेमुळे लाभार्थ्यांनी ५९ (८३.१०%) लाभार्थी कुडाळ तालुक्यातील असून कमीतकमी २४ (३३.३०%) लाभार्थी देवगड तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यातील एकूण १६१ (२८.१०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी प्रामाणिक कृषी तज्ञाच्या अभाव असल्याचा अनुभव घेतला. यामध्ये जास्तीतजास्त ४० (५६.६०%) लाभार्थी कुडाळ तालुक्यातील असून कमीतकमी ८ (९.३०%) वेंगुर्ला तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यातील एकूण १७१ (२९.१०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांना बाजारपेठेचा अभाव दिसून आला. यामध्ये जास्तीतजास्त ३९ (६५.००%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील असून कमीतकमी ५ (६.५०%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यातील एकूण १५१ (२६.४०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांना प्रशासकीय समस्यांना सामोरे जावे लागते. यामध्ये जास्तीतजास्त २२ (३७.३०%) लाभार्थी कुडाळ व सावंतवाडी तालुक्यातील असून कमीतकमी १० (१२.९८%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यातील एकूण २५५ (४४.५८%) लाभार्थ्यांस या योजनेमुळे रोजगार निर्मितीचा अनुभव आला. यामध्ये जास्तीतजास्त ५६ (७८.९०%) लाभार्थी कुडाळ तालुक्यातील असून कमीतकमी १९ (२४.६८%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यातील एकूण ३३७ (५८.९२%) लाभार्थी शेतकऱ्यांनी स्वतः फळझाड बागेकडे दुर्लक्ष केल्याचे मान्य केले आहे. यामध्ये जास्तीतजास्त ५७ (७४.००%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील असून कमीतकमी २८ (४६.७०%) लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत.

आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतक-यांच्या उत्पादन उत्पन्न खर्चाचे
तालुकानिहाय सांख्यिकीय विश्लेषण (२०११) (४ डझन = १ पेटी)

१. तालुका देवगड (उत्पादक लाभार्थी ५३)

| बाब | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | उत्पादन पेटी (४ डझन = १ पेटी) | दर रु (१ पेटी) | एकूण खर्च रु | एकूण उत्पन्न रु |
|--------------|----------------------|----------------------------------|-------------------|--------------|-----------------|
| एकूण | ८८७२ | ७८२८ | | ४६६६००० | ७८७२९०० |
| कमीतकमी | २० | १७ | ३०० | १७००० | १०००० |
| जास्तीतजास्त | ५०० | ३८० | १३०० | २१०००० | ४२०००० |
| विस्तार | ४८० | ३६३ | १००० | १९३००० | ४१०००० |
| सरासरी | १६७.३९ | १४७.६९ | ६७२.६४ | ८८०३७.७४ | १४८५४५.३ |
| प्रमाण विचलन | १३७.०१ | १००.२१ | २४९.१४ | ५०४८७.८ | १०२५३१.६ |
| दर हेक्टरी | -- | ८८.२३ | -- | ५२५९२.५३ | ८८७३८.७३ |

२. तालुका दोडामार्ग (उत्पादक लाभार्थी ११)

| बाब | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | उत्पादन पेटी (४ डझन = १ पेटी) | दर रु (१ पेटी) | एकूण खर्च रु | एकूण उत्पन्न रु |
|--------------|-------------------------|----------------------------------|-------------------|--------------|--------------------|
| एकूण | ६५५ | ८४१ | | ३०२२०० | ४७६६०० |
| कमीतकमी | २० | ६ | ३०० | ७००० | ३००० |
| जास्तीतजास्त | १०० | १९४ | १००० | ६५००० | ९७००० |
| विस्तार | ८० | १८८ | ७०० | ५८००० | ९४००० |
| सरासरी | १४.८८ | ७६.४५ | ५८२.७२ | ६८६८.१८ | १०८३१.८२ |
| प्रमाण विचलन | ३६.३६ | ७२.५५ | १९९.२० | २२२८३.१४ | ३६६२९.६१ |
| दर हेक्टरी | -- | १२८.३९ | | ४६१३७.४ | ७२७६३.३६ |

३. तालुका कणकवली (उत्पादक लाभार्थी ३४)

| बाब | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | उत्पादन पेटी (४ डझन = १ पेटी) | दर रू (१ पेटी) | एकूण खर्च रू | एकूण उत्पन्न रू |
|--------------|----------------------|-------------------------------|----------------|--------------|-----------------|
| एकूण | २५६५ | २५८५ | | १२५६४०१ | १४९०४०० |
| कमीतकमी | १० | ५ | ८० | ४००० | १२०० |
| जास्तीतजास्त | ४८० | ४७० | १००० | १६०५०० | २३५००० |
| विस्तार | ४७० | ४६५ | ९२० | १५६५०० | २३३८०० |
| सरासरी | ५८.२९ | ७६.०२ | ६०३.८२ | २८५५४.५७ | ३३८७२.७३ |
| प्रमाण विचलन | ९१.०४ | ९६.०३ | १८५.६५ | ४२३९३.१३ | ४९८७४.१९ |
| दर हेक्टरी | -- | १००.७७ | -- | ४८९८२.५ | ५८१०५.२६ |

४. तालुका कुडाळ (उत्पादक लाभार्थी ४६)

| बाब | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | उत्पादन पेटी (४ डझन = १ पेटी) | दर रू (१ पेटी) | एकूण खर्च रू | एकूण उत्पन्न रू |
|--------------|----------------------|-------------------------------|----------------|--------------|-----------------|
| एकूण | ४९५० | ५०६४ | | २५५७६०० | ३६४२००० |
| कमीतकमी | १५ | ७ | ३०० | ७००० | ३५०० |
| जास्तीतजास्त | ४०० | ४०० | २२०० | १६०५०० | २४५००० |
| विस्तार | ३८५ | ३९३ | १९०० | १५३५०० | २४१५०० |
| सरासरी | १०७.६० | ११०.०८ | ७४३.६९ | ५५६०० | ७९१७३.९१ |
| प्रमाण विचलन | ९४.२८ | ९९.११ | ३१३.८३ | ४७१३७ | ६९५९९.६२ |
| दर हेक्टरी | -- | १०२.३० | -- | ५१६६८.६९ | ७३५७५.७६ |

५. तालुका मालवण (उत्पादक लाभार्थी ५०)

| बाब | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | उत्पादन पेटी (४ डझन = १ पेटी) | दर रू (१ पेटी) | एकूण खर्च रू | एकूण उत्पन्न रू |
|--------------|----------------------|-------------------------------|----------------|--------------|-----------------|
| एकूण | ६२१५ | ७६२१ | | ३१०९२०० | ५०१७००० |
| कमीतकमी | १० | ५ | २०० | ९५०० | २६०० |
| जास्तीतजास्त | ५०० | ६७५ | ३००० | १६५००० | २७०००० |
| विस्तार | ४९० | ६७० | २८०० | १५५५०० | २६७४०० |
| सरासरी | १२४.३ | १५२.४२ | ९१५ | ६२१८४ | १००३४० |
| प्रमाण विचलन | ९७.२६ | १५९.२४ | ६९५.९९ | ४७०३७.५८ | ७२७३९.९१ |
| दर हेक्टरी | -- | १२२.६२ | | ५००२७.३५ | ८०७२४.०५ |

६. तालुका सावंतवाडी (उत्पादक लाभार्थी ३५)

| बाब | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | उत्पादन पेटी (४ डझन = १ पेटी) | दर रु (१ पेटी) | एकूण खर्च रु | एकूण उत्पन्न रु |
|--------------|----------------------|-------------------------------|----------------|--------------|-----------------|
| एकूण | २३४६ | २५८१ | | १३७९६०० | १७५१००० |
| कमीतकमी | १० | २ | ३०० | ३००० | ३५०० |
| जास्तीतजास्त | २०० | २५० | ३००० | १६०५०० | १८०००० |
| विस्तार | १९० | २४८ | २७०० | १५७५०० | १७६५०० |
| सरासरी | ५३.३१ | ७३.७४ | ८७४.२८ | ३१३५४.५५ | ३९७९५.४५ |
| प्रमाण विचलन | ५०.८८ | ६९.७९ | ५११.२५ | ३५०६७.०१ | ४५५८५.३७ |
| दर हेक्टरी | -- | ११०.०१ | -- | ५८८०६.४६ | ७४६३७.६८ |

७. तालुका वैभववाडी (उत्पादक लाभार्थी ४७)

| बाब | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | उत्पादन पेटी (४ डझन = १ पेटी) | दर रु (१ पेटी) | एकूण खर्च रु | एकूण उत्पन्न रु |
|--------------|----------------------|-------------------------------|----------------|--------------|-----------------|
| एकूण | ३००० | १३४९ | - | १४९१६०० | ४२५५०० |
| कमीतकमी | २० | २ | २५० | ३००० | २००० |
| जास्तीतजास्त | १४० | १५० | १७०० | ७८००० | ७५००० |
| विस्तार | १२० | १४८ | १४५० | ७५००० | ७३००० |
| सरासरी | ६३.८२ | २८.७० | ७९७.८७ | ३१७३६.१७ | १९६९१.४९ |
| प्रमाण विचलन | २६.७६ | ३२.८४ | ३३७.९८ | १७२०२.७२ | १९६०४.६१ |
| दर हेक्टरी | -- | ४४.९६ | -- | ४९७२० | ३०८५० |

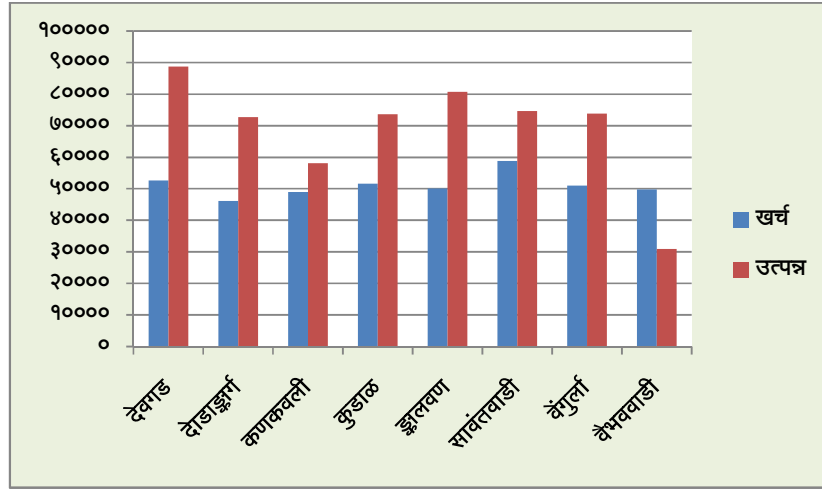
८. तालुका वेंगुर्ला (उत्पादक लाभार्थी ४४)

| बाब | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | उत्पादन पेटी (४ डझन = १ पेटी) | दर रु (१ पेटी) | एकूण खर्च रु | एकूण उत्पन्न रु |
|--------------|----------------------|-------------------------------|----------------|--------------|-----------------|
| एकूण | ३५८१ | ४४८१ | | १८२७२०० | २६४१००० |
| कमीतकमी | १० | १० | ४०० | २००० | ५००० |
| जास्तीतजास्त | ४०० | ३२० | १००० | १६०५०० | २१०००० |
| विस्तार | २९० | ३१० | ६०० | १५८५००० | २०५००० |
| सरासरी | ८१.३८ | १०१.८४ | ५९०.९० | ४१५२७.२७ | ६००२२.७३ |
| प्रमाण विचलन | ६५.८० | ८९.४० | १६३.९८ | ३८१२४.५२ | ५४०४०.०३ |
| दर हेक्टरी | - | १२५.१३ | | ५१०२४.८५ | ७३७५०.३५ |

स्रोत - संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप - एकूण ४२६ आंबा उत्पादक शेतक-यांपैकी ३२० आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतक-यांनी दिलेल्या माहितीवरून आंब्याच्या उत्पादन, उत्पन्न आणि खर्चाचे विश्लेषण केले आहे.

आलेख क्र. ६.१६
आंबा दर हेक्टरी खर्च व उत्पन्नाचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.५५ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यात राबिवण्यात आलेल्या आंबा या फळझाड लागवडीपासून मिळणा-या उत्पादन, उत्पन्न आणि खर्चाच्या आकडेवारीवरून असे आढळून येते की जिल्ह्यात एकूण ३२० (१००%) आंबा उत्पादक लाभार्थी आहेत. जिल्ह्यात कमीतकमी ११ आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकरी दोडामार्ग तालुक्यातील असून, जास्तीतजास्त ५३ आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यांतील आहेत. जिल्ह्यात सर्वात कमी ६ हेक्टर ५५ गुंठे आंबा उत्पादक क्षेत्र दोडामार्ग तालुक्यांतील असून, सर्वात जास्त आंबा उत्पादक क्षेत्र जिल्ह्याला ८८ हेक्टर ७२ गुंठे देवगड तालुक्याचे आहे. जिल्ह्यात कमीत कमी १० गुंठे आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकरी कणकवली, मालवण, सावंतवाडी आणि वेंगुर्ला तालुक्यात असून, जास्तीतजास्त ५ हेक्टर आंबा उत्पादक लाभार्थी देवगड, मालवण या तालुक्यात असल्याचे आढळून आले. जिल्ह्यात कमीतकमी २ पेटी उत्पादन कणकवली, वैभववाडी तालुक्यात होत असून जास्तीत जास्त ६७५ पेटी उत्पादन मालवण तालुक्यात होत असल्याचे आढळून आले. जिल्ह्यात कमीतकमी १ पेटीचा दर ८०/- रु. कणकवली तालुक्यातील शेतकऱ्यांचा असून जास्तीत १ पेटीचा दर रु.३०००/-मालवण

तालुक्यातील लाभार्थीचा आहे. जिल्ह्यात कमीतकमी ८४१ पेटी आंबा उत्पादन दोडामार्ग तालुक्याचे असून जास्तीत जास्त ७८२८पेटी आंबा उत्पादन देवगड तालुक्याचे असल्याचे आढळून आले. जिल्ह्यात कमीतकमी दर हेक्टरी ४४ पेटी आंबा उत्पादन वैभववाडी तालुक्याचे असून जास्तीत जास्त दर हेक्टरी १२५ आंबा पेटी उत्पादन वेंगुर्ला तालुक्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांचे आहे. जिल्ह्यात कमीतकमी दर हेक्टरी उत्पादन खर्च रु.४६१३७/- इतका दोडामार्ग तालुक्याचा असून जास्तीतजास्त दर हेक्टरी उत्पादन खर्च रु.५८८०६/- इतका सावंतवाडी तालुक्यातील आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांचा आहे. जिल्ह्यात कमीत कमी दर हेक्टरी उत्पन्न रु.५८१०५/- कणकवली तालुक्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांचे असून जास्तीत जास्त दर हेक्टरी उत्पन्न रु.८८७३८/- इतके देवगड तालुक्यांतील लाभार्थी शेतकऱ्यांचे आहे.वैभववाडी तालुक्याचे दर हेक्टरी उत्पन्न रु.३०८५०/- इतके असून दर हेक्टरी उत्पादन खर्च रु.४९७२०/- एवढा आहे. येथे दर हेक्टरी उत्पन्नापेक्षा दर हेक्टरी उत्पादन खर्च जास्त असल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते.एकूण उत्पन्न, एकूण खर्च, उत्पादन या मधील विविध तालुक्यातील प्रमाण विचलन सारखेच असल्याचे आढळून येते. अशा प्रकारे आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या उत्पादन उत्पन्न आणि खर्चाचे विश्लेषण वरील संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते.

तक्ता क्र. ६.५६

सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील एकूण आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण उत्पादन उत्पन्न खर्चाचे विश्लेषण (सन २०११)

(४ डझन = १ पेटी)

सिंधुदुर्ग जिल्हा (एकूण उत्पादक लाभार्थी शेतकरी ३२०)

| | जमिन क्षेत्र गुंठे | उत्पादन पेटी | दर रु | एकूण खर्च रु | एकूण उत्पन्न रु |
|--------------|--------------------|--------------|--------|--------------|-----------------|
| एकूण | ३२१८४ | ३७६१२ | | १६५८९८०१ | २३८१६४०० |
| कमितकमी | १० | २ | ८० | २००० | १२०० |
| जास्तीतजास्त | ५०० | ७६० | ३००० | २१०००० | ४२०००० |
| विस्तार | ४९० | ७५८ | २९२० | २०८००० | ४१८८०० |
| सरासरी | १००.५७ | ११७.५३ | ७४२.०३ | ५१८४३.१३ | ७४४२६.२५ |

| | | | | | |
|--------------|-------|--------|--------|----------|----------|
| प्रमाण विचलन | ९४.६८ | १४२.६४ | ४०७.६४ | ४४८५१.९३ | ७८१७४.९२ |
| दर हेक्टरी | | ११६.८६ | | ५१५४६.७३ | ७४०००.७५ |

स्रोत संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप एकूण ४२६ आंबा लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३२० आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांनी दिलेल्या माहितीवरून विश्लेषण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.५६ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यातील एकूण ३२०(१०० टक्के) आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण उत्पादन उत्पन्न आणि एकूण चालू खर्चाच्या आकडेवारीवरून असे आढळून येते की जिल्ह्यात एकूण ३२१ हेक्टर ८४ गुंठे क्षेत्रावर आंबा लागवड झालेली आहे.कमीत कमी १० गुंठे क्षेत्रापासून जास्तीत जास्त ५ हेक्टर क्षेत्रावर आंबा लागवड झाल्याचे दिसून आले. जिल्ह्याची आंबा लागवड क्षेत्राची सरासरी १००.५७ गुंठे इतकी आहे. जिल्ह्यात आंबा लागवडीपासून एकूण ३७६१२ पेटी आंब्याचे एकूण उत्पादन आलेले असून कमीत कमी २ पेटीपासून जास्तीत जास्त ७६० पेटी उत्पादन झालेले आहे. सरासरी उत्पादकता ११७.५३ पेटी असल्याचे आढळून आले. जिल्ह्यात कमीतकमी १ पेटी आंबा विक्रीचा दर ८० रुपयापासून जास्तित जास्त ३,००० रु. पर्यंत आढळून येतो. जिल्ह्यात आंबा लागवडीचा चालू एकूण उत्पादन खर्च रु. १,६५,८९,८०१/- इतका असून कमीत कमी रु. २,०००/- पासून जास्तीत जास्त रु. २,१०,०००/- रु.पर्यंत झालेला आहे. जिल्ह्यास आंबा उत्पादनापासून एकूण उत्पन्न रु. २३,८१,६४०/- इतके प्राप्त झालेले असून कमीत कमी रु. १,२००/- पासून जास्तीतजास्त रु.४,२०,०००/- पर्यंत प्राप्त झालेले आहे. जिल्ह्यात आंब्यापासून ७२ लाख २६ हजार ५९९ रु. इतका नफा झाला आहे. आंबा लागवडीपासून दर हेक्टरी उत्पादन ११६.८६ पेटी इतके मिळते. दर हेक्टरी आंबा लागवडीचा उत्पादन खर्च रु. ५१,५४६.७३ इतका असून दर हेक्टरी उत्पन्न रु. ७४,०००.७५ इतके प्राप्त झाले आहे. आंबा लागवडीपासून दर हेक्टरी नफा मिळतो. अशा प्रकारे वरील तक्त्यावरून जिल्ह्यात आंबा लागवडीपासून मिळणारे उत्पादन , त्याचा एकूण खर्च आणि उत्पन्न संबंध संशोधन आकडेवाडीवरून आढळून येतो.

तक्ता क्र. ६.५७

आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतक-यांचे नफा तोट्यातील तालुका निहाय सांखिकीय विश्लेषण २०११

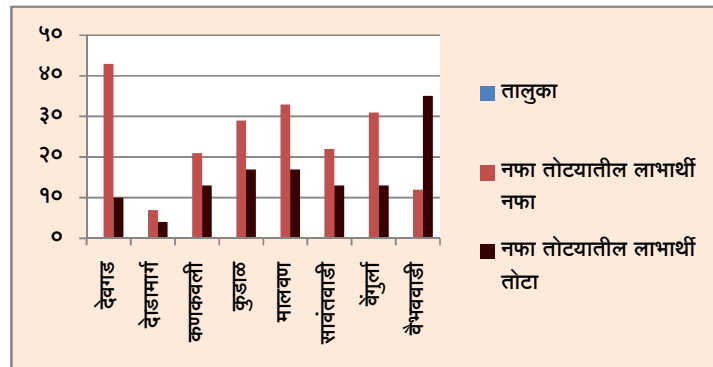
| तालुका | | नफा तोट्यातील लाभार्थी | | एकूण लाभार्थी |
|------------|-----------|------------------------|---------|---------------|
| | | नफा | तोटा | |
| देवगड | लाभार्थी | ४३ | १० | ५३ |
| | टक्केवारी | (८१.१४) | (१८.८६) | (१००.००%) |
| देडामार्ग | लाभार्थी | ७ | ४ | ११ |
| | टक्केवारी | (६३.६४) | (३६.३६) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | २१ | १३ | ३४ |
| | टक्केवारी | (६१.७६) | (३८.३४) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | २९ | १७ | ४६ |
| | टक्केवारी | (६३.०४) | (३६.९६) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | ३३ | १७ | ५० |
| | टक्केवारी | (६६.००) | (३४.००) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | २२ | १३ | ३५ |
| | टक्केवारी | (६२.८६) | (३७.१४) | (१००.००%) |
| वेगुर्ला | लाभार्थी | ३१ | १३ | ४४ |
| | टक्केवारी | (७०.४६) | (२९.५४) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | १२ | ३५ | ४७ |
| | टक्केवारी | (२५.५४) | (७४.४६) | (१००.००%) |
| सिंधुदूर्ग | लाभार्थी | १९८ | १२२ | ३२० |
| | टक्केवारी | (६१.८८) | (३८.१२) | (१००.००%) |

स्रोत संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप - एकूण ४२६ आंबा लागवड लाभार्थी शेतक-यांपैकी ३२० आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतक-यांनी दिलेल्या माहितीवरून नफा तोट्यातील लाभार्थी शेतक-यांचे सांखिकीय विश्लेषण केले आहे.

आलेख क्र. ६.१७

आंबा उत्पादक नफ्या-तोट्यातील लाभार्थीचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.५७ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यातील एकूण ३२०(१००%) आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांना मिळणाऱ्या एकूण उत्पन्नाच्या आकडेवारीवरून नफा तोट्यात असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या सांख्यिकीय विश्लेषणावरून असे आढळून येते की १९८ (६१.८८%) आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांना त्यांच्या चालू खर्चापेक्षा अधिक उत्पन्न मिळते. तर १२२ (३८.१२%) आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकरी तोट्यात असल्याचे आढळून येते. देवगड तालुक्यांतील एकूण ५३ (१००%) आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीत जास्त ४३ (८१.१४%) आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकरी नफ्यात असून कमीत कमी वैभववाडी तालुक्यातील ४७ (१००%) आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १२ (२५.५४%) आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकरी नफ्यात असून जास्तीत जास्त ३५ (७४.४६%) आंबा लाभार्थी शेतकरी तोट्यात असल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.५८

काजू उत्पादक लाभार्थी शेतक-यांच्या उत्पादन उत्पन्न खर्चाचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय विश्लेषण (सन २०११)

१. तालुका देवगड (उत्पादक लाभार्थी २०)

| बाब | जमीन क्षेत्र | उत्पादन (कि.ग्रॅ) | दर रु | एकूण खर्च | एकूण उत्पन्न (रु.) |
|--------------|--------------|-------------------|-------|-----------|--------------------|
| एकूण | ९१५ | ५१८० | | २४१९५० | ३९५८१० |
| कमीतकमी | १० | ३० | ४५ | १३५० | २१०० |
| जास्तीतजास्त | १५० | ८९३ | १०० | ५३००० | ८९३०० |
| विस्तार | १४० | ८६३ | ५५ | ५१६५० | ८७२०० |
| सरासरी | ४५.७५ | २५९ | ७५.५ | १२०९७.५ | १९७९०.५ |
| प्रमाण विचलन | ४१.९९ | २४९.२३ | १८.५० | १३७९८.२३ | २२६०७.५ |
| दर हेक्टर | ----- | ५६६.१२ | -- | २६४४२.६२ | ४३२५७.९२ |

२. तालुका दोडामार्ग (उत्पादक लाभार्थी ४६)

| बाब | जमीन क्षेत्र गुंठे | उत्पादन (कि.ग्रॅ) | दर रू | एकूण खर्च | एकूण उत्पन्न (रू.) |
|--------------|--------------------|-------------------|-------|-----------|--------------------|
| एकूण | २६८३ | २४३०१ | - | ९९४५०० | १०५२५५० |
| कमीतकमी | १० | ८ | ४० | ० | ६८० |
| जास्तीतजास्त | २०० | ३२७५ | १०० | ७१००० | १४३००० |
| विस्तार | १९० | ३२६७ | ६० | ७१००० | १४२३२० |
| सरासरी | ६२.२३ | ५२८.२८ | ७८.८२ | २१६१९.५७ | ३८१०३.२५ |
| प्रमाण विचलन | ४८.२१ | ६३१.६४ | १५.७५ | २०५१३.१ | ४०३०६.३३ |
| दर हेक्टरी | -- | ८४८.७९ | -- | २४७३६.२९ | ६१२२०.७५ |

३. तालुका कणकवली (उत्पादक लाभार्थी ६०)

| बाब | जमीन क्षेत्र | उत्पादन (कि.ग्रॅ) | दर रू | एकूण खर्च | एकूण उत्पन्न (रू.) |
|--------------|--------------|-------------------|-------|-----------|--------------------|
| एकूण | ४८५२ | ३३८२८ | -- | १३५०९०० | २४९४३२५ |
| कमीतकमी | १० | १० | ५० | ० | ७०० |
| जास्तीतजास्त | ४०० | ३२५० | १०० | ११०००० | २६०००० |
| विस्तार | ३९० | ३२४० | ५० | ११०००० | २५९३००० |
| सरासरी | ८०.८६ | ५६३.८ | ७५ | २२५१५ | ४१५७२.०८ |
| प्रमाण विचलन | ६६.६४ | ६००.५९ | १४.७५ | २०६००.४१ | ४५८६५.२२ |
| दर हेक्टरी | -- | ६९७.१९ | -- | २७८४२.१३ | ५१४०८.१८ |

४. तालुका कुडाळ (उत्पादक लाभार्थी ३९)

| बाब | जमीन क्षेत्र | उत्पादन (कि.ग्रॅ) | दर रू | एकूण | एकूण उत्पन्न (रू.) |
|--------------|--------------|-------------------|-------|----------|--------------------|
| एकूण | २७३५ | २२१८० | -- | ७४६००० | १५६५७७६ |
| कमीतकमी | १० | १० | ५० | ० | ८२० |
| जास्तीतजास्त | ४०० | ४५०० | १०० | ९८००० | २७०००० |
| विस्तार | ३९० | ४४९० | ५० | ९८००० | २६९१८० |
| सरासरी | ७०.१२ | ५६८.७१ | ७२.७१ | १९१२८.२१ | ४०१४८.१ |
| प्रमाण विचलन | ७४.५० | ७८५.२४ | १७.६९ | १९७०८.६४ | ५१९९८.७५ |
| दर हेक्टरी | -- | ८१०.९६ | -- | २७२७६.०५ | ५७२४९.५८ |

५. तालुका मालवण (उत्पादक लाभार्थी २२)

| बाब | जमीन क्षेत्र | उत्पादन | दर रू | एकूण खर्च | एकूण उत्पन्न |
|--------------|--------------|---------|-------|-----------|--------------|
| एकूण | १५४५ | १३१३४ | - | ३८३२०० | ८७११५० |
| कमीतकमी | १० | १७ | ५० | ० | १७०० |
| जास्तीतजास्त | ३०० | २४६० | १०० | ६२००० | १६८००० |
| विस्तार | २९० | २४४३ | ५० | ६२००० | १६६३०० |
| सरासरी | ७०.२२ | ५९७ | ७१.३१ | १७४१८.१८ | ३९५९७.७३ |
| प्रमाण विचलन | ६९.८२ | ६६१.४७ | १८.७५ | १६४७४.९३ | ४३२४८.६४ |
| दर हेक्टरी | -- | ८५०.०९ | - | २४८०२.५९ | ५६३८५.११ |

६. तालुका सावंतवाडी (उत्पादक लाभार्थी ३७)

| बाब | जमीन क्षेत्र | उत्पादन (कि.ग्रॅ) | दर रू | एकूण खर्च | एकूण उत्पन्न (रू.) |
|--------------|--------------|-------------------|-------|-----------|--------------------|
| एकूण | ३५०५ | १७४२२ | - | ७३०००० | १२४९८६७ |
| कमीतकमी | १८ | ३५ | ५० | ५००० | २९७५ |
| जास्तीतजास्त | २०० | २००० | १०० | ९३००० | १६०००० |
| विस्तार | १८२ | १९६५ | ५० | ८८००० | १५७०२५ |
| सरासरी | ६२.२९ | ४७०.८६ | ७८.७९ | १९७२९.७३ | ३३७८०.१९ |
| प्रमाण विचलन | ३०.०८ | ४१४.४५ | १७.०१ | १५९२९.७९ | २७१३८.२४ |
| दर हेक्टरी | -- | ७५५.८३ | - | ३१६७०.२८ | ५४२२४.१६ |

७. तालुका वैभववाडी (उत्पादक लाभार्थी ६०)

| बाब | जमीन क्षेत्र | उत्पादन (कि.ग्रॅ) | दर रू | एकूण खर्च | एकूण उत्पन्न (रू.) |
|--------------|--------------|-------------------|-------|-----------|--------------------|
| एकूण | ५१७० | ३४८१३ | - | ११५८६०० | २४५६७५० |
| कमीतकमी | १० | ४० | ४० | ० | ३००० |
| जास्तीतजास्त | ४०० | २६२५ | १०० | ६५००० | २१०००० |
| विस्तार | ३९० | २५८५ | ६० | ६५००० | २०७००० |
| सरासरी | ८६.१६ | ५८०.२१ | ७५.०८ | १९३१० | ४०९४५.८३ |
| प्रमाण विचलन | ७०.३७ | ५४५.८० | १६.४५ | १६१०४.८९ | ३६९६८.६९ |
| दर हेक्टरी | - | ६७३.३६ | - | २२४१०.०६ | ४७५१९.३४ |

स्रोत - संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

८. तालुका वेंगुर्ला (उत्पादक लाभार्थी ४३)

| बाब | जमीन क्षेत्र | उत्पादन | दर रू | एकूण खर्च | एकूण उत्पन्न |
|--------------|--------------|---------|-------|-----------|--------------|
| एकूण | २३०५ | २०२२८ | - | ७२९७०० | १३५८२०० |
| कमीतकमी | १० | २० | ५० | ० | १००० |
| जास्तीतजास्त | २०० | २४६० | १०० | ५१००० | १२३००० |
| विस्तार | १९० | २४४० | ५० | ५१००० | १२२००० |
| सरासरी | ५३.६० | ४७०.४१ | ७६.७९ | १६९६९.७७ | ३१५८६.०५ |
| प्रमाण विचलन | ३५.९१ | ४६७.५९ | १७.२९ | १२५५०.८६ | २३४०२.७४ |
| दर हेक्टरी | - | ८७७.५८ | - | ३१६५७.२७ | ५८९२४.०८ |

स्रोत - संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप - एकूण ४३१ काजू लागवड शेतकऱ्यांपैकी ३२७ काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांनी दिलेल्या माहितीवरून काजूच्या उत्पादन, उत्पन्न आणि खर्चाचे विश्लेषण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.५८ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यात राबविण्यात आलेल्या काजू या फळझाड लागवडीपासून मिळणाऱ्या उत्पादन, उत्पन्न आणि खर्चाच्या आकडेवारीवरून असे आढळून येते की जिल्ह्यात एकूण ३२७ (१००%) काजू उत्पादक लाभार्थी आहेत. जिल्ह्यात कमीत कमी २० काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील असून जास्तीत जास्त ६० काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकरी कणकवली, दोडामार्ग या तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात सर्वात कमी क्षेत्र ९.१५ हेक्टर काजू उत्पादक क्षेत्र देवगड तालुक्यात असून, जास्तीतजास्त ५१ हेक्टर ७० गुंठे काजू उत्पादन क्षेत्र वैभववाडी तालुक्याचे आहे. जिल्ह्यात कमीतकमी १० गुंठे क्षेत्र काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांपासून जास्तीतजास्त ४ हेक्टर क्षेत्र काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकरी कुडाळ, कणकवली आणि वैभववाडी तालुक्यात असल्याचे आढळून आले. जिल्ह्यात काजू पासून कमीतकमी ८ किग्रॅ. उत्पादन दोडामार्ग तालुक्यात असून जास्तीतजास्त ४५०० किलोग्रॅम उत्पादन कुडाळ तालुक्याचे आहे. जिल्ह्यात कमीतकमी

१ किग्रॅ. चा दर ४० रु. प्रत्येकी वैभववाडी, दोडामार्ग तालुक्यात असून जास्तीतजास्त १ किलो काजूचा दर रु.१०० जिल्हयातील सर्वच तालुक्यात आढळून येतो. जिल्हयात कमीतकमी ५१८० किग्रॅ काजूचे उत्पादन देवगड तालुक्याचे असून जास्तीत जास्त ३३८२६ किग्रॅ काजूचे उत्पादन कणकवली तालुक्याचे आहे. जिल्हयात कमीतकमी दर हेक्टरी उत्पादन खर्च रु. २२४१०/- इतका वैभववाडी तालुक्याचा असून जास्तीतजास्त दर हेक्टरी काजू उत्पादन खर्च रु. ३१६५७/- वेंगुर्ला तालुक्यातील शेतकऱ्यांचा आहे. जिल्हयात कमीत कमी दर हेक्टरी काजू उत्पन्न रु.४३२५७/- देवगड तालुक्यातील शेतकऱ्यांचे असून जास्तीत जास्त दर हेक्टरी उत्पन्न रु ६१२२०/- दोडामार्ग तालुक्यातील शेतकऱ्यांचे आहे. काजू उत्पादनापासून लाभार्थींना नफा मिळतो. एकूण उत्पन्न, एकूण खर्च आणि उत्पादन यामधील विविध तालुक्यातील प्रमाण विचलनामध्ये फरक असल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते. अशा प्रकारे काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या उत्पादन, उत्पन्न आणि खर्चाचे विश्लेषण वरील तक्त्याच्या संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.५९

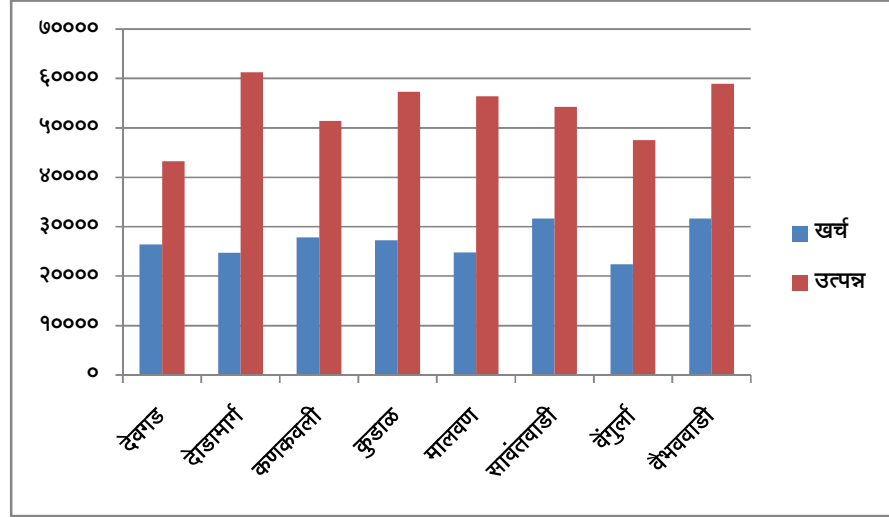
**सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या
उत्पादन उत्पन्न खर्चाचे विश्लेषण (सन २०११)
सिंधुदुर्ग जिल्हा (एकूण उत्पादक लाभार्थी शेतकरी = ३२७)**

| | जमिन (क्षेत्र = गुंठे) | उत्पादन पेटी (कि.ग्रॅम) | दर रु (१ किलो) | एकूण खर्च रु | एकूण उत्पन्न रु |
|--------------|---------------------------|----------------------------|-------------------|--------------|--------------------|
| एकूण | २२६९० | १७१०८६ | - | ६३३४८५० | १२१४४६२८ |
| कमीतकमी | १० | ८ | ४० | ० | ६८० |
| जास्तीतजास्त | ४०० | ४५०० | १०० | ११०००० | २७०००० |
| विस्तार | ३९० | ४४९२ | ६० | ११०००० | २६९३२० |
| सरासरी | ६९.३८ | ५३२.१९ | ७५.५५ | १९३७२.६३ | ३७१३९.५३ |
| प्रमाण विचलन | ५९.३६ | ५७५.८३ | १६.६१ | १७६३०.१६ | ३८७४७.५८ |
| दर हेक्टरी | -- | ७५४.०१ | - | २७९१९.१२ | ५३५२४.१४ |

स्रोत संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप एकूण ४३१ काजू लागवड लाभार्थी शेतक-यांपैकी ३२७ काजू उत्पादक लाभार्थी शेतक-यांनी दिलेल्या माहितीवरून विश्लेषण केले आहे.

आलेख क्र. ६.१८
काजू दर हेक्टरी खर्च व उत्पन्नाचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.५९ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्हयातील एकूण उत्पन्न उत्पादन आणि एकूण चालू खर्चाच्या आकडेवारीवरून असे आढळून येते की, जिल्हयात एकूण २२६ हेक्टर ९० गुंठे क्षेत्रावर काजू लागवड झालेली आहे. यामध्ये कमीतकमी १० गुंठे क्षेत्रापासून जास्तीत जास्त ४ हेक्टर क्षेत्रावर काजू लागवड असून जिल्हयाची काजू लागवड क्षेत्राची सरासारी ६९.३८ गुंठे इतकी आहे. जिल्हयात काजू लागवडीपासून एकूण १,७१,०८६ किलोग्रॅम एकूण उत्पादन झालेले असून कमीतकमी ८ किलो पासून जास्तीत जास्त ४,५०० किलो ग्रॅमचे उत्पादन झाले असून सरासरी उत्पादकता ५३२.१९ किलोग्रॅम असल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते. जिल्हयात कमी १ किलो ग्रॅम विक्रीचा ४० रुपयांपासून जास्तीत जास्त १०० रुपयांपर्यंत आहे. जिल्हयात काजू लागवडीचा चालू एकूण उत्पादन खर्च रु. ६३,३४,८५० इतका असून कमीतकमी शून्य खर्चापासून जास्तीत जास्त १,१०,००० रुपयांपर्यंत झालेला आहे. जिल्हयात काजू उत्पादनापासून एकूण उत्पन्न रु.१,२१,४४,६२८ इतके प्राप्त झालेले असून कमीतकमी रु. ६८० पासून जास्तीत जास्त रु. २,७०,०००/- पर्यंत प्राप्त झालेले आहे. जिल्हयात काजूपासून रु. ५८,०९,७७८ नफा झालेला आहे. काजू लागवडीपासून दर हेक्टरी उत्पादन ७५४.०१ किलोग्रॅम इतके मिळते. दर हेक्टरी काजू लागवडीचा चालू उत्पादन

खर्च रू. २७,९९९/- इतका असून दर हेक्टरी उत्पन्न रू. ५३,५२४.९४ इतके प्राप्त झालेल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते. अशा प्रकारे वरील तक्त्यावरून जिल्हयातील काजू लागवडीपासून मिळणारे उत्पादन त्याचा एकूण खर्च आणि उत्पन्न यांचे संशोधन आकडेवारीवरून विश्लेषण केलेले आहे.

तक्ता क्र. ६.६०

काजू उत्पादक लाभार्थी शेतक-यांचे नफा तोट्यातील तालुका निहाय सांख्यिकीय विश्लेषण (२०११)

| तालुका | | नफा तोट्यातील लाभार्थी | | एकूण लाभार्थी |
|------------------------|-----------|------------------------|----------|---------------|
| | | नफा | तोटा | |
| देवगड | लाभार्थी | १८ | २ | २० |
| | टक्केवारी | (९०%) | (१००) | (१००.००%) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ३६ | १० | ४६ |
| | टक्केवारी | (७८.२६%) | (२१.७३%) | (१००.००%) |
| कणकवली | लाभार्थी | ५३ | ७ | ६० |
| | टक्केवारी | (८८.३४%) | (११.६६%) | (१००.००%) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ३७ | २ | ३९ |
| | टक्केवारी | (९४.८८%) | (५.१२%) | (१००.००%) |
| मालवण | लाभार्थी | २० | २ | २२ |
| | टक्केवारी | (९०.९०%) | (९.१०%) | (१००.००%) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ३४ | ३ | ३७ |
| | टक्केवारी | (९१.९०%) | (८.१०%) | (१००.००%) |
| वेगुर्ला | लाभार्थी | ४१ | २ | ४३ |
| | टक्केवारी | (९४.३४%) | (४.६६%) | (१००.००%) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ५९ | १ | ६० |
| | टक्केवारी | (९८.३४%) | (१.६६%) | (१००.००%) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | २९८ | २९ | ३२७ |
| | टक्केवारी | (९१.१४%) | (८.८६%) | (१००.००%) |

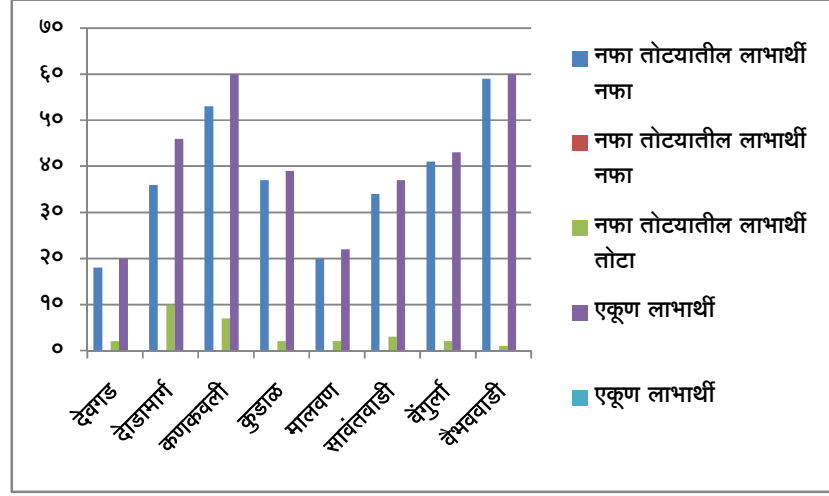
स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप - कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

एकूण ४३९ काजू लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३२७ काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांनी दिलेल्या माहितीवरून नफा तोट्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांचे सांख्यिकीय विश्लेषण केले आहे.

आलेख क्र. ६.१९

काजू उत्पादक नफ्या-तोट्यातील लाभार्थीचे वर्गीकरण



तक्ता क्र. ६.६० मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यातील एकूण ३२७ (१००%) काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांना मिळणा-या एकूण उत्पन्नाच्या आकडेवारीवरून नफा तोट्यात असणाऱ्या लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या सांख्याकीय विश्लेषणावरून असे आढळून येते की २९८ (९१.१४%) काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांना त्यांच्या चालू खर्चापेक्षा अधिक उत्पन्न मिळते. तर २९ (८.८६%) काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकरी तोट्यात असल्याचे आढळून येते.

वैभववाडी तालुक्यातील एकूण ६० (१००%) काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीत जास्त ५९ (९८.३४%) काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकरी नफ्यात असून कमीतकमी तालुक्यातील १ (१.६६%) काजू उत्पादक लाभार्थी तोट्यात आहेत. दोडामार्ग तालुक्यातील शेतकऱ्यांपैकी ४६ (१००%) काजू उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी जास्तीतजास्त १० (२१.७३%) काजू लाभार्थी शेतकरी तोट्यात असल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले.

**नारळ उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांचे दर हेक्टरी उत्पन्न खर्चाचे
तालुका निहाय सांख्यिकीय विश्लेषण (सन २०११)**

| | देवगड (उत्पादक लाभार्थी = ०२) | | | दोडामार्ग (उत्पादक लाभार्थी = ११) | | |
|--------------|----------------------------------|--------------|-----------------------------|--------------------------------------|--------------|-----------------------------|
| | जमिन (क्षेत्र-गुंठे) | खर्च (रु) | उत्पन्न (रु.) (कि.ग्रॅ.) | जमिन (क्षेत्र-गुंठे) | खर्च (रु) | उत्पन्न (रु.) (कि.ग्रॅ.) |
| एकूण | ३० | ११५०० | १५९०० | १०५ | ४०८०० | ५३६०० |
| कमीत कमी | १० | ३००० | ५४०० | ५ | ० | ५०० |
| जास्तीतजास्त | २० | ८५०० | १०५०० | १५ | ६२०० | ८८०० |
| विस्तार | १० | ५५०० | ५१०० | १० | ६२०० | ८३०० |
| सरासरी | १५ | ५७५० | ७९५० | ९.५४ | ३७०९.०९ | ४८७२.७२ |
| प्रमाण विचलन | ७.०७ | ३८८९.०८ | ३६०६.२४ | ३.५ | २०३४.४३ | २३६३.५१ |
| दर हेक्टरी | -- | ३८३३३.३३ | ५३००० | -- | ३८८५७.१४ | ५१०४७.६२ |

| | कणकवली (उत्पादक लाभार्थी = २६) | | | कुडाळ (उत्पादक लाभार्थी = २६) | | |
|--------------|-----------------------------------|--------------|-----------------------------|----------------------------------|--------------|-----------------------------|
| | जमिन (क्षेत्र-गुंठे) | खर्च (रु) | उत्पन्न (रु.) (कि.ग्रॅ.) | जमिन (क्षेत्र-गुंठे) | खर्च (रु) | उत्पन्न (रु.) (कि.ग्रॅ.) |
| एकूण | ५०५ | १८३७०० | २९३६०० | ३१५ | ११३८०० | १७००५० |
| कमीत कमी | ५ | ० | २३०० | ५ | ० | ५०० |
| जास्तीतजास्त | ८० | २५००० | ४६००० | १०० | ३२००० | ६१००० |
| विस्तार | ७५ | २५००० | ७३७०० | ४५ | ३२००० | ६०५०० |
| सरासरी | १९.४२ | ७०६५.३८ | ११२९२.३१ | १९.६८ | ७११२.५ | १०६२८.१३ |
| प्रमाण विचलन | २०.८० | ७०८३.८९ | १२१००.१५ | २३.९७ | ८२०१.०४ | १४६२४.१८ |
| दर हेक्टरी | -- | ३६३७६.२४ | ५८१३८.६१ | -- | ३६१२६.९८ | ५३९८४.१३ |

| | मालवण (उत्पादक लाभार्थी = १४) | | | सावंतवाडी (उत्पादक लाभार्थी = २१) | | |
|--------------|----------------------------------|--------------|-----------------------------|--------------------------------------|--------------|-----------------------------|
| | जमिन (क्षेत्र-गुंठे) | खर्च (रु) | उत्पन्न (रु.) (कि.ग्रॅ.) | जमिन (क्षेत्र-गुंठे) | खर्च (रु) | उत्पन्न (रु.) (कि.ग्रॅ.) |
| एकूण | ३८० | १२७७०० | २११७०० | ४०१ | १६४८०० | २१९०२० |
| कमीत कमी | १० | ५०० | ३२०० | ५ | २००० | ७०० |
| जास्तीतजास्त | ५० | १९००० | ३३२०० | ८० | ३५००० | ४१००० |
| विस्तार | ४० | १८५०० | ३०००० | ७५ | ३३००० | ४०३०० |
| सरासरी | २७.१४ | ९१२१.४२ | १५१२१.४३ | १९.०९ | ७८४७.६१ | १०४२९.५२ |
| प्रमाण विचलन | १७.२८ | ६५४७.९५ | १०४९०.५२ | १७.८७ | ४१०९७.२६ | ५४६१८.४५ |
| दर हेक्टरी | -- | ३३६०५.२६ | ५५७१०.५३ | -- | -- | ४१०९७.२६ |

| | वैभववाडी (उत्पादक लाभार्थी = ०९) | | | वेंगुर्ला (उत्पादक लाभार्थी = २१) | | |
|--------------|-------------------------------------|--------------|-----------------------------|--------------------------------------|--------------|-----------------------------|
| | जमिन (क्षेत्र-गुंठे) | खर्च (रु) | उत्पन्न (रु.) (कि.ग्रॅ.) | जमिन (क्षेत्र-गुंठे) | खर्च (रु) | उत्पन्न (रु.) (कि.ग्रॅ.) |
| एकूण | ३१५ | १०२६०० | ९४०२० | ३६५ | १५६१०० | १९२४०० |
| कमीत कमी | ५ | ० | ३२० | ५ | २००० | १००० |
| जास्तीतजास्त | ४० | २२००० | १४००० | १०० | ३५००० | ६५००० |
| विस्तार | ३५ | २२००० | १३६८० | ९५ | ३३००० | ६४००० |
| सरासरी | १८.५७ | ५४०० | ४९४८.४२ | १७.३८ | ७४३३.३३ | ९१६१.९० |
| प्रमाण विचलन | ९.५८ | ४९५५.५८ | ३५७९.४३ | २४.९३ | ८७६८.४२ | १३९७२.९२ |
| दर हेक्टरी | -- | ३२५७१.४३ | २९८४७.६२ | -- | ४२७६७.१२ | ५२७१२.३३ |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्यांच्या आधारे

टीप : एकूण २६३ नारळ लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १३० नारळ उत्पादन लाभार्थी शेतकऱ्यांनी दिलेल्या माहितीवरून विश्लेषण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.६१ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यातील एकूण १३० (१००%) नारळ या फळझाड लागवडीपासून मिळणाऱ्या दर हेक्टरी उत्पन्न खर्चाच्या आकडेवारीवरून असे आढळून येते की, जिल्ह्यात कमितकमी ०२ नारळ उत्पादक लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील असून जास्तीतजास्त २६ नारळ उत्पादक

लाभार्थी कणकवली, कुडाळ तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात कमित कमी नारळ उत्पादक क्षेत्र ५ गुठ्यापासून जास्तिताजास्त क्षेत्र १ हेक्टर लाभार्थी शेतकरी कणकवली, वेंगुर्ला तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात कमित कमी दर हेक्टरी नारळ उत्पादन खर्च रु. ३२,५७१ वैभववाडी तालुक्याचा असून जास्तीत जास्त खर्च रु. ४२,७६७ वेंगुर्ला तालुक्यातील उत्पादक शेतकऱ्यांचा आहे. जिल्ह्यात कमित कमी दर हेक्टरी नारळ उत्पन्न रु. २९,८४७ वैभववाडी तालुक्याचे असून जास्तीतजास्त नारळ उत्पन्न रु. ५८,१३८ वेंगुर्ला तालुक्यातील उत्पादक शेतकऱ्यांचे आहे. जिल्ह्यामध्ये वैभववाडी तालुक्याचे दर हेक्टरी नारळ उत्पन्न हे दर हेक्टरी खर्चापेक्षा कमी असल्याचे आढळून आले. अशा प्रकारे जिल्ह्यातील नारळ उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या दर हेक्टरी उत्पन्न खर्चाची स्थिती संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.६२

**सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण नारळ उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या उत्पादन
उत्पन्न खर्चाचे विश्लेषण (२०११)
(लाभार्थी = १३०)**

| | जमिन(क्षेत्र गुठे) | उत्पादन नग संख्या | दर रु | एकूण खर्च रु | एकूण उत्पन्न रु |
|---------------|--------------------|----------------------|-------|--------------|-----------------|
| एकूण | २४१६ | १७९२९२.०४ | - | ९०१००० | १२५०२९० |
| कमीतकमी | ५ | ३८ | ५ | ० | ३२० |
| जास्तीत जास्त | १०० | १३००० | १२ | ३५००० | ६५००० |
| विस्तार | ९५ | १२९९९.६२ | ७ | ३५००० | ६४६८० |
| सरासरी | १८.५८ | १३७९.१७ | ७.६ | ६९३०.७७ | ९६१७.६१ |
| प्रमाण विचलन | १८.८९ | १९६८.१७ | २.०२ | ६९०६.६२ | १००.८० |
| दर हेक्टरी | | ७४२१.०४ | - | ३७२९३ | ५१७५०.४१ |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप : एकूण २६३ नारळ लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १३० नारळ उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांनी दिलेल्या माहितीवरून विश्लेषण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.६२ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्ह्यातील एकूण १३० (१००%) नारळ लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण उत्पादन, उत्पन्न आणि एकूण

चालू खर्चाच्या आकडेवारीवरून जिल्ह्यात एकूण २४ हेक्टर १६ गुंठे क्षेत्रावर नारळ लागवड झालेली आहे. कमीतकमी ५ गुंठे क्षेत्रापासून जास्तीतजास्त १ हेक्टर क्षेत्रावर नारळ लागवड असून जिल्ह्याची नारळ लागवड क्षेत्राची सरासरी १८.५८ गुंठे इतकी आहे. जिल्ह्यात नारळ लागवडीपासून एकूण १,७९,२९२.०४ नग नारळांचे एकूण उत्पादन झालेले असून कमीतकमी ३८ नग नारळांपासून जास्तीतजास्त १३००० नग नारळ उत्पादन झाल्याचे आढळून येते. जिल्ह्यात कमीत कमी १ नग नारळ विक्रीचा दर ५ रुपयांपासून जास्तीत जास्त १२ रुपयांपर्यंत असल्याचे आढळून आले. जिल्ह्यात नारळ लागवडीचा चालू एकूण उत्पादन खर्च रु. ९,०१,००० इतका असून कमीतकमी शून्य खर्चापासून जास्तीत जास्त रु. ३५,०००/-पर्यंत झालेला आहे. जिल्ह्यात नारळ उत्पादनापासून एकूण उत्पन्न रु. १२,५०,२९० इतके प्राप्त झालेले असून कमीतकमी रु. ३२० पासून जास्ती जास्त रु. ६५,००० पर्यंत प्राप्त झालेले ओह. जिल्ह्यात नारळ उत्पादनापासून ३ लाख ४९ हजार २९० रुपये नफा झालेला आहे. नारळ लागवडीपासून दर हेक्टरी उत्पादन ७४२१.०४ नग नारळ इतके प्राप्त झाल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते. अशाप्रकारे वरील तक्त्यावरून जिल्ह्यात नारळ लागवडीपासून मिळणारे उत्पादन, त्याचा एकूण चालू खर्च आणि उत्पन्न यांचे संशोधन आकडेवारीवरून विश्लेषण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.६३

**सुपारी उत्पादक लाभार्थी शेतक-यांचे दर हेक्टरी उत्पन्न खर्चाचे
तालुकानिहाय सांख्यिकीय विश्लेषण (२०११)**

| | देवगड (उत्पादक लाभार्थी ०२) | | | दोडामार्ग (उत्पादक लाभार्थी ०५) | | | कणकवली (उत्पादक लाभार्थी ०२) | | |
|---------------|--------------------------------|----------|-------------|------------------------------------|----------|-------------|---------------------------------|----------|-------------|
| | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | खर्च रू. | उत्पन्न रू. | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | खर्च रू. | उत्पन्न रू. | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | खर्च रू. | उत्पन्न रू. |
| एकूण | ६५ | १८००० | १६००० | ५० | १३६०० | ३१६०० | ४५ | १२५०० | ११००० |
| कमीतकमी | २० | ५५०० | ५००० | ५ | ३०० | ३००० | ५ | ३५०० | २५०० |
| जास्तित जास्त | ४५ | १२५०० | ११००० | १५ | ४९०० | १०६०० | ४० | ९००० | २५०० |
| विस्तार | २५ | ७००० | ६००० | १० | ४६०० | ७६०० | ३५ | ५५०० | ६००० |
| सरासरी | ३२.५ | ९००० | ८००० | १० | २७२० | ६३२० | २२.५ | ६२५० | ५५०० |
| प्रमाण विचलन | १७.६७ | ४९४९.७५ | ४२४२.६४ | ५ | २०२९.०४ | ३००६.१६ | २४.७४ | ३८८९.०९ | ४२४२.६४ |
| दर हेक्टरी | - | २७६९२.३ | २४६१५.४ | - | २७२०० | ६३२०० | - | २७७७७.८ | २४४४४.४ |

| | कुडाळ (उत्पादक लाभार्थी ०९) | | | मालवण (उत्पादक लाभार्थी ०३) | | | सावंतवाडी (उत्पादक लाभार्थी १३) | | |
|--------------|--------------------------------|----------|-------------|--------------------------------|----------|-------------|------------------------------------|----------|-------------|
| | जमीन क्षेत्र गुंठे | खर्च रु. | उत्पन्न रु. | जमीन क्षेत्र गुंठे | खर्च रु. | उत्पन्न रु. | जमीन क्षेत्र गुंठे | खर्च रु. | उत्पन्न रु. |
| एकूण | २६० | ७१७५० | ७१४०० | ७५ | २१००० | ४४५०० | १७५ | ४२२००० | १०७८०० |
| कमीतकमी | ५ | ३५० | १५०० | ५ | २००० | ३५०० | ५ | ० | १५०० |
| जास्तीतजास्त | ८० | १९००० | २९००० | ५० | १२००० | २९००० | ३० | ७००० | १९८०० |
| विस्तार | ७५ | १८६५० | २७५०० | ४५ | १०००० | २५५०० | २५ | ७००० | १८३०० |
| सरासरी | २८.८८ | ७९७२.२२ | ७९३३.३३ | २५ | ७००० | १४८३३.३ | १३.४६ | ३२४६.१५ | ८२९२.३१ |
| प्रमाण विचलन | २५.५९ | ६७३९.५८ | ८४८३.९६ | २२.९१ | ५००० | १२९८४ | ६.८८ | २११०.५४ | ५२८३.२२ |
| दर हेक्टरी | - | २७५९६.२ | २७४६१.५ | - | २८००० | ५९३३३.३ | - | २४११४.३ | ६१६०० |

| | वैभववाडी उत्पादक लाभार्थी ०५ | | | वेंगुर्ला उत्पादक लाभार्थी १७ | | |
|--------------|---------------------------------|----------|-------------|----------------------------------|----------|-------------|
| | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | खर्च रू. | उत्पन्न रू. | जमीन (क्षेत्र गुंठे) | खर्च रू. | उत्पन्न रू. |
| एकूण | ६० | १५५०० | १२३४० | १२९ | ३२६२० | ८३४०० |
| कमीतकमी | १० | २००० | १५०० | ५ | २५० | ८४० |
| जास्तीतजास्त | २० | ५५०० | ४००० | १० | ४५०० | ९९५० |
| विस्तार | १० | ३५०० | २५०० | ५ | ४२५० | ९११० |
| सरासरी | १२ | ३१०० | २४६८ | ७.५८ | १९१८.८२ | ४९०५.८८ |
| प्रमाण विचलन | ४.४७ | १३८७.४४ | १०५५.५२ | २.४२ | १६५२.७३ | ३४२०.५३ |
| दर हेक्टरी | - | २५८३३.३ | २०५६६.७ | - | २५२८६.८ | ६४६५१.२ |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप : एकूण १२० सुपारी लागवड लाभार्थी पैकी ५६ सुपारी उत्पादक लाभार्थीनी दिलेल्या माहितीवरून विश्लेषण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.६३ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्हयातील एकूण ५६ (१००%) सुपारी या लागवडीपासून मिळणाऱ्या दर हेक्टरी उत्पन्न खर्चाच्या आकडेवारीवरून जिल्हयात कमीतकमी ०२ सुपारी उत्पादक लाभार्थी शेतकरी देवगड तालुक्यातील असून जास्तीत जास्त १७ सुपारी उत्पादक लाभार्थी शेतकरी कणकवली व कुडाळ तालुक्यातील आहेत. जिल्हयात कमीतकमी सुपारी उत्पादक क्षेत्र ४५ गुंठे कणकवली तालुक्यातील असून जास्तीतजास्त क्षेत्र २ हेक्टर ६० गुंठे कुडाळ तालुक्याचे असल्याचे आढळून येते. जिल्हयात कमीतकमी सुपारी उत्पादक क्षेत्र ५ गुंठे लाभार्थी शेतकऱ्यांपासून जास्तीत जास्त ८० गुंठे लाभार्थी शेतकरी कुडाळ तालुक्यात आहे. जिल्हयात कमीतकमी दर हेक्टरी सुपारी खर्च रू. २४,११४ सावंतवाडी तालुक्याचा असून जास्तीतजास्त खर्च रू. २८,०००/- मालवण तालुक्यातील उत्पादक शेतकऱ्याचा आहे. जिल्हयात कमीतकमी दर हेक्टरी सुपारी उत्पन्न रू. २०,५६६ वैभववाडी तालुक्याचे असून जास्तीतजास्त सुपारी उत्पन्न ६४,६५१/- वेंगुर्ला तालुक्यातील शेतकऱ्यांचे आहे. वैभववाडी, देवगड, कुडाळ तालुक्यात सुपारीपासून तोटा होतो, तर

दोडामार्ग, सावंतवाडी, मालवण, कणकवली, वेंगुर्ला तालुक्यात तयार होतो. जिल्हयामध्ये दर हेक्टरा सुपारी उत्पन्नापेक्षा देवगड, कणकवली आणि वैभववाडी तालुक्यातील शेतकऱ्यांचा दर हेक्टरा खर्च जास्त असल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले आहे.

तक्ता क्र. ६.६४

सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण सुपारी उत्पादक लाभार्थी शेतक-यांच्या

उत्पादन उत्पन्न

खर्चाचे विश्लेषण (२०११) (उत्पादक लाभार्थी = ५६)

| | जमिन (क्षेत्र = गुंठे) | उत्पादन (कि.ग्रॅ.) | दर रु (१ किलो) | एकूण खर्च रु | एकूण उत्पन्न रु |
|---------------|---------------------------|-----------------------|-------------------|--------------|-----------------|
| एकूण | ८५९ | २७६२ | - | २२७१७० | ३७८०४० |
| कमीतकमी | ५ | ७ | १०० | ० | ८४० |
| जास्तीत जास्त | ८० | १४५ | २०० | १९००० | २९००० |
| विस्तार | ७५ | १३८ | १०० | १९००० | २८१६० |
| सरासरी | १५.३३ | ४९.३२ | १४३.६४ | ४०५६.६१ | ६७५०.७१ |
| प्रमाण विचलन | १४.७३ | ३६.६४ | ४२.०२ | ४०३७.४१ | ५८८९.८३ |
| दर हेक्टरा | - | ३२१.५३ | - | २६४४५.९ | ४४००९.३ |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप : एकूण १२० सुपारी लागवड लाभार्थी शेतक-यांपैकी ५६ सुपारी उत्पादक लाभार्थी शेतक-यांनी दिलेल्या माहितीवरून विश्लेषण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.६४ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्हयातील एकूण ५६(१०० टक्के) सुपारी उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या एकूण उत्पादन उत्पन्न आणि एकूण चालू खर्चाच्या आकडेवारीवरून जिल्हयाची एकूण ८ हेक्टर ५९ गुंठे क्षेत्रावर सुपारी लागवड झालेली आहे. कमीत कमी ५ गुंठे क्षेत्रापासून जास्तीत जास्त ८० गुंठे क्षेत्रावर सुपारी लागवड आहे. जिल्हयाची सुपारी लागवड क्षेत्राची सरासरी १५.३३ गुंठे इतकी असल्याचे आढळून येते. जिल्हयात सुपारी लागवडीपासून एकूण २७६२ कि.ग्रॅ. एकूण उत्पादन प्राप्त झालेले असून कमीतकमी ७ कि.ग्रॅ. सुपारीपासून जास्तीत जास्त १४५ कि.ग्रॅ. सुपारी

उत्पादन आहे. जिल्हयात कमीतकमी १ कि.ग्रॅ. विक्रीचा दर १०० रुपयांपासून जास्तीत जास्त २०० रुपयांपर्यंत असल्याचे आढळून येतो. जिल्हयात सुपारी लागवडीचा चालू एकूण उत्पादन खर्च रु. २,२७,१७० इतका असून कमीतकमी शून्य खर्चापासून जास्तीत जास्त १९,००० रुपयांपर्यंत झालेला आहे. जिल्हयात सुपारी लागवडीपासून एकूण उत्पन्न रु. ३,७८,०४० इतके प्राप्त झालेले असून कमीतकमी उत्पन्न ८४० रु. पासून जास्तीतजास्त रु. २९,००० पर्यंत प्राप्त झालेले आहे. सुपारी लागवडीपासून दर हेक्टरी उत्पादन ३२१.५३ किलो ग्रॅम इतके मिळते. दर हेक्टरी सुपारी लागवडीचा चालू उत्पादन खर्च रु. २६,४४५ इतका असून दर हेक्टरी सुपारीपासून उत्पन्न रु. ४४,००९.३१ प्राप्त झाल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते. अशा प्रकारे वरील तक्त्यावरून जिल्हयात सुपारी लागवडीपासून मिळणारे उत्पादन, त्याचा चालू एकूण खर्च आणि उत्पन्न यांचे संशोधन आकडेवारीवरून विश्लेषण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.६५

**सिंधुदुर्ग जिल्हा एकूण कोकम उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या
उत्पादन उत्पन्न खर्चाचे विश्लेषण (२०११)
(कोकम उत्पादक लाभार्थी १४)**

| | जमिन (क्षेत्र गुंठे) | दर रु | उत्पादन (कि.ग्रॅ.) | उत्पन्न रु |
|---------------|-------------------------|-------|-----------------------|------------|
| एकूण | ९३ | -- | २९४५ | ६७००० |
| कमीतकमी | ५ | २० | २० | ४००० |
| जास्तित जास्त | १० | ६० | ५०० | १८००० |
| विस्तार | ५ | ४० | ४८० | १४००० |
| सरासरी | ६.६४ | ४५ | २१०.३५ | ११११६.६७ |
| प्रमाण विचलन | २.३४ | १२.२५ | १५८.४८ | ५२३१.२२ |
| दर हेक्टरी | -- | -- | ३१६६.६७ | ७२०४३.०१ |

स्रोत : संकलित प्राथमिक तथ्याच्या आधारे

टिप - एकूण २५ कोकम लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १४ कोकम उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांनी दिलेल्या माहितीवरून विश्लेषण केले आहे.

तक्ता क्र. ६.६५ मध्ये रोजगार हमी योजनेतर्गत जिल्हयात एकूण १४ (१००%) कोकम उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांचा दर हेक्टरा उत्पादन उत्पन्नाच्या आकडेवारीवरून जिल्हयात एकूण ९३ गुंठे क्षेत्रावर कोकम लागवड झालेली आहे. कमीतकमी ५ गुंठे क्षेत्रापासून जास्तीतजास्त १० गुंठे क्षेत्रावर लागवड आहे. जिल्हयात कोकम लागवडीपासून एकूण २९४५ कि.ग्रॅ.चे उत्पादन झालेले आहे. जिल्हयात १ किलो कोकमचा दर २० रुपये असून जास्तीतजास्त दर ६० रु.पर्यंत असून सरासरी कोकमचा १ कि.ग्रॅ.चा दर ४५ रु.जिल्हयामध्ये आढळून आला आहे. जिल्हयाचे दर हेक्टरा कोकम उत्पादन ३१६६.६७ किग्रॅ.आहे. कोकमपासून जिल्हयातील लाभार्थी शेतकऱ्यांचे एकूण मिळणारे उत्पन्न रु. ७२,०४३.०१ इतके असल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले.

तक्ता क्र. ६.६६

फळझाड लागवडीवर परीणाम करणाऱ्या नैसर्गिक आपत्तीचे सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | अनियमित पाऊस | | | धुके | | | वादळ | | | बुरशी | | |
|------------------------|-----------|--------------|----------|-------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|---------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ५९ | १३ | ७२ | ६१ | ११ | ७२ | ३७ | ३५ | ७२ | ११ | ६० | ७२ |
| | टक्केवारी | (८१.९०) | (१८.१००) | (१००) | (८४.७०) | (१५.३०) | (१००) | (५१.४०) | (४८.६०) | (१००) | (१५.५०) | (८४.५०) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ५४ | ६ | ६० | ५४ | ६ | ६० | ३२ | २८ | ६० | १५ | ४५ | ६० |
| | टक्केवारी | (९०.००) | (१०.००) | (१००) | (९०.००) | (१०.००) | (१००) | (५३.४०) | (४६.६०) | (१००) | (२५.००) | (७५.००) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ५६ | १९ | ७५ | ४८ | २८ | ७६ | २२ | ५३ | ७५ | २ | ७४ | ७६ |
| | टक्केवारी | (७४.६०) | (२५.३०) | (१००) | (६३.००) | (३७.००) | (१००) | (२९.४०) | (७०.६०) | (१००) | (२.७०) | (९७.३०) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ४९ | २२ | ७१ | ४६ | २५ | ७१ | ११ | ६० | ७१ | १ | ७० | ७१ |
| | टक्केवारी | (६९.००) | (३१.००) | (१००) | (६४.७०) | (३५.३०) | (१००) | (१५.४०) | (८४.५०) | (१००) | (१.५०) | (९८.५०) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ६१ | १० | ७१ | ६४ | ७ | ७१ | ५० | २१ | ७१ | ५० | २१ | ७१ |
| | टक्केवारी | (८५.९०) | (१४.१०) | (१००) | (९०.१०) | (९.९०) | (१००) | (७०.४०) | (२९.६०) | (१००) | (७०.४०) | (२९.६०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ५८ | १ | ५९ | ५७ | २ | ५९ | ८ | ५१ | ५९ | ७ | ५२ | ५९ |
| | टक्केवारी | (९८.०३) | (१.०७) | (१००) | (९६.६०) | (३.४०) | (१००) | (१२.१०) | (८७.९०) | (१००) | (१९.९०) | (८८.१०) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ४४ | ३३ | ७७ | ३१ | ४६ | ७७ | २१ | ५६ | ७७ | १६ | ६१ | ७७ |
| | टक्केवारी | (५७.१०) | (४२.८०) | (१००) | (४०.३०) | (५९.७०) | (१००) | (२७.३०) | (७२.७०) | (१००) | (२०.७०) | (७९.३०) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ७४ | १२ | ८६ | ७० | १६ | ८६ | ३२ | ५४ | ८६ | ९ | ७७ | ८६ |
| | टक्केवारी | (८६.१०) | (१३.९०) | (१००) | (८१.४०) | (१८.६०) | (१००) | (३७.३०) | (६२.७०) | (१००) | (१०.५०) | (८९.५०) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | ४५५ | ११६ | ५७१ | ४३१ | १४१ | ५७२ | २१२ | ३५८ | ५७२ | १११ | ४६० | ५७२ |
| | टक्केवारी | (७९.६०) | (२०.४०) | (१००) | (७५.३०) | (२४.७०) | (१००) | (३७.२०) | (६२.८०) | (१००) | (१९.५०) | (८०.५०) | (१००) |

तक्ता क्र. ६.६६ (१)

| तालुका | | वणवा | | | किडे | | | तापमानातील बदल | | |
|------------------------|-----------|---------|----------|-------|---------|---------|-------|----------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | २० | ५२ | ७२ | १९ | ५३ | ७२ | ५७ | १२ | ७२ |
| | टक्केवारी | (२७.७०) | (७२.३०) | (१००) | (३६.४०) | (७३.६०) | (१००) | (७९.००) | (२१.०) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | १५ | ४५ | ६० | २७ | ३३ | ६० | ३४ | २६ | ६० |
| | टक्केवारी | (२५.००) | (७५.००) | (१००) | (४५.००) | (५५.००) | (१००) | (५६.६०) | (४३.४०) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ५ | ७० | ७५ | १७ | ५९ | ७५ | २२ | ५३ | ७५ |
| | टक्केवारी | (६.७०) | (९३.३०) | (१००) | (२२.४०) | (७७.६०) | (१००) | (२९.४०) | (७०.६०) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ० | ७१ | ७१ | ५ | ६६ | ७१ | १० | ६१ | ७१ |
| | टक्केवारी | (०.००) | (१००.००) | (१००) | (७.१०) | (९२.१०) | (१००) | (१४.१०) | (८५.९०) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | १९ | ५२ | ७१ | २९ | ४२ | ७१ | १९ | ५२ | ७१ |
| | टक्केवारी | (२६.७०) | (७३.३०) | (१००) | (४०.९०) | (५९.१०) | (१००) | (३६.७०) | (७३.३०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ७ | ५२ | ५९ | १९ | ४० | ५९ | २७ | ३२ | ५९ |
| | टक्केवारी | (११.९०) | (८८.१०) | (१००) | (३२.३०) | (६७.७०) | (१००) | (३७.१५) | (६२.८५) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | २७ | ५० | ७७ | २४ | ५३ | ७७ | २६ | ४४ | ७७ |
| | टक्केवारी | (३५.००) | (६५.००) | (१००) | (३१.१०) | (६८.९०) | (१००) | (३७.१५) | (६२.८५) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ८ | ७८ | ८६ | २० | ६६ | ८६ | ५४ | ३२ | ८६ |
| | टक्केवारी | (९.४०) | (९०.६०) | (१००) | (२३.३०) | (७६.७०) | (१००) | (६२.७०) | (३७.३०) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | १०१ | ४७० | ५७१ | १६० | ४१२ | ५७१ | २४९ | ३१२ | ५६४ |
| | टक्केवारी | (१७.६०) | (८२.४०) | (१००) | (२७.९०) | (७२.१०) | (१००) | (४४.३८) | (५५.६२) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

टिप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

तक्ता क्र. ६.६६ मध्ये फळझाड लागवडीवर परिणाम करणाऱ्या नैसर्गिक आपत्तीचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय विश्लेषण पुढीलप्रमाणे केलेले आहे. एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ४५५ (७९.६%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या मते अनियमित पावसाचा परिणाम उत्पादनावर होतो. यामध्ये जास्तितजास्त ५८ (२८.३०%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील असून ४४ (५७.९०%) लाभार्थी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत. उशिरा पावसामुळे मोहर वेळाने येतो. फळे हाती येण्यास वेळ लागतो. पुन्हा त्याच काळात पाऊस झाल्यास त्याचा ९०% आंबा उत्पादनावर परिणाम होतो. एकूण ४३९ (७५.३०%) नमुना शेतकऱ्यांना नैसर्गिक धुके आपत्तीचा परिणाम दिसून आलेला आहे. यामध्ये ५७ (९६.६०%) नमुना लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील असून कमीत कमी ३९ (४०.२०%) नमुना लाभार्थी शेतकरी वैभववाडी तालुक्यातील आहेत. एकूण २९२ (३७.९०%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना वादळ या नैसर्गिक आपत्तीचा परिणाम आढळून आला आहे. यामध्ये ५० (७०.४०%) शेतकरी मालवण तालुक्यातील असून कमीत कमी ७ (९२%) शेतकरी सावंतवाडी तालुक्यातील आहेत. वादळामुळे फळझाडांचे फार मोठ्या प्रमाणात नुकसान होते. दरवर्षी जानेवारी-फेब्रुवारी महिन्यात जंगलातील गवताला आग लावली जाते. तर कधी ती आग सगळीकडे पसरते. त्याला वणवा म्हणतात. या वणव्यामुळे नविन केलेली फळझाड लागवड आगीत नष्ट होते. एकूण ९०९ (९७.६०%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना या वणव्याचा परिणाम दिसून आला आहे.

किडीचा परिणाम : एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ९६० (२७.९०%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना किडीचा परिणाम आढळून आला आहे. तापमानातील बदलात अतिउष्णतेमुळे मोठ्या प्रमाणात आंबा पिकांची फळे गळून पडतात. एकूण २४९ (४४%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना यांचा परिणाम दिसून आला आहे. यामध्ये जास्तितजास्त ५७ (७९%) नमुना लाभार्थी देवगड तालुक्यातील असून कमीत कमी ९० (९४%) लाभार्थी कुडाळ तालुक्यातील आहेत.

अशाप्रकारे वरील नैसर्गिक आपत्तीचा परिणाम विशेषतः मालवण, सावंतवाडी, देवगड या तालुक्यातील आंबा उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांवरती जास्त परिणाम झालेला संशोधन आकडेवाडीवरून आढळून आला आहे.

तक्ता क्र. ६.६७

फळझाड लागवडीच्या समस्यांचे तालुकानिहाय सांख्यिकीय वर्गीकरण

| तालुका | | नैसर्गिक आपत्ती | | | मजूर टंचाई | | | अपुरी जलसिंचन सुविधा | | | संयुक्त सातबारा | | | जमिनीचे तुकडीकरण | | |
|------------------------|-----------|-----------------|---------|-------|------------|---------|-------|----------------------|---------|-------|-----------------|---------|-------|------------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ६६ | ६ | ७२ | ५५ | १७ | ७२ | ३७ | ३५ | ७२ | ३७ | ३५ | ७२ | ३५ | ३७ | ७२ |
| | टक्केवारी | (९१.७०) | (८.३०) | (१००) | (७६.४०) | (२३.६०) | (१००) | (५१.४०) | (४८.६०) | (१००) | (५१.४०) | (४८.६०) | (१००) | (४८.६०) | (५१.४०) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | २१ | ३९ | ६० | १९ | ४१ | ६० | २४ | ३६ | ६० | २१ | ३९ | ६० | २२ | ३६ | ६० |
| | टक्केवारी | (३५.००) | (६५.००) | (१००) | (३१.७०) | (६८.३०) | (१००) | (४०.००) | (६०.००) | (१००) | (३५.००) | (६५.००) | (१००) | (३६.७०) | (६३.३०) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ६८ | ८ | ७६ | ६१ | १५ | ७६ | ५९ | १७ | ७६ | ५७ | १९ | ७६ | ४३ | ३३ | ७६ |
| | टक्केवारी | (८९.५०) | (१०.५०) | (१००) | (८०.३०) | (१९.७०) | (१००) | (७७.६०) | (२२.४०) | (१००) | (७५.००) | (२५.००) | (१००) | (५६.६०) | (४३.४०) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ६४ | ७ | ७१ | ५६ | १५ | ७१ | ३० | ४१ | ७१ | ५५ | १६ | ७१ | ४६ | २५ | ७१ |
| | टक्केवारी | (९०.१०) | (९.९०) | (१००) | (७८.९०) | (२१.१०) | (१००) | (४२.३०) | (५७.७०) | (१००) | (७७.५०) | (२२.५०) | (१००) | (५६.६०) | (४३.४०) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ४९ | २२ | ७१ | ५५ | १६ | ७१ | ४२ | २९ | ७१ | ३६ | ३५ | ७१ | २३ | ४८ | ७१ |
| | टक्केवारी | (६९.००) | (३१.००) | (१००) | (७७.५०) | (२२.५०) | (१००) | (५९.२०) | (४०.८०) | (१००) | (५०.७०) | (४९.३०) | (१००) | (३२.२०) | (६७.६०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ४१ | १८ | ५९ | ५४ | ५ | ५९ | ५८ | १ | ५९ | ४३ | १६ | ५९ | ४७ | १२ | ५९ |
| | टक्केवारी | (६९.५०) | (३०.५०) | (१००) | (९१.५०) | (८.५०) | (१००) | (९८.३०) | (१.७०) | (१००) | (७२.९०) | (२७.१०) | (१००) | (७९.७०) | (२०.३०) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ५३ | २४ | ७७ | ४५ | ३२ | ७७ | ३६ | ४१ | ७७ | ३१ | ४६ | ७७ | २९ | ४८ | ७७ |
| | टक्केवारी | (६८.८०) | (३१.२०) | (१००) | (५८.४०) | (४१.६०) | (१००) | (४६.६०) | (५३.२०) | (१००) | (४०.३०) | (५९.७०) | (१००) | (३७.७०) | (६२.३०) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ७६ | १० | ८६ | ७२ | १४ | ८६ | ५८ | २८ | ८६ | ७५ | ११ | ८६ | ८० | ६ | ८६ |
| | टक्केवारी | (८८.३०) | (११.६०) | (१००) | (८३.७०) | (१६.३०) | (१००) | (६७.४०) | (३२.६०) | (१००) | (८२.२०) | (१७.८०) | (१००) | (९३.००) | (७.००) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | ४३८ | १३४ | ५७२ | ४१७ | १५५ | ५७२ | ३४४ | २२८ | ५७२ | ३५५ | २१७ | ५७२ | ३२५ | २४७ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (७६.५०) | (२३.४०) | (१००) | (७२.९०) | (२७.१०) | (१००) | (६०.१०) | (३९.९०) | (१००) | (६२.१४०) | (३७.९०) | (१००) | (५६.८०) | (४३.५०) | (१००) |

तक्ता क्र. ६.६७ (१)

| तालुका | | कमी किंमत | | | दर्जेदार/गुणवत्तायुक्त कलमांचा अभाव | | | वन्य प्राण्यापासून धोका | | | चोरी | | |
|------------------------|-----------|-----------|---------|-------|-------------------------------------|---------|-------|-------------------------|---------|-------|---------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ५७ | १८ | ७२ | ४३ | २९ | ७२ | ३७ | ३५ | ७२ | २५ | ४७ | ७२ |
| | टक्केवारी | (७९.२०) | (२०.८०) | (१००) | (५९.७०) | (४०.३०) | (१००) | (५१.४०) | (४८.६०) | (१००) | (३४.७०) | (६५.३०) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | २३ | ३७ | ६० | २१ | ३९ | ६० | ५८ | २ | ६० | २२ | ३८ | ६० |
| | टक्केवारी | (३८.३०) | (६१.७०) | (१००) | (३५.००) | (६५.००) | (१००) | (९६.७०) | (३.३०) | (१००) | (३६.७०) | (६२.३०) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | ५५ | २१ | ७६ | ४६ | ३० | ७६ | २४ | ५२ | ७६ | १९ | ५७ | ७६ |
| | टक्केवारी | (७२.४०) | (२७.६०) | (१००) | (६०.५०) | (३९.५०) | (१००) | (३१.६०) | (६८.४०) | (१००) | (२५.००) | (७५.००) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | २५ | ४६ | ७१ | ४४ | २७ | ७१ | ४० | ३१ | ७१ | ४० | ३१ | ७१ |
| | टक्केवारी | (३५.२०) | (६४.८०) | (१००) | (६२.००) | (३८.००) | (१००) | (५६.३०) | (४३.७०) | (१००) | (५६.३०) | (४३.७०) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | ५५ | १६ | ७१ | २६ | ४५ | ७१ | ७ | ६४ | ७१ | ८ | ६३ | ७१ |
| | टक्केवारी | (७७.५०) | (२२.५०) | (१००) | (३६.६१) | (६३.३८) | (१००) | (९.९०) | (९०.१०) | (१००) | (११.३०) | (८८.७०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ४३ | १३ | ५९ | २५ | ३४ | ५९ | २९ | ३० | ५९ | १२ | ४७ | ५९ |
| | टक्केवारी | (७२.९०) | (२७.१०) | (१००) | (३६.६०) | (६३.४०) | (१००) | (४९.२०) | (५०.६०) | (१००) | (२०.३०) | (७९.२०) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | ६९ | ८ | ७७ | ३५ | ४२ | ७७ | १८ | ५९ | ७७ | १६ | ६१ | ७७ |
| | टक्केवारी | (८९.६०) | (१४.४०) | (१००) | (४५.५०) | (५४.५०) | (१००) | (२३.४०) | (७६.६०) | (१००) | (२०.८०) | (७९.२०) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ७९ | ७ | ८६ | ५५ | ३१ | ८६ | १५ | ७१ | ८६ | ७ | ७९ | ८६ |
| | टक्केवारी | (९१.१०) | (८.१०) | (१००) | (६४.००) | (३६.००) | (१००) | (१७.४०) | (८२.६०) | (१००) | (८.१०) | (९१.९०) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | ४०६ | १६६ | ५७२ | २९५ | २७७ | ५७२ | २२८ | ३४४ | ५७२ | १४९ | ४२३ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (७१.००) | (२९.००) | (१००) | (५१.५०) | (४८.५०) | (१००) | (३९.९०) | (६०.१०) | (१००) | (२६.००) | (७४.००) | (१००) |

तक्ता क्र. ६.६७ (२)

| तालुका | | तज्ञ कृषी अधिकाऱ्यांचा अभाव | | | पारदर्शकतेचा अभाव | | | प्रशासकीय अडचणी | | | पुनर्लागवड खर्च | | |
|------------------------|-----------|-----------------------------|---------|-------|-------------------|---------|-------|-----------------|---------|-------|-----------------|---------|-------|
| | | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण | होय | नाही | एकूण |
| देवगड | लाभार्थी | ३७ | ३५ | ७२ | २६ | ४६ | ७२ | १५ | ५७ | ७२ | २७ | ४५ | ७२ |
| | टक्केवारी | (५१.४०) | (४६.८०) | (१००) | (३६.१०) | (६३.९०) | (१००) | (२०.८०) | (७९.२०) | (१००) | (३७.५०) | (६२.५०) | (१००) |
| दोडामार्ग | लाभार्थी | ३८ | २२ | ६० | ४७ | १३ | ६० | ४६ | १४ | ६० | ३२ | २८ | ६० |
| | टक्केवारी | (६३.३०) | (३६.७०) | (१००) | (७८.३०) | (२१.७०) | (१००) | (७६.७०) | (२३.३०) | (१००) | (५३.३०) | (४६.७०) | (१००) |
| कणकवली | लाभार्थी | २१ | ५५ | ७६ | २४ | ५२ | ७६ | २१ | ५५ | ७६ | २२ | ५४ | ७६ |
| | टक्केवारी | (२७.६०) | (७२.४०) | (१००) | (३१.६०) | (६८.४०) | (१००) | (२७.६०) | (७२.४०) | (१००) | (२८.९०) | (७१.९०) | (१००) |
| कुडाळ | लाभार्थी | ३० | ४१ | ७१ | १७ | ५४ | ७१ | १३ | ५८ | ७१ | ३० | ४१ | ७१ |
| | टक्केवारी | (४२.३०) | (५७.७०) | (१००) | (५०.७०) | (४९.३०) | (१००) | (४५.१०) | (५४.९०) | (१००) | (२६.८०) | (७३.२०) | (१००) |
| मालवण | लाभार्थी | २१ | ५० | ७१ | १७ | ५४ | ७१ | १३ | ५८ | ७१ | ३० | ४१ | ७१ |
| | टक्केवारी | (२९.६०) | (७०.४०) | (१००) | (२७.१०) | (७२.९०) | (१००) | (१५.३०) | (८४.७०) | (१००) | (५२.५०) | (४७.५०) | (१००) |
| सावंतवाडी | लाभार्थी | ४१ | १८ | ५९ | १६ | ४३ | ५९ | ९ | ५० | ५९ | ३१ | २८ | ५९ |
| | टक्केवारी | (६९.५०) | (३०.५०) | (१००) | (२७.१०) | (७२.९०) | (१००) | (१५.३०) | (८४.७०) | (१००) | (५२.५०) | (४७.५०) | (१००) |
| वैभववाडी | लाभार्थी | १७ | ६० | ७७ | २२ | ५५ | ७७ | ८ | ६९ | ७७ | १४ | ६३ | ७७ |
| | टक्केवारी | (२२.१०) | (७७.९०) | (१००) | (२८.६०) | (७१.४०) | (१००) | (१०.४०) | (८९.६०) | (१००) | (१८.२०) | (८१.८०) | (१००) |
| वेंगुर्ला | लाभार्थी | ५२ | ३४ | ८६ | ३६ | ५० | ८६ | १६ | ७० | ४८ | ५१ | ३५ | ८६ |
| | टक्केवारी | (६०.५०) | (३९.५०) | (१००) | (४१.९०) | (५८.१०) | (१००) | (१८.६०) | (८१.४०) | (१००) | (५९.३०) | (४०.७०) | (१००) |
| एकूण सिंधुदुर्ग जिल्हा | लाभार्थी | २५७ | ३१५ | ५७२ | २२४ | ३४४ | ५७२ | १६२ | ४१२ | ५७२ | २२६ | ३४६ | ५७२ |
| | टक्केवारी | (४४.९०) | (५५.१०) | (१००) | (३९.२०) | (६०.८०) | (१००) | (२८.००) | (७२.००) | (१००) | (३९.५०) | (६०.५०) | (१००) |

स्त्रोत : संकलित प्राथमिक तक्त्याच्या आधारे

टिप : कंसातील अंक आडव्या ओळीतील संख्येची टक्केवारी दर्शवितात.

तक्ता क्र. ६.६७ मध्ये, जिल्ह्यात रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवड करताना लाभार्थींच्या तालुकानिहाय समस्यांच्या विश्लेषणामध्ये मजूर टंचाई हा यामधील महत्त्वाचा घटक असून प्रत्येक हंगामात योग्य वेळी मजूर उपलब्ध होत नसल्यामुळे त्याचा परिणाम फळझाड लागवडीवर होतो. एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ४१७ (७२.९०%) लाभार्थी शेतकऱ्यांना ही समस्या जाणवली. यामध्ये जास्तित जास्त ५४ (९१.५०%) लाभार्थी सावंतवाडी तालुक्यातील असून कमीत कमी १९ (३१.७%) नमुना लाभार्थी दोडामार्फत तालुक्यातील आहेत. अपुऱ्या जलसिंचन सुविधा : एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३४४ (६०.१०%) नमुना लाभार्थींनी ही समस्या आढळून आली. यामध्ये जास्तितजास्त ५८ (९८.३०%) नमुना लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीत कमी २४ (४०%) नमुना लाभार्थी दोडामार्ग लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. संयुक्त सातबारा : फळबाग लागवड करताना स्वतःच्या नावे सातबारा असेल तर फळबाग लागवडीसाठी १००% नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३५५ (६१.१०%) लाभार्थींना ही समस्या जाणवते. यामध्ये जास्तित जास्त ७५ (८२.२०%) नमुना लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील असून कमीत कमी २१ (३५%) नमुना लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत.

जमिनीचे तुकडीकरण : फळबाग लागडीसाठी शेतजमीन एकत्रित असल्यामुळे फळबागेचे संरक्षण आणि संवर्धन करणे सोईचे होते. एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३२५ (५६.८०%) नमुना लाभार्थ्यांना ही समस्या दिसून आली. यामध्ये ८० (९३%) लाभार्थी तालुक्यातील असून २२ (३६.७०%) नमुना लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यातील आहेत. कृषी तज्ञांच्या मार्गदर्शनाची गरज : शास्त्रीय फळबाग लागवडीसाठी सतत कृषी तज्ञांच्या मार्गदर्शनाची गरज असते. पण ती गरज भागत नाही. एकूण ३५१ (६१.४०%) नमुना लाभार्थींना ही समस्या जाणवते. कमी किंमत : याचा परिणाम नवीन फळबाग लागवडीवर होतो. जिल्ह्यातील एकूण ४०६ (७०%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना ही समस्या आढळून आली. म्हणजे सर्वच तालुक्यातील नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांचा समावेश असल्याचे संशोधन आकडेवाडीवरून आढळून आला.

दर्जेदार / गुणात्मक कलमांचा अभाव : फळबाग लागवड योजना यशस्वी राबविण्यासाठी चांगले उत्पादन येण्यासाठी, दर्जेदार, गुणवत्तायुक्त कलमांची गरज असते.

परन्तु त्या विशिष्ट कालखंडात आवश्यक अशी गुणवत्तायुक्त दर्जेदार कमले उपलब्ध होत नाहीत. जिल्ह्यातील एकूण २९५ (५१.५०%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना ही समस्या आढळून आली आहे.

वन्यप्राण्यांपासून धोका आणि चोरी : वन्यप्राण्यांपासून फळबागेचे फार मोठे नुकसान होते. तसेच जिल्ह्यात फळबागेत चोरीपासून फळबागेच्या उत्पादनावर परिणाम होतो. दोडामार्ग तालुक्यातील ५८ (९६.७०%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या फळबागेत वन्य प्राण्यांपासून धोका निर्माण झाल्याचे दिसून आले. ही समस्या इतर तालुक्यात कमी प्रमाणात आढळून येते.

ग्रामीण भागातील शेतकऱ्यांना तज्ञ कृषी अधिकाऱ्यांच्या मार्गदर्शनाच्या अभावामुळे फळबाग लागवडीवर परिणाम झाल्याचे आढळते. जिल्ह्यातील एकूण २५७ (४४.९०%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांनाही समस्या आढळून आली आहे.

पारदर्शकतेचा अभाव : जिल्ह्यातील एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी २२४ (३९.२०%) नमुना लाभार्थींना ही समस्या आढळून आली. यामध्ये जास्तित जास्त ४७ (७८.३०%) लाभार्थी मालवण तालुक्यातील असल्याचे आढळून येते. पारदर्शकतेच्या अभावामुळे शेतकरी फळबाग लागवडीपासून दूर जात आहे.

प्रशासकीय अडचणी : रोजगार हमी योजनेतर्गत फळझाड लागवड करताना प्रशासकीय अडचणीमुळे या योजनेचा लाभ घेता येत नाही. जिल्ह्यातील एकूण १६० (२८%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना ही समस्या आढळून येते.

पुनर्लागवड खर्च : पुनर्लागवड खर्च ही जिल्ह्यातील एक समस्या आहे. अशावेळी येणारा खर्च शेतकऱ्यांना न परवडणारा आहे. जिल्ह्यातील एकूण २२६ (३९.०५%) नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना ही समस्या आढळून आली.

अशाप्रकारे वरील तक्त्यामधून जिल्ह्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांना फळझाड लागवड करताना येणाऱ्या समस्यांचे तालुकानिहाय विश्लेषण केलेले आहे. प्रत्येक तालुक्यात या समस्यांची तीव्रता कमी जास्त आहे. परंतु त्याचा भविष्यकालीन परिणाम फळझाड लागवडीवर होत आहे असे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले आहे.

प्रकरण योजना

प्रकरण सातवे

निष्कर्ष आणि शिफारशी

७.१ प्रास्ताविक

प्रस्तुत संशोधनाचा विषय रोजगार हमी योजनेतर्गत सिंधुदूर्ग जिल्ह्यात राबविलेल्या फळझाड योजनेचा आर्थिक पाहणी अभ्यास (१९९१-२००१) हा असून संशोधकाने लाभार्थी शेतकऱ्यांची प्रश्नावली द्वारे, संशोधन अभ्यासासाठी आवश्यक ती माहिती संकलित केलेली आहे. या मिळालेल्या माहितीनुसार केलेल्या वर्गीकरणातून व विश्लेषणातून खालील निष्कर्ष दिसून आलेत. संशोधकाला मिळालेल्या निष्कर्षावर आधारित विविध शिफारशी सुचविलेल्या आहेत.

७.२ गृहित कृत्यांची पडताळणी (Verification of Hypothesis)

रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवड योजनेमुळे, सिंधुदूर्ग जिल्ह्याचा आर्थिक विकास आणि रोजगाराच्या संधीत वाढ झालेली आहे. या गृहित कृत्यांचा विचार करता सिंधुदूर्ग जिल्ह्याच्या आर्थिक विकासासाठी आवश्यक असणाऱ्या पायाभूत सुविधा उदा. शिक्षण, रस्ते, विज, पाणी, आरोग्य या योजनेमुळे अप्रत्यक्षपणे निर्माण झालेल्या आहेत. आंबा, काजू, नारळ, सुपारी, कोकम या विविध फळपिकांच्या लागवडीखाली मोठ्या प्रमाणात कनिष्ठ प्रकारची पडिक जमीन आली. शेती व्यवसायात जलसिंचनासाठी १३६ (२३.८%) लाभार्थीकडे तुषार सिंचन, ठिबक सिंचन ८४ (१४.७४%) शेतकऱ्यांकडे आहेत. याशिवाय जिल्ह्यातील फळ उत्पादक शेतकऱ्यांकडे पॉवर ट्रेलर ३४ (६.२८%), मोठा ट्रॅक्टर १६ (२.९४%), कलमे कटिंग अवजारे ३१८ (५८.३०%), औषध फवारणी पंप ९६ (१७.२४%), स्टोअर रुम १११ (२०.७८%) अशा महागड्या आणि खर्चिक सुविधा, फळबागेतून मिळणाऱ्या उत्पन्नातून निर्माण केल्या आहेत. शेतकऱ्यांच्या राहणीमानात भौतिक सुखसोईची वाढ झालेली आहे. याचाच अर्थ त्यांचा आर्थिक विकास होत आहे. जीवनमानाचा दर्जा उंचावत आहे.

जिल्ह्यात लाभार्थी कुटुंबाना आणि बाहेरील स्त्री पुरुषांना रोजगाराचे महत्वाचे साधन या योजनेच्या अंमलबजावणीमुळे प्राप्त झाले आहे. जून ते सप्टेंबर या कालखंडात एकूण ४०२ आणि ५११ लाभार्थी कुटुंबात, ऑक्टोबर ते जानेवारी एकूण ४९२ आणि ५१४ लाभार्थी कुटुंबात, फेब्रुवारी ते मे एकूण ५०१ आणि ५१८ लाभार्थी कुटुंबात स्त्री-पुरुषांना रोजगार उपलब्ध झाल्याचे आढळून आले. फळबाग लागवडीसाठी उपलब्ध बाहेरील स्त्री-पुरुषांना रोजगार निर्मितीच्या संधी उपलब्ध झाल्या आहे. जून ते सप्टेंबर या कालखंडात एकूण ४२१ आणि ४३० लाभार्थींकडे ऑक्टोबर ते जानेवारी एकूण ४२९ आणि ४१५ लाभार्थींकडे, फेब्रुवारी ते मे एकूण ४०३ आणि ४१४ लाभार्थींकडे बाहेरील स्त्री आणि पुरुषांना रोजगार निर्माण झाल्याचे आढळून येते. स्त्री-पुरुषांच्या दैनंदिन कालखंडात मिळणाऱ्या मजुरी दरापेक्षा फळहंगामाच्या कालखंडात मिळणारी मजुरी अधिक आहे. फळबागेवर संरक्षणासाठी औषधांचा, रासायनिक आणि सेंद्रिय खतांचा वापर होतो. जिल्ह्यातील फळ उत्पादकांच्या उत्पन्न खर्चाच्या आकडेवारीवरून दैनंदिन दर हेक्टरी खर्चापेक्षा उत्पन्न जास्त आहे. यावरून फळबाग व्यवसाय नफ्यात आहे हे स्पष्ट होते. म्हणजेच जिल्ह्यासाठी फळबाग हे एक वरदान ठरले आहे. यावरून असे म्हणता येईल की, फळबाग योजनेमुळे जिल्ह्याच्या आर्थिक विकासाबरोबर रोजगारात वाढ झाली आहे. या गृहित कृत्याची पडताळणी प्रकरण ६ मध्ये तक्ता क्र. ६.१३, ६.१५, ६.१८, ६.२१, ६.२४, ६.२७, ६.३०, ६.३५, ६.३६, ६.३७, ६.३८, ६.५०, ६.५६, ६.५७, ६.५९, ६.६०, ६.६२, ६.६३ यावरून हे गृहितक सिद्ध होते.

७.३ निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत संशोधनात जिल्ह्यातील ५७२ नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांची प्रश्नावलीच्या सहाय्याने माहिती संकलित केली असून या संकलित माहितीचे विश्लेषण व सादरीकरणातून खालील निष्कर्ष प्राप्त झालेले आहेत.

- १) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील नमुना फलोत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ५२७ (९२.१४%) पुरुष आणि ४५ (७.८६%) स्त्रिया लाभार्थी असल्याचे आढळून आले आहे. यावरून सर्वाधिक नमुना फलोत्पादक लाभार्थी पुरुष आहेत हे स्पष्ट होते. स्त्री लाभार्थी दोडामार्ग तालुक्यात आढळून येतात.

- २) जिल्ह्यातील नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १९ ते ६० या कर्त्या वयोगटातील लाभार्थ्यांचे प्रमाण ८५.६७% एवढे आहे. असे वयोगट जिल्ह्यातील सर्वच तालुक्यात आढळून आले ही उल्लेखनीय बाब आहे. ६१ पेक्षा जास्त वय असणारे ८२ (१४.३३%) लाभार्थी आहेत.
- ३) लाभार्थी शेतकऱ्यांचे शैक्षणिक स्थितीचे सर्वाधिक प्रमाण माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तरावरील असून ते ६९.७५% एवढे आहे. तुलनेने उच्च शैक्षणिक पात्रता असणाऱ्या लाभार्थ्यांचे प्रमाण अल्प आहे. २६ (४.५५%) लाभार्थी निरक्षर असून पदवीधर लाभार्थी जिल्ह्यात मालवण तालुक्यात अधिक असल्याचे आढळून आले आहे.
- ४) जिल्ह्यातील नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३३२ (६१.४८%) लाभार्थी खुल्या प्रवर्गातील आहेत. एस्.सी. ३३ (६.१२%), एस्.टी. ८ (१.४८%), एन्.टी. १८ (३.३४%), ओबीसी १३५ (२५% आणि १४ (२.६९%) बी. सी. या प्रवर्गातील आहे.
- ५) जिल्ह्यात नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी ३६ (६.३%) लाभार्थीकडे अर्धा ते एक एकर शेतजमिन असून, १ ते २.५ एकर शेतजमिन ८६ (१४.९%) लाभार्थीकडे आहे. २.५ ते ५ एकर १९३ (३३.७%) शेतकरी आहेत. ५ ते १० एकर १४४ (२५.२%) आणि १० ते २५ एकर ९६ (१६.८%) आणि २५ एकरपेक्षा जास्त १८ (३.१%) लाभार्थीकडे आहे. ही सर्व जमीन स्वतःच्या मालकीची आहे. १० ते २५ एकर कार्यक्षेत्र असणारे लाभार्थी देवगड, कुडाळ, वैभववाडी, मालवण आणि सावंतवाडी तालुक्यात आहेत.
- ६) नमुना प्रतिसाद कर्त्यांपैकी १२ (२.१%) शेतकऱ्यांकडे अर्धा एकरपेक्षा कमी क्षेत्र फळझाड लागवडीखाली आहे. २५ एकरापेक्षा अधिक क्षेत्र जिल्ह्यातील केवळ ४ (०.८%) शेतकऱ्यांकडे आहे. सर्वाधिक १ एकर ते २.५ एकर क्षेत्र फळझाड लागवडीखाली असलेल्या शेतकऱ्यांचे प्रमाण २६९ (४६.७%) एवढे आहे.
- ७) जिल्ह्यात ५७२ नमुना लाभार्थी पैकी ३९७ लाभार्थीकडे लागवडीयोग्य पडिक जमीनीचे क्षेत्र आहे. अर्धा एकरपेक्षा कमी ५० (१२.६%), अर्धा ते १ एकर

९८ (२४.७%), १ ते २.५ एकर १७२ (४३.३%), २.५ ते ५ एकर ४४ (११.१%), ५ ते १० एकर २५ (६.३%), १० ते २५ एकर ७ (१.८%) आणि २५ एकरपेक्षा जास्त, १ (०.२%) लाभार्थी शेतकऱ्याकडे आजही लागवडीयोग्य पडिक जमिनीचे क्षेत्र आहे. तसेच कायमस्वरूपी पडित जमिनीचे प्रमाण देखील मोठ्या प्रमाणात आहे. त्यामुळे फलोत्पादन लागवडीला आजही संधी असल्याचे संशोधनातून आढळून येते.

- ८) जिल्ह्यातील लाभार्थींच्या विविध उत्पन्नाच्या साधनापैकी ५५२ (९६.५०%) लाभार्थींना शेतीपासून उत्पन्न मिळते. तर २० (३.५०%) लाभार्थींना अजून शेतीपासून उत्पन्न नाही. जिल्ह्यात शेती हेच उत्पन्नाचे महत्त्वाचे साधन असल्याचे आढळून येते. याशिवाय पशुपालन ८१ (१४.१६%), नोकरी १२५ (२१.९०%), व्यापार व व्यवसाय १०८ (१८.९२%) आणि दैनंदिन मजुरी करणारे १६४ (२८.७२%) लोक आहेत. यावरून जिल्ह्यांची संपूर्ण अर्थव्यवस्था शेतीवरच आधारीत आहे असे संशोधनातून आढळून येते.
- ९) लाभार्थींच्या प्राथमिक माहितीच्या अध्ययनातून २९९ (५२.२८%) लाभार्थी २ लाख ते ३ लाख वार्षिक उत्पन्न गटातील लाभार्थींचे आहे. १ लाख रु. पेक्षा कमी १९६ (३४.२६%), ३ लाख रुपयांपेक्षा जास्त उत्पन्न गटातील ३४ (५.९५%) लाभार्थी असल्याचे आढळून आले.
- १०) जिल्ह्यातील नमुना लाभार्थींकडे असलेल्या फळबागेच्या सिंचन सुविधांचे अध्ययन करता ४७८ (८३.८%) लाभार्थींकडे विहीर हे प्रमुख साधन आहे. कालवा, गावतलाव, नदी, कुपनलिका आणि टँकर या विविध जलसिंचन साधनांचा लाभार्थी अतिशय अल्प प्रमाणात वापर करतात.
- ११) जिल्ह्यातील नमुना लाभार्थींच्या प्राथमिक माहितीच्या अध्ययनातून लाभार्थींकडे आधुनिक जलसिंचनाची साधने उपलब्ध आहेत. यात तुषार सिंचन १३६ (२३.८६%), ठिबक सिंचन ८४ (१४.७४%) आणि इतर साधने ५५ (९.५०%) यांचा समावेश करण्यात आला आहे.

- १२) जिल्ह्यातील लाभार्थी शेतकऱ्यांकडे फळबागेसाठी वार्षिक जलसिंचनाची उपलब्धता ३७१ (६५.३७%) असून, हंगामी जलसिंचन व्यवस्था १८६ (३२.८६%) असल्याचे आढळून आले.
- १३) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील एकूण नमुना फळउत्पादक शेतकऱ्यांपैकी फळबाग लागवडीसाठी आधुनिक साधने, पॉवर ट्रेलर लहान ३४ (६.२८%), मोठा ट्रॅक्टर १६ (२.९४%), औषध फवारणी पंप ९६ (१७.२४%) आणि स्टोअर रुम ११ (२०.७८%) कलमे कटिंग व इतर लहान औजारे ३१८ (५७.६०%) शेतकऱ्यांकडे या सुविधा असल्याचे आढळून आले.
- १४) लाभार्थींच्या प्राथमिक माहितीच्या आधारे असे आढळून येते की, ५४५ (९५.२८%) लाभार्थींना सरकारी रोपवाटीकेंमधून, १२७ (२२.२०%) लाभार्थींनी खाजगी रोपवाटीकेंमधून तर १० (१.७४%) लाभार्थींनी स्वतः निर्माण केलेली कलमे अशा प्रकारे कलमे उपलब्ध केल्याचे आढळून येते.
- १५) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील योजनेतर्गत लाभार्थींच्या आंबा लागवडीच्या विविध कालखंडाच्या अध्ययनावरून १९८० पूर्वी ४ (०.९४%), १९८१ ते १९९० या काळात १४ (३.२९%), १९९१ ते २००० या काळात २६२ (५१.५०%), आणि २००१ ते २०१० या काळात १४६ (३४.२%) इतके आंबा लागवड शेतकरी असून योजना काळातच आंबा लागवडीची प्रगती झाल्याचे संशोधनातून आढळून येते.
- १६) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील आंबा लागवडीच्या धारण क्षेत्रामध्ये २०३ (४७.८९%) लाभार्थींकडे १ एकर ते २.५ एकर, ८० (१८.७८%) लाभार्थींकडे २.५ एकर ते ५ एकर, ३१ (७.२८%) लाभार्थींकडे ५ ते १० एकर, १४ (३.२९%) लाभार्थींकडे १० ते २५ एकर आणि २ (०.४७%) लाभार्थींकडे २५ एकरपेक्षा जास्त धारणक्षेत्र आढळून येते. जिल्ह्यात देवगड, मालवण आणि कुडाळ तालुक्यात आंबा लागवड धारण क्षेत्र मोठे असल्याचे आढळते.
- १७) लाभार्थींच्या उत्पादक आंबा कलमांच्या आकडेवारीमध्ये १९७ (४६.२४%) लाभार्थींकडे ४१ ते १००, ५२ (१२.२१%) लाभार्थींकडे १०१ ते २००, २८ (६.५९%) लाभार्थींकडे २०१ ते ४००, १२ (२.८२%) लाभार्थींकडे ४०१ ते

१०००, २ (०.४७%) लाभार्थीकडे १००० पेक्षा जास्त कलमे अशी स्थिती जिल्ह्याची असून देवगड आणि मालवण तालुक्यात ही संख्या जास्त असल्याचे प्राथमिक आकडेवाडीवरून आढळते.

- १८) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील योजनेतर्गत विविध कालखंडातील काजू लागवडीच्या अध्ययनावरून एकूण ४३१ (१००%) काजू लागवड लाभार्थीपैकी १९९१ ते २००० या काळात २२४ (५१.९७%), २००१ ते २०१० या काळशत १८९ (४३.८५%), १९८१ ते १९९० या काळात १४ (३.२५%) अशी काजू लागवड लाभार्थींची स्थिती असून १९९१ ते २००० या योजना काळात जिल्ह्यात सर्वच तालुक्यात काजू लागवड मोठ्या प्रमाणात झाल्याचे आढळून येते.
- १९) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील योजनेतर्गत काजू लागवडीच्या धारण क्षेत्रामध्ये अर्धा एकरपेक्षा कमी आणि २५ एकरपेक्षा जास्त क्षेत्रावर काजू लागवड आढळून येते. ४३१ (१००%) काजू लाभार्थी पैकी ३७ (७.९८%) लाभार्थीकडे अर्धा एकरपेक्षा कमी, ९७ (२२.५०%) लाभार्थीकडे अर्धा ते १ एकर, २०७ (४७.३३%) लाभार्थीकडे १ ते २.५ एकर, ६४ (१४.८५%) लाभार्थीकडे २.५ ते ५ एकर, २० (४.६४%) लाभार्थीकडे ५ ते १० एकर, ०९ (२.०९%) लाभार्थीकडे १० ते २५ एकर आणि ०३ (०.७०%) लाभार्थी २५ एकरपेक्षा जास्त धारणक्षेत्र असून कणकवली, कुडाळ, सावंतवाडी, वैभववाडी आणि वेंगुर्ला तालुक्यात काजू लागवड धारण क्षेत्र जास्त असल्याचे आढळते.
- २०) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील लाभार्थींच्या उत्पादक काजू (जिवंत) कलमांच्या आकडेवारीमध्ये २०१ (६४.६४%) लाभार्थीकडे ४१ ते १००, ७६ (१७.६३%) लाभार्थीकडे १०१ ते २००, १६ (३.७४%) लाभार्थीकडे २०१ ते ४००, ९ (२.०९%) लाभार्थीकडे ४०१ ते १०००, ३ (०.६८%) लाभार्थीकडे १००० पेक्षा जास्त अशी उत्पादक काजू (जिवंत) कलमांची चांगली स्थिती आकडेवारीवरून आढळून आली.
- २१) जिल्ह्यातील २६३ (१००%) नमुना नारळ लाभार्थी पैकी १९९१ ते २००० या काळात ११२ (४२.२८%) लाभार्थी आणि २००१ ते २०१० या काळात

१४६ (५५.५३%) लाभार्थीनी नारळ लागवड केलेली आहेत. जिल्ह्यात कणकवली, कुडाळ, मालवण, सावंतवाडी आणि वेंगुर्ला तालुक्यात नारळ लागवड जास्त प्रमाणात झाल्याचे आकडेवारीवरून आढळून येते.

- २२) जिल्ह्यात नारळ लागवड धारणक्षेत्राचे लाभार्थी प्रमाण १७५ (६१.१६%) लाभार्थीनी अर्धा एकर पेक्षा कमी क्षेत्र, ५० (१९.७५%) लाभार्थीनी अर्धा ते १ एकर, १६ (१०.२७%) लाभार्थीनी १ ते २.५ एकर आणि ०२ (०.७९%) लाभार्थीनी १.५ ते ५ एकर क्षेत्र अशी स्थिती दिसून येते.
- २३) जिल्ह्यामध्ये नारळ लागवड उत्पादक कलमे असणाऱ्या एकूण लाभार्थींपैकी २१५ (८१.७५%) लाभार्थींकडे ४० पेक्षा कमी ३४ (१२.९२%) लाभार्थींकडे ४१ ते ८०, १४ (५.३२%) लाभार्थींकडे ८१ ते २००, उत्पादक नारळ कलमांची आकडेवारी संशोधनातून आढळून आली.
- २४) जिल्ह्यातील १२५ (१००%) नमुना सुपारी लागवड शेतकऱ्यांनी १९९१ ते २००० या काळात ४७ (३६.६०%) लाभार्थीनी आणि २००१ ते २०१० या काळात ७३ (५८.४०%) लाभार्थीनी सुपारी लागवड केलेली असून, जिल्ह्यात दोडामार्ग, कुडाळ, मालवण, सावंतवाडी आणि वेंगुर्ला तालुक्यात सुपारी लागवडीचे प्रमाण अधिक आहे.
- २५) जिल्ह्यात सुपारी लागवड धारण क्षेत्राच्या आकारामध्ये १०१ (८०.८०%) लाभार्थीनी अर्धा एकरपेक्षा कमी, १४ (११.२०%) लाभार्थीनी अर्धा ते १ एकर, ९ (७.२०%) लाभार्थीनी १ ते २.५ एकर आणि १ (०.८०%) लाभार्थीनी २.५ ते ५ एकर धारण क्षेत्राची योजनेतर्गत सुपारी लागवडीची स्थिती दिसून आली आहे.
- २६) जिल्ह्यामध्ये सुपारी लागवड उत्पादक कलमे ११२ (८९.६०%) लाभार्थींकडे ४० पेक्षा कमी, ६ (४.८०%) लाभार्थींकडे ४१ ते २०० तर सावंतवाडी तालुक्यात १ (०.८०%) लाभार्थींकडे ४०१ ते ८०० सुपारी उत्पादक कलमांची आकडेवारी संशोधनातून आढळून आली. जिल्ह्यात दोडामार्ग आणि सावंतवाडी तालुक्यात ही संख्या सर्वात जास्त आहे.

- २७) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यात एकूण २५ (१००%) नमुना लाभार्थी कोकम लागवड केलेली असून त्यापैकी १३ लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील आहेत. १० (४०.०%) लाभार्थीनी १९९१-२००० या कालखंडात लागवड, तर १५ (६०.०%) लाभार्थीनी लागवड २००१ ते २०१० या कालखंडात झालेली आहे. कोकम लागवड धारणक्षेत्र २२ (८८.०४%) लाभार्थींचे अर्धा एकरपेक्षा कमी आहे. कोकम उत्पादक जिवंत कलमे २३ (९२.०%) लाभार्थी याकडे ४० पेक्षा कमी आहेत. जिल्ह्यात कोकम लागवड फारच अल्प असल्याचे संशोधनातून आढळून येते.
- २८) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यात एकूण १८ (१००%) नमुना लाभार्थी चिकूची लागवड करणारे असून त्यापैकी ७ लाभार्थी वेंगुर्ला तालुक्यातील आहेत. जिल्ह्यात १९८० पासून आजपर्यंत चिकू लागवड लाभार्थी आढळून येतात. जिल्ह्यात चिकू लागवड धारण क्षेत्र अर्धा एकरपेक्षा कमी आणि अर्धा ते १ एकर इतके आहे. चिकू उत्पादक जिवंत कलमांचे प्रमाण १४ (७७.७८%) लाभार्थींकडे ४० पेक्षा कमी, ४ (२२.२२%) लाभार्थींकडे ४१ ते ८० च्या दरम्यान असल्याचे आढळून येते. जिल्ह्यात चिकू लागवड फारच अल्प असल्याचे संशोधनातून आढळून आले.
- २९) जिल्ह्यात लाभार्थी कुटुंबाना आणि बाहेरील स्त्री पुरुषांना रोजगाराचे महत्त्वाचे साधन या योजनेच्या अंमलबजावणीमुळे प्राप्त झाले आहे. जून ते सप्टेंबर या कालखंडात एकूण ४०२ आणि ५११ लाभार्थी कुटुंबात, ऑक्टोबर ते जानेवारी एकूण ४९२ आणि ५१४ लाभार्थी कुटुंबात, फेब्रुवारी ते मे एकूण ५०१ आणि ५१८ लाभार्थी कुटुंबात स्त्री-पुरुषांना रोजगार उपलब्ध झाल्याचे आढळून आले. फळबाग लागवडीसाठी उपलब्ध बाहेरील स्त्री-पुरुषांना रोजगार निर्मितीच्या संधी उपलब्ध झाल्या आहे. जून ते सप्टेंबर या कालखंडात एकूण ४२१ आणि ४३० लाभार्थींकडे ऑक्टोबर ते जानेवारी एकूण ४२९ आणि ४१५ लाभार्थींकडे, फेब्रुवारी ते मे एकूण ४०३ आणि ४१४ लाभार्थींकडे बाहेरील स्त्री आणि पुरुषांना रोजगार निर्माण झाल्याचे आढळून येते. स्त्री-पुरुषांच्या दैनंदिन कालखंडात मिळणाऱ्या मजुरी दरापेक्षा

फळहंगामाच्या कालखंडात मिळणारी मजुरी अधिक आहे. स्त्रियांपेक्षा पुरुष मजूरांना देवगड, कुडाळ, मालवण आणि सावंतवाडी तालुक्यात फार मोठ्या प्रमाणात रोजगार निर्मिती झाल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते.

३०) जिल्ह्यातील ५७२ नमुना लाभार्थींच्या प्राथमिक माहितीच्या संशोधन आकडेवारीवरून, दैनंदिन कालखंडात ४२५ (७४.३०%) लाभार्थी शेतकरी स्त्रियांना सरासरी ७६ ते १०० रु. मजुरी, ७ (१.२२%) लाभार्थी स्त्रियांना रु. १०१ ते १२५ आणि जास्तितजास्त ७ लाभार्थी १५१ रु.पेक्षा जास्त मजुरी देतात, तर पुरुषाला २४९ (४३.५३%) लाभार्थी ७६ रु. ते १०० रु., १३९ लाभार्थी १०१ रु. ते १२५, १४४ लाभार्थी १२६ रु. ते १५० रु. आणि जास्तितजास्त ४० लाभार्थी १५१ रु. पेक्षा पुरुषांना जास्त मजुरी देतात. कणकवली, कुडाळ, मालवण आणि सावंतवाडी तालुक्यात पुरुष मजूरांना जास्त मागणी असून तेथे त्यांना मजुरीही जास्त मिळते. स्त्रियांपेक्षा पुरुषांना जिल्ह्यात जास्त मजुरी मिळते असे आढळून आले.

३१) जिल्ह्यात फलोत्पादन कालखंडात स्त्री-पुरुष मजूरांना इतर कालखंडापेक्षा जास्त मजुरी मिळते. जिल्ह्यात २८१ लाभार्थी स्त्रियांना ७६ ते १०० रु., १४४ लाभार्थी १०१ ते १२५ रु., ७१ लाभार्थी १२६ ते १५० रु., ६४ लाभार्थी स्त्रियांना १५१ रु. पेक्षा जास्त मजुरी देतात. ९१ लाभार्थी ७६ ते १०० रु., २०५ लाभार्थी १०१ ते १२५ रु., ३२ लाभार्थी १२६ ते १५०, १३ लाभार्थी १५१ रु. पेक्षा पुरुषांना जास्त मजुरी देतात. स्त्रियांपेक्षा पुरुषांच्या मजुरी दर जास्त आहे. १०० रु. पेक्षा कमी मजुरी असेल तर स्त्री आणि पुरुषांना दुपारचे १ वेळचे जेवण दिले जाते. अशाप्रकारे दैनंदिन कालखंडापेक्षा फलोत्पादन कालखंडात स्त्री आणि पुरुषांना जास्त मजुरी दर मिळते असे संशोधनातून आढळून आले.

३२) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील ५७२ नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांपैकी १४५ (२५.३४%) कंपोस्ट खत, ३१० (५४.२०%) रासायनिक खते, ४०६ (७०.२८%) कंपोस्ट आणि रासायनिक आणि ३१४ (५४.९०%) लाभार्थी जैविक आणि

रासायनिक खताचा वापर करतात असे संशोधन आकडेवारीच्या अभ्यासातून स्पष्ट झाले आहे.

- ३३) जिल्ह्यातील नमुना लाभार्थी आपल्या फळबागेच्या संवर्धनासाठी दरवर्षी रासायनिक औषधांची फवारणी करतात. यावरून असे स्पष्ट होते की, की लाभार्थी त्रिशुल २५६ (४४.७५%), कल्टर २५१ (४३.८५%), थार्योडॉन ९० (१६.४०%), बोडो मिश्रण पावडर १९३ (३३.४७%), मोनोकोटोफॉस, ११० (१९.२४%), क्रिनाॅलपॉस, ८३ (१४.५२%), इन्डोसल्फान २०१ (३५.१४%), गोमूत्र ८७ (१५.८०%)लाभार्थी अशा विविध औषधांचा वापर करतात. विशेषतः कल्टरचा वापर आंबा उत्पादक लाभार्थी करतात.
- ३४) जिल्ह्यातील एकूण ४२७ (१००%) आंबा लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या दैनंदिन दर हेक्टरी चालू खर्चाच्या विश्लेषणातून असे स्पष्ट झाले की, जमिन तयार करणे, खड्डे खोदणे/भरणे यावरील दैनंदिन दर हेक्टरी चालू खर्च फारच अल्प आहे. जिल्ह्याचा आंब्याचा दर हेक्टरी खर्च रु. ५०,४३९ इतका असून, यामध्ये चांगली माती, मेलेली झाडे लावणे रु. ६,०७५, खते रु. १०,१९७, औषधे रु. ६,४९१, मजूर खर्च रु. १३,२४३, कुंपन (दुरुस्ती/घालणे) रु. ६,१,१५, औषधे रु. २,७५३, जलसिंचन रु. ३,९०५ आणि इतर खर्च रु. १,६३६ अशा प्रकारे दर हेक्टरी दैनंदिन विविध बाबींवर केल्या जाणाऱ्या खर्चाची स्थिती आहे. याच पद्धतीने तालुकानिहाय खर्चामध्ये जिल्ह्यांच्या खर्चापेक्षा सावंतवाडी तालुक्याचा खर्च रु. ५८,०२४, वेंगुर्ला खर्च रु. ५१,५२४ हा जास्त आहे. अशाप्रकारे दैनंदिन दर हेक्टरी विविध बाबींवरील स्थिती संशोधन अभ्यासातून दिसून आली आहे.
- ३५) जिल्ह्यात एकूण ४३१ (१००%) काजू लागवड लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या दैनंदिन दर हेक्टरी चालू खर्चाच्या सांख्यिकीय विश्लेषणामध्ये जिल्ह्याचा दर हेक्टरी खर्च रु. २७,९१९.१२ इतका आहे. ३१५ हेक्टर ६८ गुंठे जमीन नमुना लाभार्थींची काजू लागवडीखाली आहे. काजू लागवडीच्या चालू दर हेक्टरी विविध बाबींवरील खर्चामध्ये जमीन तयार रु. ४८.४९, खड्डे खोदणे रु. ६.०१, चांगली माती रु. ५४९.२९, खते रु. ५,५६०.६९, औषधे रु.

२,३२९.६५, मजूर रु. ८,७४३.३४, कुंपण रु. ५,८६९.६३, औजारे रु. ९९८.९७, जलसिंचन रु. ९,९८९.९७ आणि इतर खर्च रु. ९,७९५.८० याप्रकारे झालेला असून मजूर, कुंपण आणि खते यावरील दर हेक्टरी खर्च सर्व तालुक्यात इतर बाबींपेक्षा जास्त प्रमाणात आहे. तालुकानिहाय दर हेक्टरी खर्चामध्ये जिल्ह्यापेक्षा दोडामार्ग रु. ३४,२६८, सावंतवाडी रु. ३९,७७० आणि वेंगुर्ला रु. ३९,९९० या तालुक्याचा दर हेक्टरी खर्च जास्त आहे, तर सर्वात कमी रु. २९,३६९ इतका चालू दर हेक्टरी खर्च वैभववाडी तालुक्याचा आहे.

३६) जिल्ह्यातील २६९ (१००%) नारळ लाभार्थी शेतकऱ्यांचा चालू दर हेक्टरी दैनंदिन खर्च रु. ४०,०२२.९३ इतका आहे. जिल्ह्यात ६९ हे. ०६ गुंठे लाभार्थीची जमीन नारळ लागवडीखाली आहे. नारळ लागवडीच्या चालू दर हेक्टरी खर्चामध्ये जमीन तयार शुन्य रुपये, चांगली माती - रु. २९२.९०, खड्डे खोदणे - रु. ९६.३७, खते - रु. ९,७८३.८९, औषधे - रु. ५,२२९, मजूर - रु. ९९,२९९, कुंपण - रु. २,६८५, औजारे - रु. २७८.४९, जलसिंचन - रु. ९,४२३.५९ अशा प्रकारे विविध बाबींवरील दर हेक्टरी खर्चाच्या तपशिलामध्ये जिल्ह्यात मजूर, खते आणि जलसिंचनावर सर्वच तालुक्यामध्ये दर हेक्टरी दैनंदिन खर्च जास्त असल्याचे संशोधनातून आढळून आले आहे.

३७) जिल्ह्यातील ९२० (१००%) नमुना सुपारी लागवडीच्या लाभार्थींच्या दैनंदिन दर हेक्टरी खर्च रु. २६,४२४ इतका असून, २२ हेक्टर २९ गुंठे जमीन सुपारी लागवडीखाली आहे. यावरील दर हेक्टरी विविध बाबींवरील खर्चामध्ये जमीन तयार करणे, चांगली माती रु. शुन्य, खड्डे रु. ४५, खते रु. ६,०८५, औषधे रु. ४,९३६, मजूर रु. ५,६००, कुंपण रु. ४,४३४, औजारे रु. ९,९४८, जलसिंचन रु. ३,५९९ आणि इतर रु. ९,४६३ अशाप्रकारे दर हेक्टरी खर्चाचे प्रमाण आहे. या दर हेक्टरी चालू दैनंदिन खर्चामध्ये खते आणि मजूर खर्चाचे प्रमाण जास्त असल्याचे आडेकवारीवरून आढळून येते.

- ३८) जिल्ह्यातील नमुना शेतकऱ्यांच्या अध्ययनातून असे आढळून येते की, लाभार्थी शेतकऱ्यांनी फळझाड लागवडीच्या विकासासाठी कर्ज घेण्याचे प्रमाण फारच अल्प आहे. एकूण ५७२ (१००%) लाभार्थीपैकी १४१ (२४.६६%) लाभार्थींनी ५० हजार रु. पेक्षा कमी ६० (१०.४९%) लाभार्थींनी ५० हजार ते १ लाख रु., २२ (३.८५%) लाभार्थींनी १ लाख ते २ लाख रु. ७ (१.२२%) लाभार्थींनी ३ लाख रु. पेक्षा जास्त असे कर्ज घेण्याचे प्रमाण जिल्ह्यात आहे. देवगड, सावंतवाडी आणि वेंगुर्ला तालुक्यात जास्त कर्ज घेणाऱ्या लाभार्थींचे प्रमाण अधिक आहे.
- ३९) जिल्ह्यातील एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थीपैकी १६० (२७.९७%) लाभार्थींनी बँकेकडून, ३० (५.२४%) लाभार्थींनी सहकारी सोसायटी २० (३.५०%) लाभार्थींनी पतसंस्था ४८ (८.३९%) लाभार्थींनी दलाल, ४८ (८.३९%) इतर मार्ग अशा प्रकारे या मार्गांनी कर्ज घेतलेले असून यामध्ये जास्तितजास्त लाभार्थींनी बँकेच्या मार्गांनी कर्ज घेतल्याचे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून येते.
- ४०) जिल्ह्यातील नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांच्या फळबागेमध्ये मसाला, भाजीपाला, कडधान्य इ. अंतर्गत पिके घेतात. यामध्ये १७३ (३१.२८%) लाभार्थी मिरी, १३४ (२३.४२%) जायफळ, १२६ (२२.२२%) लवंग, ६७ (११.६७%) अननस, ५१ (८.९४%) भुईमूग, ६४ (११.३६%) चवळी, ५६ (९.८०%) मुग, १३ (२.२८%) मिरची, १८ (३.१४%) कलिंगड आणि ३० (५.२६%) टोमॅटो अशा विविध पिकांचे उत्पादन घेतात. यामध्ये मसाला पिके मालवण तर भाजीपाला उत्पादन दोडामार्ग तालुक्यात अधिक प्रमाणात घेतले जाते.
- ४१) जिल्ह्यातील फळझाड लाभार्थींची रोजगार हमी योजना आणि लाभार्थींच्या राहणीमानाच्या भौतिक सुखसोई यांमध्ये चांगली स्थिती आहे. एकूण ४२४ (७७.१२%) लाभार्थी ही योजना फायद्याची वाटते तर ३८१ (६६.६०%) लाभार्थींना राहणीमानाच्या भौतिक सुखसोई चांगल्या प्रकारे मिळाल्या आहेत असे संशोधन आकडेवारीच्या अभ्यासातून दिसते.

- ४२) जिल्ह्यातील उत्पादित फळांची विक्रीमध्ये एकूण ५७२ (१००%) लाभार्थींपैकी ३०९ (५४.०२%) व्यापाऱ्यांना, ३२८ (५७.३४%) दलालांना, १२० (२१.७४%), कंत्राटदार १२ (२.१६%) सहकारी संस्था आणि १२ (२.१६%) स्वतः विक्री करतात. मालवण, देवगड सावंतवाडी आणि वेंगुर्ला तालुक्यातील जास्तित जास्त लाभार्थी दलाल आणि व्यापाऱ्यांना फळांची विक्री करतात त्यामुळे त्यांच्या मालाला चांगला दर मिळत नाही.
- ४३) जिल्ह्यातील लाभार्थींच्या उत्पादित मालाला योग्य दर मिळत नाही. फळे विक्रीच्या अनेक समस्यांना लाभार्थींना सामोरे जावे लागते. अशा संशोधनातून आढळून आलेल्या समस्यांमध्ये ३६९ (६६.७२%) लाभार्थींना अधिक वाहतुक खर्च, ३०७ (५३.६८%) दलालांचा हस्तक्षेप, ३३८ (६१.१२%) मुलभूत सुविधांचा अभाव, १९६ (६५.६६%) प्रक्रिया उद्योगांचा अभाव, २९१ (५०.९६%) स्थानिक बाजारपेठ, ४९० (८५.८२%) जिल्हा कृषी उत्पन्न बाजारसमितीचा अभाव, २४८ (४३.४४%) मजूर टंचाई अशा प्रमुख समस्या आढळून येतात.
- ४४) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील १००% अनुदान योजनेबद्दल लाभार्थी शेतकऱ्यांना चांगले अनुभव आले आहेत. त्यामध्ये २५१ (४३.९०%) लाभार्थींना पडिक जमीन विकास, २९३ (५२.२०%) स्वतःची बाग, ३९७ (६९.४०%) उत्पन्नाचे साधन, १५१ (२६.४०%) प्रशासकीय समस्या, ३१४ (५५.४२%) रोजगार निर्मिती अशा प्रकारच्या अनुभवातून जास्तीतजास्त लाभार्थींचा योजनेकडे पाहण्याचा दृष्टिकोन सकारात्मक आहे.
- ४५) रोजगार हमी योजनेअंतर्गत सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील ३२० नमुना लाभार्थी आंबा उत्पादक शेतकऱ्यांना दर हेक्टरी खर्चापेक्षा उत्पन्न जास्त मिळते. जिल्ह्यात ३२१ हेक्टर ८४ गुंठे क्षेत्रावर आंबा लागवड आहे. जिल्ह्यामध्ये एकूण खर्च रु. १,६५,८९,८०१ उत्पादन ३७,६१२ पेटी, एकूण उत्पन्न रु. २,६८,१६,४०० यापासून रु. ७२,२६,५९९ इतका नफा झाला आहे. जिल्ह्यात दर हेक्टरी खर्च रु. ५१,५४६.७३, दर हेक्टरी उत्पादन ११६.८६ पेटी (१ पेटी = ४ डझन) दर हेक्टरी उत्पन्न रु. ७४,०००.७५ इतके आहे. तालुकानिहाय

अभ्यासामध्ये दर हेक्टरी खर्च देवगड रु. ५२,५९२, सावंतवाडी रु. ५८,८०६, कुडाळ रु. ५१,६६८, यांचा जिल्हा दर हेक्टरी खर्चापेक्षा खर्च अधिक आहे. तालुकानिहाय दर हेक्टरी उत्पन्न देवगड रु. ५२,५९२, सावंतवाडी रु. ५८,८०६, कुडाळ रु. ५१,६६८, मालवण रु. ८०,७२४, सावंतवाडी रु. ८८,७३८, मालवण रु. ८०,७२४, सावंतवाडी रु. ७४,६३७ यांचे उत्पन्न जिल्हा उत्पन्नापेक्षा जास्त आहे. जिल्ह्यात वैभववाडी तालुक्यात दर हेक्टरी खर्चापेक्षा दर हेक्टरी उत्पन्न कमी आहे. जिल्ह्यातील ३२० आंबा उत्पादक लाभार्थ्यांपैकी १९८ (६१.८८%) लाभार्थी नफ्यात आहेत, तर १२२ (३८.१२%) लाभार्थी तोट्यात असल्याचे उत्पन्न खर्चाच्या संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले.

४६) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील नारळ उत्पादक १३० नमुना लाभार्थी शेतकऱ्यांना दर हेक्टरी खर्चापेक्षा दर हेक्टरी उत्पन्न जास्त मिळाले आहे. जिल्ह्यात एकूण २४ हेक्टर १६ गुंठे क्षेत्रावर नारळ लागवड झालेली आहे. जिल्ह्याचे एकूण नारळ उत्पादन १,७९,२९२ इतके नग, एकूण खर्च रु. ९०,१००, एकूण उत्पन्न रु. १२,५०,२९० यापासून रु. ३,४९,२२० इतका नफा झाला आहे. जिल्ह्याचे नारळांचे दर हेक्टरी उत्पादन ७,४२१.०४ नग, दर हेक्टरी खर्च रु. ३७,२९३, दर हेक्टरी उत्पन्न रु. ५१,७५० इतके आहे. जिल्ह्यात कणकवली, कुडाळ, वेंगुर्ला आणि सावंतवाडी तालुक्यात नारळ लाभार्थींची संख्या जास्त दिसून येते. जिल्ह्यात वैभववाडी तालुक्यात दर हेक्टरी उत्पन्नापेक्षा खर्च अधिक आहे. इतर सर्व तालुक्यात नारळ दर हेक्टरी खर्चापेक्षा उत्पन्न जास्त आहे. जिल्ह्यात नारळ लागवड क्षेत्र फारच अल्प आहे.

४७) सिंधुदूर्ग जिल्ह्यातील एकूण ५६ सुपारी उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांना दर हेक्टरी खर्चापेक्षा दर हेक्टरी उत्पन्न जास्त मिळते. जिल्ह्यात ८ हेक्टर ५९ गुंठे क्षेत्रावर सुपारी लागवड आहे. जिल्ह्यात सुपारी लागवडीपासून एकूण उत्पादन २७६२ कि.ग्रॅम, एकूण खर्च रु. २,२७,१७०, एकूण उत्पन्न रु. ३,७८,०४० यापासून रु. १,५०,८७० इतका नफा झाला आहे. जिल्ह्याचे

सुपारीचे दर हेक्टरी उत्पादन ३२१.५३ कि.ग्रॅम, दर हेक्टरी खर्च रु. २६,४४५, दर हेक्टरी उत्पन्न रु. ४४,००९ इतके आहे. जिल्ह्यात वेंगुर्ला, सावंतवाडी तालुक्यात सुपारी लागवड लाभार्थी जास्त आहेत. इतर तालुक्यात सुपारी लाभार्थी संख्या फारच अल्प आहे असे संशोधन आकडेवारीवरून आढळून आले आहे.

४८) रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवडीवर जिल्ह्यात फार मोठ्या नैसर्गिक आपत्तीचा परिणाम फळझाड लागवडीवर आणि उत्पादनावर होत असल्याचे आढळून येते. यामध्ये एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थीपैकी ४५५ (७९.६०%) लाभार्थीवर अनियमित पाऊस, ४३१ (७५.३०%) लाभार्थीवर धुके, २१२ (३७.२०%) लाभार्थीवर वादळ, १०१ (१७.६०%) लाभार्थीवर वणवा आणि ३१२ (५५.६२%) लाभार्थीवर तापमानातील बदल याबरोबर किडी, बुरशी या नैसर्गिक आपत्तीचा विशेषतः आंबा उत्पादनावर फार मोठा परिणाम होत असल्याचे संशोधनातून आढळून येते.

४९) जिल्ह्यात रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवड करताना जिल्ह्यातील एकूण ५७२ (१००%) नमुना लाभार्थींना अनेक समस्यांना तोंड द्यावे लागते. त्याचा परिणाम नवीन फळबाग लागवडीवर होत आहे. यामध्ये ४३८ (७६.५०%) लाभार्थींना नैसर्गिक आपत्ती, ४१७ (७२.९०%) लाभार्थींना मजूर टंचाई, ३५५ (६२.१४%) लाभार्थींना संयुक्त सात बारा, ३२५ (५६.८०%) लाभार्थींना जमिनीचे तुकडीकरण, ४०६ (७१.००%) लाभार्थींना कमी किंमत, २९५ (५१.५०%) लाभार्थींना गुणवत्तायुक्ती कलमांचा अभाव, २२८ (३९.९०%) लाभार्थींना तज्ज्ञ कृषी अधिकाऱ्यांच्या मार्गदर्शनाचा अभाव, १६२ (२८%) लाभार्थींना प्रशासकीय अडचणी, ३४६ (६०.५०%) लाभार्थींना पुनर्लागवड खर्च इ. प्रमुख समस्यांचा परिणाम जिल्ह्यातील फळझाड लागवडीवर होत असल्याचे संशोधन आकडेवारीच्या अभ्यासातून आढळून आले आहे.

५०) जिल्ह्यामध्ये फळप्रक्रिया उद्योगाचा अभाव आहे. त्यामुळे विक्री व्यवस्थेमध्ये अडचणी निर्माण होतात. शेतकऱ्यांना योग्य दर मिळत नाही. एकूण ५७२

(१००%) नमुना लाभार्थीपैकी १९६ (३३.४४%) लाभार्थीना ही समस्या संशोधन आढळून आले आहे. यामध्ये ४८ (८१.६६%) दोडामार्ग तालुक्यातील लाभार्थींचा समावेश आहे.

७.४ शिफारशी (Suggestion)

संशोधकास संकलित माहितीच्या सादरीकरणातून प्राप्त झालेल्या निकर्षाच्या आधारे रोजगार हमी योजने अंतर्गत फळझाड लागवड करताना निर्माण झालेल्या समस्या सोडविण्यासाठी खालीलप्रमाणे उपाय किंवा शिफारशी सुचित करण्यात आल्या आहेत.

१. सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात या योजनेअंतर्गत अनुसुचित जाती व जमाती इतर मागास प्रवर्गातील शेतकऱ्यांचा समावेश होणे आवश्यक आहे. यासाठी शासनाची भूमिका महत्त्वाची असावी.
२. योजनेचा जास्तितजास्त लाभ अल्प व सिमांत भूधारक शेतकऱ्यांना मोठ्या प्रमाणात अशा पद्धतीने करून घेता येईल यावर विशेष लक्ष देणे गरजेचे आहे.
३. उत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांनी स्वतःच जिल्ह्यात तालुका पातळीवर संघटना उभी करून फळे उत्पादनाची विक्री सहकार पद्धतीने करावी. त्यामुळे व्यापारी दलाल यांच्या प्रवेशावर आपोआपच निर्बंध येईल.
४. प्रत्यक्ष भौगोलिक परिस्थितीनुसार अनुदान द्यावे. असे संशोधनातून आढळून आले आहे. कारण महाराष्ट्रातील इतर सर्व जिल्ह्यापेक्षा सिंधुदुर्ग जिल्ह्याची भौगोलिक रचना वेगळी आहे. उदा. उंच डोंगर, कातळ जमीन, पाणी, रस्त्यांचा प्रश्न, जंगल इ.मुळे लागवड पूर्व खर्च अनुदानापेक्षा जास्त येतो.
५. योजना अधिक कार्यक्षम होण्यासाठी गुणात्मक दर्जेदार कलमे उपलब्ध करून देणे, शासकीय रोपवाटीका कलमांची सक्ती व करणे व शेतकऱ्यांच्या पसंतीनुसार खाजगी रोपवाटीकेमधून आणलेल्या कलमांनाही अनुदान द्यावे. त्याचवेळी शासनाचे उद्दिष्ट साध्य होईल.
६. रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवड करताना दिल्या जाणाऱ्या सर्व निविष्ठा (उदा. कलमे, खते, औषधे) हंगामापूर्वी शेतकऱ्यांना उपलब्ध करून देणे गरजेचे आहे. अनेकदा हंगामानंतर अयोग्य वेळी सर्व निविष्ठा शेतकऱ्यांना उपलब्ध होतात.

७. शेतकऱ्यांना जे अनुदान दिले जाते ते अनुदान शेतकऱ्यांनी ८० ते १००% बाग जिवंत ठेवल्यावरच त्यांना द्यावे. त्यामुळे जिवंत झाडांचे प्रमाण वाढल्यास मदत होईल. आणि बोगस प्रकरणावरही नियंत्रण येईल.
८. ठिबक सिंचन, तुषार सिंचन यासारख्या आधुनिक पाणी बचतीच्या सुविधा उपलब्ध करून देण्यासाठी शासनाने योग्य ती भूमिका घ्यावी. त्यामुळे बारमाही जलसिंचन सुविधांचे प्रश्न कायमचे मार्गी लागतील.
९. कुंपण अनुदान वाढवून द्यावे.
१०. सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात ही योजना अधिक कार्यक्षम करण्यासाठी खाते फोड झाली पाहिजे. अनेक कुटुंबात कित्येक पिढ्यांचा जमिनीचा संयुक्त सातबारा आहे. योजना नियमानुसार लाभार्थींच्या नावे सातबारा आवश्यक आहे. यासाठी शासन पातळीवर प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.
११. आंबा ज्यूस, कोकम सरबत, आवळा सरबत, काजूगर यांना जागतिक पातळीवर मागणी आहे. परंतु या प्रक्रिया उद्योगांतील लाभार्थींना योग्य दर मिळत नाही. म्हणून प्रत्येक तालुक्यात स्थानिक पातळीवर प्रक्रिया युनिट उपलब्ध करण्यासाठी लाभार्थी आणि शासनाने प्रयत्न करावे.
१२. फळबाग लागवडीवर नैसर्गिक आपत्तीचा फार मोठा परिणाम होतो. यासाठी पीक विमा योजना शासन पातळीवर राबविण्यात यावी.
१३. शासनाने फलोत्पादक लाभार्थींना खते, किटक नाशके, आवश्यक औजारे नियंत्रित किंमतीत उपलब्ध करून देणे.
१४. जिल्ह्यात बाजार माहिती केंद्राची उपलब्धता करून देणे.
१५. शासनाने जिल्हा कृषिउत्पन्न बाजार समिती मार्फत प्रत्येक तालुका पातळीवर अत्यावश्यक मुलभूत सुविधायुक्त बाजारपेठा निर्माण केल्यास शेतकऱ्यांना योग्य दर मिळेल.
१६. वणव्यामुळे नवीन लागवड केलेल्या फळबागांचे फार मोठ्या प्रमाणात नुकसान होते. फळांचा मोहोर आगीत नष्ट होतो. म्हणून वणवा नियंत्रणासाठी स्थानिक पातळीवर कडक निर्बंध आणावेत.

१७. प्रत्येक तालुक्यांच्या ठिकाणी माती परिक्षणासाठी प्रयोग शाळांची निर्मिती करून त्या आधारे लागवड करणेसाठी कृषी विद्यापीठाने मार्गदर्शन करावे.
१८. आंब्यासाठी आधुनिक पद्धतीची साठवणगृहे, वातानुकुलीत यंत्रे, निर्माण केल्यास आंब्यांची निर्यात फार मोठ्या प्रमाणात होण्यास मदत होईल.
१९. प्रत्येक तालुक्यात कृषीतज्ञ अधिकाऱ्यांची नियुक्ती करून शास्त्रीय पद्धतीने फळझाड लागवडीचे मार्गदर्शन करणे. योजनेचा प्रचार व प्रसार प्रत्येक गावागावातील शेतकऱ्यांपर्यंत पोहोचविणे.
२०. जिल्ह्यात सर्वत्र तालुक्यांसाठी कोकम लागवड फायदेशीर आहे. कोकम शितपेयाला फार मोठी बाजारपेठ असल्यामुळे कोकम लागवडीसाठी योजनेमार्फत जाणीवपूर्वक प्रयत्न करावे.
२१. फलोत्पादक लाभार्थी शेतकऱ्यांसाठी तालुका पातळीवर मार्गदर्शन शिबिर, चर्चासत्र अशा धोरणात्मक कार्यक्रमाची आखणी करून त्यांची अंमलबजावणी योजनेमार्फत सतत करावी.
२२. फळझाड लागवडीमध्ये पहिल्या काही वर्षात आंतरपिक लागवड करण्यासाठी शेतकऱ्यांना प्रवृत्त करणे.
२३. जिल्ह्यात देवगड, मालवण, सावंतवाडी, वेंगुर्ला या तालुक्यात आंबा लागवड पोषक असल्याने तेथे या लागवडीस अधिक प्राधान्य योजनेंतर्गत देण्यात यावे.
२४. जिल्ह्यात सर्वत्र तालुक्यात काजू लागवड फायदेशीर आल्यामुळे योजने अंतर्गत काजू लागवडीला प्राधान्य देण्यात यावे.
२५. सिंधुदूर्ग जिल्ह्यात आजही फार मोठ्या प्रमाणात पडिक जमीन आहे. ही जमीन लागवडीखाली आणण्यासाठी शासन पातळीवर प्रशासकीय अडचणी दूर करणे खूप गरजेचे आहे.
२६. लाभार्थी शेतकऱ्यांना नुकसान भरपाई म्हणून दिली जाणारी मदत प्रत्यक्ष नैसर्गिक आपत्ती पाहूनच मदत करावी.
२७. जिल्ह्यात फळझाड लागवडीस वन्यप्राण्यापासून फार मोठा धोका निर्माण झालेला आहे. त्यासाठी शासन पातळीवर प्रयत्न व्हावेत.

२८. मजुर टंचाई ही समस्या दूर करण्यासाठी गाव पातळीवर फळझाड लागवड विकासासाठी लाभार्थींना नियंत्रित किंमतीत आधुनिक यंत्रे शासन पातळीवर उपलब्ध करून द्यावीत.
२९. आवश्यक कृषी सहाय्यक रिक्त पदांच्या नियुक्त्या शासनाने वेळेत पूर्ण कराव्यात.
३०. जिल्ह्यात नारळ, सुपारी, कोकम, चिक्कू, आवळा या फळ पिकांच्या लागवडीसाठी योजनेमार्फत शेतकऱ्यांना प्रवृत्त करावे.
३१. शासनाने फळबाग विकासासाठी कमी व्याजदराने स्थानिक पातळीवर कर्ज उपलब्ध करून द्यावे.
३२. कृषी विद्यापीठ, शेतकरी आणि शासन यांच्या समन्वयासाठी तालुका पातळीवर समित्यांची नियुक्ती करावी.
३३. फलोत्पादनाला अधिक दर मिळण्यासाठी लाभार्थींनी सेंट्रीय खतांचा वापर करावा.
३४. मोठ्या प्रमाणावर फळझाड धारणा क्षेत्राच्या लागवडीसाठी सामुहिक शेती करण्यात यावी.
३५. मोकाट जनावरे, चोरी रोखण्यासाठी स्थानिक पातळीवरून प्रयत्न करावेत.
३६. योजनेची उद्दीष्टे साध्य करण्यासाठी स्थानिक परिस्थितीचा अभ्यास करून फळझाड लागवडीच्या बाबतीत आधिकारी वर्गाला स्वातंत्र्य द्यावे.
३७. योजना अधिक कार्यक्षम होण्यासाठी येणाऱ्या प्रशासकिय अडचणी शासन पातळीवर दूर करण्यासाठी शासनाची भूमिका फार महत्त्वाची आहे.
३८. व्यावसायिक दृष्टिकोन, शास्त्रीय पद्धतीने लागवड, फसवणुकीवर नियंत्रण यासाठी सुशिक्षित बेरोजगार तरुणांचा योजनेत समावेश करून घेणे.
३९. फळविक्रीसंदर्भात शासनाने तालुका पातळीवर दलाल, व्यापारी यांच्यावर लाभार्थींना योग्य दर देण्यासाठी निर्बंध आणावेत.

परिशिष्ट क्रमांक १

संदर्भ सूची

- १) अहेर, बी. एम्. (१९८९) "नाफेड तालुक्यातील द्राक्ष लागवड" पीएच.डी. प्रबंध
- २) आगलावे, प्रदीप. (जानेवारी, २०००) 'संशोधन पद्धती शास्त्र व तंत्रे' विद्या प्रकाशन, संदर्भ ग्रंथ पान नं. १५८
- ३) आवळे, मनोज. (२००८) "रोजगार हमी योजनेशी निगडीत फळझाड लागवड कार्यक्रम" - चौधरी लॉ पब्लिशर्स, संदर्भ ग्रंथ
- ४) कराट, स. शि. (जुलै, २००६) "नारळ मसाला आंतरपिकासाठी लाखीबागेची पूर्व तयारी" शेती प्रगती मासिक, कोल्हापूर. पान नं. ४८
- ५) कणकवली तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकिय माहिती.
- ६) कुडाळ तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकिय माहिती.
- ७) कोटेचा, पी. एम्. (एप्रिल, २०१२) "कोरडवाहू फळावर प्रक्रिया" मासिक कृषीपणन मित्र, महाराष्ट्र राज्य कृषीपणन मंडळ, पुणे. पान नं. १३, १७
- ८) कोकाटे, किरण. (जाने-फेब्रु., २००२) "काजूगर निर्यात" शेतकारी मासिक अंक- प्रकाशन, कृषी आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे. पान नं. ९५
- ९) खर्डे, पंडित. (सप्टेंबर, २०१०) "महाराष्ट्रातील फलोत्पादन क्रांती" मासिक कृषीपणन मित्र प्रकाशन, महाराष्ट्र राज्य कृषीपणन मंडळ, पुणे. पान नं. १३, १४
- १०) खंदारे, शोभा. (१९९८) "बार्शी तालुक्यातील फळबाग विकास कार्यक्रम" एम्.फिल. लघु शोध प्रबंध.
- ११) गांगुर्डे, किशोर. (२००८) "हमी रोजगाराची साथ केंद्राची" लोकराज्य मात्रिह प्रकाशन माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय, महाराष्ट्र शासन, पुणे. पान. नं. १९ ते २३, २४, २५.

- १२) गोडसे/पाटील. (प्रादेशिक फळ संशोधन केंद्र, वेंगुर्ला-जुलै, २००३)
 "कोकणात फळबागा किफायतशीर होण्यासाठी काटेकोर पूर्व नियोजनाची गरज" बळीराजा मासिक. पान नं. ५४.
- १३) चौधरी, स्वामी. (मार्च, २०११) "निर्यातक्षम आंबा फळांचा आढावा" मासिक अंक ४, कृषीपणन मित्र प्रकाशन, महाराष्ट्र राज्य कृषीपणन मंडळ, पुणे. पान नं. १५, १६, १७.
- १४) जुगळे, व्ही. बी. (डिसेंबर, २००३) "Leading issue of Horticulture Economy in Maharashtra" अखिल भारतीय अर्थशास्त्र परिषदेच्या ६६ व्या वार्षिक परिषद प्रकाशित अंकातील शोध निबंध. पान नं. ५१-८५
- १५) जॉर्ज, अँक्वाह. (२००३) "Horticulture Principles & Practices" संदर्भ ग्रंथ.
- १६) तावडे, मोहन. (१९८०) "Geography of fruit farming" राणे प्रकाशन, सदाशिव पेठ, पुणे. संदर्भ ग्रंथ.
- १७) देवगड तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजने अंतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकिय माहिती.
- १८) देशमुख, प्रकाश पु. (१९८६) "भारतातील फळझाड लागवड" कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे. पान नं. १, ५, ६, ७
- १९) दोडामार्ग तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजने अंतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकिय माहिती.
- २०) पवार, पोपटसो. (सप्टेंबर, २०१०) "मोसंबी लागवड सुधारित तंत्रज्ञान" मासिक कृषीपणन मित्र-प्रकाशन, महाराष्ट्र राज्य कृषीपणन मंडळ, पुणे. पान नं. ३९ ते ४१
- २१) पाटक, अनघा. (२००७) "भारतातील शेतमाल निर्यातीतील कल" योजना मासिक प्रकाशन, भारत सरकार माहिती व प्रसारण मंत्रालय, प्रशासन विभाग. पान नं. ८, ३२
- २२) पाटील, अं. व्यं. (२०००) "फळबाग तत्त्वे आणि पद्धती" कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे. संदर्भ ग्रंथ. पान नं. १ ते ७

- २३) पाटील, जयंतराव. (जाने-फेब्रु.२००२) "महाराष्ट्र फळे, भाजीपाला व फुले यांच्या निर्यातीस चालना देण्याची आवश्यकता" शेतकरी मासिक महाराष्ट्र राज्य, पुणे. पान नं. २८
- २४) पाटील, शामकांत महादेव. (२०००) "महाराष्ट्रातील फलोत्पादन कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन. पुणे. संदर्भ ग्रंथ.
- २५) पाटील, जे. एस्. (जून, २००२) "Economics of Grapes Farming in TAsgaon Taluka" पीएच.डी. प्रबंध.
- २६) पाटील, एस्. एल्. (१९८८) "सांगोला जिल्ह्यातील लोकांच्या जीवनावर फलोत्पादन विकासामुळे झालेल्या आर्थिक परिणामांचा अभ्यास" पीएच.डी. प्रबंध.
- २७) पाटील, एस्. टी. (१९७५) "A Study of Cost & Price of promegranate in Rahuri Region of Ahamadnagar District" पीएच.डी. प्रबंध
- २८) पुजारी, ए. जी. (१९८९) "सोलापूर जिल्ह्यातील डाळींब उत्पादकांचा अभ्यास" पीएच.डी. प्रबंध.
- २९) पाटील/मळवे, (डॉ. बा. सा. को. कृ. वि. दापोली- जून, २००६) "कोकणातील फलोत्पादन : सर्वसाधारण सद्यःस्थिती, समस्या आणि अपेक्षा" कृषीपंढरी त्रैमासिक. पान नं. २३, २४.
- ३०) बाबर, सोमेश्वर (२००७) "जागतिकीकरणाचा भारतातील कृषी मालाच्या व्यापारावरील परिणाम" त्रैमासिक अर्थसंवाद मराठी, अर्थशास्त्र परिषद, खंड नं. ३१, अंक २, पान नं. १५०, १५१
- ३१) भोसले/काटे, (सप्टेंबर, २००५) "भारतीय अर्थव्यवस्था" फडके प्रकाशन, संदर्भ पुस्तक. पान नं. १६६, १६७.
- ३२) मराठी विश्वकोश, (१९८९) संपादक तर्कतीर्थ श्री. लक्ष्मणशास्त्री जोशी, महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ, मुंबई. खंड १०, पान नं. ८१६, ८१७, ८१८.

- ३३) महाराष्ट्र शासनाच्या माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालयाने (१९९३) "रोजगार हमी योजनेतून विकासाची महत्त्वकांक्षी योजना" संदर्भ पुस्तक. पान नं. १, २.
- ३४) मालवण तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकिय माहिती.
- ३५) मुल्लाणी, एम्. यु. / लोहकरे, रोहिदास. (ऑक्टोबर, २००९) "महाराष्ट्रातील शेती" डायमंड प्रकाशन, संदर्भ ग्रंथ, पान नं. १३, १४.
- ३६) मोरे, जगदिश. (मे, २००९) "फलोत्पादनात महाराष्ट्र अव्वल" शेतीप्रगती मासिक प्रकाशन, संपादक रावसाहेब पाटील. पान नं. ३, ४.
- ३७) राजमाने, के. डी. (१९८६) "द्राक्षे आणि ऊस शेती यांचा तुलनात्मक आर्थिक अभ्यास" पीएच.डी. प्रबंध.
- ३८) राऊळ, वि. ग. (मार्च, २०११) "विविध फळ उत्पादनापासून करता येणारे प्रक्रियायुक्त पदार्थ" मासिक कृषीपणन मित्र प्रकाशन, महाराष्ट्र राज्य कृषीपणन मंडळ, पुणे. पान नं. १३, १४.
- ३९) राणे, ए. ए. आणि बगाडे, एस.आर. (जाने-एप्रिल, २००६) "Economics of Production & Marketing of Bannana in Sindhudurga District" Indian Journal of Agricultural Marketing. Vol. 20, No. 1. Page No. 39 To 44.
- ४०) वेंगुर्ला तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकिय माहिती.
- ४१) वैभववाडी तालुका कृषी कार्यालय, रोजगार हमी योजनेंतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकिय माहिती.
- ४२) शर्मा, अवंतिका. (२००६) "Textbook of Food Science and Technology" संदर्भ ग्रंथ.
- ४३) साळी, चेतन शंकर / साळी, गिता. (२००६) "एका दृष्टिक्षेपात जिल्हा सिंधुदूर्ग" पुणे. पान नं. १६०२ ते १६०४.

- ४४) सावंतवाडी तालुका कृषी कार्यालय रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवडीची संकलित सांख्यिकिय माहिती.
- ४५) सिंधुदूर्ग जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन, मार्च २००९-१० अर्थ व सांख्यिकिय संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई. पान नं. १ ते ६०.
- ४६) सुर्या, गुंजाळ. संपादक. (एप्रिल, २००७) "फळबाग लागवड मुलतत्त्वे आणि कार्यपद्धती" प्रकाशन यशवंतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ, नाशिक. पान नं. ४, ५.
- ४७) हजारे, आर. व्ही. (२००७) "A Study of Fruit Farming in Maharashtra Plateau" पीएच. डी. प्रबंध.
- ४८) Agricultural Research, New Delhi प्रकाशित (२००८) "Handbook of Agricultural" संदर्भ ग्रंथ.
- ४९) Barroach, S. (1995) "Modern Fruit Cultivation" कल्याणी प्रकाशन, नवी दिल्ली. संदर्भ ग्रंथ.
- ५०) Bhat, Komal (2000) "A Study different Horticultural Crops and their produce in Uttarakhanda District, in Karnataka State" संशोधन निबंध.
- ५१) Government of Maharashtra (1994) Economics Survey of Maharashtra, Page. No. 24.
- ५२) Indian Horticultural Database, National Horticultural, Board Ministry of Agricultural, New Delhi. Pae No. 242.
- ५३) Maharashtra Rajya Gazatter (2002) Itihas Pracheen (Vol. No. 1) Page No. 3.
- ५४) Meena, R. K. and Yadav, J. S. (2001) "Horticultural Marketing and Post Harvest Management" Pointing Publisher, Jaipur. Page No. 4, 8.
- ५५) Shroff, Sangeeta & Jayati, Kajale (July-Sept. 2008) Government Intervention in Horticulture Development , The case of Maharashtra – Indian Journal of Agricultural Economy. No. 63 No. 3, Page No. 326.

WEBSITES

1. www.dbskkv.org.aticdespolicementre@rediffmail.com. Page No. 42 to 47.
2. www.krishi.com
3. www.agricola.com
4. www.apeda.com.
5. www.agricultureinformation.com

परिशिष्ट क्रमांक २

रोजगार हमी योजनेअंतर्ग फलोत्पादन लाभार्थी शेतकऱ्यांकरिता
भरावयाची प्रश्नावली

१) लाभार्थीची सर्वसामान्य प्राथमिक माहिती :

- १) लाभार्थ्याचे नांव
२) स्त्री/पुरुष ३) वय ४) गावाचे नाव
५) वाडीचे नांव ६) तालुका
७) जिल्हा ८) शिक्षण
९) जात/उपजात १०) फोन नं.

२) कौटुंबिक स्थिती

| वयोगट | स्त्री | पुरुष | एकूण |
|-----------------|--------|-------|------|
| ० ते १४ | | | |
| १५ ते ५९ | | | |
| ६० पेक्षा जास्त | | | |
| एकूण | | | |

३) जमिनीविषयक माहिती

- १) मालकीची एकूण शेती हेक्टर / आर.
२) पिकाखालील जमिन हेक्टर / आर.
३) फळझाड लागवडीखालील क्षेत्र हेक्टर / आर.
४) लागवडीयोग्य पडीक क्षेत्र हेक्टर / आर.
५) कायम पडीक क्षेत्र हेक्टर / आर.

४) अ) उत्पन्नाची साधने - शेती पशुपालन
नोकरी व्यापार
मजुरी इतर

ब) एकूण वार्षिक कौटुंबिक उत्पन्न रु.

५) पिक पद्धती

अ) सध्याच्या पिक पद्धतीचा आकृतीबंध (सन २०१० - ११)

| पिके | खरिप (क्षेत्र) | रब्बी (क्षेत्र) | उन्हाळी (क्षेत्र) | बारामाही (क्षेत्र) | एकूण क्षेत्र |
|-------------------------------|-------------------|--------------------|----------------------|-----------------------|-----------------|
| अन्नधान्ये (भात, नाचणी इ.) | | | | | |
| कडधान्य | | | | | |
| भाजीपाला | | | | | |
| मसाल्याची पिके | | | | | |
| इतर पिके | | | | | |
| एकूण | | | | | |

६) जलसिंचन सुविधा

अ) फळबागेसाठी सिंचनाची व्यवस्था कोणती आहे?

- १) विहीर २) कालवा ३) गाव तलाव
 ४) नदी ५) कुपनलिका ६) टँकर
 ७) इतर

ब) जलसिंचनाची उपलब्धत - हंगामी वार्षिक

क) सिंचनाला सहाय्यक आपणाकडे कोणती आधुनिक साधने आहेत?

- १) तुषार सिंचन २) ठिबक सिंचन
 ३) इतर

७) अ) फळझाड लागवडीचा तपशील :

- १) रोजगार हमी योजनेतून लागवड क्षेत्र २) इतर

माध्यमातून लागवड क्षेत्र

रोजगार हमी योजनेअंतर्गत केलेली फळबाग लागवड

| फळ पिकाचे नांव | लागवड वर्ष | लागवडीचे क्षेत्र (हेक्टर/आर.) | लागवड कलमे | सध्या जिवंत कलमे |
|----------------|------------|----------------------------------|---------------|---------------------|
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

८) रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवडीची माहिती कोणाकडून मिळाली ?

.....

९) फळबाग लागवड करण्याचे कारण कोणते ?

.....

१०) फळझाड लागवडीसाठी तुमच्याकडे खालीलपैकी कोणती साधने उपलब्ध आहेत ?

१) पॉवर ट्रेलर २) ट्रॅक्टर ३) बैलगाडी

४) औषध फवारणी पंप ५) कलमे कटींग साहित्य

६) स्टोअर रुम ७) इतर

११) अ) फळझाड लागवडीसाठी मजुरांची उपलब्धता :

१) घरातील व्यक्ती २) बाहेरील मजूर

ब) मजुरांचा तपशील

| मजुरीचा कलावधी | फेब्रुवारी ते मे | | जून ते सप्टेंबर | | ऑक्टोबर ते जानेवारी | |
|-----------------|------------------|-------|-----------------|-------|---------------------|-------|
| | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष |
| घरातील व्यक्ती | | | | | | |
| बाहेरील व्यक्ती | | | | | | |
| एकूण | | | | | | |

क) आजचा मजुरीचा दर किती (दर दिवशी)

१) स्त्री मजूर रु.

२) पुरुष मजूर रु.

ड) फळ हंगामात मजुरीचा दर किती असतो ?

१) स्त्री मजूर रु.

२) पुरुष मजूर रु.

१२) अ) फळझाड लागवडीसाठी खते कोणत्या प्रकारची वापरता ?

१) कंपोस्ट २) रासायनिक

३) कंपोस्ट व रासायनिक ४) जैवीक व कंपोस्ट

१३) फळझाड लागवडीस येणारा खर्च कशा प्रकारे पूर्ण करता ?

- १) शासन अनुदान २) स्वतः गुंतणूक
३) बँकेचे कर्ज ४) सहसंस्था कर्ज पुरवठा
५) सावकार ६) व्यापारी
७) मध्यस्थ/दलाल ८) इतर

१४) रोजगार हमी योजनेअंतर्गत शासनाकडून देण्यात येणारे अनुदान पुरेसे आहे

काय? होय नाही

नसल्यास कारण

१५) फळबाग लागवडीसाठी आपण कोणाकडून कर्ज घेतले आहे काय ?

होय नाही

असल्यास कोणाकडून १) बँक २) सहकारी संस्था

३) पतसंस्था ४) सावकार ५) व्यापारी/दलाल

६) इतर

असल्यास किती रुपये

१६) तुमच्या परिसरातील हवामानात कोणत्या जातीची कलमे योग्य वाढतात ?

.....

१७) रोपे / बियाणे / कलमे कोणामार्फत उपलब्ध करता ?

१) खाजगी रोपवाटीका २) शासनमान्य रोपवाटीका

३) स्वतः कलमे निर्माण करता

१८) फळझाडांची संपूर्ण लागवड एकाच वेळी करण्यात आली आहे काय ?

होय नाही

१९) दरवर्षी फळझाड लागवडीसाठी होणारा सर्वसाधारण खर्च : (रुपये)

अ) फळपिकांचे नांव :-

| अ.क्र. | खर्चाचा तपशील | सद्यःस्थितीत येणारा खर्च (मागील वर्ष) |
|--------|-----------------------------|--|
| १) | फळझाडांसाठी जमिन तयार करणे. | |
| २) | चांगली माती आणणे | |

| | | |
|-----|---------------------------------------|--|
| ३) | खड्डे खोदणे/ भरणे / मेलेली झाडे लावणे | |
| ४) | खते (रासायनिक / सेंद्रिय) | |
| ५) | औषधे | |
| ६) | मजूर खर्च | |
| ७) | कुंपण (घालणे / दुरुस्ती) | |
| ८) | औजारे | |
| ९) | जलसिंचन | |
| १०) | इतर (आंतरमशागत) | |
| ११) | एकूण खर्च | |

ब) फळपिकांचे नांव :-

| अ.क्र. | खर्चाचा तपशील | सद्यःस्थितीत येणारा खर्च (मागील वर्ष) |
|--------|---------------------------------------|---------------------------------------|
| १) | फळझाडांसाठी जमिन तयार करणे. | |
| २) | चांगली माती आणणे | |
| ३) | खड्डे खोदणे/ भरणे / मेलेली झाडे लावणे | |
| ४) | खते (रासायनिक / सेंद्रिय) | |
| ५) | औषधे | |
| ६) | मजूर खर्च | |
| ७) | कुंपण (घालणे / दुरुस्ती) | |
| ८) | औजारे | |
| ९) | जलसिंचन | |
| १०) | इतर (आंतरमशागत) | |
| ११) | एकूण खर्च | |

क) फळपिकांचे नांव :-

| अ.क्र. | खर्चाचा तपशील | सद्यःस्थितीत येणारा खर्च (मागील वर्ष) |
|--------|---------------------------------------|---------------------------------------|
| १) | फळझाडांसाठी जमिन तयार करणे. | |
| २) | चांगली माती आणणे | |
| ३) | खड्डे खोदणे/ भरणे / मेलेली झाडे लावणे | |
| ४) | खते (रासायनिक / सेंद्रिय) | |
| ५) | औषधे | |
| ६) | मजूर खर्च | |

| | | |
|-----|--------------------------|--|
| ७) | कुंपण (घालणे / दुरुस्ती) | |
| ८) | औजारे | |
| ९) | जलसिंचन | |
| १०) | इतर (आंतरमशागत) | |
| ११) | एकूण खर्च | |

ड) फळपिकांचे नांव :-

| अ.क्र. | खर्चाचा तपशील | सद्यःस्थितीत येणारा खर्च (मागील वर्ष) |
|--------|---------------------------------------|--|
| १) | फळझाडांसाठी जमिन तयार करणे. | |
| २) | चांगली माती आणणे | |
| ३) | खड्डे खोदणे/ भरणे / मेलेली झाडे लावणे | |
| ४) | खते (रासायनिक / सेंद्रिय) | |
| ५) | औषधे | |
| ६) | मजूर खर्च | |
| ७) | कुंपण (घालणे / दुरुस्ती) | |
| ८) | औजारे | |
| ९) | जलसिंचन | |
| १०) | इतर (आंतरमशागत) | |
| ११) | एकूण खर्च | |

२०) नैसर्गिक आपत्तीचा उत्पादनावर परिणाम होतो काय ?

होय नाही

असल्यास याचा तपशील

२१) औषधे फवारणी कोणत्या प्रकारची आहे ?

औषधे

वर्षातून किती वेळा

२२) फळझाड बागामध्ये अंतर मशागत करून अंतर्गत पिके घेता काय ?

होय नाही

असल्यास कोणती पिके

नसल्यास कारण

- २३) आपण कोणत्या पद्धतीने फळ उत्पादनाची विक्री करता ?
- १) बाजारात फळे विक्री व्यापार्यास २) दलालामार्फत विक्री
- ३) फळे येण्यापूर्वी संपूर्ण बाग दलाल / कंत्राटदारास विकून
- ४) सहकारी - सरकारी यंत्रणेमार्फत ५) स्वतः विक्री
- ६) इतर
- २४) फळ उत्पादनाला स्थानिक बाजारपेठ उपलब्ध आहे काय ?
- होय नाही
- २५) नसल्यास फळ उत्पादनाची विक्री कोठे होते ?
- १) दुसऱ्या जिल्ह्यात २) दुसऱ्या राज्यात ३) परदेशात
- २६) स्थानिक बाजारपेठ फळ उत्पादन विक्रीसाठी येत असलेल्या प्रमुख अडचणी
-
- २७) स्थानिक बाजारपेठेत कोणत्या प्रकारच्या फळ उत्पादनाला मागणी जास्त आहे ?
- १) आंबा २) काजू ३) नारळ, सुपारी
- ४) कोकम ५) इतर
- २८) कोणत्या प्रकारच्या फळ उत्पादनांना परदेशी मागणी असते ?
- १) आंबा २) काजू ३) नारळ
- ४) कोकम ५) सुपारी ६) इतर
- २९) फळ उत्पादने परदेशी निर्यात करताना कोणत्या प्रमुख अडचणी येतात ?
-
- ३०) तुमच्या भागात सर्वात जास्त कोणत्या फळ पिकाचे विक्रमी उत्पादन होते ?
-
- ३१) मागील वर्षी उत्पादनास मिळालेले विक्रीचे दर (रुपयेमध्ये)

| अ.क्र. | फळपिके | उत्पादन | दर |
|--------|--------|---------|----|
| १) | | | |
| २) | | | |
| ३) | | | |

| | | | |
|----|--|--|--|
| ४) | | | |
| ५) | | | |
| ६) | | | |
| ७) | | | |

- ३२) उत्पादित मालावर प्रक्रिया करण्याच्या सुविधा उपलब्ध आहेत काय ?
 होय नाही
 असल्यास कोणत्या प्रकारच्या
- ३३) रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फळझाड लागवड करताना तुम्हाला कोणत्या
 समस्या येतात ?

- ३४) रो. ह. यो. अंतर्गत फळबाग लागवड योजना फायद्याची आहे काय ?
 होय नाही
 नसल्यास कारणे
- ३५) फलोत्पादनाचे तुमचे वार्षिक उत्पन्न स्थिर झाले आहे काय ?
 होय नाही
- ३६) फलोत्पादनापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नामुळे तुमच्या भौतिक सुखसोयींमध्ये वाढ
 झाली आहे काय ?
 होय नाही
- ३७) फळझाड लागवडीनंतर सरकारी अधिकारी त्यांची पाहणी करण्यासाठी येतात
 काय ?
 होय नाही
- ३८) अनुदान देताना सरकारी अधिकार्यांची काही अपेक्षा असते काय ?
 होय नाही
- ३९) १००% अनुदान योजनेबद्दल तुमचे मत अनुभव सांगा.

४०) रो. ह. योज नेअंतर्गत फळबाग लागवड योजना अधिक प्रभावी होण्यासाठी
आपल्या सूचना

.....

४२) इतर (वरील प्रश्नाबाबत अधिक माहिती असल्यास वेगळा कागद जोडला तरी
चालेल.)

.....

लाभार्थीचे नाव

सही

परिशिष्ट क्रमांक ३ (छायाचित्रे)



लाभार्थी शेतकऱ्यांची प्रश्नावली भरताना संशोधक



नारळ, काजू आणि चिक्कू फळबाग



लागवडीयोग्य पडिक जमीन



मोहरलेल्या आंबा झाडांची पाहणी करताना संशोधक



बागेतील पाहणी करताना



फळबागेसाठी ठिबक सिंचन पद्धती



फळबागेसाठी वापरलेल्या औषधांची पाहणी करताना



मोहोरलेली काजूची बाग





काजू बागेची पाहणी



लागवडीयोग्य पडिक जमीन